# भाग - १

# प्रारम्भिक ज्ञान

# पहला अध्याय

## मूल बात

भारत यदि अपने किसी भी विज्ञान पर गर्व कर सकता है तो वह ज्योतिष है। संसार के किसी भी देश में भारत के समान इस विज्ञान पर अन्वेषण नहीं हुए हैं। कई बार पाश्चात्य देशों ने इस बात की चेष्टाएँ कीं मगर उनका ज्ञान भारतीयों द्वारा किए गये अन्वेषणों से अधिक न बढ़ सका। संसार के समस्त देशों ने अपना हित समझते हुए ही भारत को ज्योतिष में अपना मुखिया माना और भारतीय ज्ञान को ही प्राप्त करने की चेष्टा की है।

संसार के समस्त विज्ञानों में ज्योतिष सबसे कठिन विषय है। इसका मूल कारण है कि यह विद्या केवल पुस्तकावलोकन से ही प्राप्त नहीं होती वरन् मनुष्य को अपने मस्तिष्क पर जोर डालना होता है और तब वह इस विद्या को कार्यान्वित कर सकता है।

यह सच है कि ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता बहुत कम मिलते हैं। इसका मुख्य कारण केवल यही है कि इसको सीखने के लिये अथक परिश्रम, दीर्घ समय और तीव्र बुद्धि की आवश्यकता होती है। लगन के साथ वर्षों तक इसका विद्याभ्यास करने के बाद ही आदमी इसका ज्ञाता हो सकता है। तीनों काल की बातें बताना; सूर्य, चन्द्र आदि नक्षत्रों की गति निकाल कर ग्रहण का पता लगाना और संसार में होने वाली आकस्मिक घटनाओं को जान लेना इस शास्त्र के ज्ञान द्वारा ही सम्भव हो सकता है।

ज्योतिष-शास्त्र के कई विभाग हैं। यह इतना बड़ा शास्त्र है कि इसके हर प्रयोग को सीखने के लिए सैकड़ों वर्षों का समय चाहिये।

इसलिए इसके कई विभाग हो गए हैं, जिनका प्रयोग सीखकर उन्हीं के द्वारा गति बताई जाती है।

ज्योतिष-शास्त्र के मुख्य भाग ये हैं—

१. रमल प्रयोग।

२. स्वरोदय।

३. सामुद्रिक।

४. जफर।

५. जातक इत्यादि।

इन विविध प्रकार के प्रयोगों द्वारा संसार भर की प्रत्येक चल, अचल व प्राकृतिक बातों के भूत, भविष्य और वर्तमान के बारे में बताया जा सकता है। संसार नाशवान है, इसलिए इसकी प्रत्येक वस्तु भी नाशवान है, जब तक हर वस्तु का नाश होता है; उसकी जीवन-लीला तीन कालों में होती है—

तीनों काल ये हैं—

१. भूतकाल।

२. भविष्यकाल।

३. वर्तमानकाल।

जब वस्तु का नाश हो जाता है तो उसकी जीवन-लीला का एक काल ही रह जाता है, वह है भूतकाल। संसार का इतिहास ही भूतकाल के कारनामों से भरा पड़ा है। सच तो यह है कि इतिहास को यदि भूतकाल की लिखित घटनाओं का कोष कहा जाय तो किसी हद तक ठीक होगा।

१—भूतकाल—जीवन का वह दिन या वह समय जो गुजर गया हो; उसे ही भूतकाल कहते हैं। अतीत की घटनाएँ इस काल का मुख्य अङ्ग हैं।

२—भविष्यकाल—जीवन का वह दिन या वह समय जो आने को है, जिस समय की मनुष्य कल्पना करता है, उसे भविष्यकाल कहते हैं।

३—वर्तमानकाल—जीवन का वह दिन या समय जो व्यतीत हो रहा है, जिस समय में गुजरते हुए भूत के बारे में अतीत की घटनाएँ सोची जा सकती हैं और भविष्य की घटनाओं का विचार किया जा सकता है, उसे वर्तमानकाल कहते हैं।

ज्योतिष-शास्त्र के विभागों में सबसे सरल भाग सामुद्रिक है। सामान्य मनुष्य आसानी से इसका अध्ययन कर सकता है क्योंकि इसके अध्ययन में गणित आदि अन्य विज्ञानों की आवश्यकता भी नहीं है और न विशालकाय यंत्रालयों की ही जरूरत होती है। मनुष्य अपने में अधिक मस्त रहता है और वह हर समय अपने भविष्य को जानना चाहता है। अत: सामुद्रिक ज्ञान द्वारा वह अपने भविष्य को जान सकता है।

आशाएं, निराशाएँ तो मनुष्य के जीवन-संघर्ष का परिणाम है। मगर फिर भी मनुष्य अपने हर कार्य के विषय में यह जानना चाहता है कि उसे सफलता प्राप्त होगी अथवा नहीं ? इन्हीं कारणों से वह ज्योतिष की शरण लेता है।

सामुद्रिकशास्त्र द्वारा मनुष्य स्पष्ट रूप से अपने हृदय में उठने वाले प्रश्नों का हल प्राप्त कर सकता है। वह सरल रीति से जिज्ञासा को शान्त करने की क्षमता रखता है, इस कारण ज्योतिष के अन्य भागों की अपेक्षा सामुदिकशास्त्र का प्रयोग अधिक होने लगा है।

सामुद्रिकशास्त्र—

१—हाथ देखकर मनुष्य के जीवन के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

२—पैर देखकर मनुष्य के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

३—मनुष्य की प्रकृति और मस्तक देखकर उसके जीवन के तीनों काल का विवरण बताया जा सकता है।

हाथ देखकर बताने की क्रिया सबसे अधिक सरल और प्रचलित

है। इसका एकमात्र कारण यही है कि इसे रेखाओं द्वारा जाना जाता है। हस्त-परीक्षा के लिए जानना आवश्यक है कि—

१—हाथ में ४ उङ्गलियां और १ अँगूठा होता है। किसी-किसी के छः उङ्गलियां अँगूठा सहित होती हैं। उन्हें छंगा कहा जाता है। सामुद्रिकशास्त्र द्वारा हस्त-परीक्षा करते समय चार उङ्गलियां और एक अँगूठे के बारे में ही विचार किया जाता है, छठी उङ्गली या अंगूठे को वैसे ही छोड़ देते हैं। उसका असर पड़ता है परन्तु उसका सुनिश्चित विषय नहीं।

२—कलाई से ऊपर के भाग को हाथ कहते हैं। हस्त-परीक्षा करते समय—

(अ) हथेली।

(ब) चार उङ्गलियां।

(स) अँगूठा।

इन तीन चीजों को देखा जाता है। इन्हीं के द्वारा तमाम हाल मालूम होता है। चारों उङ्गलियां, अँगूठे और हथेली में बहुत-सी रेखाएँ होती हैं। ये रेखाएं ही देखने के समय काम में आती हैं।

चारों उङ्गलियों और पांचवें अँगूठे में तीन लाइनें होती हैं। इन्हीं तीनों लाइनों को सांगिक रेखा कहा जाता है। सांगिक रेखाएँ उङ्गलियों तथा अंगूठे को तीन पर्वों में विभाजित करती हैं।

१. सबसे ऊपर वाले पर्व को—प्रथम पर्व कहते हैं।

२. बीच वाले पर्व को–मध्यम पर्व कहते हैं।

३. सबसे नीचे वाले को–तृतीय या अन्तिम पर्व कहते हैं।

प्राकृतिक नियम द्वारा इन पर्वों का अधिक महत्व है। अगर उङ्गलियों को पर्व में विभाजित नहीं किया गया होता तो वह हाथ कंकरीट उठाने वाले फावड़े की तरह होता और हम लिखने, उठाने या किसी भी काम के लिये पूरी तरह अयोग्य होते। तमाम उङ्गलियों और अँगूठों में तीन जोड़ हैं, जिनकी सहायता से हर काम आसानी से किया जा सकता है और किया जाता है।

हथेली इन उङ्गलियों और अँगूठे का मुख्य केन्द्र है। ईश्वर ने तो हथेली को उँगलियों और अँगूठे की सहायता के लिये बनाया है, पर सामुद्रिकशास्त्र-ज्ञाताओं ने इसका सबसे अधिक महत्व रखा है।

पुरुष का सीधा और स्त्री का बाँया हाथ देखकर ही फलादेश कहा जा सकता है।

---

# दूसरा अध्याय

## हस्त-परीक्षा

हाथ देखने वाले का कर्तव्य है कि वह जितना ज्ञान रखता हो उतना ही हाथ देखकर फलादेश कहे। वह अपने चित्त को शान्त रखे, रेखाओं तथा अन्य आवश्यकीय बातों को गौर से परखे और अगर उसे कहीं भी शंका हो तो उसे उचित है कि वह शान्त ही रहे और उस विषय पर मौन रहे। किसी का हाथ देखकर फल बताने में उसे साव-धानी से काम लेना चाहिये, और एक-एक शब्द सोच-सोच कर कहना चाहिए। अशुभ बात को स्पष्ट नहीं कहना चाहिए क्योंकि किसी की आशा को नष्ट कर देना प्राण-हरण से भी अधिक दु:खदायी होता है। जिस प्रकार वैद्य रोगी की दशा से उसकी मृत्यु सन्निकट जानकर भी उससे नहीं कहता कि रोगी मरने ही वाला है। उसी प्रकार हाथ देखने वाले को भी उचित है कि वह अशुभ बात जानकर भी स्पष्ट न कहे वरन् हेर-फेर करके उसे सचेत अवश्य करदे।

विश्वास मनुष्य को सबल बनाने में भी सहायक होता है और दुर्बल बनाने में भी। प्रयोग के लिए आप किसी हृष्ट-पुष्ट मनुष्य से कह दीजिए कि उसकी तन्दुरुस्ती घट रही है और यह बात कहिए इस ढङ्ग से कि वह यह सच समझ ले कि उसकी तन्दुरुस्ती घट रही है। बस कुछ ही दिनों में आप देखेंगे कि वह सचमुच दुबला-पतला क्षीणकाय हो जायगा।

यह सत्य है कि आदमी पर उसके मस्तिष्क का गहरा प्रभाव पड़ता है। उज्ज्वल भविष्य की बात सुनकर वह उत्साहित हो जाता है। उसका अन्त:करण प्रसन्नता से नाच उठता है और वह अधिक उत्साह और चतुरता के साथ अपने काम में लग जाता। अन्धकारमय

भविष्य की बात सुनते ही आदमी का दिल टूट जाता है। उसका उत्साह समाप्त हो जाता है और वह दु:खी हृदय से जीवनयापन करने लगता है। अतः हाथ देखने वाले को यह उचित है कि फलादेश कहते समय पूरी सावधानी रखे, और अशुभ फलादेश को स्पष्ट कहने के बजाय संकेतों द्वारा ही समझाने का प्रयत्न करे तो अति उत्तम है।

हाथ दिखाने वाले को चाहिए कि भविष्यवक्ता के उपदेशों को मन लगाकर सुने, जो उसके अनुकूल हो और जितना साहस प्राप्त हो, उतना स्वीकार करे तथा अच्छे विचारों को ग्रहण करे और आने वाली घटना के लिये पहले से ही ऐसा प्रयत्न करे कि उसका परिणाम ज्यादा अशुभ न हो तथा शुभ फल जो आने वाले हैं उनको भी याद रखे। सब चिन्ता को चित्त से हटाकर हाथ दिखाना चाहिये।

मन एकाग्र कर, काम, क्रोध, लोभ, मोहादि से रहित होकर फल पुष्प, दक्षिणादि लेकर अति विनयपूर्वक स्वयं गुरुके पास जाकर पदार्थ भेंट करे। हाथ दिखाते समय हाथ जल से धोकर दिखाना चाहिये।

हस्त-परीक्षा कराते समय किसी तीसरे व्यक्ति को अपने पास नहीं रहने देना चाहिए न साथ में लेकर जाना चाहिये, क्योंकि परीक्षक और अधिकारी की एकाग्रता में बाधा पड़ेगी। उसके अलावा कोई दुर्गुणों की बात होगी तो तीसरे व्यक्ति पर प्रकट हो जायगी और स्वयं अधिकारी भी दोषपूर्ण सत्य को अस्वीकार कर देगा।

## आवश्यकीय नियम

हस्त-रेखा देखने वालों को चाहिए कि पहले पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बांए से शुभाशुभ फल कहें। साथ ही पुरुष के दाहिने भाग और स्त्री के बांए भाग के सभी लक्षणों को देखना चाहिए। यदि पुरुष के दाहिने अङ्ग में चोट लगने का, फोड़े का, लाल या काला, तिल मसा या घाव का चिह्न हो तो शुभ और स्त्रियों के उक्त लक्षण बांए भाग में हों तो शुभ जानना चाहिए।

पहले मणिबन्ध उसके बाद दोनों हाथों को देखना और पृष्ठ भाग

देखना। उसके बाद हथेली और ऊपर की रेखा, अँगुष्ठ, उङ्गली, उङ्गलियों के नख के लक्षण क्रम से देखना।

स्त्री-स्वभाववाले पुरुष का बांया हाथ और पुरुष स्वाभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ देखना चाहिए। क्योंकि स्त्री-स्वाभाव वाले पुरुष का बांया हाथ दाहिनेसे बली और पुरुष-स्वाभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ बांए हाथ की अपेक्षा बली होता है।

बालक जबतक चौदह वर्ष का रहता है तबतक उसकी प्रकृति स्त्री-स्वाभावानुनार होती है। इससे बालक के वाम हस्त को प्रधान और दक्षिण हस्त को गौण मानकर परीक्षा करनी चाहिए।

फल कहने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिये खूब सोच-विचारकर सब लक्षणों को मिला कर कहना चाहिये।

स्थिर चित्त होकर हाथ देखना चाहिए। ऐसा न करने से भूल होने की सम्भावना रहती है। क्योंकि मनुष्य के हाथ, मनुष्य की जन्म कुण्डली है। ठीक तौर से देखा जाय तो ठीक फल बताया जायगा - इससे दिखाने वाले और देखने वाले दोनों को सावधान और एकाग्र चित्त होकर हस्तरेखा का निरीक्षण करना आवश्यक है।

मनुष्य के बांए से लक्ष्मी, राज्य, वाहनादि का विचार और दाहिने हाथ से ज्ञान, ऐश्वर्य, पुत्रादि का विचार करना चाहिए।

प्रातःकाल, सायंकाल, रात्रि में, मध्यान्ह में, जहाँ हंसी हो, यात्रा समय, सवारी में और रास्ते में बिना फल-फूल या द्रव्य के नहीं देखना चाहिए।

धूर्त्त, मूर्ख, पण्डित और दरिद्री को देखना निषेध है। सुन्दर, स्निग्ध, विहंसित मुख वाले सुन्दर पुरुष का हाथ देखना उचित है। विवाह रोग, मृत्यु इत्यादि की रेखाओं को दोनों हाथों में ध्यानपूर्वक देखना चाहिये। हाथ स्वाभाविक दशा में होना चाहिये। हाथ मजबूती से पकड़ो और रेखा इस तरह दबाओ कि रक्त प्रवाह करे। तब मालूम होगा कि रेखा किस ओर बढ़ने वाली है।

पूर्व रेखाओं पर मत प्रकट करने के पहले हाथ की बनावट पर अवश्य ध्यान देना चाहिये। हथेली सख्त है या कोमल। अंगूठे का ऊर्ध्व भाग सीधा, मुड़ा, लम्बा, छोटा या ऊपर से नोकदार या गोल है और उङ्गलियाँ किस ओर झुक रही हैं।

## देवता तथा तीर्थं

हथेली के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और मूल में ब्रह्मदेव का स्थान है। अंगूठे के नीचे ब्रह्मतीर्थ, कनिष्ठा के मूलमें प्रजापतितीर्थ, उङ्गलियों के अग्रिम भाग में देवतीर्थ तथा अंगूठे और तर्जनी के बीच में पितृतीर्थ हैं।

हाथ के सात भेद हैं:—

(१) समकोण (२) चमसाकार (३) दार्शनिक (४) कलाकार या व्यवसायिक (५) निकृष्ट (६) आदर्शवादी (७) विषम या मिश्रित।

## समकोण हाथ

सात प्रकार के हाथों में से समकोण हाथ सबसे श्रेष्ठ है और उपयोगी भी है। इसको समकोण इसलिये कहते हैं कि यह चौकोर शक्ल का होता है और इसमें कलाई और उङ्गलियोंके बीच हथेली और उंगलियाँ अलग-अलग नाप में समकोण की तरह होती हैं। उंगलियाँ सपाट मुलायम और नीचे हथेली के पास सुडौल होकर जड़ी होती हैं। मध्यमा उंगली के नीचे की गाँठ आकार में कुछ बड़ी होती है। इस प्रकार के हाथ में प्रायः नाखून छोटे और चौकोर होते हैं।

इस प्रकार के स्वभाव वाले मनुष्य स्वभाव से ही नियमित व्यवहार वाले, स्वभाव के कोमल, मिलनसार, उत्साही, सबके साथ नम्रता का बर्ताव करने वाले, आज्ञाओं का पालन करने वाले, असभ्य व्यवहार को सहन न करने वाले होते हैं। बिना अधिकार वे किसी को बीच में

बोलता हुआ देखकर चिढ़ जाते हैं और स्वयं भी किसी के बीच में नहीं बोलते हैं। वे झगड़ालू नहीं होते हैं। शान्ति तथा समझौते को विशेष चाहते हैं। ऊंचा पद पाने की इच्छा करते हैं। अभिमानी नहीं होते और उन पुरुषों को जो असभ्य हैं, अभिमानी हैं, तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। उनमें कल्पनाशक्ति का लगभग अभाव-सा रहता है परंतु वे अपने लक्ष-साधन में एकाग्र और उत्साही होने के कारण प्रायः अपने सभी कार्यों में सफल हो जाया करते हैं। वे क्रियात्मक अध्ययन तथा विज्ञान से विशेष प्रेम करते हैं। घर के कर्त्तव्यों से भी स्नेह रखते हैं। वे प्रतिज्ञा का पालन करने वाले, मित्रता को निभाने वाले, उद्देश्य के पक्के और व्यापार में नीतिवान तथा सच्चे होते हैं। वे प्रेम में दिखावा नहीं करते हैं।उंगलियां यदि गठीली और समकोणके आकारकी हों तो सत्यवादी और शांति स्वभाव वाले होते हैं। जिनकी उंगलियां चिकनी और मस्तक-रेखा झुकी हो तो वे सुन्दर वस्त्र पहनने वाले साफ-सुथरे होते हैं। तर्कशक्ति अधिक होती है और वे अपना बहुत-सा समय किसी बात को सिद्ध करने में व्यय कर देते हैं, यही एक दोष है। यदि कनिष्ठ उंगली टेढ़ी होती है तो उनमें कुछ-न कुछ दोष होता है। उस दोष को छोड़ने के लिए ऐसे हाथ वाले से कहना चाहिये।

## चमसाकार हाथ

चमसाकार हाथ की उंगलियां मुड़ी हुई व टेढ़ी होती हैं।हथेली एक हाथ में कलाई के पास अधिक और उंगलियों के पास कम चौड़ी तो दूसरे में उंगलियों के पास अधिक और कलाई के पास कम चौड़ी होती है।

यदि चमसाकार हाथ उंगलियों के मूल में चौड़ा हो तो विशेष कार्यशील तथा व्यवहार-कुशलता को व्यक्त करता है। यदि ऐसा पुरुष आविष्कार करता हो तो अपनी बुद्धि उस आविष्कार को कार्यरूप में परिणत करनेके लिये लगाताहै और जीवनोपयोगी पदार्थोंका निर्माण करता है। यदि हाथ मणिबन्ध की ओर ज्यादा बड़ा होता है तो ऐसे

पुरुष की बुद्धि संसार के कार्यों में उन्नति करने की तरफ होती है। यदि धार्मिक होगा तो नये प्रकार से पूजा या कीर्तन का प्रचार करने का अभिलाषी होगा और अपनी थोड़ी-सी शक्ति से संसार भर में हलचल मचा देने का साहस रखता होगा। ऐसे व्यक्तियों का संसार में होना आवश्यक है क्योंकि वे उन्नति के मार्ग में पथप्रदर्शक होते हैं।

किसी-किसी का हाथ मजबूत और सख्त होता है। मजबूत, सख्त हाथ में उंगलियों का गांठदार होना मनुष्य के परिश्रमी और उद्यमशील होने का लक्षण है। वे कभी सुस्त नहीं बैठते, कुछ-न-कुछ करते ही रहते हैं। यदि शरीर से कुछ न करेंगे तो मन से गम्भीर बातें सोचेंगे। एक क्षण बेकार नहीं बैठ सकते। वे साहसी और प्रयत्नशील होते हैं। उनमें स्वतन्त्र कार्य करनेकी शक्ति होती है। स्वतन्त्र विचार-शक्ति ही उनको दूसरों के विचारों का विरोध करने के लिए बाध्य करती है।

सरल हाथ के मनुष्य शासन करने के इच्छुक होते हैं। वे किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते हैं और लड़ाई-झगड़ा करने वाले, साहसी योद्धा और विप्लवी होते हैं। ऐसे लोगों में यह आदत होती है कि जहाँ चार आदमी बैठे हों, वहाँ पहुँचकर एक नई बात छेड़ देते हैं जिससे उन लोगों में खलबली पड़ जाती है और ऐसे लोग कुछ-न-कुछ नवीन विचार तथा नवजीवन के अग्रणी होते हैं।

उङ्गलियाँ गांठदार हों तो मनुष्य परिश्रमी और स्वभावमें सरल, क्रोध कम करने वाला और बोलचाल का नम्र होता है। शरीर फुर्तीला होता है। घोड़े की सवारी, शिकार खेलना, निशाना मारना, दौड़ने-कूदने के काम वह अधिक पसन्द करता है।

यदि उङ्गलियाँ गांठदार न होकर चिकनी हों तो दस्तकारी को अच्छा समझते हैं और दूसरों को सलाह देते हैं परन्तु वे स्वयं कोई कुशल कलाकार नहीं होते। यदि उङ्गलियाँ चिकनी होनेके साथ लम्बी भी हों तो पेड़, पौधे, खेती के काम में रुचि अधिक पाई जाती है।

## दार्शनिक हाथ

दार्शनिक हाथ प्राय: लम्बा गठीला, कोणाकार और बीच में झुका हुआ होता है। उंगलियां हड्डी-सी जोड़ उभड़े हुए तथा नख लम्बे होते हैं। इस प्रकार का हाथ सहज जी पहचाना जा सकता है।

इस प्रकार के व्यक्ति बिखरी हुई सम्पत्ति को संग्रह करने के स्थान पर बिखरे गुणों को संग्रह करते हैं। तीव्र अभिलाषी होते हैं। ये स्वभाव के विलक्षण माया की सीमा से परे होते हैं, और उनके विचार पवित्र और उच्च होते हैं। स्वाभिमानी होने के कारण गंभीर रहते हैं। घनिष्ठ मित्रों की संख्या अधिक नहीं रहती, धनी कम देखे गए हैं। धनी हुए तो धन को परोपकार में लगाने वाले होते हैं। मनुष्य जाति से प्रेम करना उनका स्वाभाविक गुण होता है। विचारों के इतने स्वतंत्र और स्पष्ट होते हैं कि जबतक पूरा प्रमाण न मिले तबतक ये शङ्का करते रहते हैं।ऐसे हाथ विशेषतया ब्राह्मण,योगी तथा ईश्वरसे साक्षात् करने वालों के देखे जाते हैं। इस प्रकार के हाथों में यह ध्यान देने योग्य है कि उंगलियोंकी उन्नति ग्रन्थि विचारवान् मनुष्योंका मुख्य चिन्ह समझी जाती हैं, जबकि समतल चिकनी नुकीली उंगलियां इसके विपरीत होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले किसी खास विषय के विद्यार्थी होते हैं और वे अपने आपको दूसरे लोगोंसे बिलकुल भिन्न रखना पसंद करते हैं। वे यदि प्रचारक हुए तो असाधारण बातों का प्रचार करते हैं। ऐसे लोग शान्तिप्रिय, गूढ़विचार वाले, सावधान और साधारण बोल-चाल में भी हर बात खूब सोच समझ कर कहते हैं।

## कलाकार या व्यवसायिक हाथ

हाथों की उंगलियां ऊपर सिरे पर पतली, मूलमें भरी हुई और मोटी होती हैं। हाथ की लम्बाई-चौड़ाई मध्यम होती है। इस प्रकार के हाथ वाले अपने विचारों में निर्बल होते हैं। धैर्य बिलकुल नहीं होता और इतनी जल्दी थक जाते हैं कि अपने संकल्प को शायद ही पूरा

कर सकते हैं। किसी काम के करने में शीघ्रता करना और फिर उसे बिना समाप्त किए ही छोड़ बैठना उनका स्वभाव होता है। वे किसी काम का परिणाम नहीं सोचते। मनमें बिचार आते ही हर काम करने को उद्यत हो जाते हैं। किसी भी विषय के अर्थ को शीघ्र ही समझ जाते हैं। ये बहुत बोलने वाले होते हैं। इन पर दूसरों का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है और छोटी-छोटी बातों पर नाराज हो जाते हैं।तनिक-सी बात को बढ़ा देने का गुण इनमें अधिक होता है। स्वभाव-चंचल और विचार-अस्थिर होते हैं। क्रोध आने पर आपे से बाहर हो जाते हैं। क्रोधावेश में उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है, जो मुँह पर आता है कह डालते हैं। दूसरों के साथ उदार होते हैं। परन्तु जहाँ अपने लाभ स्वार्थ का प्रश्न आता है वहाँ रूखे और स्वार्थी बन जाते हैं। प्रेम के बारे में यहाँ तक दृढ़ होते हैं कि यदि किसी से प्रेम हो जाय तो अन्त तक निभाते हैं।कोई भी व्यक्ति उन्हें साधारण-सी बातों में चिढ़ा सकता है। ये दान में शीघ्र रुपया देनेके लिए प्रभावित किए जा सकते हैं। यदि हाथ लम्बे मुलायम तथा भारी हों तो धोखा देना, झूँठ बोलना, मक्कारी, धूर्त्तता आदि बुरे लक्षण पाए जाते हैं।

वे अपनी वासनाओं को मिटाने के लिए ही किसी के साथ भी सम्बन्ध कर बैठते हैं, गृहस्थी से प्रेम कम होता है और अपना बहुत-सा समय मित्रों के साथ चुहल करने में व्यतीत करना अधिक पसन्द करते हैं। कर्ज लेकर देना नहीं आता, बातों का जमा-खर्च अच्छा करते हैं।

हाथ गाँठदार हों तो सुन्दरता के प्रेमी होते हैं,दुष्ट-भाव से नहीं। देखने में सुन्दर आकार वाला मोटा तथा छोटा हो तो धनी होने की लालसा लगी रहती है और अनेकों प्रकार के प्रयत्न करते हैं। परन्तु भाग्य न होने के कारण सब प्रयत्न बिफल होतेहैं। कभी-कभी मुसीबत में फंस जाते हैं। ऐसे हाथ वाली स्त्रियाँ खुशामद-पसन्द और प्रेम के बारे में अज्ञानी और उतावली होती हैं। वे बिना समझे-बूझे प्रेम करने लग जाती हैं।

## निकृष्ट हाथ

निकृष्ट हाथ आवश्यकता से अधिक मोटा, भारी, भद्दे आकार वाला होता है। हाथ खुरदरा, उँगलियाँ और नाखून छोटे और रेखाएँ भी कम, प्रायः अँगूठा छोटा, मोटा और लगभग चौकोर होता है। ऐसे हाथ मन्द बुद्धि और दुष्ट प्रकृति लोगों के देखे गए हैं। इनकी बुद्धि पाशविकता की ओर प्रभावित रहती है। स्वभाव के क्रोधी, कम हिम्मत वाले और क्रोध आने पर जो मुँह में आता है, कह डालते हैं।

सदा इच्छाओं के दास बने रहते हैं। वासनाओं की तृप्ति में पशुओं का-सा बर्ताव करते हैं। जितनी अधिक बड़ी हथेली होगी, पाशविक शक्ति का उतना ही अधिक प्रभाव होगा। ऐसे हाथ वाले खाना-पीना, सोना और धन के लिए मरना जानते हैं, उनकी किसी प्रकार की शुभ इच्छाएँ नहीं होतीं।

## आदर्शवादी

आदर्शवादी हाथ देखने में सुन्दर, लम्बा, तंग, उँगलियां सिर पर अधिक पतली और उतनी ही नोंकदार, नाजुक, सिर पर उभरी हुई और नाखून लम्बे तथा बादामी बनावट के होते हैं। उँगलियाँ ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर से मोटी होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले काल्पनिक, तरह तरह के मन्सूबे बाँधने वाले होते हैं, पर कुछ कर नहीं पाते और प्रबन्ध करने में अयोग्य होते हैं। समय का उपयोग नहीं जानते इससे उद्यमी नहीं बन सकते। परिश्रम के साथ काम करने का साहस नहीं करते। स्वभाव के शान्त और संतोषी होते हैं। उन पर जो भी थोड़ी-सी कृपा करता है, उसका वे झट भरोसा कर लेते हैं। न तो वे व्यवहार-कुशल और न तर्कशील ही होते हैं। उनको समय का, आज्ञाओं का और नियमों का बिलकुल ध्यान नहीं रहता। वे दूसरों के प्रभाव में जल्द आ जाते हैं, शीघ्र भरोसा कर लेते हैं। धोखा खाने पर बहुत दुःख मानते हैं। राग-रंग, शोक, दुःख का बहुत प्रभाव पड़ता है। रङ्गों से प्रेम होता है। इष्टदेव

की पूजा, अर्चना, भजन, संगीत, समारोह, उत्सव इत्यादि से प्रभावित होते हैं।

देवता से श्रद्धा और आराधना में तत्पर रहते हैं। कट्टरधार्मिक और इष्टदेव को प्रत्यक्ष: देखने के अभिलाषी होते हैं।

## मिश्रित हाथ

मिश्रित हाथ में प्राय: सभी हाथों के लक्षण होते हैं। पहली उङ्गली नोकदार, दूसरी भुकी हुई टेढ़ी, तीसरी समकोण या अन्य प्रकार की हों, इस हाथ में समकोण, चमसाकार या दार्शनिक सभी के लक्षण होते हैं।

ऐसे हाथ वाले का, किसी काम को बिना पूरा किए छोड़ देना और फिर दूसरे काम में लग जाना स्वाभाविक गुण है। असफलता उनसे सदा दूर ही रहती है।

यदि हाथ की उङ्गलियां समकोण होकर ऊपर से नोकदार हों तो धोखेबाज और दूसरों की आंखों में धूल डालकर स्वार्थ सिद्ध करने वाले होते हैं। निकृष्ट और व्यवसायिक हाथ के लक्षण से लापरवाह और दूसरे के सहारे काम करने वाले होते हैं। वे किसी भी विषय पर बात कर सकते हैं, पर उनका प्रभाव सुनने वाले पर नहीं पड़ता।

यह भी जान लेना आवश्यक है कि हाथ कोमल और कठोर भी होते हैं। कठोर हाथ परिश्रमी, जोशीला, धैर्यवान होने का लक्षण है। कोमल हाथ आराम पसन्द, आलसी और तनिक मुसीबत में घबरा जाने का लक्षण है। दाहिना हाथ, बाँए हाथ की रेखाओं को सही करता है और जो स्वयं उन्नति करके जीवन में परिवर्तन किया है उसे बतलाता है। इस हाथ को कर्त्ता कहना चाहिए। बांया हाथ जो कुछ पैदायशी खासियत है उसे बतलाता है। इसलिए इसको अकर्त्ता हाथ कहना चाहिए।

जब कोई रेखा दोनों हाथों में पाई जाती है तो उसका पूरा फल होता है। यदि कोई रेखा केवल दाहिने में पाई जाय तो उसका फल

आधे से ज्यादा होता है और यदि सिर्फ बांए में पाई जाय तो उसका फल आधे से कम होता है। हाथ बड़े, लम्बे, गठीली उँगली, अँगूठे की गाँठ मजबूत और उङ्गलियों के पोर एक-दूसरे से कुछ बड़े हों या उपरोक्त कोई भी चिन्ह हो तो वह व्यक्ति किसी बात को पूरे विवरण के साथ जानने की कोशिश करेगा।यदि हाथ में बहुत रेखाएँ हों तो चिड़चिड़ापन, तनिक बात में नाराज हो जाना और उसे बहुत बढ़ा देना स्वाभाविक हो जाता है,जिससे बेचैनी और स्वास्थ्य को हानि पहुँचती है। यह मानसिक चिंता और जल्द थक जाने की निशानी है।

हाथ में गड्ढे का होना दुर्भाग्य का लक्षण है और लगातार जीवन में असफल होना बतलाता है।

यदि हाथ का रङ्ग लाल हो, उँगलियाँ सटी हों, हथेली चिकनी मांससे भरी हुई,चमकीली लाल रङ्गके नख वाली बड़ी-बड़ी उँगलियाँ हों तो वह हाथ उत्तम दर्जे का होता है।

हथेली का रङ्ग लाल हो तो धनी।नीले रङ्ग का हो तो मदिरा-सेवन करने वाला। पीले रंग का हो तो दुष्ट स्त्रियों में आसक्त रहने वाला। सफेद किंवा काले रंग का हो तो निर्धन होता है।

हथेली ऊँची हो तो दाता, गोल हो तो धनी, ऊँचो-नीची हो तो निर्धन। मध्यम भाग गहरा हो तो कृपण होता है।

लम्बे हाथ वाला क्रियाशील और नियमित रूप से काम करने वाला होता है।

छोटे हाथ वाला बहुत-सा समय सोच-विचार में और तरह २ के मनसूबे बांधने में व्यतीत करता है। छोटे हाथ वाला जितना कहता है उतना करता नहीं और ऐसा सोचता है जो पूरा करना उसकी शक्ति से बाहर होता है। लिखते समय बड़े-बड़े अक्षर लिखता है।

हथेली और उँगलियों की लम्बाई दोनों की समान बराबर हो तो शुभ जानना चाहिए। जिस कदर बड़ी-छोटी हो उसी के अनुमान से भाग्य की कल्पना करनी चाहिए।

---

# तीसरा अध्याय

## हथेली

हथेली न बहुत संकुचित न बहुत चौड़ी होनी चाहिये।

हथेली चौड़ी हो तो उदार, अनुभवी और परिश्रमी होने का लक्षण है।

हथेली अधिक पतली, सिकुड़ी हुई, शुष्क और सख्त हो तो निरुत्साही, डरपोक, निर्बल, बुद्धिहीन, चरित्रहीन, चंचल-स्वभाव और तनिक परिश्रम से थक जाने वाला होता है। लम्बी, मुलायम हथेली मनुष्य को आलसी और आरामपसन्द प्रगट करती है।

हथेली अधिक भारी, मोटी, मुलायम, बेढङ्गी हो तो वह मनुष्य को स्वार्थी, इन्द्रियलोलुप, व्यसनी और विषय-भोग में मग्न रहने वाला सिद्ध करती है।

कोमल-ढीले हाथ वाला मनुष्य निरुत्साही, आलसी, काल्पनिक और आरामपसन्द होता है। परिमित से छोटा करतल वाचाल मनुष्य का होता है। दृढ़ करतल वाला चंचल तथा योग्य प्रकृति वाला होता है। गहरी हथेली दुर्भाग्य का सबसे बुरा लक्षण है। यदि यह गहराई पितृरेखा की तरफ लुढ़कती हो तो गृहस्थी सम्बन्धी कामों में निराशा-सूचक है। यदि रेखाएँ कोई रोग बतावें तो भयानक रोग का लक्षण है।

यदि गहराई हृदयरेखा की तरफ हो तो इष्ट-मित्रों की ओर से निराशा और कोई सहायता न मिलने की सूचना है।

यदि गहराई भाग्यरेखा के नीचे पड़ती हो तो सांसारिक व्यवहार, व्यापार, रुपये-पैसे के सम्बन्ध में बुरा फल बताती है। यह जिसके हाथ

में हो उसका भाग्य डाँवाडोल रहता है। वह जिससे लेता है उसको चुकाना मुश्किल हो जाता है और किसी को देने से रुपया-पैसा इत्यादि मिलना कठिन हो जाता है।

उङ्गली और अँगूठा यदि शुभसूचक हों तो वे इस प्रकार की हथेली के फल को रोक नहीं देते पर मध्यम अवश्य कर देते हैं।

कोमल और मजबूत हथेली साहस, प्रबल इच्छाशक्ति की सूचक है।

सफेद हथेली हो तो प्राणी खुदगरज, आत्म-प्रशंसी, पराए दुख में सहानुभूति नहीं रखता।

पीली हथेली हो तो पित्तप्रकृति और सन्तप्त स्वभाव वाला होता है।

काली हथेली हो तो दुखी, निस्तेज, कफप्रकृति और बहुत कोमल स्वभाव वाला होता है। अरुणवर्ण की हो तो धनी और आशावादी होता है।

भूरी हथेली निस्तेजता और पुरुषत्वहीनता की सूचक है।

गुलाबी हथेली सबसे अच्छी होती है। यह तेजस्विता और न्यायप्रियता की सूचक है।

## पाश्चात्य मत

यदि हथेली, पतली, संकरी और झुर्रीदार होती है तो वह कायरता की द्योतक है। वह स्पष्ट करती है कि ऐसी हथेली वाला मनुष्य कायर, डरपोक, कमजोर मस्तिष्क वाला होता है, उसका दृष्टिकोण छोटा होता है और वह बुद्धिमान भी नहीं होता। उसका चरित्र गहराई-शून्य होने के कारण उसमें स्फूर्ति, दिमागी शक्ति और नैतिकता की भी कमी रहती है। यदि ऐसी हथेली के साथ उङ्गलियाँ लम्बी और पतली होती हैं तो वह उसकी विद्रोही भावनाओं की द्योतक होती है।

यदि हथेली, उङ्गलियों, अंगूठे और शरीर के आकार के अनुसार ही होती है और वह कड़ी न होते हुए भी स्थिर हो, उसमें लचक हो

मगर झुर्रियां न पड़ें तो वह इस बात को प्रमाणित करती है कि ऐसी हथेली वाले प्राणी का मस्तिष्क स्थिर होता है। वह गुणग्राही होता है। वह सर्वप्रिय, बुद्धिमान और शीघ्र ही तनिक-सी प्रेरणा मिलते ही सुकार्य में लग जाने वाला होता है। मगर किसी प्राणी की हथेली अपने सुआकार से अधिक बड़ी होती है तो वह सिद्ध करती है कि इस प्रकार की हथेली वाला प्राणी अपने पर अत्यधिक विश्वास रखने वाला होता है। वह स्वार्थी और कांइयां होता है। इस प्रकार की हथेली विशेषतः मणिबन्ध रेखा की ओर अधिक आकार में होती है।

यदि हाथ कड़ा है, हथेली उङ्गलियों की अपेक्षा लम्बी हैं तो वह प्राणी क्रूर और पशु प्रकृति वाला होता है। हिंसा, हत्या की वह तनिक भी परवाह नहीं करता। इन गुणों का प्रभाव उस समय कम हो जाता है जब दूसरे लक्षण–जैसे कि मजबूत अँगूठा, और गहरी मस्तिष्क रेखा पाई जाती हों। हथेली आकार में सामान्य होनी चाहिए और उङ्गलियों और अँगूठे के साथ मेल खाने वाली होनी चाहिए। यदि इसके विपरीत होती है तो उसके प्रभाव भी विपरीत होते हैं।

यदि हथेली कोमल और झुर्रीदार हो तो वह अज्ञानता और मूर्खता की द्योतक होती है। ऐसी हथेली वाला प्राणी दिमाग, शरीर से क्षीण होता है। वह विलासी और आरामतलब होता है। अपने आलस्य के कारण वह सुअवसरों को खो देता है।

यदि हथेली मोटी और स्थिर होती है और उसका रंग सफेदी की ओर अग्रसर होता प्रतीत होता है तो वह स्वार्थी और अभद्र व्यवहार की द्योतक होती है।

यदि हथेली गहरी होती है तो वह दुर्भाग्य, हानि, दुःखपूर्ण जीवन और जीवन के हर क्षेत्र में निराशा सिद्ध करती है।

उङ्गलियों की तरह हथेली के भी तीन भाग किए गए हैं। उन भागों को निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है—

प्रथम भाग–वह कहलाता है जो स्थान हृदयरेखा और उङ्गलियों के बीच में स्थित होता है। शेष दो भाग प्रत्येक दो भाग से भिन्न होते हैं

और भिन्न-भिन्न हाथों को देखने पर ही उनको जाना जा सकता है।

उत्तर-पूर्वीय मतानुसार हथेली पर ग्रहों के स्थान को जानने के लिए चित्र नं० १ को गौर से देखें। इन्हीं ग्रहों के आधार पर भूत, भविष्य और वर्त्तमान बिगड़ता, बनता है। गौर से सातों ग्रहों को देखो। यह ग्रह एक-दूसरे से काफी मिले-जुले हैं। केवल गुरु को छोड़ कर छः ग्रह एक-दूसरे की परिधि में जाकर अपना-अपना असर दिखाने से नहीं चूकते। देखने से पता चलेगा कि—

सूर्य—तर्जनी और मध्यमा उङ्गली के मध्य भाग में इसका स्थान है। इसका क्षेत्र ऊपर से चौड़ा और नीचे की तरफ जाते-जाते सर्पाकार
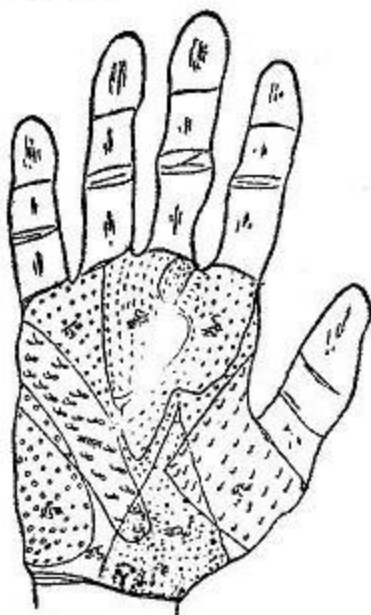
चित्र नं० १

पाश्चात्य मतानुसार—जिसे आजकल भारतीय ज्योतिषियों ने अपना लिया है। ग्रह-स्थानों की दशा और इनका वर्णन भाग २ में पढ़ें।

हो जाता है। तर्जनी से मध्यमा तक के तमाम भाग और मध्यमा के नीचे के कुछ भाग से लेकर यह नीचे की तरफ उतरता हुआ हथेली के मध्य भाग में जा पहुंचता है। इसके क्षेत्र में जितनी भी रेखाएं आती हैं उन पर, तथा उन ग्रहोंका भविष्य पर और मनुष्यकी जिंदगी पर गहरा प्रभाव होता है। कौन ग्रह हाथ के किस स्थान पर होता है, इसको जानना निहायत जरूरी है। दिए हुये चित्र में ग्रहों का पूरा विवरण मौजूद है। सब रेखाओं पर ग्रहों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। शनि भी तर्जनी की जड़ से कुछ दूर आकर सूर्य से मिलता है। शुक्र-मुद्रिका रेखाओं पर इनके मिलने वाले स्थानका गहरा प्रभाव पड़ता है।

शनि—मध्यमा की जड़ से शुरू होकर तर्जनी की जड़ और अनामिका के पूर्ण भाग में से थोड़ा-सा भाग छोड़कर यह समस्त क्षेत्र को घेर लेता है और अपना असर दिखाए बिना नहीं रहता। शनि का क्षेत्र यद्यपि सब ग्रहों से छोटा है परन्तु इसका महत्व सबसे अधिक है। इसका प्रभाव स्वास्थ्य, धन, भाग्य रेखाओं पर अधिक पड़ता है। पास ही बृहस्पति होने के कारण शनि उससे नहीं मिल सका, मगर तर्जनी की जड़ के पास जाकर इसने सूर्य-क्षेत्र के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया है—इसलिए उस स्थान से गुजरने वाली रेखाओं को बिना असर किए यह नहीं मानता। सूर्य के बलवान होते हुए भी यह चौघड़ियां लगाए बिना नहीं चूकता।

बृहस्पति—अर्थात् गुरु समस्त नक्षत्रों में बली है। तमाम शुभ-काम इसी लगन में निकाले जाते हैं। कनिष्ठा के निचले भाग पर इसका पूर्ण अधिकार है। किसी अन्य ग्रह की ताकत नहीं जो इसके क्षेत्र में आकर अपना प्रभुत्व जमा सके। इसका क्षेत्र सबसे ज्यादा बेतुका है। चित्र में देखने से मालूम होगा कि वह कनिष्ठा से लेकर अंगूठे के नीचे के भाग तक जा पहुँचा है, क्षेत्र काफी उल्टा-सीधा होने पर भी अधिक महत्वपूर्ण है।

मङ्गल—इस ग्रह का क्षेत्र बृहस्पति से नीचे है। विवाहरेखा के निचले भाग से प्रारम्भ होकर नीचे की तरफ पतला क्षेत्र बनाता हुआ यह शुक्र, चन्द्र ग्रहों से मिलता हुआ चन्द्रग्रहों के ऊपरी भाग में जाकर समाप्त हो जाता है। इसके क्षेत्र में गुजरने वाली रेखाओं पर तीन ग्रहों का प्रभाव बिना पड़े नहीं रहता। इसका क्षेत्र सबसे सीधा और सबसे लम्बा है। ऊपर की तरफ गुरु का स्थान है और नीचे की तरफ राहु का आसन है।

शुक्र—हथेली के निचले भाग में और अँगूठे के सामने वाली तरफ अर्ध गोलाकार क्षेत्र जहाँ कि मंगल से उसका मिलन होता है, वही भाग शुक्र का है। मंगल के प्रभाव के कारण यह ऊपर नहीं बढ़ पाता और नीचे राहु के प्रभाव के कारण चन्द्र पर अपना प्रभाव नहीं कर सकता। इसका स्वभाव सदा से बहुत ही शान्त है, मगर सदा ही उदण्डता करते रहने के कारण हठी है।

चन्द्र—शुक्र और चन्द्र बीच में राहु पड़ने के कारण एक-दूसरे से अलग-अलग हैं। मगर अधिक बलशाली होने के नाते चन्द्रमा के एक क्षेत्र पर अधिकार जमाए हुए, दूसरी तरफ बुद्ध ने घेर रखा है। नीचे की तरफ राहु है। सब प्रकार घिरा रहने पर भी चन्द्र नुकीली परिधि बनाता हुआ बृहस्पति के क्षेत्रके पास होकर सूर्यके क्षेत्र तक पहुँच गया। गुरु से अधिक प्रभावशाली होने के कारण सूर्य को नहीं छू पाया। शनि और सूर्य के बीच में सर्प की तरह कुण्डली मारे हुए केतु बैठा है। नीचे चन्द्र के पास राहु है जो समय-समय पर अपना प्रभाव अवश्य दिखाते हैं। सूर्य, चन्द्र का प्रभाव अधिक होने के कारण भी उन्हें जैसा ही मौका मिलता है वे अपना प्रभाव बिना दिखाए नहीं मानते।

बुद्ध—अँगूठे के पास ही बुद्ध का क्षेत्र है। यह सबसे सीधा है। अधिक किसी को न तो छेड़ता है और न अपने प्रभाव द्वारा किसी को हानि पहुँचाना ही चाहता है। चन्द्र के सम्पर्क में आकर और उसी के

योग से कभी-कभी उग्र हो जाता है, परन्तु उस उग्रता में भी किसी को हानि नहीं पहुँचाता।

चित्र में दिए गए नक्षत्रों के क्षेत्रों का स्थान ध्यान रखा जाना बहुत जरूरी है और उसके साथ ही यह भी मालूम कर लेना चाहिए कि कौन-कौन सी रेखाएँ इस स्थान में होकर गुजर रही हैं। जिस क्षेत्र से जो रेखा निकलती है, और जिस क्षेत्र में होकर गुजरती है, और जहाँ जाकर समाप्त होती है, उस पर उन तमाम क्षेत्रों का असर जरूर पड़ता है। इसी वजह से इन क्षेत्रों में से आने जाने वाली रेखाओं को गौर से देखकर पता लगाना बहुत जरूरी है।

## कर—पृष्ठ

हथेली के पिछले भाग को कर-पृष्ठ कहते हैं यदि कर-पृष्ठ चौड़ा कछुए की पीठ के समान अधिक उठा हुआ है जिस पर नसें न दिखाई देती हों और रोंए भी अल्प ही हों वह अति उत्तम होता है।

रूखा, सिकुड़ा हुआ, नीचे दबा हुआ, चपटा और उभरी हुई नसों वाला कर-पृष्ठ यदि रोंगटों सहित हो तो वह अशुभ माना जाता है। यदि इस तरह का कर-पृष्ठ स्त्री का हो तो वह विधवा होती है, कामुक और बिलासिनी होती है और उसकी प्रकृति अनाचार की ओर अधिक होती है। वेश्या का कर-पृष्ठ ऐसा ही होता है।

पाश्चात्य विद्वानों का कथन है कि यदि कर-पृष्ठ पर घने बाल हों तो प्राणी चंचल-हृदय, वाचाल, बिलासी, अधिक आहार करने वाला और आलसी होता है। यदि कर-पृष्ठ पर बिलकुल भी रोंए न हों तो प्राणी डरपोक या नपुंसक होता है।

हथेली के साथ ही कर-पृष्ठ को भी देख लेना उचित है।

# चौथा अध्याय

## अँगूठा

मनुष्य के हाथ में अँगूठा उतना ही महत्वपूर्ण होता है जितना कि उँगलियाँ। शरीर विज्ञान-वक्ताओं का कथन है कि अँगूठे का सीधा सम्पर्क रक्त धमनियों द्वारा सीधा मस्तिष्क से है। नाड़ी द्वारा मस्तिष्क से सम्बन्धित होने के नाते अँगूठा शरीर विज्ञान में जितना उपयोगी है, उतना ही ज्योतिष के लिए भी।

अँगूठे दो प्रकार के होते हैं।

१—सीधा, सुदृढ़।

२—कोमल और झुका हुआ।

सीधे सुदृढ़ अँगूठे वाले मनुष्य अधिक स्वेच्छाचारी तथा हठी होते हैं। ऐसे लोग आसानी से दोस्ती नहीं करते हैं और सफर में खामोश बैठे रहते हैं।

कोमल और झुके हुए अँगूठे वाले मनुष्य आसानी से अपरिचित मनुष्यों से सफर में मेल कर लेते हैं। ऐसे अँगूठे वाले संसार में अधिक हैं।

यदि ऊपर का जोड़ मुड़ा हो तो दूसरे के कहने में आ जाते हैं और दूसरों के फायदे के लिए खुद नुकसान उठाते हैं। वे प्रायः धन को व्यर्थ के कामों में बरबाद करते हैं। उपकार के बहाने दूसरोंके धोखे में आ जाते हैं और अपना धन दे डालते हैं या स्वयं बर्बाद करते हैं।

यदि अँगूठा पहले जोड़के नीचे दूसरे जोड़ पर झुक रहा हो तो ऐसे मनुष्य समय को अपने अनुकूल या प्रतिकूल देखकर विचार बदलते हैं। किसी के कहने में नहीं आते। वे आसानी से किसी से

धोखा नहीं खा सकते और जहाँ रुपये-पैसे का सवाल सामने आता है, वे सावधानी से काम लेते हैं और प्रायः रूखापन प्रगट करते हैं।

जिनका अँगूठा बहुत मोटा, सिरे पर गोल और बहुत चौड़ा होता है, वे उग्र और जानवरों की तरह जिद्द वाले और थोड़ी बातों में जोश में आ जाने वाले होते हैं। ऐसे लोगों से सावधानी के साथ व्यवहार करना चाहिए।

यदि अँगूठा बीच में पतला हो तो ऐसे मनुष्य होशियार, जल्दबाज और चतुर होते हैं। मौका पाकर अवसर को नहीं छोड़ते और अपना काम निकाल लेते हैं। सोच-विचार में समय नष्ट नहीं करते।

अँगूठा लचीला हो तो मीठे रागों के गाने की शक्ति प्रगट होती है। नुकीला अँगूठा हो तो चापलूसी पसन्द होते हैं।

अँगूठे के गुणों पर विचार करते समय हाथ, उङ्गलियों की बनावट ग्रह-स्थानों और एक निगाह मस्तकरेखा पर डालकर फल कहना चाहिए। क्योंकि इनके अच्छे होने से स्वभाव में बहुत-कुछ परिवर्तन हो जाता है और फल कहते समय गलती हो जाने का भय नहीं रहता। नीचे लिखे नियमों को ध्यानमें रखनेसे अँगूठेके पहचानने में और फल कहने में विशेष सुविधा होती है।

अँगूठे के आकार—

१. लम्बा सामान्य आकार वाला।
२. छोटा, मोटा और कुरूप।
३. अधिक नोंकदार।
४. वर्गाकार, सिरे पर मोटा।
५. बीच में पतला।
६. मध्य भाग मोटा, जोड़ भद्दा।
७. ऊर्ध्वभाग अधिक पतला।
८. अगला हिस्सा अधिक मोटा।
९. सिरे का भाग गोल।

उसका फल—

१. बुद्धिमान एवं चतुर।

२. मूर्ख एवं क्रोधी।

३. अस्थिर, डावांडोल, तीक्ष्ण स्वभाव।

४. हठी एवं स्वेच्छाचारी।

५. निर्बल विचारशक्ति वाला, परन्तु दूरदर्शी।

६. अदूरदर्शी, अविवेकी।

७. लगन का कच्चा।

८. धूर्त्त, क्रूर, हठी, झगड़ालू।

९. हिंसक तुनकमिजाजी और हमेशा लड़ने-मरने को तैयार।

ध्यान देकर देखने से इन नौ प्रकार के अँगूठों को जाना जा सकता है और उसी के अनुसार फलादेश भी कहा जा सकता है।

यह कहना अत्युक्ति नहीं कि उंगलियों की सहायता बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। मनुष्य के हाथ में चार उँगली और पांचवां अँगूठा है, यदि उन उङ्गलियों को अँगूठे की सहायता न हो तो हर काम करने में मनुष्य असमर्थ होता है, इसलिए उँगलियों की अपेक्षा अँगूठा अत्यन्त लाभदायक है। इसलिए इसका वर्णन करना उचित है, इससे मनुष्य की इच्छाशक्ति तथा तर्कशक्ति का ज्ञान होता है।

अँगूठा ऊँचा उठा हुआ, मांस से भरा हुआ, गोल आकृति का हो तो उत्तम फल देने वाला होता है। टेढ़ा, बाँका, छोटा, चपटा हो तो सुख-सौभाग्य का नाशक होता है।

चौड़ा फैला हुआ, अँगूठा हो तो दुखी, स्त्री-हीन, और यदि स्त्री का अँगूठा पूरी तरह से गोल हो तो विधवा होती है। जिस स्त्री के पांव का अँगूठा पूरी तरह से गोल शक्ल का हो तो वह पतिव्रता होती है।

जब मनुष्य तर्क-शक्ति का प्रयोग करता है तो अक्सर वह सब उंगलियों को भीतर दबाके अँगूठे को ऊपर रखता है, और जब मनुष्य

क्रोध करताहै तब उसकी विचारशक्ति नष्टहो जाती है। जब वह दूसरों को मारने को मुट्ठी बाँधता है, उँगलियों के भीतर अँगूठा दबा कर घूँसा लगाने की तैयारी करता है यानी विचारशक्ति के आवेश में नष्ट होने पर अँगूठा उँगलियों के अन्दर हो जाता है । जब विचार-शक्ति जागृत होती है तो अँगूठा बाहर रहता है। इससे यह ज्ञात होता है कि अँगूठा इच्छाशक्ति को बतलाता है। जब तक इस शक्ति का शरीर और मन पर अधिकार रहता है तबतक वह उँगलियोंके भीतर नहीं रहता है। इससे यह साफ प्रगट है कि अँगूठा मुख्य और अति महत्व का है। अँगुष्ठ में दो ही पोर होते हैं। तीसरा पोर शुक्र के ऊपर के भाग की हड्डी में होता है। मनुष्य का स्वभाव जानने के लिए अँगूठा बहुत उपयोगी है। अंगूठे के मुख्य तीन भाग हैं—पहिले प्रेम, दूसरा तर्क, तीसरा इच्छाशक्ति ।

अधो-भाग, प्रेम का है। मध्य-भाग, विचारशक्ति का है और ऊर्ध्व-भाग, यानी नाखून वाला भाग इच्छाशक्ति का है। इन तीनों में जो भाग बड़ा हो उसी के मुताबिक उस भाग का गुण कहा जाता है।

ऊर्ध्व भाग यदि बड़ा हो तो स्वेच्छाचारी व हठी होने की शक्ति विचारशक्ति से अलग होती है। इस भाग के छोटे होने से आत्मा निर्बल होती है और अपनी शक्ति पर विश्वास नहीं होता है। स्वभाव चंचल और विचार कमजोर होते हैं।

मध्य भाग यदि ऊर्ध्व भाग से बड़ा हो तो विचारशक्ति अधिक बली होती है और ऐसे पुरुष किसी निश्चय पर नहीं पहुंचते हैं।सोच-विचार में समय नष्ट करते हैं और अवसर को गँवा देते हैं। ऐसे लोग प्रायः बहमी और कुकर्मी देखे गए हैं। यदि मध्य और ऊर्ध्व भाग बराबर हो तो अधिक उपयोगी है। अपना काम खूब सोच-विचार कर करते हैं और अपने सभी कामों में सफल होते हैं।

अधो-भाग में प्रेम का स्थान है। जब यह भाग लम्बा हो तो प्राणी अपनी कामवासनाओं पर अधिकार रखता है और यदि यह

भाग छोटा और मोटा हो तो कामवासनाएँ विशेष रूप में होती हैं।

## पाश्चात्य मत

अब हम पाश्चात्य ज्योतिष शास्त्रियों के मतानुसार अँगूठे को तीन भागों में विभाजित करते हैं। उनका कहना है कि जिस प्रकार अँगुलियों में तीन पोर होते हैं, उसी प्रकार अँगूठे में तीन पोर होते हैं। प्रत्येक भाग अपना गुण स्पष्ट करता है।

प्रथम भाग आत्मशक्ति, निर्णयशक्ति और दूसरों पर शासन करने की क्षमता स्पष्ट करता है। दूसरा भाग तर्क-वितर्क, दूरदर्शिता और उत्तम दृष्टिकोण का प्रतीक है। तृतीय भाग प्रेम,सहानुभूति और विलासपूर्ण प्रकृति का द्योतक है।

अँगूठे को परखने के लिए हथेली को अपनी ओर करो ताकि ज्ञात हो सके कि हथेली के ऊपर अँगूठा किस अवस्था में रहता है। यदि अँगूठा ऊपर की ओर सीधा रहता है तो सिद्ध होता है कि ज्ञान की मात्रा अल्प है और गुण-ग्राह्यता कम है। यदि अँगूठा अधिक चौड़ा और नीचे की ओर झुका होता है तो यह सिद्ध होता है कि प्राणी में मानवता के समस्त गुण विद्यमान हैं, वह उदार, स्वतंत्रता का उपासक और दूसरों के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करने वाला है।यदि अँगूठा छोटा होता है तो वह अच्छे गुणों को कम करता है मगर इस प्रकार के अँगूठे बहुत कम देखे जाते हैं।

अँगूठों की बनावट विभिन्न प्रकार की होती है। उनका वर्गीकरण निम्नरूप से किया जाता है—

१—प्रारम्भिक (Elementary)—इस प्रकार के अँगूठे की कोई निश्चित आकृति नहीं होती। वह केवल मांस के एक टुकड़े के समान हाथ से जुड़ा हुआ भद्दा प्रतीत होता है। उस आकृति से स्थूल शरीर, रूखे व्यवहार और पाशविक प्रकृति को जाना जाता है।

१—भीरू (Nervous)—इस प्रकार के अँगूठे चपटे होते हैं और इनको देखने से ऐसा लगता है कि उस पर बहुत अधिक भार है।

अतः इस तरह का चपटापन उसका विशेष लक्षण है। इस भाँति के अँगूठों के सिरे विभिन्न प्रकार के होते हैं। नियमानुसार तो वह कोमल और झुर्रीदार होते हैं मगर वह अपने चपटेपन द्वारा ही पहचाने जाते हैं। इस तरह के अँगूठों से स्पष्ट है कि चपटे अँगूठे वालों में स्फूर्ति और शक्ति अधिक होती है ।

३—चौड़ा अँगूठा (Broad Thumb)—इस तरह का अँगूठा उपर्युक्त दोनों तरह के अँगूठों से भिन्न होता है।यदि उसे पीछे से देखा जाए तो नाखूनोंकी ओर से तो उसका आकार स्पष्ट रूपसे चौड़ा दिखाई देता है, देखने से ही स्वस्थ और मजबूत दीखता है। चौरस अँगूठा दृढ़ निश्चय, और स्वस्थ गठे हुए शरीरका द्योतक है। इससे स्पष्ट होता है कि ऐसे अँगूठे वाला प्राणी लगन का पक्का और धुनी होता है।

४—मजबूत अँगूठा (Strong Thumb)—इस तरह का अँगूठा बिलकुल एक-सी मोटाईका होताहै और कोमल होता है।इसका सिरा चौरस होता है। उसके नाखून चिकने और स्वच्छ रंग के होते हैं। इससे स्पष्ट होताहै कि इस तरह के अँगूठे वाला प्राणी आत्मशक्ति का दृढ़ होता है, उसमें तर्क-वितर्क की शक्ति भी अधिक होती है।राज-नीतिज्ञ, पक्की धुन और बुद्धिमता, स्थिर विचार, तर्क और धैर्य इसके प्रमुख गुण हैं।

५—पैडिल की आकृति वाला अँगूठा ( Paddle Shaped Thumb)—इस प्रकार के अँगूठे को देखने से स्पष्ट होता है कि आत्मिक शक्ति वाला भाग नाखून की ओर से देखने में चौड़ा प्रतीत होता है मगर वह हर तरफ चौड़ा नहीं रहता।न तो वह पतला होताहै और न वह चौड़ा ही होता है।इससे प्रतीत होता है कि आत्मिक शक्ति के साथ २ प्राणी दृढ़ निश्चय वाला होता है, और यदि बढ़ाव अधिक होता है तो वह धूर्त्तता और मक्कारी को स्पष्ट करताहै। यद्यपि इसकी लम्बाई कम होती है मगर पैडिल की-सी शक्ल से इसमें शक्ति आ जाती है।

६—लचीला अँगूठा ( Flexible Thumb )—जोड़ों पर झुकाव के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि प्राणी फिजूलखर्च, चतुर, बुद्धिमान, उदार, सुहृदय और कलात्मक होताहै। चौरस सिरा, स्पष्ट भाग्य रेखा, शनिग्रह का स्पष्ट योग यदि मनुष्य के हाथ में और पड़ा हो तो उसका फल अति उत्तम होता है।

७—कड़ा अँगूठा (Stiff Thumb)—यह स्वयं ही खड़ा और हाथ के साथ भी खड़ा रहता है।यह स्पष्ट करता है कि प्राणी कर्मशील सामान्य ज्ञानी, कमखर्च और चतुर होता है। शांत, सजग, विचारशील विश्वस्त और गुण-ग्राह्यता आदि गुणों को इस प्रकार का अँगूठा स्पष्ट करता है।

८—मिश्रित अँगूठा ( Clubbed Thumb )–इस प्रकार के अँगूठे को एक बार देखकर कभी भी नहीं भुलाया जा सकता। उसका ऊपरी भाग मोटा होता है, और उसके नाखून छोटे होते हैं और सत्य तो यह है कि यह भाग भद्दी गोल गेंद की भांति प्रतीत होता है। इससे स्पष्ट है कि प्राणी अत्यन्त धूर्त्त, और बदमिज़ाज, हमेशा विरोध की भावना से पूर्ण और मक्कार होता है।

९—अधिकांश में पाया जाने वाला अंगूठा ( General )—लम्बे अँगूठे, सुडौल उँगलियों को शक्ति प्रदान करते हैं और छोटे अँगूठे उनकी कार्यशक्ति को बढ़ा देते हैं। लम्बे अँगूठे, कलात्मक गुणों को कम करते हैं नोंकदार सिरे उनमें वृद्धि करते हैं। लम्बे अँगूठे, जिनके सिरे चौरस होते हैं कर्मशील बनने में सहायक होते हैं मगर चौरस सिरे वाले छोटे अँगूठे प्राणी को बकवादी बनाते हैं और कर्मशीलता से दूर खींचते हैं।

# पाँचवा अध्याय

## हाथ की उङ्गलियाँ

हर मनुष्य के हाथ में चार उँगलियाँ होती हैं। अक्सर ऐसा भी देखा गया है कि किसी के हाथ में पांच भी होती हैं। पांचवीं उँगली किसी में मिली होती है या हथेली के किसी भाग में उठी हुई होती है। सामुद्रिकशास्त्र में पांचवी-उंगली का कुछ महत्व नहीं माना गया। उसका परिणाम उसी उँगली की तरह होता है जैसा कि उसकी पास वाली उँगली का।

चारों उँगलियां एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। वह आकृति ही में भिन्न नहीं होतीं वरन् उनका महत्व और सामुद्रिक शास्त्रीय फल भी भिन्न होता है। अँगूठे की तरफ उँगलियोंका नामकरण विचार करने से सामुद्रिकशास्त्र द्वारा उनके नाम इस प्रकार हैं:—

१—तर्जनी।

२—मध्यमा।

३—अनामिका।

चित्र नं० २ को गौर से देखकर इनके नाम स्मरण करना और उनका अध्ययन करना जरूरी है।

प्राकृतिक ढंग से ही उँगलियोंकी या समस्त शरीर की बनावट है और सामुद्रिकशास्त्र ज्ञाताओं ने उसी प्राकृतिक ढंग से अपना काम निकालने के लिए विविध प्रकार के फल मिलने की व्यवस्था कर ली है। प्रत्येक आदमीकी उंगलियोंकी गठन दूसरे की उँगलियों की गठन से भिन्न होगी। गठन पर ही फल निर्भर होता है।

फल भिन्न हो सकता है, परन्तु कुछ भाग गठन में ऐसे हैं जो तमाम उँगलियों में समान होते हैं। गठन कैसी भी हो परन्तु उसकी

बनावट भिन्न नहीं हो सकती। जैसे-

१—हर आदमी की उँगलीमें प्रत्येक उँगली के तीन भाग होते हैं, मामूली भाषा में उसे पोर और सामुद्रिक भाषा में उसे युग कहतेहैं।

२-प्रत्येक उँगली के ऊपर वाले भाग में एक चिन्ह होता है। इस चिन्ह का उल्लेख आगे किया जायगा।अधिकतर यह चिन्ह, शङ्ख, चक्र या गदा के होते है। हर उँगली के चिंन्ह भिन्न हो सकते हैं या सबके एक ही हों।

३—प्रत्येक उँगली दूसरी से कुछ दूर होगी। हथेली पर जहाँ उँगलियों की जड़ होती है, दूसरी उँगली उस जड़ से कुछ दूर होगी।
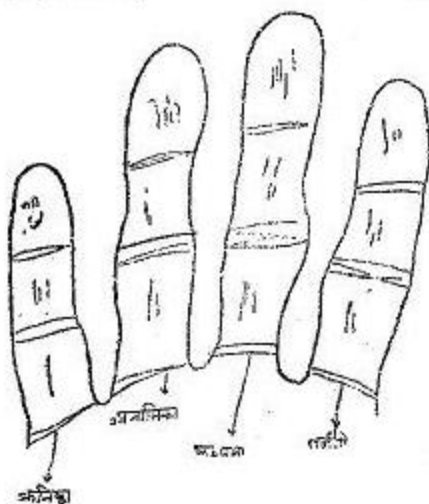
चित्र नं० २

---

तर्जनी—सबसे पहली, मध्यमा सबसे बड़ी, अनामिका उससे छोटी और कनिष्ठा—सबसे छोटी उँगली को कहते हैं। ज्योतिषशास्त्र में उँगलियाँ इन्हीं नामों से परिचित हैं।

पास-पास या एक ही स्थान पर जड़ें होना बिल्कुल असम्भव तो नहीं वरन् बहुत ही कम देखा गया है।

४—उङ्गली के प्रथम पोर के पिछले भाग में नाखून होता है। इसी नाखून के ऊपर सुन्दरता निर्भर करती है। लम्बी, चपटी, भद्दी उङ्गलियाँ नाखून की बनावट के ऊपर ही निर्भर होती हैं।

५—उङ्गलियों की युग रेखाएँ कटी हुई होती हैं। पोर भी बीच में कटे-फटे होते हैं। किसी की उङ्गलियाँ इन जगहों पर स्वच्छ नहीं होतीं।

उङ्गलियों को गौर से देखने के बाद उनके युगों में राशियों का बास जानना निहायत जरूरी है। प्रत्येक युग में राशियों का बास होता है। पूर्वी सामुद्रिकशास्त्र-ज्ञाताओं तथा पश्चिमी सामुद्रिकशास्त्र-ज्ञाताओं का इस विषय में मतभेद है। वह राशियों को भिन्न प्रकार से प्रत्येक युग के साथ मानते हैं और पूर्वी विभिन्न प्रकार से।

नीचे प्रत्येक उङ्गली के युग के हिसाब से राशियों का बास बताया गया है। पूर्वी और पाश्चात्य दोनों मत प्रस्तुत हैं। चित्र नं० ३ को देखने से प्रत्यक्ष हो जावेगा कि प्रत्येक उङ्गली के प्रत्येक युग में किस राशि का बास होता है।

पूर्वी मतानुसार—

कनिष्ठा में—तुला, वृश्चिक और धन।
अनामिका में—कर्क, सिंह और कन्या।
मध्यमा में—मकर, कुम्भ और मीन।
तर्जनी में—मेष, वृष और मिथुन।

इनका क्रम से बास होता है। इन राशियों का फल पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए इनका पूरा-पूरा ध्यान रखना अत्यन्त जरूरी है।

चित्र नं० ३

[एक उङ्गली में तीन पर्व होते हैं। पर्वों को पोर भी कहते हैं। प्रत्येक पर्व में एक राशि का होना आवश्यक है। कौन राशि किस पोर में है इसका जानना जरूरी है।]

पाश्चात्य मतानुसार मासों में युग का विभाजन किया गया है। प्रत्येक युग में एक मास होना पाया जाता है। प्रत्येक युग में दिए हुए नम्बरों के हिसाब से मासों का विवरण निम्न है:—

| १—मार्च | पूर्वी मत से | राशि | मेष |
|---|---|---|---|
| २—अप्रेल | ,, | ,, | वृष |
| ३—मई | ,, | ,, | मिथुन |
| ४—दिसम्बर | ,, | ,, | मकर |
| ५—जनवरी | ,, | ,, | कुम्भ |
| ६—फरवरी | ,, | ,, | मीन |
| ७—जून | ,, | ,, | कर्क |
| ८—जुलाई | ,, | ,, | सिंह |
| ९—अगस्त | ,, | ,, | कन्या |
| १०—सितम्बर | ,, | ,, | तुला |
| ११—अक्टूबर | ,, | ,, | वृश्चिक |
| १२—नवम्बर | ,, | ,, | धन |

उपर्युक्त प्रकार से ही हाथ की चारों उङ्गलियां ऋतु अनुसार विभाजित की गई हैं। पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि—

तर्जनी में—बसन्त ऋतु का वास होता है।

मध्यमा में—शीत का वास होता है।

अनामिका में—ग्रीष्म का वास होता है।

कनिष्ठा में—हेमन्त विराजमान रहता है।

प्रत्येक उङ्गली में एक ऋतु विराजमान है और उङ्गली का प्रत्येक युग एक मास का द्योतक है। पश्चिमी तथा पूर्वी विद्वान दोनों ही, चार ऋतुओं की गणना करते हैं। केवल भारतवर्ष ही में छः ऋतुएँ होती हैं, इसके विपरीत संसार के तमाम देशों में केवल चार ही ऋतु होती हैं। इस कारण से चार ऋतुओं का ही विचार रखकर सामुद्रिक शास्त्र की गणना की गई है।
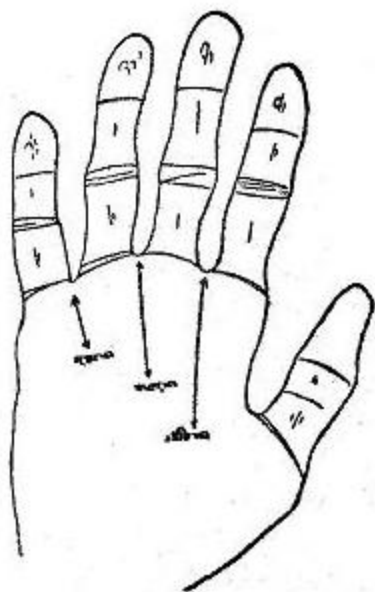
चित्र नं० ४

प्रत्येक मनुष्य की हर उङ्गली भिन्न प्रकार की होती है। हर आदमी की उङ्गली दूसरे की उङ्गली से भिन्न होती हैं। अधिकतर निम्न प्रकार की उङ्गलियाँ पाई जाती है:— (देखिए चित्र नं०४)

बिल्कुल सीधी तथा चौरस—इस तरह की उङ्गलियाँ विशेषकर स्त्रियों तथा पुरुषों के हाथ में होती हैं। इस लक्षण वाली उङ्गलियाँ जड़ से लेकर चोटी तक एक-सी सीधी होती हैं। उनके तीनों भाग बराबर २ मोटे होते हैं। न तो वह किसी तरफ विशेष झुकी होती हैं और न उनका कोई भाग ही किसी स्थान पर मोटा होता है।

२—पतली, चौरस परन्तु टेढ़ी उङ्गलियाँ—कई लोगों की उङ्गलियाँ पतली और चौरस होती हैं। उनका झुकाव आगे, पीछे, दाँए, बाँए चाहे जिस ओर हो सकता है।

३—पतली परन्तु गोलाई लिए हुए—कुछ लोगों की उङ्गलियाँ पतली तो अवश्य होती हैं, परन्तु वह कुछ-कुछ गोलाई लिए हुए होती हैं। कुछ लोगों की उङ्गलियाँ तो कमान की तरह गोलाई लिए हुए देखी गई हैं। मगर कम गोलाईदार उङ्गलियाँ ही अधिक देखने को मिलती हैं।

४—नीचे से जड़ तो मोटी परन्तु चोटी पतली—कुछ उङ्गलियों की जड़ें तो मोटी होती हैं, परन्तु उनकी चोटी पतली होती है। वह जैसी-जैसी चोटी की तरफ बढ़ती हैं, पतली दिखाई देने लगती हैं।

५—बिल्कुल सीधी परन्तु मोटी उँगलियाँ—उङ्गलियाँ बिल्कुल सीधी होती हैं। परन्तु वह काफी मोटी होती हैं। जड़ भी मोटी होती है और उनकी चोटी भी मोटी दिखाई देती हैं।

६—जड़ के पास मोटी और बीच में पतली—जड़ के पास मोटी होने वाली उङ्गलियों को गठीली कहते हैं। उनकी गाँठें बिल्कुल साफ दिखाई देती हैं। बीच के पर्व गाँठों की अपेक्षा पतले होते हैं।

**७-लचीली उँगलियाँ**—कुछ उङ्गलियाँ बहुत लचकदार होती हैं। जरा से झटके से वे लचक खा जाती हैं। वे आगे-पीछे दोनों तरफ मोड़ी जा सकती हैं। उनके ऊपर वाले पोर पीछे की तरफ भी मोड़े जा सकते हैं।

अन्य कई और तरह की उङ्गलियाँ भी हो सकती हैं, परन्तु वे काफी कम तादाद में पाई जाती हैं। इसलिए उनका उल्लेख नहीं है। समय-समय पर जैसी-जैसी उङ्गलियाँ देखने को मिलती हैं उन सबका फल ऊपर लिखी उङ्गलियों के अनुसार ही बताया जा सकता है। ऊपर लिखी भिन्न प्रकार की उङ्गलियों के गुणों के अनुसार उनके फल दिए जाते हैं।

**१-बिल्कुल सीधी तथा चौरस**—यह उङ्गली जड़ से लेकर चोटी तक बिल्कुल सीधी होती हैं। वह अधिकतर पतली और देखने में सुन्दर होती हैं। उनके नाखून भी सुन्दर और चमकदार होते हैं। अधिकतर इस प्रकार की उङ्गलियाँ स्त्रियों तथा नाजुक मिजाज पुरुषों के हाथों में पाई जाती हैं। इस प्रकार की उङ्गलियों को देखकर तथा निम्नलिखित लक्षणों को मिलाते हुए उनका फल कहना चाहिए:—

साधारणतया तो ये उङ्गलियाँ बिल्कुल सीधी ही दिखाई पड़ेंगी, मगर जब उनको एक साथ मिलवाया जायगा तो उनमें अन्तर अवश्य दिखाई देगा। हो सकता है कि इस प्रकार की उङ्गलियों में अन्तर कम हो। जैसा भी अन्तर हो, उसका वैसा ही फल होता है।

तमाम उङ्गलियों को मिलाने से विस्तृत छिद्र दिखाई पड़ें तो दरिद्रता का लक्षण माना जाता है। बड़े-बड़े स्पष्ट छिद्र दरिद्रता के द्योतक होते हैं।

कनिष्ठा और अनामिका के बीच में छिद्र न हों तो वृद्धावस्था सुखी होगी और यदि थोड़ा अन्तर हो तो वह स्वतन्त्रता प्रिय पुरुष होगा या स्त्री होगी। पतली व चौरस उङ्गलियों के छिद्र या तो होते

ही नहीं और यदि होते हैं तो वह बहुत ही कम होते हैं और मुश्किल से ही दिखाई देते हैं।

अनामिका और मध्यमा के बीच छिद्र न हों तो सुखी होने के लक्षण हैं। यदि सूक्ष्म छिद्र हों तो स्थिर स्वभाव का लक्षण है। उसका स्वभाव और बुद्धि बहुत ही सुन्दर होती है। वे प्रत्येक कार्य को पूर्ण-तया विचार कर और स्थिर होकर करने की क्षमता रखते हैं।

मध्यमा और तर्जनी के बीच में यदि अन्तर न हो तो वह आयु के प्रथम भाग में सुखी रहे होंगे। जीवन का प्रारम्भिक भाग सुख से कटना चाहिए। यदि अन्तर हो और छिद्र दिखाई पड़े तो जीवन का प्रारम्भिक भाग कष्टमय रहा हो परन्तु वह स्वप्न-विचार वाले होंगे।

इन लक्षणों को देखकर प्रश्नकर्त्ता के बारे में थोड़ा-सा पता लग जाता है जिसके द्वारा आगे का हाल बताने में काफी सहायता मिलती है।

इस प्रकार की उङ्गलियों को देखकर और उनके अन्तरों के द्वारा फल सहज ही बताया जा सकता है। इन उङ्गलियों की यह प्रधान बात है प्राणी की नाजुक-मिजाजी और उसके जीवन-क्रम को अन्तरों के द्वारा जाना जा सकता है।

२—पतली चौरस परन्तु टेढ़ी—इस प्रकार की उङ्गलियां भी अधिक देखने में आती हैं। इस तरह की उङ्गलियां या तो आगे की तरफ झुकी होती हैं या उनका झुकाव पीछे की तरफ होता है। वे बहुत ही बेढंगी मालूम होती हैं, उनको देखने से ऐसा ज्ञात होता है कि उनके ऊपर या तो बोझ डाला गया है या उनसे किसी अन्य तरह का काम लिया गया है। जिसके फलस्वरूप उनकी आकृति में फर्क हो गया है। वे दाँए-बाँए भी झुकी होती हैं। इनमें से प्रत्येक अपना भिन्न असर रखती है। झुकाव के अनुसार ही उसका फल कहा जाता है।

अगर तमाम उङ्गलियाँ आगे की तरफ झुकी हुई हों तो वह पुरुष चञ्चल हृदय वाला होता है। उसका हृदय किसी भी कार्य में नहीं

लगता। यदि जड़ सीधी हो परन्तु बीच का भाग हथेली की तरफ झुका हो तो वे चञ्चल स्वरूप और हठीले होते हैं। उनके हृदय में जो बात आती हैं उन पर जम नहीं पाते और जो कुछ वे सोचते हैं अगर उसके विपरीत उनसे कुछ कहा जाय तो हठ करने लगते हैं और अपने हठ पर दृढ़ रहकर अपनी बात पूरी कराने से उन्हें विशेष आराम मिलता है। आगे की ओर झुकी रहने वाली उङ्गलियों के स्वामी को:—

चञ्चल हृदय वाला और हठीला।

मन्द-बुद्धि और कम-अक्ल।

साहसहीन, विकट कार्यों से मुंह छिपाने वाला।

एकान्त प्रिय और सर्वदा खामोश रहने की इच्छा रखने वाला।

अपने विचारों में उलझा रहने वाला।

बताया जा सकता है। परन्तु किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले कुछ बातें और जान लेना जरूरी है। एकदम उङ्गलियों का झुकाव देखकर ही किसी विशेष लक्षण पर पहुँच जाना बुद्धिमानी नहीं है।

अगर तमाम उङ्गलियाँ पीछे की तरफ झुकी हों तो वह चालाक और गम्भीर होने का लक्षण है। जिसकी उङ्गलियों का झुकाव पीछे की तरफ होगा वह चालाक होता है। उङ्गलियां जड़ पर तो सीधी और समान हों और चोटी की तरफ बढ़ती हुई ऊपर को झुकी हों तो नीचे लिखे फल कहे जा सकते हैं। वह प्राणी—

चालाक और दृढ़ विचारक हो सकता है।

अगर नर्मी से उसे सलाह दी जाय तो वह आसानी से मान सकता है।

वह चालाक होने के साथ ही अपना मार्ग स्वयं ढूंढ़ने वाला होता है।

एक वस्तु को त्याग कर उससे अच्छी पाने की लालसा में भटकने वाला होता है। वह मृगतृष्णा में भटकते रहने के पूर्ण लक्षणों से युक्त होता है।

अगर तमाम उङ्गलियाँ एक ही तरफ झुकी हुई हों अर्थात् तमाम उङ्गलियाँ कनिष्ठा की तरफ झुकी हुई हों तो उससे प्रत्यक्ष है कि वह एक दूसरे के लक्षण ग्रहण करती हैं। कनिष्ठा की तरफ जिन उङ्गलियों का झुकाव होता है उसका फल है कि वह प्राणी—

दुष्ट प्रकृति और दुर्व्यवहारी होता है।

अकड़ और अपनी बात पर अड़ जाने का लक्षण उनमें पाया जाता है।

शरीर में कम ताकत परन्तु क्रोध अधिक होता है। वह अपनी शक्ति का ग़लत अन्दाज लगाता है। अपने को सबसे अधिक बली समझ कर सबसे लड़ने-मरने को तैयार रहता है।

अगर तमाम उङ्गलियाँ तर्जनी की तरफ झुकी हुई हों तो वह पुरुष विचारवान् और नम्र होता है। उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बात को अच्छी तरह सोचता और उस पर विचार करता है। उस पर ध्यान देने के बाद उसके अनुसार कार्य करता है। वह स्वभाव का नम्र और शीलवान् होता है। जिसकी तमाम उङ्गलियों का झुकाव तर्जनी की ओर होता है। वह—

विचारवान् और शीलवान् होता है।

उसका हृदय विशाल और कोमल होता है। वह प्रत्येक बात का सार निकालने की चेष्टा करता है।

स्वभाव का नम्र और अन्य लोगों का आदर करने वाला होता है। वह नम्र, विचारशील और दानी होता है।

लेखक हो तो विशेषरूप से साहित्यिक विषयों पर लिखने में विज्ञ होता है।

**३. पतली परन्तु गोलाई लिए हुए**—अक्सर कुछ उङ्गलियाँ जड़ से लेकर ऊपर के पर्व तक पतली होती हैं, परन्तु वे गोलाई लिए होती हैं। हो सकता है कि उनका झुकाव आगे की तरफ हो या पीछे

की तरफ हो। जिनकी उङ्गलियाँ आगे की तरफ झुकी होती हैं वे पुरुष—

१—श्रमजीवी, परिश्रम से पैदा करके अपना तथा अपने परिवार का पालन-पोषण करने वाले होते हैं। वे कठिन-से-कठिन परिश्रम करके भी अपना भरण-पोषण करने की क्षमता रखते हैं।

२—नम्र परन्तु विचारशील कम होते हैं। उनमें विचार करने की शक्ति कम होती है। वे पूरी तरह से किसी विषय को गम्भीर होकर नहीं सोच सकते। शीघ्र ही वे एक निर्णय पर पहुँच जाते हैं और उस पर कार्य करने लगते हैं।

३—वे समझदार होते हैं। अगर कोई सलाह की बात बताई जाए तो वे शीघ्र ही उसे मान लेते हैं।

४—वे मृग-तृष्णा में भटकने वाले होते हैं। हमेशा वे निन्यानवें के फेर में पड़े रहते हैं। उन्हें यह चिन्ता रहती है कि किस तरह उन्हें मन-वाञ्छित फल मिले। इसी तृष्णा में वे इधर-उधर भटका करते हैं।

कहना अतिश्योक्त न होगा कि वे मनुष्य जिनकी उङ्गलियों का झुकाव आगे की तरफ होता है वे मध्यम वर्ग के होते हैं। उन्हें हमेशा अपने विचारों पर कार्य करने की प्रेरणा होती है।

जिन लोगों की उङ्गलियों का झुकाव पीछे की ओर होता है उनका स्वभाव उङ्गलियों की गति के अनुसार होता है। पीछे की तरफ झुकी हुई उँगलियों को देखकर सहज ही बताया जा सकता है कि—

१—वे प्राणी मन्द-बुद्धि होते हैं। उनमें सोचने की शक्ति कम होती है। वे निरे मूर्ख होते हैं। विचारशक्ति उनमें बिल्कुल नहीं होती। वे किसी भी काम को करने से पहले बिल्कुल नहीं सोच पाते। जो कुछ भी सोचते हैं वे काम करने के बाद ही सोचते हैं।

२—साहसहीन होते हैं। किसी भी काम को करने से पहले ही

उनकी हिम्मत टूट जाती है। उनमें साहस नहीं होता। उनकी धैर्यशक्ति का ह्रास हो जाता है। वे कार्य करने से पहले ही हिम्मत खो बैठते हैं और अपना हाथ उस कार्य से खींच लेते हैं।

३—वे भीरू और डरपोक होते हैं। उनको अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता है। इसलिए वे खामोश रहना अधिक पसन्द करते हैं। खामोशी से ही वे अपनी शक्ति के ह्रास को छिपाना चाहते हैं।

४—काम करने की हिम्मत उनमें नहीं होती। इसलिए वे पड़े-पड़े सोचा करते हैं। उनकी काम करने की शक्ति उन्हें धोखा दे देती है। परन्तु वे ख्याली पुलाव बनाया करते हैं।

इन उँगलियों का झुकाव मनुष्य के स्वभाव और भविष्य का हाल बताने में काफी मदद देता है।

४. नीचे से जड़ मोटी परन्तु चोटी पतली—इस प्रकार की उँगलियों के कई प्रभाव होते हैं। जड़ मोटी होती है परन्तु चोटी पतली होती है। इस तरह की उँगली वाले मनुष्यों के बारे में नीचे लिखी बातें बताई जा सकती हैं—

१—वे मनुष्य बहुत ही होनहार और किसी विद्या में दक्ष होते हैं। वे किसी-न-किसी हुनर को अच्छी तरह जानते हैं। वे चित्रकारी करने वाले अथवा अन्य किसी कलात्मक कार्य में दक्ष होते हैं।

२—चालाक, मक्कार या पाकिट-मार होने के साथ-साथ वे खूनी भी हो सकते हैं।

३—वे अपने बारे में बहुत कम विचार कर सकते हैं। उनका काम बहुत मुश्किल और कठिन भी हो, तो भी वे धन के लोभ में उसे कर डालते हैं।

५. बिल्कुल सीधी परन्तु मोटी उंगलियाँ—ये उंगलियाँ बिल्कुल सीधी और मोटी होती हैं। उनकी जड़ें मोटी होती हैं और

उनकी चोटी भी मोटी होती हैं। शुरू से लेकर वह अन्त तक भारी-भरकम दिखाई देती हैं।

इस प्रकार की उङ्गलियों वाले प्राणी दरिद्री होते हैं।

उङ्गलियों के अग्र-भाग चार प्रकार के होते हैं। पहला चपटा, दूसरा गोल, तीसरा चौरस, चौथा नोकदार।
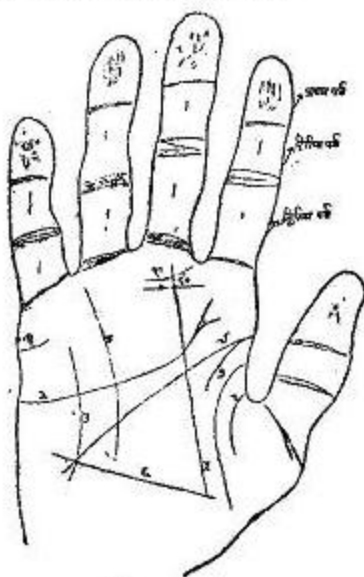
चित्र नं० ५

## उँगलियों के पर्व

ज्योतिषाचार्य पर्व के विषय में कहते हैं कि अंगुष्ठ के दो पेटी और अन्य उङ्गलियों में तीन पेटियाँ होती हैं। पेटियों के ऊपर खड़ी रेखाओं के रहने से शुभ फल होता है। उङ्गलियों का संयोग करने से छेद देख पड़े तो निर्धनत्वकारक है।

भाग्यवान् और बुद्धिमान् पुरुषों के हाथ की उङ्गली निरन्तर

मिली हुई होती हैं। बड़ी आयु वाले पुरुषों की उङ्गली सीधी और बड़ी होती हैं।

धन-हीन प्राणियों की उङ्गली मोटी होतीहैं और हथियार वाले पुरुषों की उङ्गली बाहरको झुकी होती हैं और दासों की उँगली छोटी और चपटी होती हैं।

जिनके अँगूठे में से उँगली प्रगटे अर्थात् उँगली की संख्या पांच हो तो वह धन, धान्य से हीन और थोड़ी आयु वाले होते हैं।

उँगली दो प्रकार की होती हैं—चिकनी और गठीली। गठीली उँगली वाले बुद्धिमान्, चतुर, दूरदर्शी, समझदार और जो कुछ काम करते हैं उसका विवरण रखते हैं। सामाजिक कार्य को करने में दत्त-चित्त होते हैं।

चिकनी उँगलियों वाले तरंगी और स्वाभाविक रूप से कार्य करने वाले होते हैं। ऐसी उँगली वाले कार्य को मध्य में ही छोड़ देते हैं। बिना विचारे उतावलेपन से कार्य आरम्भ कर देते हैं और अपनी शक्ति पर विश्वास न होने के कारण उसे छोड़ भी देते हैं।

१. पहली उँगली [ तर्जनी ] का स्वामी बृहस्पति है।
२. दूसरी ,, [ मध्यमा ] का ,, शनि है।
३. तीसरी ,, [अनामिका] का ,, सूर्य है।
४. चौथी ,, [कनिष्ठा] का ,, बुध है।

पहली उँगली,तर्जनी लम्बीहो तो प्राणीको शासन-शक्ति,भोग-विलास की इच्छा और उच्च-पद पाने की अभिलाषा, प्रदान करती है। जब मध्यमा—दूसरी उँगली के करीब २ बराबर हो तो निष्ठुरता, उपद्रव, आत्म-प्रशंसा और अधिकार पाने की अधिक अभिलाषा देती है। यदि वह उँगली छोटीहो तो प्राणी शान्त स्वभाव और जुम्मेदारी से डरने वाला होता है। यदि टेढ़ी हो तो शासन के अयोग्य है। उद्देश्य-हीन और अल्पप्रतिष्ठा वाला होता है।

यदि शनि की उंगली की तरफ झुकी हो तो घमण्डी होता है। यदि वह उँगली पतली, चपटी, नोंकदार हो तो जड़-बुद्धि वाला होता है।

दूसरी उँगली या मध्यमा लम्बी हो तो एकान्तवास, अध्ययन-शक्ति और गुप्त विद्याओं में रुचि देती है। अधिक लम्बी हो तो उदास चित्त, निर्बल इच्छा-शक्ति और भाग्य पर भरोसा करने वाला होता है। यदि छोटी या नोंकदार हो तो ओछापन, विचारहीन की द्योतक है। टेढ़ी हो तो गन्दे विचार उत्पन्न करती है और प्राणी नित्य रोगी रहता है।

प्रथम पोर लम्बा हो तो शीघ्र मृत्यु की अभिलाषा करता है।

यदि दूसरा पोर लम्बा हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष, वेदान्त मेसमेरिज्म आदि में प्रीति होती है।

यदि तृतीय पोर लम्बा हो तो लोक-प्रिय एवं मितव्ययी होता है।

तीसरी उङ्गली, अनामिका लम्बी हो तो प्राणी यश प्राप्त करने की इच्छा रखने वाला, कला-कौशल, दस्तकारी, साहित्य इत्यादि की ओर रुचि रखने वाला होता है। यदि अधिक लम्बी हो तो व्यापारिक चतुरता, जूआ और धन-प्राप्ति की लालसा होती है।

छोटी हो तो उदासीनता और कला-कौशल की ओर से अरुचि पैदा करती है। टेढ़ी हो तो अपयश देती है।

यदि लम्बाई मध्यमा के बराबर हो और दूसरा पोर कुछ भरा हो और मंगल का पर्वत उठा हो तो तर्क-शक्ति वाला, जुए में रुचि, नीलाम, लाटरी तथा अन्य भाग्य-परीक्षक खेलों में प्रेम रखने वाला होता है। यदि उपरोक्त लक्षण के साथ बुद्ध का पर्वत ऊंचा हो तो सट्टे का व्यापार करने वाला होता है।

चौथी उङ्गली, कनिष्ठा लम्बी हो तो ज्ञान-शक्ति, व्याख्यान देने की शक्ति और भाषाओं के ज्ञान को ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करती है। अधिक लम्बी हो तो छल, चतुरता और तीव्र बुद्धि देती है।

यदि छोटी हो तो मन्द-बुद्धि, कार्य में असफलता और बात आसानी से समझना इत्यादि गुण उत्पन्न करती है। यदि टेढ़ी हो तो चुपचाप रहने की आदत, दूसरों के कहने में आसानी से आजाना और विचारों का निर्बल होना इत्यादि होता है। उत्तम गुणों तथा नैतिक ज्ञान की कमी होती है। आया हुआ लाभ को हाथ से निकल जाने का योग देती है। जिनसे सहायता मिलेगी, प्राणी उनकी ओर ध्यान न देगा। यदि अग्र-भाग की नोंक चौरस हो तो उत्तम शिक्षक होता है।

उङ्गलियाँ लम्बाई में हथेली के समान होनी चाहिए। ऐसा होने में बुद्धि और दिमागी शक्ति विशेष रूप से होती है और यह भाग्यवानी का चिन्ह है। उङ्गलियाँ अधिक लम्बी हों तो मनुष्य विरह-वेदना से व्याकुल, अपने ध्यान में मग्न रहने वाला और प्रायः वहमी या शक्की होता है। ऐसे पुरुष आस्तिक और हर बात को बिना अनु-संधान किए विश्वास नहीं करते हैं। बोलने तथा काम करने में सुस्त होते हैं, शीघ्र निर्णय नहीं करते हैं।

छोटी उङ्गली वाला मनुष्य चालाक, साहसी, संकुचित-स्वभाव, तुरन्त काम में लग जाने वाला और बहुत जल्दी सोचता है। लेखन-शैली संक्षेप में तात्पर्य समझाने वाली व गम्भीर होती है। उसे आसानी से उभाड़ा जा सकता है। लम्बी-मोटी उङ्गलियों वाला कठोर होता है। संक्षेप में मतलब समझ लेता है। बाहरी दिखावे की परवाह नहीं करता। यदि छोटी उङ्गली पुष्ट हो तो निर्दयता-सूचक हैं।

# छठा अध्याय

## नाखून

जितना महत्व सामुद्रिकशास्त्र में उङ्गलियों का है उतना और उससे भी अधिक महत्व नाखूनों का है। असल बात यह है कि नाखूनों द्वारा प्राणी की मानसिक क्रियाओं को आसानी से समझा जा सकता है। नाखून से ही पैतृकरूप में पाई हुई दुर्बलताओं और मानसिक समस्याओं को जाना जा सकता है। ऐसा अक्सर देखा गया है कि यही दुर्बलताएँ आगे चलकर भयङ्कर रोग का रूप धारण करके प्राणी के प्राणों तक को हर लेती हैं।
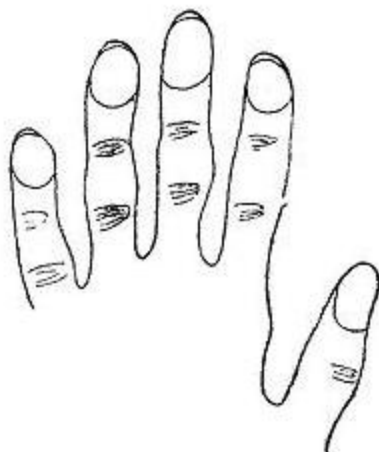
चित्र नं० ६

[ नाखून की बनावट से आदमी के पिछले समय का हाल ज्ञात होता है और साथ ही उसकी तन्दुरुस्ती का भी

हाल मालूम होता है। इस हाल को जानने के लिए न खूनों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।]

नाखून चार प्रकार के होते हैं—लम्बे, तंग, छोटे और चौड़े।

लम्बे नाखून वालों का सीना, फेफड़ा कमजोर होता है। खास-कर जब उनमें रेखाएँ पड़ी हों। यदि कोई रोग न हो तो भी शरीर कमजोर और नाजुक होगा।

तंग नाखून वालों की रीढ़ की हड्डी कमजोर होती है। मुड़ी हुई और बहुत पतली होती है। यह रीढ़ की हड्डी के झुकाव और शरीर की नाजुकता का द्योतक है। यह कायर होने का लक्षण है।

छोटे नाखून दिल की कमजोरी बताते हैं। खास कर जब अर्ध-चन्द्र नाखून में बहुत छोटे हों और मुश्किल से दिखाई देते हों।

यदि चन्द्र, आकार में बड़े हों तो हृदय की चाल तीव्र और रुधिर का प्रभाव वेग से होता है।

नाखून चौड़े, ऊपर को उठने वाले हों, या बाहर की तरफ हों तो लकवे का भय है और खास कर जब वे कौड़ी की तरह दिखाई देते हों।

श्वेत रंग के नख सुपारी की आकृति के हों तो क्रोध तुरन्त नहीं आता है। जब आता है तब वह जल्दी नहीं जाता। स्त्री के नख श्वेत होंगे तो वह चालबाज व ढीठ होगी।

चौड़े नाखून वालों को हँसी उड़ाना, व्यंग, कटु बोलना और चिढ़ाना खूब आता है। इस तरह के लोगों का क्रोध देर तक रहता है, जल्द शान्त नहीं होता।

छोटे-चौड़े नाखून वालों को बहस करना खूब आता है और यदि अधिक छोटे, चौड़े हों तो दमा, शीत और अन्य गले के रोग होते हैं।

नाखून बहुत चपटे और धँसे हुए हों तो स्नायु सम्बन्धी रोगों के सूचक हैं। नख, भूसी के समान ( लम्बे, छोटे ) हों तो वह पुरुष हिजड़ा होता है। चपटे या फटे हों तो धन-हीन। जिनका नख कुत्सित हो वह कुदृष्टि से निहारने वाला और जिनका नख लाल ताम्रवर्ण का हो तो वह धनी होता है।

छोटे, पीले नाखून वाला दगाबाज स्वभाव का होता है। उसका शारीरिक और आत्मिक बल कमजोर होता है।

छोटे और लाल नाखून वाला उग्र स्वभाव का होता है। छोटे समकोण और नीले नाखून वालों को दिल की बीमारी होती है।

लम्बा, पतला, मुड़ा हुआ नख, गले में जख्म की बीमारी का चिन्ह है, यदि इस पर रेखाएँ हों तो तपैदिक होती है।

## स्वभाव

अगर नाखून चौड़ाई में अधिक हों तो स्वतन्त्रता और निश्चयात्मक बुद्धि की सूचना है। स्वभाव कोमल, सभ्यतायुक्त, आसानी से समझने वाला होता है।

छोटे, गोल तथा बहुत श्वेत रंग के नख वाला क्रोधी स्वभाव का होता है।

बहुत चमकीले नाखून वाला मानसिक कल्पना में तीव्र होता है।

स्वच्छ, सफेद व काले नख होने से मनुष्य दुष्ट, जिद्दी, विश्वासघाती और खेती के काम में होशियार होता है।

छोटे व फीके नख वाला लुच्चा व लफंगा होता है।

लम्बे, सफेद रंग के नख वाला नीतिवान् होता है।

गोल नख होने से आनन्द, सुख, भोगने वाले स्वभाव का होता है।

कठोर नख होने से लकवा, पक्षाघात रोग का डर रहता है।

नखों पर श्वेत रंग के धब्बे होने से पाचन-शक्ति में दोष होता है।

ऊँचे झुके हुए नख से राज्यक्ष्मा होने का सन्देह रहता है।

छोटे अर्ध चन्द्र के समान श्वेत धब्बे होने से रुधिर की क्रिया में दोष होता है।

पीले नाखून वाला निर्दयी और उग्र स्वभाव का होता है।

नखों का तल भाग नुकीला हो तो जल्द नाराज होने वाला और जल्द अपमानित होने वाला होता है। लम्बे और सफेद रंग के नख होने से प्राणी नीतिज्ञ होता है।

नाखून पर सफेद दाग स्नायुविक कमजोरी का लक्षण हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि सफेद दाग शुभ-सूचक है और काला दाग नाखून पर अशुभ-सूचक है। नीचे लिखे हुए चक्र से नाखून के दागों का लक्षण समझना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के नाखूनों के लक्षण और उनका ज्ञान पाने के लिए इस चक्र को गौर से देखो।

**नाखूनों के ऊपर वाले दागों के फल**

| नाखून | सफेद दाग | काला दाग |
|---|---|---|
| तर्जनी | सम्मान, यश | अपयश, नीच-प्रकृति |
| मध्यमा | देश-विदेश भ्रमण | मृत्यु, भय |
| अनामिका | लाभ, कीर्ति, श्रद्धा | हार, अपकीर्ति |
| कनिष्ठा | लाभ, विश्वास | हानि, दुराशा |
| अँगूठा | प्रेम, लाभ | हानि, अपराध |

यदि दाग नाखून के अगले हिस्से में हों तो भूतकाल के सूचक होते हैं। मध्य में होने पर वह वर्तमानकाल के द्योतक हैं। सबसे नीचे अर्थात् जड़ में होने से भविष्य के परिणामों की सूचना देते हैं।

## पाश्चात्य मत

उङ्गलियों के नाखूनों द्वारा स्वास्थ्य और व्यापार के सम्बन्ध में ज्ञान होता है। अतः उनकी परीक्षा आवश्यक है। नाखून चिकने, सुडौल और गुलाबी रंग के होने चाहिए। ऊपर से नीचे की ओर धारियों से स्पष्ट होता है, शरीर में कष्ट है। जैसे-जैसे रोग बढ़ता जाता है वैसे-वैसे नाखून भी उङ्गलियों से ऊपर की ओर उठने लगते हैं।

नाखूनों पर सफेद दाग इस बात के द्योतक होते हैं कि रोग निकट ही है और जैसे-जैसे रोग बढ़ता जाता है यह सफेद दाग बढ़ते जाते हैं, और घने होकर नाखून पर छाने लगते हैं। उसके बाद नाखून उंगली के मांस से ऊपर की ओर उठने लगता है और स्पष्टतया उठा हुआ प्रतीत होता है। इस तरह उठकर वह पीछे की तरफ मुड़ता हुआ
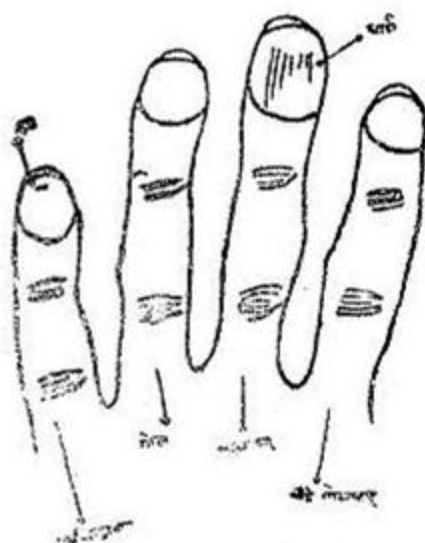
चित्र नं० ७

प्रतीत होता है और अपना स्वाभाविक रूप छोड़ देता है। इस समय यह खतरा बताता है और इससे रोग की विषमता का अनुमान लगाया जाता है। इसी समय लकवे का भी भय हो सकता है।

तंग नाखून वाला प्राणी यद्यपि गठीले शरीर का नहीं होता, मगर उसमें स्फूर्ति और कार्य करने की अटूट शक्ति होती है। दरअसल यह मनोवैज्ञानिकता का द्योतक है और यह नम्र स्वभाव को स्पष्ट करता है। चौड़ा नाखून, स्वस्थ, गठे हुए शरीर का द्योतक है। तंग नाखून या तो श्वेत, पीले, नीले और गुलाबी होते हैं। ये कभी भी लाल नहीं देखे गए, यद्यपि तले में वे नीले देखे गए हैं जिनके द्वारा रक्त संचार की गति क्षीण होने का अनुमान किया जाता है।

छोटे नाखून मस्तिष्क की उलझनों के द्योतक होते हैं। यदि नाखून अधिक छोटे न हों तो वे अन्वेषणों की ओर लगाने वाली प्रकृतियों के सूचक होते हैं। अत्यधिक छोटे नाखून, चपटे और जिनके ऊपर मांस भी निकल आता है—वे रोग की सूचना देते हैं। यदि छोटे नाखूनों के साथ ही, अँगूठा बड़ा हो, हाथ कड़े हों और उँगलियों में गांठें हों तो उस प्राणी में विरोधी भावना प्रधान होती है।

खुले हुए और स्वच्छ नाखूनों वाला प्राणी, जिनके ऊपर के सिरे चौड़े हों, गोलाकार उँगलियों के ऊपर हों और नीचे की ओर चौरस हों और रंग के गुलाबी हों, वह प्राणी विचारों का स्पष्ट और साफ बात कहने वाला होता है। उसमें ईमानदारी प्राकृतिक होती है। नाखूनों की चौड़ाई और गोलाकार अवस्था उसके हृदय और खुले विचारों को स्पष्ट करती है। गुलाबी रंग निरोगी शरीर को स्पष्ट करता है।

लम्बी उँगलियों पर अक्सर चौकोर नाखून देखे गए हैं। इस प्रकार के नाखून हृदय-रोग के सूचक होते हैं। अक्सर इस प्रकार के नाखून हर तरह की उँगलियों पर पाए जाते हैं। इस प्रकार के नाखून अक्सर तले में गहरे नीले होते हैं और उनकी गठन हृदय की कमजोरी की द्योतक होती है।

# सातवाँ अध्याय

## ग्रह-ज्ञान

सामुद्रिकशास्त्र में गणना करते समय ग्रहों पर विशेष ध्यान रखा जाता है। अतः ग्रह और उनके विषय की सभी बातों को जान लेना हितकर है।

ग्रह नौ होते हैं—

१. सूर्य
२. चन्द्र
३. भौम
४. बुद्ध
५. गुरु
६. शुक्र
७. शनि
८. राहु
९. केतु

इन नवग्रहों में से सामुद्रिकशास्त्री केवल सात ग्रहों को ही मानते हैं तथा राहु और केतु को छोड़ देते हैं। अतः इन सात ग्रहों के स्थान हर मनुष्य के हाथ में होते हैं। ये तमाम ग्रह अपने निश्चित स्थान पर होते हैं। केवल मंगल अर्थात् भौम कभी-कभी हटकर दूसरे स्थान पर होता है। पीछे तीसरे अध्याय में हथेली के विषय में उल्लेख करते समय उनके स्थानों का जिक्र तो हम कर आए हैं मगर अब हम उनके गुणों के बारे में उल्लेख करेंगे।

अनामिका उङ्गली के मूल में सूर्य का पर्वत होता है।

१. सूर्य—राज्य-मान, प्रतिष्ठा, कला-कौशल, विद्या, धर्म, तीर्थ, कीर्ति, सुन्दर वस्तुओं से प्रेम, साहित्य, कविता, चित्रकारी, संगतराशी आदि कलाओं की प्रशंसा, अधिक ऊँचा नाम पाने की अभिलाषा ।

चन्द्र का पर्वत मंगल पर्वत के नीचे मणिबंध पर्यन्त तक कहलाता है ।

२. चन्द्र—आन्तरिक पीड़ा, मन सम्बन्धी विचार, मातृ-सुख, कृषि, स्त्री, धनादि विचार, शुद्ध, प्राकृतिक-सुन्दरता का उपासक, साहित्य-कविता से प्रेम, अधिक ऊँचे-गहरे विचारों में डूबे रहना । मस्तकरेखा अच्छी न हो तो प्रभाव भयङ्कर । चन्द्रमा, शुक्र दोनों ऊँचे और एक-दूसरे के पास हों तो विषय-वासना अधिक, प्राय: व्यसनी ।

मंगल के पर्वत दो स्थानों में होते हैं—एक बुद्ध के पर्वत के नीचे हृदयरेखा से चन्द्र के पर्वत तक, दूसरा इसी के सामने शुक्र के ऊपर और जीवनरेखा के उदय-स्थान के नीचे होता है ।

३. भौम—( मंगल )—बल-पराक्रम, अग्निमांद्य, फोड़ा-फुन्सी आदि रुधिर विकार, विवाद में जय । बृहस्पति, शुक्र के बीच में जीवनरेखा के भीतर मुसीबत के समय बुद्धि से काम लेने वाला, साहसी, अधिक ऊँचा हो तो झगड़ालू एवं उपद्रवी । बुद्ध, चन्द्रमा के बीच में हो तो सहनशील, सत्याग्रही अपने ऊपर अधिक सन्तोषी ।

कनिष्ठा उङ्गली के मूल में बुद्ध का पर्वत होता है ।

४. बुद्ध—विद्या, बुद्धि, वाणिज्य, काव्य, शिल्प, सौभाग्यादि अनेक शुभफल, देशाटन से प्रेम, विचारों में चंचलता, दूसरे से अधिक बोलना, झगड़ना और मस्तकरेखा सीधी हो तो विज्ञान-व्यापार में उन्नति होती है ।

तर्जनी के मूल के नीचे गुरु का पर्वत होता है।

५. गुरु—मान-प्रतिष्ठा, धर्म, विवाह,धन-धान्यादि, समस्त शुभफल, उच्च-पद पाने की इच्छा, स्वाभिमान, उत्साह, न्याय-प्रिय, छोटी जिम्मेदारी पसन्द नहीं। यदि अधिक ऊँची हो तो स्वयं प्रशंसा, अधिकार की इच्छा, न्याय के लिये लगन से कार्य करता है।

शुक्र का पर्वत अँगुष्ठ से मणिबन्ध तक फैला हुआ रहता है।

६. शुक्र—विवाह, प्रताप, सौंदर्य स्त्री-सुख, काव्य-कला, प्रमोद इत्यादि। ज्ञान-उच्च, रुधिर का प्रवाह उतना ही अधिक, तन्दुरुस्त इच्छा प्राबल्य, प्रेम लालसा नहीं, नम्र प्रेमी।

मध्यमा उँगली के मूल के नीचे वाले पर्वत को शनि का पर्वत कहते हैं।

७. शनि—क्लेश, दुख, अनेक पीड़ा, व्यसन, द्यूत, पराभाव इत्यादि विविध कष्ट। खामोशी, एकान्तवास, चतुरता, प्राय: ऊँचे दर्जे की गान विद्या से प्रेम, किसी बात पर घण्टों बहस करने की आदत, प्राय: तत्वज्ञान, अध्यात्मवाद की रुचि। अस्वाभाविक रूप से ऊंचा हो तो प्राय: उदास, निराशा से घिरे रहना, बुरे-बुरे विचार, किसी से बात करने को जी नहीं चाहना। बृहस्पति और चन्द्र ऊँचा हो तो तीर्थ में मृत्यु।

## ग्रहों से फल विचार

सूर्य से आत्मा, पिता का प्रभाव, नैरोग्य, शक्ति और सम्पति या शोभा को विचारें। रक्त, वस्त्र, वन, पर्वत, पराजय।

चन्द्र से मन, बुद्धि,राजा की प्रसन्नता,माता, संपदा को विचारें वंशोदय।

मंगल से बल, रोग, गुण, भूमि, पुत्र, कुटुम्ब, जागीर, ख्याति

को विचारें। सेनापतित्व, विजय, ज्युडिशियल अधिकार।

बुद्धि से विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाक्‌शक्ति को विचारें। संतति, वेदान्त इतिहास, गणित, ।

गुरु से प्रजा, धन, तन, तुष्टि, पुत्र, और ज्ञान को विचारें। आन्दोलनकारी बुद्धि।

शुक्र से पत्नी, वाहन, आभूषण, काम, क्रीड़ा, सांख्य को विचारें। व्यापार, गायन शास्त्र, इन्द्रजाल-विद्या, ज्योतिष-विद्या।

शनि से आयु, जीवन-मरण कारण, सम्पत्ति और विपत्ति को विचारें। शूल रोग, नौकर-चाकर।

राहु से बाबा को और केतु से नाना को विचारें।

## ग्रहों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

### ग्रहों के नाम

सूर्य—हेलि, तपन, दिन, कृत, भानु, पूषा, अरुण, अर्क, रवि।
चन्द्र—शीतद्युत, उड़पति, ग्लौ, मृतांग, इन्दु, चन्द्र, शशि, सोम।
मंगल—आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, अंगारक, क्रूरनेत्र।
बुध—सौम्य, तारातनय, बुध, वित्, बोधन, इन्द्रपुत्र।
बृहस्पति—मन्त्री, वाचस्पति, सुराचार्य, देवज्य, जीव।
शुक्र—काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, स्फुजित, दानवेज्य, आरफ।
शनि—छायासुनु तरणितनय, कौण, कोण, शनि, आर्कि, मन्द।
राहु—सर्प, असुर, फणि, तम, सैंहिकेय।
केतु—ध्वज, शिखी, गुलिक, मनि।

### शुभग्रह

पूर्ण चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र, बुध, शुभग्रह कहलाते हैं। ये सुख देते हैं।

करतलमें जहाँ-जहाँ ग्रह बैठे हों, वहीं यदि टिके रहे तो शुभफल करना चाहिए। जो ग्रह दक्षिण की तरफ टिके हों यदि उत्तर में जा बैठें

और जो ग्रह पूर्व भाग में बैठे हों यदि पश्चिम में चले जाँय, तो सब ग्रह विपरीत फल को देते हैं।

## पापग्रह

क्षीण चन्द्रमा, शनि, सूर्य, केतु, मंगल, पाप ग्रह कहलाते हैं। बुध पाप ग्रह के साथ पापी ग्रह हो जाता है। ये सब पापी ग्रह हैं। शुभ कार्य करते समय यदि ये पड़ें तो वह कार्य निषेध है।

## ग्रहों के स्वरूप

सूर्य—प्रतापशाली, चौकोर देहवाला,काला या लाल रंग वाला सिंगरफ के रंग के समान आँख वाला और सतोगुणी होता है।

चन्द्र—संचारशील, कोमल वाणी वाला, ज्ञानी, अच्छी चितवन वाला, सुन्दर तथा पुष्ठ अंगों वाला,बुद्धिमान, गोल आकार वाला, कफ व वात वाला होता है।

मंगल—क्रूर दृष्टि वाला, जवान, उदारशील, पित्त-प्रकृति अति चंचल, पतली कमर, लाल गोरे अंग कामी, तमोगुणी तथा प्रतापी है।

बुध—दूध के समान शरीर वाला, दुबला, साफ बोलने वाला हँसमुख, रजोगुणी, हानि करने वाला, धनी, कफ, वापी, प्रतापी और विद्वान होता है।

गुरु—बड़े शरीर वाला, पीतवर्ण, कफी, पीली आँखें तथा बाल, बुद्धिमान, सर्व गुणयुक्त, अति बुद्धिमान, शोभायुक्त सतोगुणी होता है।

शुक्र—स्याम, घुँघराले बाल वाला, सुन्दर अंग वाला, अच्छे नेत्र वाला, कफी, कामी, रजोगुणी, सुख, बल और रजोगुण की शान वाला होता है।

शनि—कर्कश बोल तथा सुडौल अङ्गों वाला, दुबला, कफी, बादी, दांत बड़े सुन्दर, पीले नयन, आलसी और तमोगुणी होता है।

मनुष्य के भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वभाव बता देने में उपर्युक्त ज्ञान अति आवश्यक है। जितने तादाद में अमुक ग्रह की स्थिति हाथ में देखे उसी प्रकार फल कहना चाहिए।

## ग्रहों के मित्रादि

सूर्य के मित्र—मंगल, चन्द्र, गुरु।
सूर्य के शत्रु—शुक्र, शनि, राहु और केतु।
चन्द्र के मित्र—सूर्य, बुध।
चन्द्र के शत्रु—शत्रु कोई नहीं है। गुरु, मङ्गल, शुक्र, शनि सम हैं।
मंगल के मित्र—सूर्य, चन्द्र, गुरु।
मंगल के शत्रु—बुध। शुक्र, शनि सम हैं।
बुध के मित्र—सूर्य, शुक्र।
बुध के शत्रु—चन्द्र।
शुक्र, शनि, मंगल, सम हैं।
गुरु के मित्र—सूर्य, चन्द्र, और मंगल।
गुरु के शत्रु—शुक्र, बुध। शनि सम हैं।
शुक्र के मित्र—शनि, बुध हैं।
शुक्र के शत्रु—सूर्य, चन्द्र,। मंगल सम है।
शनि के मित्र—शुक्र, बुध हैं।
शनि के शत्रु—सूर्य, चन्द्र, मंगल।
राहु और शनि की बड़ी मित्रता है।
चन्द्र और गुरु की बड़ी मित्रता है।
मंगल और सूर्य की बड़ी मित्रता है।

सूर्य और राहु की बहुत शत्रुता है।
गुरु और शुक्र की बड़ी शत्रुता है।
चन्द्र और बुध की बड़ी शत्रुता है।
सूर्य और शनि की बड़ी शत्रुता है।

## ग्रहों का शुभाशुभ विचार

ग्रहों की शत्रुता और मित्रता का ध्यान रखना अत्यन्त जरूरी है। जब हाथ में एक ग्रह को दूसरे की तरफ झुकता देखें तो फल का विचार करते समय मैत्री और बैर के सम्बन्ध को जरूर सोचें। इन ग्रहों के फल पर विचार करते समय वर्षों की अवधि का ध्यान रखना आवश्यक है।

सूर्य २२ वर्ष में फल देता है। २२–२४ वर्षों के बीच।
चन्द्र २४ वर्ष में फल देता है। २२–२५ वर्षों के बीच।
मङ्गल २८ वर्ष में फल देता है। २८–३२ वर्षों के बीच।
बुध ३२ वर्ष में फल देता है। ३२–३५ वर्षों के बीच।
गुरु १६ वर्ष में फल देता है। १६–२२ वर्षों के बीच।
शुक्र २५ वर्ष में फल देता है। २५–२८ वर्षों के बीच।
शनि ३६ वर्ष में फल देता है। ३६–४२ वर्षों के बीच।
राहु ४२ वर्ष में फल देता है। ४२–४८ वर्षों के बीच।
केतु ४८ वर्ष में फल देता है। ४८–५० वर्षों के बीच।

जो ग्रह अपने स्थान में हो उसी वर्ष निश्चय सुख और भाग्योदय होता है। जो ग्रह जहाँ हैं वहीं टिका रहे तो शुभ फल जानना चाहिए। यदि ग्रह दक्षिण की तरफ हो और उत्तर की ओर जा बैठे अथवा जो पूर्व में हो और पश्चिम की तरफ जाए तो विपरीत फल जानना चाहिए। जहाँ उङ्गलियाँ हैं उसे पूर्व दिशा, जहाँ कब्जा है उसे पश्चिम दिशा, जहाँ अँगूठा है उसे उत्तर दिशा और जहाँ चन्द्रमा है उसे दक्षिण दिशा जानना चाहिए। मङ्गल, सूर्य प्रवेशकाल में और शनि, चन्द्र अन्त में फल देते हैं।

## ग्रह-कृत कष्ट

सूर्य—अग्नि रोग, ज्वर वृद्धि, क्षय, अतिसार आदि तथा राजा, देवता, किंकरों और ब्राह्मणों से कष्ट हो और चित्त में दोष होता है।

चन्द्र—पांडु-रोग, कमल, पीनस, स्त्री द्वारा रोग, देवता आदि से व्याकुल होता है।

मङ्गल—बीज दोष, कफ, हथियार, अग्नि, वाले रोग, गिल्टी, फोड़ा, घाव, दरिद्रता से पैदा हुए रोग, स्थूल रोग तथा वीर शैवगण, भैरवादि गण से भय उत्पन्न होता है। शरीर में भय का संचार रहता है।

बुध—गुदा रोग, उदर, दृष्टिपात, कुष्ठ, मन्दाग्नि, शूल, संग्रहणी आदि तथा मन विकार से पैदा हुए भूत-पिशाचों से भय होता है।

गुरू—आचार्य, गुरू, ब्राह्मणादि से शाप, दोष गुल्म रोग, होता है।

शुक्र—स्त्रियों के विकार से प्रमेह रोग या अपनी प्यारी स्त्रियों के दोष से अन्य शीघ्रता से फैलने वाले रोग, बदन में घर कर लेते हैं। उनसे कष्ट होता है।

शनि—दारिद्रय, अपने कर्म, चोर, पिशाच संधि रोगों में क्लेश देता है। इसकी अवधि में अनेक तरह की पीड़ाएँ तथा व्याधा सन्मुख उत्पन्न होती हैं।

राहु—मिरगी, मसूरिका, रज्जु, छींक या क्षुधा, दृष्टि-रोग, कीड़े प्रेत, पिशाच, कुष्ठ, भूत, अरुचि और बहुत ही भयप्रद रोग होते हैं। इस ग्रह के फल अति हानिकारक और व्याधिदायक हैं। सदैव इसकी शान्ति का उपाय सोचना चाहिए।

केतु—खाज, मरीचिका, शत्रु, कीड़ों का रोग और छोटी जाति वालों और आचारहीन पुरुषों को शारीरिक तथा मानसिक कष्ट होता है।

## ग्रहों के रंग तथा वर्ण

सूर्य का तांबे का वर्ण या श्याम।
चन्द्र का सफेद वर्ण।
मङ्गल का लाल वर्ण या गोरा।
बुद्ध का हरित वर्ण या श्याम।
गुरु का पीला वर्ण या गोरा।
शुक्र का कबरा वर्ण या सफेद।
शनि का कृशा वर्ण या काला।
राहु का नीला वर्ण।

## ग्रहों के द्रव्य

१. सूर्य का ताँबा।
२. चन्द्र का मोती।
३. मङ्गल ताँबा।
४. बुध का सुवर्ण।
५. गुरु का काँसा।
६. शुक्र का रूपा।

## ग्रहों के रत्न

१. सूर्य का माणिक।
२. चन्द्र का मोती।
३. मङ्गल का मूँगा।
४. बुध का गारुत्मन।
५. गुरु का पुखराज।
६. शुक्र का हीरा।
७. शनि का नीलम।
८. राहु का गोमेद।
९. केतु का वैदूर्य।

ग्रहों के रत्नों का ज्ञान आवश्यक है। जिस ग्रह् की चाल अनिष्ट-कारक जान पड़े तो उस ग्रह् की शान्ति के लिए उस ग्रह् के रत्न को पहनना अति आवश्यक है। रत्न की मुंदरी बनवा कर उस ग्रह् की उङ्गली में नीचे की तरफ झुका कर पहनने से उसका असर अच्छा होता है। तमाम पीड़ा शांत होती हैं। ग्रह को शांत करने के अभीष्ट रत्न सुख-शांति लाता है।

———

# आठवाँ अध्याय

## चिन्ह ज्ञान

मनुष्य के हाथ को देखते समय आप अनेकों प्रकार के चिन्ह देखेंगे। हाथ की हथेली पर, उँगलियों के सिरों पर अर्थात् सर्वोपरि पर्व में, उँगलियों की जड़ों में और रेखाओं के ऊपर-नीचे या आस-पास।

नीचे दिए चित्र में दी हुई तालिका में देखकर इन चिन्हों की बनावट को पहिचान लेने से हाथ देखते समय इन चिन्हों को भी विचार में रखकर फलादेश कहने में सरलता होती है।
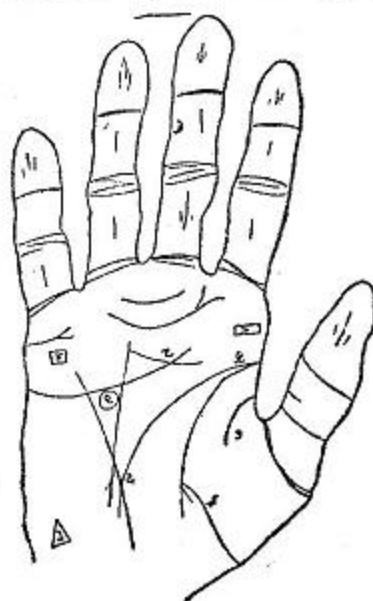
चित्र नं० ८

हाथ में होने वाले विशेष चिह्न हैं।

| | |
|---|---|
| १. गुणक | २. वृत्त |
| ३. वर्ग | ४. द्वीप |
| ५. रेखाजाल अर्थात् कटी-फटी रेखा | ६. दाग |
| ७. अर्धचन्द्र | ८. कोण |
| ९. चतुष्कोण | १०. त्रिभुज |
| ११. पर्वत | १२. शङ्ख |
| १३. सीपी | १४. चक्र |
| १५. नक्षत्र | |

## १—गुणक

एक आड़ी रेखा का दूसरी आड़ी रेखा से मिलने पर गुणक बनता है। अंग्रेजी के अक्षर × की तरह होता है। प्रायः इसका फल अशुभ होता है। परन्तु किसी-किसी अवसर पर शुभ फलदायक है।

सूर्य और शनि के पर्वतों के बीच हो तो दुःख होता है और इज्जत न बट्टे में मिल जाए ऐसी चिंता रहती है।

बृहस्पति के पर्वत पर हो तो धनी के यहाँ ब्याह और सुखमय जीवन होने की सूचना है। यह देख लेना चाहिए कि कोई रेखा इसे काट तो नहीं रही है। यदि ऐसा हो तो फल विपरीत होता है। यदि हल्का हो तो मस्तक पर जख्म होगा।

शुक्र के स्थान में भयानक दुःख, प्रेम या दुःखदाई विवाह की सूचना देता है।

यह चिह्न शनि व सूर्य पर्वत के नीचे मस्तकरेखा पर हो तो भारी हानिकारक फल का लक्षण है।

हृदयरेखा पर प्रेमी से वियोग होने की सूचना है। बुध के

स्थान पर बेईमान और चोर स्वभाव होने का लक्षण है। मजाकिया स्वभाव, रोजगार और समाज में चतुरता प्रदान करता है और धोखेबाज होने का लक्षण है।

चन्द्र के पर्वत पर यह चिह्न हो तो भूँठा, ठग और पानी में डूब जाने का भय बताता है।

चन्द्र स्थान पर बीच में हो तो गठिया रोग की सूचना देता है। विवाहरेखा पर हो तो दम्पति में से एक को, एकाएक मृत्यु की सूचना स्पष्ट करता है।

बुध की उँगली के तीसरे पोर में हो तो अविवाहित रहने की सूचना है।

यदि बुध के पर्वत पर यह चिह्न हो और कनिष्ठा अंगुली टेढ़ी हो तो चोर होता है। चोर की हृदयरेखा शनि के पर्वत तक ही जाती है।

शनि के स्थान पर हो तो भाग्य में बाधा उत्पन्न करने की सूचना है और स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता बताता है।

मङ्गल के स्थान पर गुरु के नीचे हो तो लड़ाई झगड़ा करने वाला, क्रोध में आकर भयङ्कर प्रहार कर डालने वाला होता है और मारपीट में चोट लगने का भय होता है और आत्मघात करने की इच्छा बताता है।

मङ्गल के क्षेत्र में उन्नति में बाधा डालने वाला होता है।

मंगल के मैदान में बुध के स्थान के नीचे भारी विरोध होने की सूचना है और शत्रु भय भी होगा।

सूर्य के स्थान पर धार्मिक प्रवृत्ति की सूचना है, परन्तु धन पाने में गुरु के स्थान पर धनी और सुखदायी विवाह की सूचना है और कुटुम्ब सम्बन्धी सन्तोष भी देता है।

सूर्य के स्थान पर यश और धन प्राप्ति की सूचना है, परन्तु धन से सन्तुष्ट न होने की भी है चाहे जितना भी धन प्राप्त क्यों न

हो जावे। अपनी सम्पत्ति तथा दैवयोग से प्रसिद्धि प्राप्ति की चिंता होती है।

शनि के स्थान पर बिजली से आघात और सर्प के काटने के भय की और लकवा होने की सूचना है। यदि चतुष्कोण का चिह्न हो तो रक्षा होती है।

बुध के स्थान पर झूठा और चोर स्वभाव होने का लक्षण है। यदि शुभ हाथ में हो तो साहित्यिक उन्नति करता है और दूसरों के विचारों को जल्दी ग्रहण करने वाला होता है।

यदि स्त्री के अंगूठे के दूसरे पोर में नक्षत्र हो तो धनवान होने की सूचना है।

मंगल के मैदानों में हो रण में जय देता है और कभी अति क्रोध में प्राण देता है। ऐसा मनुष्य खून करने में भी नहीं चूकता और उसे शस्त्र से मृत्यु का भय रहता है।

जीवनरेखा पर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाता है।

यदि शनि के स्थान पर भाग्यरेखा के पास हो तो जोश में आकर मृत्यु या भारी अपयश का कारण होता है।

शुक्र रेखाओं के बीच में भयानक आतंक की और बीमारी का सूचक है, जिससे मृत्यु होवे।

यदि चन्द्र के नीचे स्थान पर हो तो जलन्धर रोग होवे।

यदि चन्द्र के स्थान पर हो और प्रभाविक-रेखा से जुड़ा हो, जो जीवनरेखा से मिली हो या शुक्र के स्थान पर हो तो हिस्टीरिया या पागलपन अतिशय दर्जे का होता है।

जीवनरेखा के पास यह चिह्न अनर्थ का कारण होता है।

भाग्यरेखा के प्रारम्भ में यह चिन्ह हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है और साथ ही चिन्ह शुक्र स्थान पर भी हो तो लड़कपन में ही माता-पिता का विनाश होता है।

○ — वृत्त

× — कुषक

□ — वर्ग

⬭ — द्वीप

⊞ — रेखा जाल

• — तिल

• — बिन्दु

⬯ — दाग

चित्र नं० ९

## २—वृत्त

यह गोल और भीतर से पोला होता है। रेखाओं पर इस चिन्ह का होना अशुभ व भाग्य के लिए हानिकारक होता है। परन्तु ग्रहों के पर्वतों पर होना शुभ फलदायक है।

गुरु के स्थान में वृत्त, कामयाबी, शान-शौकत, इज्जत और नामवरी का फल देता है।

सूर्य के स्थान में यश, हर कार्य में सफलता और धन देता है। उसका जीवन-क्रम आनन्द से बीतता है। यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो तो आँखों में कष्ट होता है।

चन्द्र के स्थान में एकाएक मौत की सूचना है। सम्भव है जल में डूब जाने से मृत्यु हो हो।

शनि के स्थान में खनिज पदार्थों के व्यापार में सफलता पाने की सूचना है।

जीवनरेखा पर हो तो आँख में रोग या आँख खो बैठने की

सूचना है। जिससे निराशा होती है और व्यापार व दस्तकारीमें हानि करता है।

यदि स्त्री के हाथमें हो तो वह स्त्री धन के लोभसे अनेकों पुरुषों के प्राण लेने में नहीं चूकेगी। ऐसी स्त्री चाहे कितनी ही सुन्दर हो उससे बचे रहना चाहिए।

ऐसे कई छोटे-छोटे चिन्ह बुध के स्थान में हों तो अस्वभाविक बुराई का चिन्ह है।

यदि चन्द्र के स्थान में ऊपर के भाग में हो तो अंतड़ियों में कष्ट और नीचे हो तो ब्लैडर या स्त्रियों की जननेन्द्रि में कष्ट होता है।

मस्तकरेखा पर यह चिन्ह मस्तक को आघात पहुंचने का लक्षण है।

आयु तथा मातृरेखा के बीच में यह चिन्ह हो, या भाग्यरेखा के बीच में यह चिन्ह हो, या भाग्यरेखा के समीप हो तो यकायक मृत्यु हो जाने का लक्षण है। अक्सर लोगों के हाथ में एक बड़े गुणा का चिन्ह होता है। जो आयु और मातृरेखा से मिलता है, यह डमरू की शक्ल का होता है। यह याचना वृत्ति या किसी सस्था से सहायता पाने की सूचना है। इसीलिए इस चिन्ह को छोटे गुणक के चिन्ह से जो अक्सर बीच में होता है, नहीं मिला देना चाहिए।

इसके भीतर यदि लाल दाग हो तो गर्भवती के चिन्ह हैं।

यदि यह चिन्ह मध्य में हो तो दूसरों से झगड़ा होने का लक्षण है, जिसमें कसूर ज्यादातर उसी का होगा जिसके हाथ में चिन्ह हैं।

यदि दोनों हाथों में यह चिन्ह हो तो मारे जाने का लक्षण है यदि कई चिन्ह हों तो दुर्भाग्य की सूचना है।

यदि इसकी शाखाएं किसी खास रेखा को न छूएँ तो मुकद्दमे में जीत जाने का चिन्ह है, वरना हार होगी।

यदि अर्ध-चन्द्र इसके भीतर हो तो स्वास्थ्य और शक्ति की सूचना है और हर प्रकार से उन्नति का लक्षण है।

## ३—वर्ग

समकोण चतुर्भुज चौकोना होता है। इससे अक्सर अशुभ घटनाओं, रोगों, विघ्न, भयों व सब संकटोंसे रक्षा होती है। यह चिन्ह शुभ फलदायक है। यह किसी रेखा के पास होने से भयानक खतरे व बीमारी से बचाता है।

यह शुभ चिन्ह है। यदि गुरू के स्थान में हो तो खतरों से या रोगों से बचाता है। अमन चैन देता है। शासन-शक्ति और समाज में गिरने से बचाता है। प्रतिष्ठावान् होने का लक्षण है।

यदि शनि के स्थान में हो तो भारी मुसीबत से रक्षा होवे और यदि इसके बीच में नक्षत्र हो तो जान से मारे जाने से रक्षा होती है। यदि इसके चारों कोनों पर लाल दाग़ हों तो अग्नि से रक्षा होती है। यह शुभ फलसूचक है।

सूर्यादि के स्थान पर हो तो व्यापारिक शक्ति बढ़ाने वाला है।

यदि बुध के स्थान पर हो तो धन की भारी हानि से बचाता है और यश, मान, प्रतिष्ठा देता है।

ऊँचे मङ्गल के दोनों स्थानों से शरीर की चोट से रक्षा करता है और शुभसूचक है।

चन्द्र के स्थान में डूबने तथा हर संकट से बचाता है।

यदि किसी टूटी हुई जीवनरेखा को जोड़ रहा हो तो रोग से बचाता है। यह वर्ग दाहिने हाथ में टूटी हुई जीवनरेखा को जोड़ रहा हो तो भारी रोग से बचाकर प्राण रक्षा करता है।

शुक्र और मङ्गलके स्थान पर चतुष्कोण हो तो कारागार सेवन कराता है।

यदि शुक्र पर्वत पर अखण्ड और सुन्दर हो तो किसी प्रेमिका के प्रेम में फँस जाने से बेइज्जती या अन्य प्रकार की विपत्ति से बचाता है। यदि यह खंडित हो तो जेल की सम्भावना होती है।

इसके विपरीत चिन्ह जेल यात्रा का है। उङ्गलीमें चार पर्व हों तो भी जेल होती है।

यदि हाथ के मध्य में हो तो श्रेष्ठ और धन, यश, का स्वामी होता है।

## ४—द्वीप

यह अक्सर जौ के सदृश्य होता है। यह यदि खड़ा हो तो अशुभ और आड़ा हो तो प्राय: शुभ फलदायक होता है।

द्वीप का चिन्ह एक अशुभ चिन्ह है।

बृहस्पति के स्थान पर द्वीप अपयश के भागी होने की सूचना है। इस चिन्ह वाला पुरुष झगड़ालू होता है।

हृदयरेखा पर नाजायज प्रेम और निराशा-मयी सूचना का द्योतक होता है।

यदि बुध की उङ्गलीके नीचे हृदयरेखा पर हो या बुध पर्वतपर हो तो नाजायज प्रेम किसी रिश्तेदार से होना बताता है। लफंगा बेई-मान और चोर होता है।

शुक्र के स्थान पर प्रेम में उत्पात का होना बताता है, और किसी बड़े हितैषी को नाराज कर देने की सूचना है।

भाग्यरेखा पर किसी व्यक्ति से लुभाए जाने की सूचना है। स्त्री के हाथ में हो तो पुरुष से और पुरुष के हाथ में हो तो स्त्री से लुभाए जाते हैं।

सूर्यरेखा पर या सूर्य के स्थान पर अपयश पाने की सूचना है।

विवाह रेखा पर वियोग होने की सूचना या अलग-अलग पति-पत्नी के रहने की सूचना है।

जीवन और मस्तक रेखा के जोड़ पर द्वीप हो तो प्रेममें झगड़ा होने की सूचना है।

जीवनरेखा पर द्वीप बीमारी की सूचना देता है।

मस्तकरेखा पर मस्तक सम्बन्धी रोग बतलाताहै जैसे सिर-दर्द, आधासीसी, सिर में चोट, स्मरण-शक्ति का नाश इत्यादि।

यदि वह मस्तक रेखा के नीचे के भागमें हो तो असवर्ण अर्थात् गैर जाति के पुरुष से स्त्री और असवर्ण स्त्री के रूप पर पुरुष मोहित होता है।

भाग्य और मातृरेखा पर द्वीप हो और भाग्यरेखा टेढ़ी हो तो उस व्यक्ति का विवाह नहीं होता है।

भाग्यरेखा के शुरू में द्वीप का चिन्ह हो तो थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है। कोई-कोई विद्वान इस चिन्ह को वर्ण-शङ्कर की उत्पत्ति वाला मनुष्य बताते हैं। स्त्री के हाथ में हो तो उसे प्रलोभन देकर भगाए जाने का चिन्ह बताते हैं।

## ५—रेखा-जाल

छोटी २ आड़ी और सीधी रेखाओं को आपस में मिलने से जाली के समान चिन्ह होता है। यह विघ्नकारक और बुरा फल तुरन्त देता है। जिस स्थान पर होताहै उसके शुभ फलों को नष्ट कर देताहै।

चंद्र के स्थान में कंजूसी, आत्महत्या की तरफ विचार और अति सोच-विचार वाला पुरुष तथा उदासी, चिन्ता, भय, भाग्यहीन और दुःख होने का लक्षण है।

बुध के नीचे मङ्गल के स्थान पर एकाएक मृत्यु या भयानक खतरा, या आत्महत्या की सूचना देता है।

शुक्र के पर्वत के ऊपर मङ्गल के पर्वत पर हो तो कोर्ट में विवाह होने की सूचना है।

शुक्र के स्थान पर अति कामी, व्यभिचारी होने की सूचना है। उसको जेल या पागल खाना वगैरह में जाने का भय होता है।

यदि जाल चौड़ा हो तो गुप्त-रीति से अन्य स्त्रियों पर आशक्त रहने वाला होता है।

सूर्य के स्थान पर शक्की, कुटिल, मन्द-बुद्धि, ओछापन की सूचना है। बड़प्पन का गर्व करने वाला, अप्राप्य की प्राप्ति करने वाला होता है।

शनि के स्थान पर दुर्भाग्यवान तथा व्यभिचारी होने की सूचना है। जेल जाने की सम्भावना है।

बुध के स्थान पर बेईमान और चोर स्वभाव का सूचक है। कभी २ गबन के मामले में मृत्यु होती है।

गुरु के स्थान पर स्वार्थी, उपद्रवी और घमंडी होने का लक्षण है और सामाजिक तथा विवाह कार्य में बाधा होती है।

मङ्गल के स्थान में मौत होने की सूचना है। इसके नीचे के भाग में हो तो अन्तड़ियों की बीमारी और अक्सर पेट की बीमारी होती है।

रेखाओं का यह जाल जिस स्थान पर होगा उसका विरोध करके उसमें एक विलक्षणता पैदा कर देता है। यदि इच्छाशक्ति प्रबल हो तो बहुत कुछ इसके बुरे फलों को कम करने में समर्थ होता है।

## ६—दाग

बिन्दु, तिल, डाढ़, बाष्पाढ़, किसी भी जगह रेखा पर काला, नीला, लाल, सफेद, गुलाबी रङ्ग का बिन्दु हो तो अशुभ फलदायक है। इस चिन्ह के फल को पूर्वीय शास्त्री शुभ और पाश्चात्य अशुभ मानते हैं।

बृहस्पति के स्थान पर काला दाग अपयश और धन हानि का सूचक है।

बुध के नीचे मंगल के स्थान पर मुकद्दमे में जायदाद नाश करने का लक्षण है। यदि दोनों हाथों पर न हो तो कुछ सम्पत्ति बच जावेगी।

चन्द्र स्थान पर दिवालिया होने का लक्षण है। हिस्टीरिया आदि के भी लक्षण हैं।

जीवनरेखा पर आँखों का कष्ट और भारी रोग का भय सूचक है।

मस्तक रेखा पर शनि के नीचे हो तो दाँतों में कष्ट होवे, आँख की बीमारी और स्नायुविक कमजोरी का लक्षण है।

शनि के स्थान पर बुरे कर्म होने की सम्भावना है।

सूर्य के स्थान पर अपयश और समाज में गिर जाने का भय है।

बुध के स्थान पर रोजगार में हानि की सूचना है। बड़ा होवे तो जंघा की हड्डियों में चोट लगने की सूचना है। बेईमान, लफंगा, चालाक तथा चोर होता है।

यदि ऊँचे पर मंगल के स्थान में हो तो किसी झगड़े या लड़ाई में चोट लगने का लक्षण है।

यदि यह शुक्र के स्थान में हो तो घातक बीमारी की सूचना है जो प्रेम का परिणाम होगी। किसी परम हितैषी को नाखुश कर देने की सूचना है।

स्वास्थ्यरेखा पर ज्वर होने की सूचना है।

जीवनरेखा पर नीले रंग का दाग जान से मार डाले जाने का भय या विष से मरने की सूचना है।

यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि दाग सफेद हो तो शुभ सूचक है।

## ७-अर्ध-चन्द्र

सूर्य के स्थान पर चुगलखोरी की आदत और आँख में कष्ट होता है। यदि अनामिका उँगली के तीसरे पोर में हो तो दरिद्रता और बदकिस्मती की सूचना देता है।

बुध और चन्द्र के बीच में हो तो गुप्त विद्या जैसे ज्योतिष इत्यादि की शक्ति से सम्पन्न बतलाता है।

चन्द्र के स्थान पर हो तो जल में डूबने का भय रहता है।

| | |
|---|---|
| | कोण |
| | अर्ध चन्द्र |
| | त्रिभुज |
| | नक्षत्र |
| | कोण नक्षत्र |
| | संकीर्ण नक्षत्र |

चित्र नं० १०

## ८-९--कोण

चन्द्र स्थान पर कोण हो तो डूबने का भय होता है। मणिबंध पर हो तो अनायास सम्मानपूर्वक बृद्धावस्था में धन प्राप्त होता है।

चतुष्कोण यह मस्तकरेखा और हृदयरेखा के बीच के भाग का नाम है।

यदि यह चिकना हो और रेखाएं न हों तो धैर्यवान, शांत व वफादार होने का लक्षण है। यदि हथेली की तरह चौड़ा होतो स्पष्ट वक्ता होने की सूचना है। यदि बराबर चौड़ी जगह हो तो स्वतन्त्र-विचार वाला और कभी-कभी मूर्खता के साथ व्यवहार का होना आवश्यक बताता है।

यदि शनि के स्थान में ज्यादा चौड़ा हो तो नेकनामी की तरफ से बेपरवाह स्वभाव वाला होता है।

यदि सूर्य के स्थान में ज्यादा चौड़ा स्थान हो तो दूसरे की राय पर विशेष रूप से चलने वाला होता है।

यदि कम चौड़ा होवे तो कंजूस और कमीनेपन का लक्षण है।

यदि बीच मे कम चौड़ा हो तो लोभ, कृपणता और धोखेबाजी की प्रकृति का चिन्ह है।

यदि वह चौड़ा अधिक हो तो व्यर्थ धन का खर्च करना या फिजूलखर्ची पाया जाता है। यदि बुध के स्थान के नीचे चौड़ाई में कुछ फर्क पड़ गया हो तो वृद्धावस्था में किफायतसारी की ओर ध्यान देगा। यदि बहुत ही कम चौड़ाई हो तो ईर्ष्या, तंगख्याली और धर्मान्ध होने का लक्षण है।

यदि यह जगह तंग हो और गुरु की जगह उभरी हो तो अत्यन्त धार्मिक विचार वाला संन्यासी हो जाने का लक्षण है।

यदि अधिक तंग हो और बुध का स्थान उठा हो या अशुभ रेखाएँ हों तो झूठ बोलने की आदत होती है।

यदि तंग हो, बुध और मंगल का स्थान उठा हो तो बेईमान प्रकृति होने का लक्षण है।

यदि बहुत छोटी रेखाएं इसके भीतर हों तो चिड़चिड़ापन और कमअक्ली का लक्षण है।

यदि कोई रेखा इसमें से निकल कर सूर्य-स्थान को जावे तो किसी बड़े मनुष्य की रक्षा से कामयाबी होने की सम्भावना है।

यदि कोई शाखा वाली रेखा आड़ी पड़ी हो तो बदमिजाजी और असमय पर कार्य करने वाला होता है।

यदि गुणक चिन्ह हो और यह हृदय-रेखा को छूता हो तो किसी व्यक्ति का भारी असर होगा। पुरुष हो तो स्त्री का और स्त्री हो तो पुरुष का असर होगा।

यदि यह चिन्ह मस्तकरेखा को छूता हो तो वह व्यक्ति प्रेमी के ऊपर भारी असर पैदा करेगा।

यदि यह शनि स्थान के नीचे हो तो गुण-विद्याओं में जैसे ज्योतिष इत्यादि से प्रेम होगा।

यदि यह न हो और हृदयरेखा कटी हो तो ऐसी हालत में सख्त मिजाज वाला और दिल की धड़कन वाली बीमारी का लक्षण है।

यदि मस्तकरेखा ऊपर की ओर उठी हो तो वह लज्जाशीलता का लक्षण है। ऐसा मनुष्य दूसरों का उपकार करने में ज्यादा प्रसन्न रहता है, यहाँ तक कि अपनी बुराई करने वाले के साथ भी भलाई करने से आगा-पीछा नहीं करता। यदि कोई काम करने का इकरार करता है तो उसे भूल जाता है। समय बीतने पर झूँठा कहलाता है गोया कि वह वादे को पूरा करने की कोशिश करता है परन्तु अनिश्चित स्वभाव से वह पूरा नहीं कर पाता।

शुक्र के स्थान में चतुष्कोण को काटने वाली रेखाएँ जिस मनुष्य के हाथ में होती हैं उस पर किसी अन्य व्यक्ति का, किसी समय हृदय और मस्तक पर प्रभाव पड़ता है।

## प्रथम कोण

यह मस्तक-रेखा और जीवन-रेखा से बना होता है। यदि स्वच्छ साफ, न्यून हो तो सभ्य और बुद्धिमान, शुद्ध-चरित्र होने का लक्षण है। छोटा और चपटा अर्थात् फैला हो तो असभ्य, मंदबुद्धि तथा आलस्यपूर्ण होने का लक्षण है।

यदि शनि की उङ्गली के नीचे हो तो कपट, धोखेबाजी पाई जाती है। यहाँ पर और भी ज्यादा कम चौड़ा हो तो कार्य में कुशल होता है परन्तु इश्क करने का माद्दा पाया जाता है। भद्दा, चौड़ा हो तो कंजूस और दूसरों के हित की परवाह न करने वाले का लक्षण है।

यदि भद्दे तौर पर मस्तकरेखा से स्वास्थ्यरेखा पर मिले और

जीवनरेखा से अलग हो तो भयानक, स्वतंत्र कार्य करने वाला, आत्म-विश्वासी होता है।

## दूसरा कोण

यह मस्तकरेखा और स्वास्थ्यरेखा से बना होता है। साफ शुद्ध हो तो बुद्धिमान और दीर्घजीवी हो। चौड़ा और भारी हो तो आलसी, अनुदार और घबराहट वाला हो। यदि किसी बालक के हाथ में यह कोण अच्छा न हो अर्थात् कम चौड़ा हो तो उसके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना चाहिए। क्योंकि ऐसे बालक की बुद्धि स्वयं तीव्र होवेगी परन्तु स्वास्थ्य की तरफ से चिन्ता होगी।

## तीसरा कोण

जीवनरेखा और स्वास्थ्यरेखा से बनता है। यदि यह स्वच्छ हो और नीचे जीवनरेखा के पास हो अर्थात् मिलता हो तो स्वास्थ्य अच्छा होगा। दीर्घ आयु और कारोबार में कामयाबी का चिन्ह है।

यदि अधिक पास हो तो शरीर कमजोर और धन संचय करने की प्रबल इच्छा होगी।

यदि अधिक पास हो तो आलस्य, अशुद्ध विचार, निर्बल शरीर होने का सूचक होता है।

## १०—त्रिभुज

त्रिकोण के आकार का त्रिभुज होता है, यह चिन्ह लाभ-दायक है।

गुरु के स्थान पर लोकहित कार्य करने वाला और रियासत में विशेष पद पर अधिकारी होने का सूचक होता हैं। शनि के स्थान पर ज्योतिष, सामुद्रिक, मन्त्र-तन्त्र और गुप्त विद्याओं का जानकार होता है। यदि तीसरे पोर पर नक्षत्र शनि की उङ्गली पर हो तो इस विद्या का दुरुपयोग करता है।

सूर्य के स्थान पर हो तो शिल्प-विद्या का अच्छा जानकार

होता है। विज्ञान द्वारा अनुसंधानों या औषधि के कार्य में उन्नति करता है।

बुध के स्थान पर होने से शुभ लक्षण है, वैज्ञानिक, व्यवसायी, सेवा, विद्वता के कार्य से सफलता होती है। राजनीतिज्ञ और अच्छा वक्ता होता है।

मङ्गल के स्थान पर बुध के पर्वत के नीचे चीर-फाड़ के काम में होशियार होता है। गुरु के नीचे मङ्गल पर्वत पर हो तो कुशल सेनापति और दृढ़ निश्चय वाला होता है।

शुक्र के स्थान पर स्वार्थवश प्रेम में फंस जाने का सूचक है और गणित का जानने वाला होता है।

मङ्गल के स्थान में सैनिक कार्य में कुशलता प्रदान करने वाला होता है।

चन्द्र के स्थान पर गुप्त विद्या का ज्ञान तथा जादूगरी आदि कामों में रुचि रखने वाला होता है।

भाग्यरेखा के आदि में यदि त्रिकोण हो तो थोड़ी अवस्था में माता-पिता का वियोग होता है।

पितृरेखा पर त्रिकोण हो तो मनुष्य पैतृक सम्पति का अधिकारी होता है।

मातृरेखा में त्रिकोण हो तो ननिहाल की सम्पति प्राप्त होती है।

यदि आयुरेखा पर त्रिकोण हो तो पुरुषार्थ से धन, भूमि, वाटिका वाहन तथा अनेक ऐश्वर्य सामग्री प्राप्त करता है।

यदि मणिबन्धरेखा पर त्रिकोण हो तो वृद्धावस्था में सम्मान के साथ धन को भी प्राप्त करता है।

यदि भाग्यरेखा पर त्रिकोण हो तो अनायास ही धन की प्राप्ति का योग होता है। यदि छोटा त्रिकोण हो तो थोड़ा धन और बड़ा हो तो अधिक धन प्राप्त होता है।

## बड़ा त्रिभुज

यह जीवनरेखा, मस्तकरेखा और स्वास्थ्यरेखा के मिलने से बनता है। चौड़ा और स्पष्ट हो तो सदाचारी, उत्साही, उदार होने का लक्षण है।

बड़ा साफ और स्वच्छ रङ्ग का हो तो भाग्यवान, दीर्घजीवी और साहसी का लक्षण है। छोटा हो तो कायरता, चरित्रहीनता, कमीनापन, ओछी प्रकृति का सूचक होता है।
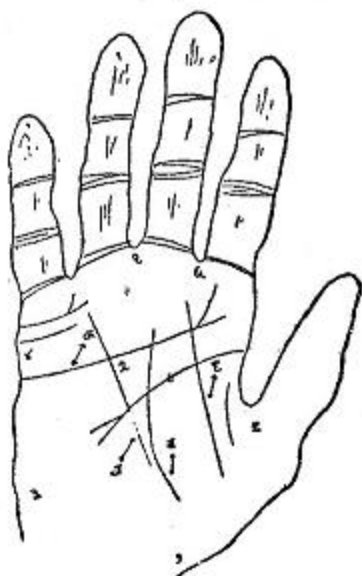
चित्र नं० ११

## ११—पर्वत

हाथ में उठे हुए स्थान को पर्वत कहते हैं। इन पर्वतों को एक-एक ग्रह का नाम दिया हुआ है और वही उस ऊँचे उठे हुए स्थान का मालिक ग्रह माना गया है। चित्र में तर्जनी के मूल के नीचे जिस स्थान

पर 'गु' अक्षर लिखा है वह गुरु का पर्वत है और उस जगह का मालिक बृहस्पति है। इसी तरह मध्यमा के नीचे 'श' अक्षर जिस जगह है, वहाँ शनि का पर्वत है और उस स्थान का मालिक शनिश्चर है। तथा अनामिका उंगली के नीचे जिस जगह पर 'सू' अक्षर लिखा है, वह सूर्य की जगह है और इस जगह का मालिक सूर्य है। कनिष्ठा के मूल के नीचे 'बु' अक्षर जहाँ है वह बुध की जगह है, और बुध के नीचे जहाँ 'म' अक्षर है वह मंगल की जगह है। मंगल के नीचे 'च' अक्षर है इस जगह को चंद्र का पर्वत कहते हैं। चंद्र के सामने ही अंगुष्ठ के मूल में नीचे जिस जगह 'शु' अक्षर है वहाँ शुक्र का अधिपत्य है। शुक्र के ऊपर जहाँ 'म' अक्षर है वह मंगल का दूसरा स्थान है, और इसका मालिक मंगल ग्रह माना गया है।

इन पर्वतों की कल्पना पाश्चात्य देशों में अतिशय प्रचलित है और फल के कहने में बहुत महत्व-पूर्ण है।

## गुरु

गुरु का पर्वत अच्छा उठा हो तो कुटुम्ब में प्रीति, उच्चाभिलाषी, यश की इच्छा वाला और आत्माभिमानी होता है। सत्य-वक्ता, चतुर पण्डित, पुत्र-पौत्र, धन-धान्यादि होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो स्वार्थी और दुराचरी होता है। चर्म-रोग से पीड़ित तथा शुभ-गुण रहित होता है।

यदि पर्वत अधिक उठा हो तो अहङ्कारी, अन्यायी और अधिकार पाने की इच्छा वाला होता है। और बड़े-बड़े अक्षर लिखता है। स्वार्थी, ठग, धूर्त्त, अपव्ययी, निर्दयी होता है।

गुरु का पर्वत शनि की तरफ झुका हो तो आत्मनिष्ठावान् होता है।

## शनि

शनि का पर्वत अच्छा उठा हो तो शान्त-स्वभाव, मितभाषी, गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता, स्नेही, एकान्त सेवी, सदाचारी, खेती बगीचा का शौक रखने वाला, स्त्रियों में प्रीति कम करने वाला होता है। अक्षर छोटे और नजदीक लिखने वाला होता है।

यदि पर्वत नीचे दबा हो तो बकवादी, व्यभिचारी और झूंठा होता है। दुःखी, जुआरी, व्यसनी, मूर्ख और अल्पायु होती है।

यदि यह पर्वत सामान्य उठा हो तो बात रोग, दन्त रोग, बदहजमी होती है। निष्ठुर, नीच, अपवित्र, आत्महत्या चाहने वाला, उदार, वायु तथा मूत्राशय-रोग युक्त होता है।

शनि का पर्वत यदि सूर्य की ओर झुका हो तो शिल्प कार्य में उदासीन होगा।

इस पर्वत पर आड़ी रेखाएँ हों तो लकवा रोग होता है।

## सूर्य

यदि सूर्य का पर्वत ऊपर उठा हो तो कारीगरी में प्रवीण, साहित्यवेत्ता, विद्वान् लेखक, देशभक्त, पराक्रमी, चतुर, उच्चाभिलाषी, उदार, प्रतिष्ठावान् आदि गुणों से युक्त होता है। यश की इच्छा, प्रेमी शुद्धता के साथ सौन्दर्य प्रियता और दयालु होता है और सामान्य अक्षर स्पष्ट लिखता है।

सूर्य का पर्वत नीचे दबा हो तो सुस्त, मन्द, दुश्चरित्र-बुद्धि, निर्दयी, विलासी होता है। यदि सूर्य रेखा प्रबल हो तो यह गुण नहीं होता पूर्वोक्त शुभ फलों से रहित होता है।

यदि सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो तो बकवादी, गर्वीला, डाह करने वाला, लोभी, काम का कच्चा, आराम-तलब और हुनर जानने वाला होता है।

## बुध

यदि बुध का पर्वत अच्छा उठा हो तो साहसी, बुद्धिमान, विनोदी, बहादुर, घूमने और दृश्य देखने का शौकीन, धैर्ययुक्त, कष्ट की चिन्ता न करने वाला और छोटे अक्षर लिखता है। वैद्यक व कारीगरी में चतुर अल्पावस्था में विवाह, सुन्दर स्त्री युक्त, वाणिज्य में कुशल होता है।

यदि बुध का पर्वत नीचे दबा हो तो नाखुश रहने वाला होता है, और सब फल विपरीत होते हैं।

यदि बुध का पर्वत अधिक उठा हो तो पाजी, ठग, लुच्चा, झूठा झगड़ा करने वाला होता है।

यदि बुध का पर्वत मङ्गल की तरफ झुका हो तो प्राणी स्वयं प्रसन्न रहने वाला होता है। वह दूसरे के दुःखो की पर्वाह नहीं करता। यदि सूर्य की ओर झुका हो तो वह अच्छा वक्ता और चिकित्सा में निपुण होता है।

## मङ्गल

प्रथम मङ्गल का पर्वत यदि बुध के पर्वत से ज्यादा नीचा हो तो प्राणी की धर्म पर निष्ठा नहीं होती। वह अन्यायी और कठोर सैनिक होता है। वह कोने निकले हुए अक्षर लिखता है।

यदि मङ्गल का स्थान उच्च हो तो उदार, प्रतापी, पराक्रमी, हठी, युद्ध-प्रिय, व्यवसायी, बली, क्रोधी, विचारहित, ग्रहकलह के कारण दुःखी होता है।

यदि यह पर्वत नीचे दबा हो तो साहस और शान्ति का अभाव होता है। दूसरे मङ्गल का पर्वत गुरु के पर्वत के नीचे उठा हो तो प्राणी साहसी, धैर्यवान् आत्मविश्वासी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो संकोची, जिद्दी, झगड़ालू होता है।

यदि दोनों ही पर्वत ऊँचे उठे हों तो डरपोक और छिछोरा होता है। रुधिर-विकार तथा अग्निमाद्य युक्त होता है।

यदि बुध के पर्वत की ओर झुका हो तो अच्छी सलाह देने वाला होता है।

## चन्द्र

चन्द्र का पर्वत अच्छा उठा हो तो प्राणी सदाचारी, दयालु, कल्पना करने वाला, सङ्गीत-प्रिय और सुन्दर दृश्य देखने का शौकीन, रसिक, मधुर-भाषी, लेखक, दयावान, भ्रमशील, थोड़ी उमर में विवाह करने की इच्छा वाला, मातृ-सुख, कृषी-सुखी, धनधान्यादि से युक्त होता है। उसमें कविता लिखने का गुण होता है। उल्टे अक्षर यानी दाईं ओर से बाँई ओर को मुड़े हुए लिखता है।

यदि दबा हुआ हो तो दुष्ट प्रकृति, कल्पना शक्ति का अभाव, क्षणिक बुद्धि वाला और असन्तोषी होता है।

यदि अधिक उठा हो तो आलसी, आत्म-हत्या का अभिलाषी, उदासीन, झूठा और व्यसनी होता है। उसे शुक्र तथा उदर सम्बन्धी रोग होते हैं।

जब मणिबन्ध की तरफ झुका हो तो दिन में स्वप्न देखने वाला और हवा में महल बनाने वाला होता है।

चन्द्र के पर्वत पर तारों के सामने चिन्ह हो तो त्रास और यदि तीन बिन्दु एक साथ हों तो क्षय रोग होता है।

## शुक्र

शुक्र का पर्वत अच्छा उठावदार हो तो प्राणी सदाचारी, कारीगर, स्त्रीद्रिय विलासी, उदार, प्रभावशाली, आत्माभिमानी, चिकित्सक, होता है। परोपकारी, संगीत का प्रेमी, अक्षर सुन्दर साफ सुडौल और एक समान लिखता है।

यदि अधिक उठा हो तो व्यभिचारी, निर्लज्ज, अहंकारी, विषयी होने के लक्षण हैं। उसे अक्सर कान से सुनाई कम पड़ता है या कोई कर्ण रोग होता है।

यदि इस पर्वत का अभाव हो तो सुस्त और स्वार्थी होता है। विपरीत फल और शुक्र रोग वाला होता है।

यदि मणिबन्ध की ओर झुका हो तो नाचने का शौकीन होता है।

## राहु

गुरु और शुक्र के बीच राहु का स्थान है। उच्च हो तो चिन्ताशील, तार्किक, गुप्त भेदों को छिपाने वाला, उपदेशक, विश्वासघाती, धोखेबाज, नीच-से-नीच कर्म द्वारा धन प्राप्त करने वाला होता है।

भिन्न हो तो बड़ों की सम्पत्ति नाश करने वाला, झगड़ालू, अपव्ययी, उदर, इन्द्रिय रोग युक्त होता है।

## दो पर्वतों का फल

यदि गुरु का पर्वत दबा हो और शनि का उठा हो तो वह दूसरों से घृणा करने वाला होता है।

गुरु का पर्वत और चन्द्र का पर्वत उठा हो और बुध का पर्वत दबा हो तो वह सोचता खूब है पर सफल नहीं होता। गुरु और मंगल का पर्वत उठा हो तो लुच्चा और दिखावे के लिए प्रसन्न होगा पर एकांत में उदासीन रहेगा।

शनि और गुरु के पर्वत उठे हों तो विचारवान्, मशहूर और सज्जन होता है।

यदि ऐसा ही चिन्ह स्त्री के हाथ में हो तो उसे हिस्टीरिया का रोग होता है।

शनि और बुध के पर्वत उठे हों तो लुच्चा होता है और एकांत में सुस्त, उदास और समाज में प्रसन्न चित्त वाला होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो क्रोधी, विषयी, मिथ्याभिमानी होता है।

शनि और शुक्र का पर्वत उठा हो तो वेदान्ती, गुप्त-विद्या का प्रेमी, भोगी और धार्मिक होता है।

शनि व चन्द्र का पर्वत उठा हो तो स्वाभिमानी और काल्पनिक होता है।

सूर्य और बुध का पर्वत उठा हो तो वक्ता, शास्त्र का जानने वाला और बुद्धिमान होता है।

सूर्य, मङ्गल या शनि का पर्वत उठा हो तो मिलनसार, परोपकारी और शान्तिप्रिय होता है।

सूर्य और गुरु का पर्वत उठा हो तो न्यायप्रिय और दयावान् होता है।

बुध और गुरु के पर्वत उठे हों तो समाज का प्रेमी तथा खेल-तमाशे का प्रेमी होता है।

बुध व मङ्गल के पर्वत केवल उठे हों तो मजाक पसन्द करने वाला होता है।

बुध और शुक्र के पर्वत उठे हों तो मजाकिया और प्रसन्न चित्त वाला होता है।

बुध और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो विनोदी लड़कियों का मित्र और पशु-पक्षी का शौकीन होता है।

मङ्गल और सूर्य के पर्वत उठे हों तो सच्चा, सदाचारी और ज्ञानी होता है।

शनि और मङ्गल के पर्वत उठे हों तो द्वेष करने वाला होता है।

दोनों मङ्गल पर्वत उठे हों तो प्राणी को भूमि का लाभ होता है।

चन्द्र और बुध के पर्वत उठे हों तो भाग्यवान् और बुद्धिमान् होता है।

चन्द्र और शुक्र के पर्वत उठे हों तो काल्पनिक और सुख भोगने वाला होता है।

चन्द्र और शनि के पर्वत उठे हों तो डरपोक और कल्पना-शक्ति कम होती है।

गुरु और शुक्र के पर्वत उठे हों तो चापलूसी को पसन्द करने वाला और उन्नति करने वाला होता है।

## १२—शंख

उङ्गलियों के अग्र-भाग पर शङ्ख, चक्र और सीपी की आकृति के चिन्ह होते है। ये दो प्रकार के होते हैं। वामावर्त्त बायीं तरफ मुँह वाले, दक्षिणावर्त्त दाहिनी तरफ मुँह वाले, शङ्ख अपनी ही आकृतिका होता है। चक्र गोल, बीच में कटा होता है। शङ्ख जल्दी नहीं दिखाई देते, खास कर हाथ के कार्य करने वालों के निशान घिस जाते हैं। इसलिए दोपहर में और हो सके तो आतशी शीशा से देखना चाहिए।

जिसके हाथ में एक शङ्ख होतो अध्ययनशील, शूरवीर होता है।

जिसके हाथ में दो शङ्ख हों तो दरिद्र या साधू।

जिसके हाथ में तीन शङ्ख हों वह स्त्री के लिए झुकता है। रोता है, धूर्त्त है।

जिसके हाथ में चार शंख हों वह राजा के समान सुखी हो या दरिद्र भी होता है।

जिसके हाथ में पाँच शंख हों वह विदेश में प्रभुता पाए। माननीय होवे।

जिसके हाथ में छः शंख हों वह बड़ा बुद्धिमान होता है।

जिसके हाथ में सात शङ्ख हों वह दरिद्र हो। आठ शङ्ख वाला सुख से जीवन बिताता है।

नौ शङ्ख वाला हिजड़ा या स्त्री के से स्वभाव वाला होता है। दस शङ्ख वाला राजा या योगी होता है।

## १३—सीपी

जिसके हाथ में एक सीपी हो वह राजा हो और यदि एक ही जगह दो सीपी हों तो वह दरिद्री होता है।

जिसके हाथ में दो सीपी हों तो अमीर होता है, तीन हों तो योगी होता है ।

चार सीपी हों तो दरिद्री, पांच सीपी हों तो धनी होता है।

छः सीपी हों तो योगी, सात सीपी हों तो दरिद्री और आठ सीपी हों तो धनी तथा नौ सीपी हों तो योगी और दस सीपी हों तो दरिद्री होता है।

## १४—चक्र

जिसके हाथ में एक चक्रहो तो चतुर हो।दो चक्र हों तो सुन्दर हो। तीन चक हों तो ऐय्याश, बिलासी हो। चार चक्र हों तो दरिद्री हो। पांच चक्र हो तो ज्ञानी हो। छः चक्र हों तो पन्डितों में चतुर हो। जिसके हाथ में सात चक्र हों वह पहाड़ों पर विहार करने बाला हो। आठ चक्र हों तो राजा हो। दस हों तो राजा का सेवक हो। तर्जनी में चक हो तो प्रतापी राजा होता है। उङ्गलियों में होने से भ्रमण करने वाला होता है।जिसके चारों उङ्गलियों में एक शङ्ख, चक्र, गदा हो तो वह ईश्वर के तुल्य माननीय होता है।

दाहिने हाथ के अँगूठे के मध्य में चक हो तो शुक्ल पक्ष में और दिन में जन्म होता है। बाँए हाथ के अँगूठे में यह हो तो कृष्ण पक्ष में दिन में जन्म होता है।

दाहिने हाथ के अंगूठे में यदि यह हो तो गुप्तेन्द्रिय के दाहिनी ओर तिल और बाँए हाथ में अंगूठे पर यह हो तो गुप्तेन्द्रिय के बायीं ओर तिल होता है।

अंगूठे के मूल में जितने चक्र हों उतने ही उसके पुत्र होते हैं। जिसका अंगूठा छोटा होता है उसमें इच्छा शक्ति कम होती है और वह साफ नहीं लिख सकता है।

## १५—नक्षत्र

यह तारे के समान होता है। यह अच्छा लक्षण नहीं है। इससे

चिन्ता, सन्ताप, मुसीबत और दुःख होता है।

वर्ग के अन्दर नक्षत्र हो तो भयानक खतरे से रक्षा हो जाने की सूचना है।

चन्द्र स्थान पर नक्षत्र हो तो भूँठा, रोग-ग्रसित और पानी में डूबने की सूचना है।

यदि मङ्गल के स्थान पर बुध के नीचे हो तो हत्या करने वाले विचार और किसी जङ्गली जानवर से चोट लगने की सूचना है।

मङ्गल के स्थान में यदि यह चिन्ह हो तो रेलवे, भूडोल से हानियाँ व चोट लगती हैं।

शुक्र के स्थान पर हो तो किसी स्त्री से कष्ट पाने की और निराशा का योग होता है या दुःखदायी विवाह होने की सूचना है, किसी सम्बन्धी की मृत्यु की सूचना है।

यदि दाहिने हाथ पर तारा हो तो पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में होती है। यदि यही चिन्ह बांए हाथ पर शुक्र के पर्व पर हो तो बाल्यावस्था में माता की मृत्यु जानना। यदि किसी रेखा पर शुक्र के स्थान पर तारा हो तो किसी सम्बन्धी या स्नेही के आफ़त में फँसने या भाग्यहीन की सूचना है।

भाग्यरेखा के ऊपर और मस्तकरेखा के नीचे हो तो बाईसिकिल या वाहन से चोट लगने की सूचना है।

यह हृदयरेखा पर दिल की बीमारी बतलाता है।

यह चिन्ह बुध के स्थान में हो तो जहर से मृत्यु की सूचना है।

उच्च मङ्गल के स्थान में हो तो आंखों को चोट पहुँचे ऐसा कहा गया है।

शुक्र के स्थान पर नक्षत्र का होना बीमारी की सचना देता है।

———

# दूसरा भाग

## हस्त रेखाएँ

# पहला अध्याय

## रेखा-विचार

सामुद्रिकशास्त्र रेखाओं के द्वारा ही जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान कराता है। मनुष्य की हस्त-रेखाएँ उनके जीवन पर प्रभुत्व रखती हैं और अब हम उन्हीं रेखाओं के विषय में वर्णन करेंगे, तथा उन रेखाओं को पढ़ने का ढङ्ग बताएंगे।

मनुष्य की हथेली पर तथा उसके आस-पास अनेकों आड़ी-तिरछी रेखाएं होती हैं। वे तमाम रेखाएं अपना विशेष महत्व रखती हैं। वैसे तो ये रेखाएँ समय-समय बनती-बिगड़ती रहती हैं और परिस्थितियों के अनुसार अपनी लम्बाई कम और अधिक भी करती रहती है। मगर फिर भी उनकी भाषा स्पष्ट है, जिससे वे प्राणी के जीवन की अनेकों बातों को स्पष्ट करती रहती हैं।

इन रेखाओं के निकलने और विलुप्त होने के स्थान के साथ ही साथ उनके नाम और उनकी चाल के विषय में अवश्य जान लेना चाहिए।

हथेली में वैसे तो अनेकों रेखाएं होती हैं मगर उनमें जो अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं, वे ये हैं—

१. जीवनरेखा
२. स्वास्थ्यरेखा
३. हृदयरेखा
४. मस्तकरेखा
५. भाग्यरेखा
६. सूर्यरेखा
७. विवाहरेखा

८. सन्तानरेखा

६. मणिबन्धरेखा

१०. छुटपुट रेखाएँ, शुक्र-मुद्रिका आदि ।

इन रेखाओं का पूर्ण वर्णन जो अगले अध्यायों में किया गया है, उनके साथ के चित्रों को देखकर रेखाओं की स्थिति को पूर्णतया जान लेना चाहिए ।

ऊपर कही हुई रेखाएँ सभी हाथों में पाई जाती हैं। इन रेखाओं की बिना जानकारी के हस्त-परीक्षा करना सम्भव नहीं है। इनके विभिन्न नाम, स्थिति तथा ग्रह प्रभावों को जानना अति आवश्यक है ।

चित्र नं० १२

१. जीवनरेखा—अंगूठे के ऊपर और तर्जनी उङ्गली के नीचे वाले स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र नक्षत्र के क्षेत्र को घेरती हुई

मणिबन्ध रेखा की ओर चलती है। यह गोलाकार होती है। इसके अन्दर की ओर समानान्तर रूप से चलने वाली एक और रेखा होती है, जिसे मङ्गल रेखा कहते हैं।

२. स्वास्थ्यरेखा—जीवनरेखा के विलुप्त होने के आस-पास ही के स्थान से प्रारम्भ होकर यह रेखा कनिष्ठा उङ्गली के मूल में स्थापित बुध ग्रह के क्षेत्र में जाकर समाप्त होती है। अक्सर प्राणियों के हाथ में इस रेखा का अभाव होता है। ऐसे प्राणी पूर्ण स्वस्थ्य देखे गए हैं। स्वास्थ्यरेखा का हाथ में न होना अच्छा समझा जाता है।
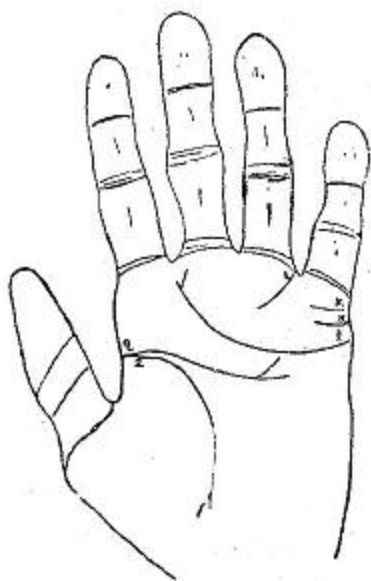
चित्र नं० १२

३. हृदयरेखा—तर्जनी उङ्गली के मूल में स्थापित बृहस्पति ग्रह के नक्षत्र ही से यह रेखा प्रारम्भ होती है और मस्तकरेखा के साथ-साथ चलती हुई हथेली की दूसरी तरफ जाकर कनिष्ठा उङ्गली

में उतर कर विलुप्त हो जाती है। इसकी अन्य स्थितियां भी हैं, मगर वह सूक्ष्मता के साथ विशिष्ट अध्याय में पूर्णतया से व्यक्त की गई हैं।

४. मस्तकरेखा—जीवनरेखा के आस-पास के या उसके साथ के स्थान से निकलती है और हथेली के मध्य भाग में होती हुई चंद्र ग्रह के क्षेत्र में जाकर समाप्त हो जाती है। इस रेखा की स्थिति बहुत कम बदलती है। इसका प्रभाव अन्य छोटी रेखाओं द्वारा अन्य रेखाओं के स्पर्श आदि पर पड़ता है।

५. भाग्यरेखा—यह रेखा मणिबन्धरेखा के ऊपर वाले भाग के मध्य या उसके आस-पास से निकलती है और मध्यमा उङ्गली के क्षेत्र में जा कर समाप्त होती है। इसकी लम्बाई निश्चित नहीं होती। कभी तो यह मस्तकरेखा, हृदयरेखा आदि को काटती हुई ऊपर की ओर बढ़ती जाती है और कभी यह थोड़ी दूर जाकर हथेली के मध्य भाग में समाप्त हो जाती है।

६. सूर्यरेखा—इस रेखा के प्रारम्भ होने के कई स्थान हैं जिनका पूर्ण विवरण इस रेखा के विशिष्ट अध्ययन में दिया गया है। वैसे यह रेखा चंद्र स्थान से लेकर हथेली के मध्य भाग के ही आस-पास से प्रारम्भ होती है और निरन्तर आगे बढ़ती हुई कनिष्ठा उङ्गली के नीचे बुधदेव के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। इसका प्रभाव भाग्यरेखा पर विशेष पड़ता है।

७. विवाहरेखा—हृदयरेखा जहाँ जाकर प्राय: समाप्त होती है उसके ऊपर वाले बुध के क्षेत्र के निचले भाग से यह रेखा प्रारम्भ होती है और थोड़ा आगे बढ़कर विलुप्त हो जाती है। यह आवश्यक नहीं कि प्राणी के हाथ में केवल एक ही विवाहरेखा हो। कई विवाह रेखाएं भी हो सकती हैं।

८. सन्तानरेखा—विवाहरेखा के ऊपर ही आड़ी या खड़ी

छोटी रेखाओं को विवाहरेखा कहते हैं। प्राणी के हाथ में यदि विवाह रेखा है तो यह आवश्यक नहीं कि सन्तानरेखा भी हो। सन्तानरेखाओं का होना-न-होना प्राणी के भाग्य पर निर्भर होता है। जो नि:सन्तान होते हैं उनके यह रेखाएँ नहीं होतीं।

९. मणिबन्ध रेखाएँ:—हथेली के नीचे जहाँ वह कलाओं के साथ जुड़ती हैं ये रेखाएँ होती हैं। वैसे तो ये तीन रेखाएँ होती हैं मगर अनुभवों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि बहुत से प्राणियों के हाथ में तीन होती हैं और बहुत से प्राणियों के हाथ में केवल दो होती हैं और बहुत से प्राणियों के हाथ में केवल एक ही होती है। बिना मणि-बन्ध रेखा वाला प्राणी आज तक नहीं देखा गया। यह रेखाएँ कलाई को घेरे रहती हैं और स्पष्ट होती हैं। हथेली की ओर से कलाई को देखने पर यह घड़ी की चेन की भाँति दृष्टिगत होती हैं।

१०. फुटकर रेखाएँ–शुक्र-मुद्रिका आदि:—इन चुट-पुट रेखाओं में शुक्र-मुद्रिका का विशेष महत्व है। यह धनुषाकार होती है यह तर्जनी और मध्यमा उङ्गली के मध्य वाले भाग से आरम्भ होकर कनिष्ठा और अनामिका उङ्गली के बीच वाले भाग में जाकर समाप्त होती है।

शनि-मुद्रिका दुर्भाग्य बताने वाली रेखा है। यह शनि के स्थान को काटती है और इस प्रकार भाग्य को गिराती है।

गुरु-मुद्रिका तर्जनी के मूल में स्थापित वृहस्पति ग्रह क्षेत्र को घेरती हुई दिखाई देती है। मगर यह रेखा बहुत कम पाई जाती हैं।

निकृष्ट-रेखा यह रेखा चन्द्र स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान तक धनुषाकार होकर जाती है।

रेखाओं के विषय में यह जानना आवश्यक है कि इनका ज्ञान करने के लिए, रेखा सम्बन्धी दो-चार नियम या केवल एक या दो बार

पुस्तक को पढ़ना ही पर्याप्त न होगा। किसी भी विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना कोई साधारण कार्य नहीं है वरन् कठिन है। किसी भी विषय को पूर्ण रूप से जानने के लिए समय की भी आवश्यकता होती है। मनुष्य को उन रेखाओं का ज्ञान जो उसकी शारीरिक, मानसिक और अन्य मानवी-शक्तियों के विकास तथा जिसके फल स्वरूप मनुष्य को प्रारब्ध का ज्ञान होता है, उनका जानना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय का ज्ञान किसी गम्भीर-से-गम्भीर विषय के ज्ञान से भी कहीं अधिक महत्व रखता है। इस विषय का ज्ञान मनुष्य के जीवन से विशेष-रूप से सम्बन्ध रखता है। जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि यह विषय इतना सरल नहीं है जो कि आसानी से और कहानी की तरह पढ़कर समझा जा सके। इसलिए विद्यार्थियों को चाहिए कि इस विषय का अध्ययन करने के लिए और इसका अभ्यास करते समय दृढ़, विचारशील, और गम्भीर बनना चाहिए। इसके लिए एकाग्रचित्त होना आवश्यक है।

इस विषय के ज्ञान के लिए अधिक समय की आवश्यकता होती है। परन्तु यह कभी न समझना चाहिए कि समय व्यर्थ गया या निरर्थक रहा, बल्कि इसके विपरीत जितना अधिक समय लगेगा उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त होगा।

यदि देखा जाय तो हाथ की रेखाओं की पुस्तक पढ़ना ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार से प्रकृति की पुस्तकों को पढ़ना है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं ये उस पुस्तक को पढ़ना है जिसका कि प्रत्येक पन्ना जीवधारी मनुष्य, जिसके पृष्ठ जीवन और मृत्यु, और जिसके शब्द मनुष्य की वह चमकती हुई आशाएं हैं, जिनको लेकर वह अपने जीवन के कार्य-क्षेत्र की ओर अग्रसर होता है।

इन सब बातों को ध्यान में रखकर प्रत्येक विद्यार्थी धीरे २ इस विषय को पूर्ण रूप से समझ सकता है और अपने-अपने जीवन में कार्य रूप से परिणत कर सकता है। मनुष्य को यह बात सदैव ध्यान में रखनी चाहिए कि उसे किसी भी चीज को जानने के लिए किसी

किताब या किसी विशेष मनुष्य पर ही निर्धारित न रहना चाहिए वरन् उसे अपनी स्वयं की बुद्धि का भी उपयोग करना चाहिए। किसी भी विद्या में पारंगत होने के लिए आवश्यक है कि अपनी बुद्धि और विवेक का भी सहारा लिया जाय और साथ ही शास्त्रीय नियमों का भी पालन किया जाए।

रेखाएँ लम्बी, छोटी और समान होती हैं। अतः उनके विषय में जानकारी रखने के लिए आवश्यक है कि रेखाओं का परिमाण भी ध्यान में रखा जाए।

## रेखा-परिमाण

१४ यब के बराबर सूर्यरेखा श्रेष्ठ होती है। ६ से १३ यब तक रेखा वाला प्राणी स्थूल बुद्धि वाला होताहै। ६ यबसे कम हो तो मंद बुद्धि की सूचना है। १२ यबके ऊपरहो या बराबर हो तो उत्तम होती है और राजयोग की सूचक है। इससे कम हो तो उसे खण्ड रेखा कहते हैं।

१ यब का नाप १० वर्ष के बराबर है। इसलिए लम्बी रेखाओं का नाप लम्बे यब से और छोटी रेखाओं का नाप बड़े यब से करना चाहिए। सूर्यरेखा को बड़ी रेखा में गिनना चाहिए। इससे इसे भी बड़े यब से नापना चाहिए। फाँकदार और शाखायुक्त रेखा ज्यादा शुभ समझी जाती है। क्योंकि यह लक्षण रेखा के गुण को बढ़ा देता है। हृदयरेखा से ऊपर जाने वाली रेखाएँ आशाजनक, और नीचे जाने वाली रेखाएँ निराशाजनक होती हैं।

मनुष्य के हाथ में अक्सर दो-तीन वर्षों में नई छोटी २ रेखाएँ उदय होती हैं जो आने वाले शुभाशुभ की सूचना देती हैं। रेखा का पीलापन होना खून की कमी बताता है।

गहरी और लाल रङ्ग की रेखाएँ आवेशमें आने, निर्दयता और गर्म मिजाज की सूचना है।

विनाश युक्त अर्थात् छिन्न-भिन्न रेखाएँ अपने शुभ फल को नहीं देती है।

कुशा के समान अग्र भाग वाली सुन्दर रेखाओं वाले प्राणी दरिद्री नहीं होते हैं।

मूल यानी भाग्यादि शुभ रेखाओं के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते। पितृरेखा से आयु व प्रकृति समझना चाहिए। जो रेखा प्रधान हो उसका ही गुण कहना चाहिए।जीवन, मस्तक और हृदय-रेखाएँ क्रमसे पुरुष, स्त्री और नपुंसक तथा नभचर, थलचर और जल-चर सूचक हैं। क्रम से सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी भी हैं।

जीवनरेखा को ऊर्ध्व लोक, मस्तकरेखा को मृत्यु लोक और हृदयरेखा को पाताल लोक कहते हैं। बाँए और दाहिने हाथ से गमन और आगमन का विचार करना चाहिए अर्थात् बाँऐं हाथ में जीवन-रेखा साफ हो तो पितृलोक से आयाहै और दाहिने हाथ में हो तो मरने के बाद पितृलोक में जायगा।

## रेखाएँ

मनुष्य का जीवन तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

१—जीवन, जो जीवनरेखा से ज्ञात होता है।

२—प्रेम, हृदयरेखा से ज्ञात होता है।

३—दिमागी शक्ति की जानकारी मस्तकरेखा से ज्ञात होतीहै।

इन रेखाओं का विस्तृत वर्णन अगले अध्यायों में किया गयाहै।

# दूसरा अध्याय

## जीवन-रेखा

चित्र नं० १२ के देखने से जीवनरेखा की वस्तुत: स्थिति का ज्ञान हो सकता है। इस रेखा की स्थिति के विषय में स्पष्ट रूप से इतना जान लेना पर्याप्त होगा कि जीवनरेखा तर्जनी और अंगूठे के बीच के स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान तक जाती है। मनुष्य के स्वास्थ्य और जीवन-मृत्यु को यह स्पष्ट करती है। साथ ही इसका महत्व अन्य रेखाओं के ऊपर भी रहता है। क्योंकि मनुष्य के जीवन-मरण का प्रश्न ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। उदाहरणार्थं—किसी मनुष्य के हाथ में राजा बनने का योग है, मगर उसकी आयु २० वर्ष से अधिक नहीं। ऐसी दशा में जीवनरेखा का प्रभाव उसकी भाग्यरेखा का प्रभाव उसकी भाग्यरेखा के प्रभाव को क्षीण कर देगा।

जीवनरेखा की आकृति देखकर प्राणी की आयु तथा मृत्यु के बारे में बताया जा सकता है। रेखा की लम्बाई, स्पष्टता और उसके तोड़-मोड़ों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। हर प्राणी अपनी आयु जानने की लालसा रखता है। अत: वह ज्योतिषी से अवश्य पूछता है कि "मेरी आयु कितनी है?"

इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन है। रेखा पर आयु तो लिखी होती नहीं और न ऐसा कोई माप ही है जिससे आयु को सही बताया जा सके। अकाल मृत्यु के चिह्न भी अक्सर जीवनरेखा पर नहीं होते। सीधी, साफ, गहरी और कम टूटी हुई, लम्बी जीवनरेखा को देखकर सहज ही ६० या ७० वर्ष की आयु बताई जा सकती है। मगर हो सकता है कि ऐसे लक्षण वाली रेखा होते हुए भी मनुष्य किसी

( चित्र नं० १४ )
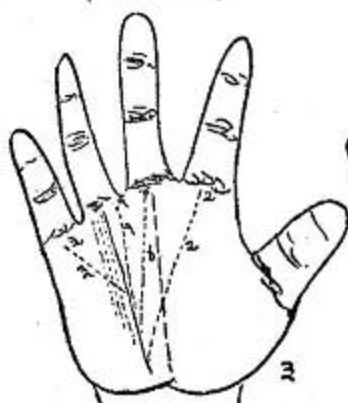
दुर्घटना का शिकार हो जाए और मृत्यु को प्राप्त हो। ऐसी दशा में मस्तकरेखा को भी जीवनरेखा के साथ ही समझ लेना आवश्यक है।

ठीक तो यही है कि समस्त रेखाओं का विचार कर लेने के बाद ही जीवनरेखा को देखना चाहिए और उसके फलों को कहना चाहिए। मनुष्य का जीवन रोगों के बिना अपूर्ण रहता है। ऐसा कोई प्राणी इस संसार में पैदा नहीं हुआ जो किसी-न-किसी रोग का शिकार न हुआ हो, और इसके फलस्वरूप जीवनरेखा अवश्य ही कटी हुई होगी। अतः फल कहने से पहले इस प्रकार के कटे हुए स्थलों को ग़ौर से देख लेना अति आवश्यक है। वरना फल कहने में ग़लती हो सकती है।

अकाल मृत्यु के कारण और उसकी सम्भावनाओं को जानने के लिए मस्तकरेखा को अवश्य देखना चाहिए। साथ ही स्वास्थ्यरेखा को भी देखना चाहिए। अगर मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक है तो वह दीर्घ जीवी होगा, यदि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं तो वह शीघ्र ही मौत को प्राप्त होगा। स्वास्थ्यरेखा की स्पष्टता और लम्बाई दोनों की तुलना जीवनरेखा से करनी चाहिए और यदि दोनों रेखा एक-दूसरे से किसी स्थान पर मिल जांय तो मिलने वाले स्थान को आयु का स्थान समझ-कर और अनुमान तथा गणना करके मनुष्य को उसकी आयु बता देनी चाहिए। यह पहले ही कहा जा चुका है कि किसी भी प्राणी को उसकी आयु के विषय में निश्चित रूप से बताना बहुत कठिन है, जितना कुछ भी बताया जा सकता है वह केवल गणना और अपने अनुमान के द्वारा ही। (चित्र नं० १ पर, नं० १४ वाली बिन्दुदार रेखा को देखो)

प्रायः देखा गया है कि जीवनरेखा अपने निश्चित स्थान से निकल कर शुक्र के स्थान को घेर लेती है। उसकी लम्बाई, गहराई और स्पष्टता ठीक होती है, मगर तब भी प्राणी की आयु अधिक नहीं होती। वैसे तो इस तरह के हाथ वाला प्राणी सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होना चाहिए, मगर वह ५० वर्ष ही में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उसका कारण है कि उस प्राणी की जीवनरेखा जहाँ बहुत ही स्पष्ट और

गहरी होती है उसी क्षेत्र से गुजरती हुई उसकी स्वास्थ्य रेखा क्षीण और अस्पष्ट होती है। यह भी हो सकता है कि जहाँ स्वास्थ्यरेखा गहरी हो वहाँ कोई द्वीप हो। इन दशाओं में ही प्राणी पूर्ण आयु को प्राप्त किए बिना ही मृत्यु को प्राप्त होता है।(चित्र में नं० २ पर दोनों रेखाओं की मोटाई देखो तथा स्वास्थ्य रेखा पर पड़े द्वीप को देखो )

यह भी देखा गया है कि अनेकों छोटी-छोटी रेखाएँ हथेली के अन्य भागों से निकल कर हाथ की रेखाओं को छूती हैं या काटती हैं। यह चुट-पुट रेखाएं भी अपना विशिष्ट महत्व रखती हैं। जीवनरेखा को अगर इस प्रकार की कोई छोटी रेखा यदि शनि के स्थान से निकल कर काटती हुई निकल जाए तो इस प्रकार की रेखा का, प्राणी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह अकाल मृत्यु की सूचना भी है। अतः शनिके स्थानसे निकलने वाली इन रेखाओंको भी ध्यानमें रखना आवश्यक है।(चित्र नं० १४।१की बिंदु वाली रेखाके नं०१स्थलकोदेखो)

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि शरीर रोगों का घर है और प्राणीमात्र के शरीर में विभिन्न प्रकार के जीव पनपते रहते हैं। अतः इन जीवों में अनेकों जीव ऐसे होते हैं कि वे स्वास्थ्य पर बुरा असर डालते हैं। इन जीवों के कारण ही ये चुट-पुट रेखाएं पनपती हैं और अपना अस्तित्व बनाती हैं। इस विचार से प्राणी को उचित हैकि यदि उसके हाथमें इस प्रकारकी रेखाएं हों तो उसे सावधान रहना चाहिए और अपने शरीर के तन्तुओं का ज्ञान प्राप्त करके रोगकारी तंतुओंके विनाश का उपाय करना चाहिए।स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मत है कि परम्परागत तन्तुओंके अलावा सब तन्तुओंका विनाश सहज ही हो सकता है और मनुष्य को निरोग बनाया जा सकताहै।यदि ज्योतिषी प्राणी को यह बतादे तो हाथ दिखाने वाला आने वाली स्वास्थ्य सम्बन्धी आपदाओं से सजग हो जाए और अपने जीवन तथा स्वास्थ्य की रक्षा कर सके।

जीवनरेखा को देखकर मृत्यु अथवा स्वास्थ्य के विषय में अपना

निर्णय देनेसे पहले ज्योतिषीको चाहिए कि वह दोनों हाथ की रेखाओं को गौर से देखे। सीधे हाथ की रेखाओं के फल को प्रभुत्व दिया जायगा मगर बांए हाथ की रेखाओं का फल भी जीवन पर बिना पड़े न रहेगा। जिस स्थान पर बाँए हाथ में जीवनरेखा टूटीहै उसके अनुमान ही से यह जान लेना चाहिए कि अनुमानतः उसी समय अवश्य कोई भयङ्कर रोग होगा, अकाल मृत्यु की सम्भावना होगी।यदि दोनों हाथों की रेखा एक ही स्थान पर टूटें और टूटी हुई रेखा का रुख शुक्र के स्थान की ओर हो तो प्राणी की मृत्यु निश्चित है।

पहले ही कहा जा चुकाहैकि जीवन रेखा स्पष्ट और गहरी तथा लम्बी दीर्घ आयु होने की द्योतक है। हर प्राणी के हाथ में विभिन्न प्रकार की रेखाएँ होती हैं। कुछ गहरी, लम्बी और स्पष्ट होतीहैं।कुछ टूटी होती हैं, कुछ कटी हुई होती हैं, और कुछ रेखाए ऐसी होती हैं जिनकी बनावट जन्जीर की तरह होती है।यदि किसी प्राणी का हाथ कोमलहो और उसकी जीवनरेखा जन्जीरदार हो तो वह हमेशा रोगी रहेगा। उसका स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रह सकेगा। मगर आगे चल कर यदि स्वास्थ्यरेखा ठीक हो गयी हो तो स्वास्थ्य भी धीरे २ ठीक हो जायगा।

यदि जीवनरेखा निश्चित स्थान से निकलने के बजाय तर्जनी उँगलीके नीचेसे प्रारम्भ होकर बृहस्पतिके क्षेत्र को पार करके नीचेको अग्रसरहोतो ऐसीरेखा वाला प्राणीअवश्यही उच्चपदाधिकारी,यशस्वी, विद्वान् आदि होगा। (चित्र नं०१४।३में जीवन रेखा का निकासदेखो।)

जीवन रेखा के निकलने के स्थान ही के आस-पास से मस्तक और हृदय रेखाएँ प्रारम्भ होती हैं। जीवन और मस्तक रेखाएं तो अक्सर-एक-दूसरे से मिल भी जाती हैं। मगर यह भी देखा गया है कि निकलने के स्थान पर ही यह तीनों रेखाएं मिल जाती हैं। इस प्रकार से इन रेखाओं का आपस में मिलना मनुष्य के लिए ठीक नहीं होता। इस प्रकार का लक्षण स्पष्ट करता है कि इस प्रकार की रेखाओं

युक्त हाथ वाला प्राणी अपनी मौत का स्वयं ही कारण होता है। वह अपनी उत्तेजना को नहीं सम्भाल पाता और आवेश में आकर आत्म-हत्या कर लेता है, पानी में कूद कर जान गँवा देता है, आग लगाकर अपने शरीर को जला देता है, या किसी ऊँचे स्थान से गिर कर अपनी जीवनलीला को समाप्त कर डालता है। वैसे तो इस तरह तीनों रेखा मिला हाथ बहुत कम देखने में आताहै मगर फिरभी यह ध्यान रखना ही चाहिए कि यदि इस प्रकार का हाथ हो तो उसका यह फल होताहै। (चित्र नं० १४।४ का नं० १ स्थल देखो।

साधारणतया जीवनरेखा और मस्तकरेखा आपस में मिली होती हैं। इसका एकमात्र कारण यही है कि इनके निकलने का स्थान एक है और इनके आस पास से अनेकों छोटी रेखाएँ निकलती हैं। ये चुट-पुट रेखाएँ इस प्रकार हाथ को घेरती हैं कि यह दोनों ही रेखाओं को शाखायुक्त कर देती हैं और आपस में मिला देती हैं। यदि इस प्रकार की मिली हुई रेखाएं आगे चलकर हथेली के मध्य के पहले ही बिलग हो गई हैं तो उनका फल शुभ होता है। ऐसी रेखाओं वाला प्राणी अपने संकल्प पर दृढ़ रहता है। अपने काम में सावधान और सतर्क रहता है। हर बात को सहज ही समझ लेता है, उसमें आत्म विश्वास की मात्रा भी अधिक होती हैं। इसके विपरीत यदि ये दोनों रेखाएँ अपने निकास के स्थान हीसे अलग निकली हों तो प्राणी लापरवाह होता है। वह पढ़ने-लिखने में रुचि नहीं रखता और अपनी ही दुनियाँ में मस्त रहता है। इसके विपरीत यदि इन दोनों रेखाओं के मध्य में समान अन्तर हो तो ऐसा प्राणी दूरदर्शी, यश की कामना वाला, साहसी और उत्साही होता है। (चित्र नं० १४।५ में बिना नम्बर वाली रेखाओं को देखो ।)

मनुष्य के हाथ में जितनी भी मुख्य रेखाएँ है उनमें से अनेकों रेखाओं में से बहुत-सी शाखाएँ निकल हथेली के अन्य भागों की ओर जाती हैं। वे विभिन्न रेखाओं को छूती हैं या उनको काट कर निकल

जाती हैं। इस प्रकार की जितनी भी रेखाएँ जीवनरेखा के मध्य से प्रारम्भ होकर नीचे की ओर अग्रसर होती हैं तो ऐसा प्राणी उग्र स्वभाव का होता है। वह यात्रा का शौकीन होता है, मगर क्रूर होता है। डरपोक होता है और आलसी होता है। मादक द्रव्यों का सेवन वह खूब करता है और परिश्रम से डरता है। इस प्रकार के लक्षण अच्छे नहीं होते। [ चित्र नं० १४।५ में १-१ वाली रेखा को देखो ]

यदि यह शाखाएँ बृहस्पति के स्थान की ओर अग्रसर होती है तो उनका प्रभाव बदल जाता है। वह लाभ और उन्नति की सूचक होती हैं। उच्च स्थान में बृहस्पति होने के कारण प्राणी समाज में उच्च स्थान प्राप्त करता है, उसे यश प्राप्त होता है, और उसके अधिकारों की वृद्धि होती है। [चित्र नं० १४।५ में २-२ वाली रेखा को देखो]

इसी तरह ये शाखाएँ जिस ग्रह की ओर जाकर समाप्त होती हैं, उसी तरह के लक्षण उसमें विद्यमान होने लगते हैं। ग्रह प्रभाव को जानकर ही फल को कहना चाहिए।

जब इस प्रकार की रेखा जीवनरेखा को छूकर शनि की ओर जाती है तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने व्यक्तिगत साधनों द्वारा उन्नति को प्राप्त होगा। यह रेखा सूर्य की ओर जाती है तो वह प्राणी अपने सुकर्मों द्वारा अवश्य यश को प्राप्त करेगा और संसार में उन्नति करेगा। [ चित्र नं० १४।५ में ३-३ वाली रेखा को देखो ]

इस तरह की रेखा जब बुध की ओर अग्रसर होती है तो स्पष्ट है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अवश्य ही अपने व्यापार और कलात्मक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। [चित्र में ४-४ वाली रेखा को देखो] यह भी देखा गया है कि हथेली के मध्य भाग को पार करके जीवन-रेखा दो भागों में विभाजित हो जाती है। इस प्रकार शाखायुक्त जीवनरेखा का प्रभाव है कि प्राणी सुदूर प्रदेशों की यात्रा करेगा, वह यात्रा में अधिक दिलचस्पी लेगा।

जीवनरेखा गहरी, लम्बी और स्पष्ट हो, और यदि उस पर द्वीप का चिन्ह है तो प्राणी सदैव अस्वस्थ्य रहेगा। क्योंकि जीवनरेखा पर द्वीप का चिन्ह रोग का सूचक होता है। यदि इस प्रकार के द्वीप का चिन्ह का चिन्ह उस स्थान पर है जहाँ से जीवनरेखा प्रारम्भ होती है तो प्राणी के जन्म पर सन्देह किया जाता है। इस लक्षण वाला प्राणी अपने माता-पिता की जायज सन्तान नहीं होता। मगर ऐसी दशा में फल कहने वाले को सतर्क रहना चाहिए। माँ का वास्तविक चरित्र जानकर तथा अपने जन्म की अपवित्रता का ध्यान करके प्राणी को दुःख होता है। ऐसी दशा में जबतक किसी के जन्म के इतिहास के विषय में विशेष ज्ञान न हो कभी न कहना चाहिए। [चित्र नं० १४१५ में नं० २ के स्थल पर द्वीप के चिन्ह को देखो ]

जीवनरेखा के प्रारम्भ होने के स्थान के आस-पास से अनेकों छोटी-बड़ी रेखाएं प्रारम्भ होती हैं। ये रेखाएं चुट-पुट होती हैं। अधिक लम्बी भी नहीं होतीं और न अधिक गहरी होती हैं। इन चुट-पुट रेखाओं में एक तो मङ्गलरेखा होती है जो जीवनरेखा के सामान्तर चलती है। अन्य रेखाएं छोटी-छोटी होती हैं जो थोड़ी दूर जा कर समाप्त हो जाती हैं। इन रेखाओं को ज्योतिष शास्त्रीयों ने प्रभुत्व रेखाएं कहा है। ये रेखाएं मङ्गलरेखा के साथ-साथ जीवनरेखा के भीतर की ओर होती हैं। इनको देखकर सहज ही कहा जा सकता है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने विशिष्ट प्रभुत्व से अपने वर्ग पर आधिपत्य रखता है। इस प्रकार की जितनी भी रेखाएं होंगी, प्राणी का प्रभुत्व इतने ही लोगों पर होगा। वे रेखाएं जितनी स्पष्ट, गहरी और लम्बी होंगी उतनी ही देर तक प्राणी का प्रभुत्व रहेगा। [चित्र नं० १४१६ में ३—३ तो मङ्गलरेखा है और उनके पास वाली बिना नम्बर वाली चुट-पुट रेखाएं हैं ]

यह बताया जा चुका है कि जीवनरेखा के समानान्तर एक अन्य रेखा प्रारम्भ होती है, उसे मङ्गलरेखा कहते हैं। मङ्गलरेखा

बहुधा मङ्गल के स्थान से प्रारम्भ होती है और जीवनरेखा के समानान्तर चलती हुई या तो जीवनरेखा के साथ-साथ उसके अन्त तक जाती है अथवा बीच ही में समाप्त हो जाती है। प्रारम्भ में वह गहरी, स्पष्ट होती हुई अगर अन्त तक या पहले ही समाप्त हो जाए तो उसका फलादेश कहने में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। इस प्रकार की रेखा को दूसरी जीवनरेखा भी कहते हैं।

मङ्गलरेखा का प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य और आयु पर अवश्य पड़ता है। ऐसी रेखा वाला प्राणी रोगों से मुक्त रहता है। जीवनरेखा यदि आगे चलकर अस्पष्ट या टूट जाए मगर मङ्गलरेखा स्पष्ट और गहरी हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी असाध्य रोग का शिकार तो होता है मगर उस रोग से उसकी मृत्यु नहीं होती। जीवनरेखा के टूट जाने से अकाल मृत्यु हो जाने का योग होता है, मगर जब मङ्गलरेखा स्पष्ट और गहरी हो तो उसके प्रभाव से प्राण अकाल मृत्यु से भी बच जाता है।

इतना सब होते हुए भी गृहस्वामी मङ्गल अपना प्रभाव बिना दिखाए नहीं रहता। मङ्गल के स्वभाव से मनुष्य चिड़चिड़ा, शीघ्र ही क्रोध और आवेश में भर जाने वाला और उग्र स्वभाव का होता है। वह कलह कर डालता है मगर उसके दिल में मैल नहीं होता और वह कपटी भी नहीं होता।

मङ्गलरेखा में शाखाएँ भी होती हैं। यदि किसी प्राणी के हाथ में मङ्गलरेखा से प्रारम्भ होने वाली कोई शाखा है और जीवनरेखा को काटती हुई मणिबन्धरेखा की ओर अग्रसर होती है, तो जिस स्थान पर यह शाखा जीवनरेखा को काटती है, वह स्थान प्राणी की मृत्यु की अवधि बताता है इस प्रकार की शाखायुक्त मङ्गलरेखा वाला प्राणी अदूरदर्शी, जल्दबाज होता है और अपने इन गुणों के कारण ही बैठे-बिठाए कोई-न-कोई विपत्ति मोल ले बैठता है। [ चित्र नं० १४।६ में ४—४ वाली बिन्दुदार रेखा को देखो ]

ऐसी शाखा जितनी भी रेखाओं को काटती है उन सबका परिणाम यही होता है कि प्राणी के जीवन में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। समय-समय पर प्राणी को बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार जीवनरेखा को काटने वाली रेखाओं को देखकर कह देना चाहिए कि प्राणी अपने सहायकों—कर्मचारियों आदि से सदा उत्पीड़ित रहेगा।

इस प्रकार की रेखाएं जब जीवनरेखा को काट कर हाथ की अन्य रेखाओं को काट कर अन्य रेखाओं को छुऐंगी तो उसका प्रभाव छूने वाली रेखा के प्रभाव के अनुकूल ही होगा।

१—विवाहरखा को छूने वाली रेखा विवाहित जीवन में अनेकों बाधाएं उत्पन्न करती हैं।

२—भाग्यरेखा को छूने वाली रेखा के प्रभाव से प्राणी को व्यापार में घाटा, धन्धे का बिगाड़, नौकरी छूटना या मुकद्दमा लगता है।

३—मस्तकरेखा को काटने या छूने वाली रेखा विकृति मस्तक अथवा पागलपन की द्योतक होती है।

४—स्वास्थ्यरेखा को छूने या काटने वाली रेखा के प्रभाव से प्राणी का स्वास्थ्य बुरा होता है और वह अनेक रोगों का शिकार हो जाता है।

इसी तरह अन्य रेखाओं के विषय में उन रेखाओं के गुणों के अनुसार ही फल कहना चाहिए।

यदि किसी प्राणी के हाथ की रेखाएं ऐसी हों जो शुक्र के स्थान से प्रारम्भ होकर जीवनरेखा के साथ नीचे की ओर चलें तो ऐसी रेखाओं का प्रभाव मनुष्य के प्रेम पर पड़ता है। इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी बिना रोमान्स के जीवित नहीं रह पाते। उनका व्यवहार प्रेममय होता है। इस तरह के लोगों के जीवन में अनेकों घटनाएं भी घटती हैं। अतः जिन प्राणियों के हाथ में ये रेखाएं नही होतीं वे शांत-

प्रकृति और निश्चिन्तता का जीवन व्यतीत करते हैं। प्रेम की व्यथाएँ उन्हें व्यथित नहीं कर पाती।
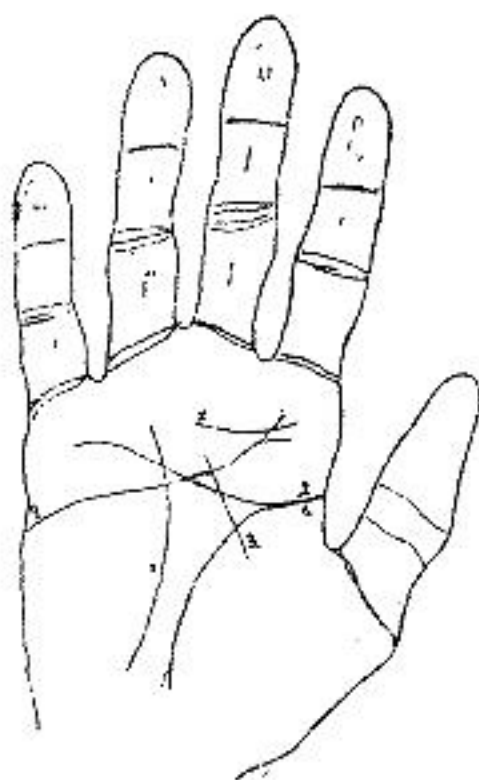
चित्र नं० १५

जीवनरेखा जिस प्राणी के हाथ में लम्बी, गहरी और स्पष्ट होती है। वह दीर्घायु और स्वस्थ होता है। द्वीप, शाखायुक्त जीवन-रेखा कष्टदायक होती है। इस प्रकार की रेखा होने से प्राणी का जीवन कम होता है, उसकी मृत्यु अचानक हो सकती है और वह निरोगी भी नहीं रह पाता।

जीवनरेखा यदि किसी स्थान पर टूट जाए तो वह अकाल मृत्यु की सूचक है। द्वीप यदि जीवनरेखा या स्वास्थ्यरेखा पर हो तब भी अकाल मृत्यु होती है। यदि किसी प्राणी के हाथ में जीवनरेखा टूट रही हो तो ऐसे प्राणी के दोनों हाथ की रेखाओं को देखना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि प्राणी के बाँए हाथ में जीवनरेखा टूटी

होती है और सीधे हाथ में जुड़ी होती है, ऐसी दशा में भयङ्कर रोग अथवा अकाल मृत्यु से प्राणी के जीवन की रक्षा हो सकती है। इसके विपरीत यदि दोनों हाथों ही में रेखाएँ टूटी हों तो प्राणी की अकाल मृत्यु निश्चित होती है।

यदि किसी प्राणी की जीवनरेखा शाखायुक्त अथवा जंजीरदार हो और उसकी स्वास्थ्यरेखा भी शाखायुक्त तथा कटी-फटी हो तो ऐसी दशा में वह प्राणी सदैव निर्बल और रोगी बना रहेगा। उसको कोई न कोई बीमारी घेरे ही रहेगी।

जैसा ऊपर बताया जा चुका है कि ये छुट-पुट रेखाएँ जो जीवनरेखा के समान्तर चलती हैं, वे भी अपना प्रभाव अवश्य डालती हैं। शुक्र के ग्रह से प्रारम्भ हुई रेखाओं के प्रभाव से प्राणी को सिर दर्द, गृह सम्बन्धी व्याधाएँ तथा हृदय रोग घेरे रहते हैं।

जीवनरेखा यदि प्रारम्भ में शाखायुक्त अर्थात् सर्पजिह्वाकार हो और अन्त में भी वह इसी तरह समाप्त होती हो तो वह प्राणी के लिए अशुभ होती है। इस प्रकार की आकृति यदि प्रारम्भ में हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी स्वभाव से कमीना, तङ्ग-दिल, मिथ्याभिमानी आदि दोषों से परिपूर्ण होता है। इसके विपरीत यदि यह रेखा अन्त में इस प्रकार की आकृति धारण किए होतीहै, तो प्राणी अपने जीवन के अन्त के दिनों में गरीब हो जाता है। प्रारम्भ के जीवन में वह चाहे जितना धन क्यों न सञ्चय करे मगर उसकी वृद्धावस्था में उसके पास पर्याप्त धन नहीं रह पाता और वह धन के लिए परेशान रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में इस प्रकार का योग हो कि कुछ रेखाएँ जीवनरेखा के पास से प्रारंभ होकर बाहर की ओर निकलें तो इस तरह की रेखाओं वाला प्राणी भ्रमण प्रिय होता है। वह देश-देशान्तरों में भ्रमण करता है। यात्राओं में उसकी रुचि होती है। उसे इस प्रकार के जीवन में आनन्द आता है। यदि ये रेखाएँ गहरी, स्पष्ट और लम्बी भी हों तो वह प्राणी यात्रा में बड़े-बड़े खतरे उठाने के बाद भी

सकुशल स्वदेश लौट आएगा। अकाल मृत्यु से भी बच निकलेगा।

जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि जीवनरेखा के साथ मिलकर यदि मस्तकरेखा हथेली के अर्धभाग तक जाती हो तो प्राणी शारीरिक-शक्ति में निर्बल होता है और उसका स्वास्थ्य गिरा हुआ होता है। उनमें साहस नहीं होता और इस कारण वह अपने जीवन की विषम परिस्थितियों में घबरा जाता है और हिम्मत हार कर बैठ जाता है।

कभी-कभी जीवनरेखा कुण्डली मारकर शुक्र के स्थान को घेर लेती है। इस प्रकार की जीवनरेखा के प्राणी का शरीर अधिक पुष्ट होता है, मगर उसका मन दुर्बल बना रहता है। जब जीवनरेखा अंगूठे के पास होने के बजाय दूर होती है तो वह प्राणी उत्साही, कर्मशील और विशाल-हृदय वाला होता है।

कभी-कभी जीवनरेखा के पास से चुटपुट रेखाएं निकलकर बृहस्पति के स्थान की ओर अग्रसर होती हैं, ऐसी रेखाओं वाला प्राणी उच्चाभिलाषी और उनकी पूर्ति के लिए हृदय से तत्पर रहने वाला होता है।

यदि जीवनरेखा, मस्तकरेखा से अधिक दूर है—यद्यपि यह दोनों एक ही स्थान से प्रारम्भ होती हैं मगर प्रायः इनमें अन्तर भी होता है, तो ऐसी रेखायुक्त प्राणी हिम्मत वाला, लगन का पक्का और महत्वाकांक्षी होता है।

इसके विपरीत यदि जीवनरेखा, हृदयरेखा और मस्तकरेखा तीनों एक ही स्थान से साथ-साथ निकलती हैं, तो ऐसा प्राणी नासमझ मूर्ख, बकवादी और अदूरदर्शी होता है। देखा गया है कि इस प्रकार के प्राणी अपनी मूर्खता के कारण कभी-कभी अकाल मृत्यु से ग्रास हो जाते हैं। उनमें आत्म-हत्या की प्रेरणा हमेशा जागृत रहती है और वे अपने प्राणों को विसर्जन कर डालते हैं।

जीवनरेखा यदि अपनी समाप्ति के स्थान पर अनेकों शाखाओं में विभक्त हो जाए तो इन चुटपुट रेखाओं का प्रभाव प्राणी के जीवन पर अच्छा नहीं पड़ता। ये रेखाएँ शरीर को रोगी बनाए रहती हैं। इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी का स्वास्थ्य कभी अच्छा नहीं रहता।

यदि कोई रेखा जीवनरेखा से प्रारम्भ होकर तर्जनी के अन्त में स्थापित बृहस्पति के स्थान की ओर जाए तो उसका प्रभाव बड़ा लाभ-दायक होता है। इस प्रकार की रेखाओं वाले प्राणी को बताया जा सकता है कि उसके जीवन में सफलताएं हैं और उद्योग से उसे लाभ होगा।

जब कोई रेखा जीवनरेखा से प्रारम्भ होकर शनि ग्रह की ओर जा रही हो तो स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी अपने उद्योग और उद्यम से कोई ऐसा कार्य करेगा जिसके कारण उसकी कीर्ति चारों ओर फैल जायगी और हर प्राणी उसकी प्रशंसा करेगा। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी अवश्य ही यश और कीर्ति का भागी होता है।

जीवनरेखा को यदि चुटपुट रेखाएँ काटती हैं तो स्पष्ट है कि इनसे प्राणी के जीवन में बाधाएँ होती हैं और मनुष्य को अधिक परिश्रम करके अपने जीवन को सही रास्ते पर डालने की आवश्यकता होती है।

यह देखा गया है कि मनुष्य के हाथ में जीवनरेखा के आसपास वर्ग होता है। इस प्रकार का वर्ग शुभ फल देने वाला होता है। यह समय-समय पर आने वाली आपत्तियों से मनुष्य की रक्षा करता है और शीघ्र ही लाभदायक फल दिखाता है।

पहले ही बताया जा चुका है कि रेखाओं पर दाग भी होते हैं। इन दागों को देखकर उनका गुण तथा अवगुण बताना चाहिए।

# तीसरा अध्याय

## स्वास्थ्य-रेखा

जीवन की सार्थकता पर प्राचीन कहावत है—

प्रथम सुख निरोगी काया। द्वितीय सुख पल्ले में माया ॥
तृतीय सुख पुत्र आज्ञाकारी। अन्तिम सुख सुलक्षणी नारी ॥

अत: इस कहावत के अनुसार, जो जीवन के कठोर सत्य पर निर्धारित है, अगर हम मनन करें तो हमें सहज ही ज्ञात होगा कि शरीर का निरोग होना कितना आवश्यक है। अगर प्राणी स्वस्थ है तब ही वह जीवन को सुचारु रूप से व्यतीत कर सकता है, अगर वह रोगी है तो हमेशा खीझता रहेगा और परेशान रहेगा।

मनुष्य अपने जीवन को स्वयं ही निर्माण करता है। इसलिए उसे उच्च-कर्म करने चाहिए। बिना अच्छे कर्म किए वह कुछ नहीं कर सकेगा और हमेशा परेशान तथा निर्धन रहेगा।

"कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।"

इस लोकोक्ति के अनुसार भी मनुष्य का कर्म ही प्रधान माना गया है। प्राणी मात्र का धर्म है कि वह अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दे और जहाँ तक हो सके अपने स्वास्थ्य को ठीक रखे।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी कहा है—A Healthy soul lives in a healthy body अर्थात् स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। यह सत्य कठोर, सत्य है और इन तमाम विचारों को ध्यान में रखते हुए हर प्राणी को आवश्यक है कि वह अपने स्वास्थ्य के विषय में सतर्क रहे।

चित्र नं० १६

स्वास्थ्य-रेखा से प्राणी को अपने स्वास्थ्य के विषय में ज्ञान हो जाता है। यदि आगामी जीवन में स्वास्थ्य को खतरा है तो बुद्धिमानी यही होगी कि प्राणी भविष्य के लिए तैयार हो जाए और आने वाली आपदाओं से अपनी रक्षा करने का प्रयास करे।

स्वास्थ्य-रेखा के निकास के सम्बन्ध में अनेकों मतभेद हैं। इसके विषय में सबसे पहली बात तो यह है कि अनेकों प्राणियों के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा बिलकुल ही नहीं होती है। बहुतोंके हाथ में होती भी है तो अस्पष्ट-सी और बहुतों के हाथ में गहरी, लम्बी और स्पष्ट होती है। (चित्र नं० १६।१ में नं० २ स्थान को देखो)

वैसे देखा जाय तो स्वास्थ्य-रेखा, जीवन-रेखा का माप है और यह अवसर बदला करती है। जब मनुष्य रोग ग्रस्त होता है तो यह गहरी होती है और जैसे २ प्राणी निरोग होता जाता है वैसे २ यह गायब होती जाती है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार स्वास्थ्य-रेखा मणिबन्ध-रेखा के ऊपर से प्रारम्भ होती है और बुध के स्थान की ओर अग्रसर होती है। सबसे अच्छा स्थान इसका तब है जब यह नीचे की ओर स्पष्ट हो और जीवन-रेखा को बिलकुल भी न छुए। (चित्र नं० १६।१ में १-१ रेखा)

जिन प्राणियों के हाथों में स्वास्थ्य-रेखा बिलकुलही नहीं होती वे निरोग और बलिष्ट होते हैं। जिनके हाथमें स्पष्ट स्वास्थ्य-रेखा होती है उनके शरीर में धीरे२ रोग घर करने लगताहै अतः उन्हें चेत जाना चाहिये। जिनके हाथ में स्वास्थ्य-रेखा गहरी होतीहैं वे भयानक रोगमें फँस जाते है। जिनके हाथ में स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिल जाए उसी स्थान पर आयु की अवधि आने से प्राणी मृत्यु को प्राप्तहोताहै।

स्वास्थ्य-रेखा की एक विशेषता है कि यह रेखा आरम्भ से अन्त तक सीधी होती है। इसमें हेर-फेर नहीं होता। इसमें मोड़-तोड़ भी नहीं होता है।

जिस प्राणी के हाथमें स्वास्थ्य-रेखाहो और वह मणिबंध-रेखा या उसके ऊपरसे प्रारम्भ होकर कनिष्ठा उङ्गलीकी ओर अग्रसर होती

स्वास्थ्य-रेखा से प्राणी को अपने स्वास्थ्य के विषय में ज्ञान हो जाता है। यदि आगामी जीवन में स्वास्थ्य को खतरा है तो बुद्धिमानी यही होगी कि प्राणी भविष्य के लिए तैयार हो जाए और आने वाली आपदाओं से अपनी रक्षा करने का प्रयास करे।

स्वास्थ्य-रेखा के निकास के सम्बन्ध में अनेकों मतभेद हैं। इसके विषय में सबसे पहली बात तो यह है कि अनेकों प्राणियों के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा बिलकुल ही नहीं होती है। बहुतोंके हाथ में होती भी है तो अस्पष्ट-सी और बहुतों के हाथ में गहरी, लम्बी और स्पष्ट होती है। (चित्र नं० १६।१ में नं० २ स्थान को देखो)

वैसे देखा जाय तो स्वास्थ्य-रेखा, जीवन-रेखा का माप है और यह अक्सर बदला करती है। जब मनुष्य रोग ग्रस्त होता है तो यह गहरी होती है और जैसे २ प्राणी निरोग होता जाता है वैसे २ यह गायब होती जाती है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार स्वास्थ्य-रेखा मणिबन्ध-रेखा के ऊपर से प्रारम्भ होती है और बुध के स्थान की ओर अग्रसर होती है। सबसे अच्छा स्थान इसका तब है जब यह नीचे की ओर स्पष्ट हो और जीवन-रेखा को बिलकुल भी न छुए।(चित्र नं० १६।१ में १-१ रेखा)

जिन प्राणियों के हाथों में स्वास्थ्य-रेखा बिलकुलही नहीं होती वे निरोग और बलिष्ठ होते हैं। जिनके हाथमें स्पष्ट स्वास्थ्य-रेखा होती है उनके शरीर में धीरे२ रोग घर करने लगताहै अत: उन्हें चेत जाना चाहिये। जिनके हाथ में स्वास्थ्य-रेखा गहरी होतीहैं वे भयानक रोगमें फँस जाते है। जिनके हाथ में स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिल जाए उसी स्थान पर आयु की अवधि आने से प्राणी मृत्यु को प्राप्तहोताहै।

स्वास्थ्य-रेखा की एक विशेषता है कि यह रेखा आरम्भ से अन्त तक सीधी होती है। इसमें हेर-फेर नहीं होता। इसमें मोड़-तोड़ भी नहीं होता है।

जिस प्राणी के हाथमें स्वास्थ्य-रेखाहो और वह मणिबंध-रेखा या उसके ऊपरसे प्रारम्भ होकर कनिष्ठा उङ्गलीकी ओर अग्रसर होती

हुई हृदय-रेखा से मिल जाय तो इस रेखा-युक्त हाथ वाला प्राणी हृदय रोगों का शिकार होता है।

उसे हृदय धड़कने की बीमारी होती है। इससे बचने के लिए उसे चाहिए कि वह व्यायाम, चिन्ता, मादक वस्तुओं का सेवन आदि बन्द करदे तो उसके जीवन की रक्षा हो सकती है। ( चित्र नं० १६।२ नं० १ वाली रेखा को देखो )

यदि किसी प्राणी की स्वास्थ्य-रेखा, जीवन-रेखा के अन्त में होने वाले स्थान से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर चलती है तो ऐसे प्राणी को गुर्दे का रोग होता है। यदि स्थान २ पर यह रेखा टूट गई हो तो प्राणीकी पाचन-शक्ति कमजोरहो जातीहै और फेंफड़ोंमें विकार
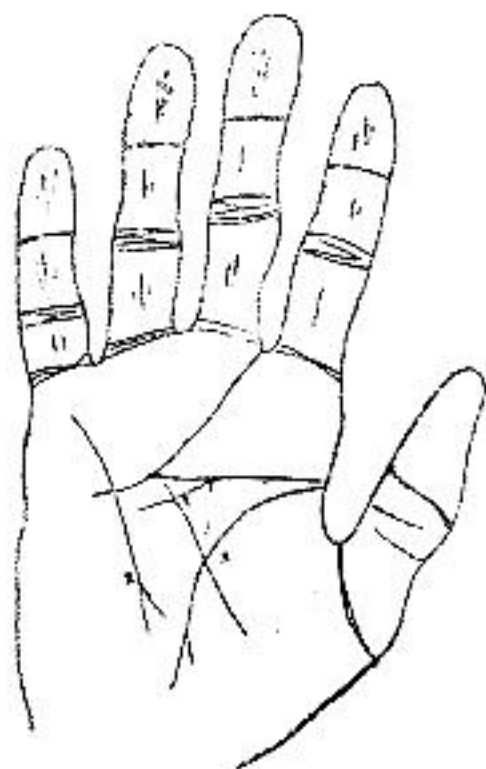
चित्र नं० १७

(सर्प जिह्वाकार जीवनरेखा और स्वास्थ्यरेखा को देखो )

उत्पन्न हो जानेसे वह तपेदिक या दमे का शिकार हो जाताहै। (चित्र नं० १६।२ नं० २ से प्रारम्भ होने वाली रेखा को देखो।)

यदि स्वास्थ्य-रेखा जंजीर-दार होती है तो प्राणी को पेट के अनेकों रोग सताते हैं वायुगोला, जिगर, जलन्धर आदि रोग उसे होते हैं। ऐसी रेखा वाले प्राणी के यदि हाथके नाखून चौड़ेहों और उन पर लाल रङ्गके सफेद दागभी हों तो प्राणी भयङ्कर रोगोंसे पीड़ित रहता है। उसका स्वास्थ्य कदापि अच्छा नहीं रह सकेगा।(चित्र नं. १६।३में १-१ वाली रेखा को देखो)।

जिन प्राणियों के हाथ की उङ्गलियों के नाखून चौड़े हों और उनके हाथकी स्वास्थ्य-रेखा में स्थान २ पर द्वीप विद्यमान हों तो ऐसी दशामें उन प्राणियोंको गलेके रोग अवश्य सताएंगे और वह हमेशा गले की बीमारियों में ही घिरे रहेंगे। जिन लोगों के नाखून लम्बे हों और स्वास्थ्य.रेखा में द्वीप हों तो ऐसे प्राणी सीने के रोग से दुःखी होते हैं। उन्हें गुर्दे का दर्द, दिल धड़कने की बीमारी आदि सताती रहेंगी। (चित्र नं० १६।३ में २-२ वाली रेखा को देखो)

स्वास्थ्य-रेखा मनुष्य के हाथ में बचपन और युवावस्था ही में रहती है। जैसे २ वह प्रौढ़ता की ओर बढ़ता है यह रेखा उसके हाथसे लुप्त होती जाती है। इसका एकमात्र कारण यही है कि जब आदमी प्रौढ़ताकी ओर पदार्पण करताहै तब वह अपने शरीर का ध्यान रखत है अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के कारण वह बहुत ही कम बीमार पड़ता है।

जस प्राणा के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा का सर्वथा अभाव रहताहै वह पूर्णतया स्वस्थ होता है। जिनके हाथमें स्वास्थ्य-रेखा होती है, मगर वह निर्दोष होती है तो वे विलक्षण स्मरण शक्ति वाले होते हैं और व्यवहार कुशल भी होतेहैं। जिन प्राणियोंकी स्वास्थ्य-रेखा लम्बी और साफ होती है वे प्रसन्न चित्त होते हैं। वे अच्छे आचरण वाले होंगे। उनकी बुद्धि कुशाग्र होगी, वे कुशल कारीगर होंगे और अगर व्यापार

का चस्का है तो वे निपुण व्यापारी होंगे। अपने पराक्रम से वे उन्नति करेंगे और धर्म के प्रति भी उदार होंगे,उनके हाथ की लम्बी स्वास्थ्य-रेखा इस बात का प्रमाण है कि उनकी आयु भी लम्बी होगी।

कुछ प्राणियों के हाथ में दो स्वास्थ्य-रेखा रहती हैं। इस प्रकार की सहायक स्वास्थ्य-रेखाएँ बहुधा देखने में नहीं आती। हजारों हाथों में से एक-दो हाथों में ही वे होती हैं। इन सहायक स्वास्थ्य-रेखाओंका सब से अच्छा प्रभाव यही होता है कि अगर स्वास्थ्य-रेखा में कोई अवगुण है तो उस अवगुण को स्वास्थ्य-रेखा की सहायक-रेखा नाश कर देती है और शुभ फल देती है। (चित्र नं० १७ में १-१ तथा २-२ वाली रेखाओं को देखो)

यदि किसी प्राणी के हाथ की स्वास्थ्य-रेखा सीधी लम्बी और साफ है तो उसका फल शुभ होता है। साथ ही यह रेखा या इसकी कोई सहायक-रेखा जीवन-रेखा को न तो स्पर्श करे और न काटे। दैवगति से यदि किसी प्राणी की जीवन-रेखा किसी स्थान पर टूटी है और उस टूटी हुई जगह ही से स्वास्थ्य-रेखा काटती हुई आगे चली गई है तो ऐसी दशा में उस प्राणी की मृत्यु अवश्य होगी। (चित्र नं.४ में १-३ वाली बिन्दुदार रेखा का नं. २ वाला स्थल देखो)

यदि स्वास्थ्य-रेखा किसी प्राणी की जीवन-रेखा को किसी स्थान पर छूतीहै तो गणना करके आयुका समय निकाल लेना चाहिए क्योंकि उसी आयु में वह प्राणी भयानक रोगका शिकार होगा और हो सकता है कि वह रोग प्राणों का भी हरण कर ले।

इसके विपरीत यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा के समानान्तर चलती रहे मगर मणिबन्ध-रेखा की ओर आ कर धनुषाकार हो जाए और जीवन-रेखा का स्पर्श न करे तो ऐसी दशामें प्राणी भयङ्कर रोगों का शिकार होने के बादभी पूर्ण आरोग्यताको प्राप्त होगा और उसकी आयु भी अधिक होगी। [चित्र नं. १६।५ में १-१ वाली रेखाको देखो]

जिन प्राणियों के नाखून गोलाकार और लम्बे हों और उनकी

स्वास्थ्यरेखा, मस्तकरेखा के आस-पास द्वीप बनाती हो तो उस प्राणी को राजयक्ष्मा अर्थात् तपैदिक होने का योग है। ( चित्र नं० १६।५ में नं० २ वाला द्वीप का चिह्न देखो )

जब स्वास्थ्यरेखा अपने स्थान पर यथा स्थान हो और हृदय-रेखा तथा मस्तकरेखा को स्पर्श कर रही हो और इन रेखाओं के मध्य भाग में चिह्न भी अंकित कर रही हो तो ऐसी दशा में यह गले के रोग को व्यक्त करती है। ( चित्र नं० १६।५ में नं० ३ वाला तारा चिह्न देखो )

जो प्राणी आयुपर्यन्त रोगी रहते हैं उनके हाथ को देखने से हमेशा यह पता लगा है कि उनकी जीवनरेखा जंजीरदार होती है और उनकी स्वास्थ्यरेखा गहरी और चौड़ी होती है। इस तरह की रेखा वाले प्राणी हमेशा रोग में लिप्त रहते हैं और उनको हमेशा तकलीफ होती है।

अनेकों प्राणियों के हाथ की स्वास्थ्यरेखा गहरी होती है। मगर लाल होती है। इस प्रकार की रेखाओं वाले प्राणी प्रायः रोगों का शिकार रहते हैं। जुकाम, खाँसी और बुखार कभी उनका पीछा नहीं छोड़ते। वे हर मौसम में रोगों के शिकार होते हैं।

# चौथा अध्याय

## हृदय रेखा

"राजे दिल का जानना कोई खेल नहीं है" यह बात हर आदमी जानता है। मगर हम उन तमाम आदमियों को बता देना चाहते हैं कि ज्योतिष में यह गुण है कि ज्योतिषी को "राजे उल्फत का पता चलाने में कुछ भी देर नहीं लगती है।"

हम बता चुके हैं कि ज्योतिष भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों काल का हाल स्पष्ट कर देती है। हाथ की रेखाएँ गुजरे हुए समय की दास्तान और आने वाले समय की घटनाओं को स्पष्ट कर देती हैं। वर्तमान तो मनुष्य स्वयं जानता ही है।

हाथ की रेखाएं समयानुसार अर्थात् कर्मानुसार बनती बिगड़ती हैं। आदमी भूत काल में जैसे कर्म करता है उसके हाथ की रेखाएँ वही वर्णन करता है।

एक बार एक विद्वान् ज्योतिषी के सामने एक भिखारी ने हाथ पसारा। हाथ पर एक सरसरी निगाह डाल कर ज्योतिषी ने उसके हाथ पर एक अशर्फी रख दी। अशर्फी लेकर वह चला गया।

पास बैठे हुए लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने ज्योतिषी से इस बात को पूछा कि 'महाराज आपने एक साधारण से भिखारी को बिना माँगे एक अशर्फी क्यों दे दी।

तब विद्वान् ज्योतिषी ने कहा कि वह भिखारी भी साधारण नहीं था। वह कोई धनी व्यापारी है और किसी स्त्री के प्रेम में पड़कर पथ का भिखारी बन गया है। यही सोचकर मैंने उसे एक अशर्फी दे दी।

लोगों के पूछने पर ज्योतिषी ने बताया कि उसके हाथ की रेखाएँ स्पष्ट करती थीं कि वह सम्पन्न परिवार का है और उसकी प्रेम-

गाथा मैंने उसकी हृदयरेखा से जान ली। हृदयरेखा प्रेम-कथा को ज्यों-का-त्यों व्यक्त कर देती है।

तमाम ज्योतिष शास्त्री इस बात पर एक मत हैं कि हृदयरेखा से मनुष्य की मानसिक दशा और प्रेम-लीला का ज्ञान हो सकता है। यही वह रेखा है जिसके द्वारा प्राणी के प्रेम सम्बन्ध और उसके प्रेम सम्बन्धी तत्वों का निर्देशन किया जाता है। मित्र, सम्बन्धी, स्त्री, माता-पिता, पुत्र, पौत्र आदि के प्रति प्राणी का व्यवहार कैसा होगा या रहेगा, इस रेखा द्वारा ही स्पष्ट किया जा सकता है।

इस रेखा को तीन तरह से देखा जाता है।

१—तर्जनी उङ्गली अर्थात् बृहस्पति के स्थान से रेखा प्रारम्भ होकर मस्तकरेखा के समानान्तर कनिष्ठा के मूल में मङ्गल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। (चित्र नं० १८।१ में नं० १ वाली रेखा)

२—मध्यम उङ्गली के मूल में शनि के स्थान से प्रारम्भ होकर अर्ध गोलाकार मस्तकरेखा के समानान्तर चलकर मङ्गल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। (चित्र नं०१८।१ में नं० २ वाली रेखा)

३—शनि और बृहस्पति के ग्रह स्थानों के मध्य से प्रारम्भ होकर मस्तकरेखा के अर्ध समानान्तर चलती हुई मङ्गल के स्थान पर जाकर समाप्त होती है। (चित्र नं० १८।१ में नं० ३ वाली रेखा)

हृदयरेखा हर प्राणी के हाथ में होती है। जिन लोगों के हाथ में हृदयरेखा नहीं हो तो वे हृदय-रोग से दुखी और उनका जीवन विलासपूर्ण होता है। इस प्रकार के प्राणी विशेषतया कुकर्मी, लफंगे, कठोर-हृदय और कपटी होते हैं। वैसे तो इस तरह के प्राणी बहुत ही कम देखने में आए हैं जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती है।

आचार्यों का स्पष्ट कथन है कि यदि यह रेखा बृहस्पति के स्थान से प्रारम्भ होती है और मङ्गल तथा बुध के स्थान के मध्य में जाकर समाप्त होती है तो ऐसे प्राणी अपने प्रेममय जीवन तथा आकांक्षाओं में अधिकतर सफल नहीं होते। वे प्रेम के पीछे उतावले तो होते हैं

मगर उनका प्रेम नहीं होता और यही कारण है कि वे कभी प्रेम में सफल नहीं हुए हैं। (चित्र नं० १८।१ में नं० १ और नं० ४ से मिलकर बनी रेखा को देखो)

यद्यपि इस तरह की रेखा वाले प्राणी बहुत भावुक और प्रेमोन्मत्त होते हैं। वे जब कभी किसी से प्रेम डोर बांधते हैं तो उसके पीछे पागल हो जाते हैं। हमेशा अपने प्रेमी के विषय ही में सोच-विचार करते हैं। मगर इतना होते हुए भी वे कभी सफल प्रेमी नहीं देखे गए हैं। उनका प्रेम और उनकी भावुकता क्षणिक सिद्ध हुई हैं। जब वे प्रेम डोर में बंधते हैं तो क्षण-प्रतिक्षण प्रेमी के लिए तड़फते हैं मगर जैसे २ समय बीतता जाता है उनके हृदय की प्यास कम होती जाती है और वे प्रेमी से ऊब जाते हैं।

यदि किसी प्राणी की हृदयरेखा शनि के स्थान से प्रारम्भ होकर बुध और मङ्गल के मध्य स्थान में जाकर समाप्त होती है तो ऐसा प्राणी अपने प्रेम सम्बन्धों तक में अपना ही स्वार्थ देखता है। वह जब भी किसी से प्रेम करेगा तो अपना स्वार्थ पहले देखेगा। यदि ऐसा प्राणी पुरुष है तो वह यही इच्छा करेगा कि उसे ऐसी कोई प्रेमिका मिले जो धनी हो और उसे धन दे सके। वह प्रेमिका के हृदय को नहीं वरन् उसके धन को देखेगा। (चित्र नं० १८।२ में नं० १ वाली रेखा देखो)

यदि उसकी निगाह में कोई अतीव सुन्दर स्त्री आती है तो वह स्त्री के साथ केवल उतनी ही देर तक प्रेम का नाटक करता जब तक कि उसके सुन्दर शरीर के साथ खेलकर अपनी कामपिपासा को शान्त नहीं कर लेता है। जब उसकी कामपिपासा शान्त हो जाती है तो वह उससे अपना सम्बन्ध तोड़ लेता है और उसकी प्रेम लीला वहीं समाप्त हो जाती है।

इस तरह की रेखा वाले प्राणी प्रेम और विलासी होते हैं। वे रूप, धन, यौवन और अपनी कामपिपास की शान्ति को अधिक महत्व देते हैं। अपनी कामपिपासा को शान्त करने के लिए वे अपनी मान-मर्यादा और अपने प्रेम की भी परवाह नहीं करते हैं।

इस प्रकार की हृदयरेखा का स्पष्ट फल है कि ऐसा प्राणी अपना जीवन रास-रङ्ग में बिताना अधिक पसन्द करता है। इस तरह वे समाज की नजरों में भी गिर जाते हैं मगर उन को इसकी परवाह नहीं होती। इसका कारण है कि कामपिपासा के कारण उनमें स्वाभिमान रहता ही नहीं और वे गहरे गर्त में गिर जाते हैं। इसके साथ ही एक बात का ध्यान रखना अति आवश्यक है कि हाथ में शनि का स्थान किस अवस्था में है ?

यदि शनि का स्थान दबा हुआ है तो वे रोमांच प्रिय होंगे और यदि शनि का स्थान उठा हुआ है तो निराला अर्थात् अकेलापन चाहेंगे उन्हें सामाजिक जीवन के प्रति रुचि नहीं होगी। एकांतप्रिय होने के साथ वे डरपोक भी होंगे। उनका हृदय शक्तिहीन होगा और हमेशा उनके हृदय में दुराशाएं घर किए रहेंगी, तरह २ के मन्सूबे वे बांधते रहेंगे मगर उनका ध्यान कभी अच्छी बात पर जायगा ही नहीं।

कुछ प्राणी ऐसे होते हैं कि उनके हाथ की हृदयरेखा शनि और बृहस्पति के मध्य से प्रारम्भ होती है और बुध तथा मङ्गल के स्थानों के मध्य में जाकर समाप्त होती है। इस तरह की रेखा वाले प्राणी प्रेम के विषय में बहुत समझदार होते हैं। उनके लिये प्रेम तथ्य की वस्तु है। वे इसे केवल आडम्बर ही नहीं समझते। बनावट उन्हें पसंद नहीं होती और वे अपनी प्रेम लीला को प्रकाश में लाना पसन्द नहीं करते। वे कभी नहीं चाहते कि उनकी प्रेमलीला किसी और प्राणी पर तनिक भी स्पष्ट हो। [चित्र नं० १०-२ में नं० २ वाली रेखा को देखो]

ये प्राणी एक बार जिसे प्रेम करते हैं वह सच्चा होता है और वे हमेशा अपने प्रेम को निबाहना चाहते हैं। उनका प्रेम आदर्श होता है। वे प्रेमी के दोषों और गुणों को भी नहीं देखते। वे तो केवल प्रेम करते है और प्रेम को निबाहना जानते हैं। उनका प्रेमी उनके प्रति कैसी भावना रखता है और कैसा व्यवहार करता है? वे यह भी नहीं जानना चाहते।

उनके अपने विचार होते हैं और वे उन पर ही दृढ़ रहते हैं। दूसरा प्राणी अपना कर्त्तव्य अपनी ओर से पालन ठीक तरह कर रहा है अथवा नहीं ? यह सब कुछ जानने की वे कोई जरूरत नहीं समझते और न इस विषय पर जानने या सोचने की चिन्ता ही करते हैं। उनका स्वभाव मृदु, वाणी कोमल, महत्वाकांक्षी, साहसी, निर्भीक और क्षमादान करने वाले होते हैं।

वे अपने गुणों को देखते हैं, दूसरे के गुणों को न वे देखते ही हैं और यदि दूसरे में कोई अवगुण देख भी लें तो वे उसका जिक्र तक नहीं करते। वे यह नहीं चाहते कि उनके मुखसे कोई ऐसी बात निकले जिसके कारण उनके प्रियके हृदय को किसी तरह की कोई ठेस पहुँचे।

वे भावुक होते हैं। उनकी भावनाओं को यदि तनिक भी ठेस लगती है तो वे दुःखी हो जाते हैं। वे कामुक नहीं होते। विलास की इच्छा उनमें नहीं होती। प्रेमी को केवल भोग विलास की सामग्री नहीं समझते वरन् उसे अपना सच्चा प्रेमी और हितैषी के रूप में चाहते हैं।

समाज में मान-प्रतिष्ठा का ध्यान उन्हें हर समय रहता है। वे ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहते जिसके कारण उनको या उनके प्रेमी को किसी भी तरह नीचा देखना पड़े। प्रेमीकी राह में आए हुए कष्टों को देखकर वे हिम्मत नहीं हारते और कभी मुसीबत देखकर घबराते भी नहीं हैं।

मस्तकरेखा के समानान्तर ही अर्ध चन्द्राकार हृदयरेखा चलती है। अतः इन दोनों रेखाओं का प्रभाव आपस में जरूर पड़ता है। जिनकी मस्तकरेखा अधिक गहरी, स्पष्ट और लाल रङ्ग की होती है उन के जीवन पर मस्तकरेखा का प्रभाव अधिक होता है। वे प्रेम में अपना अस्तित्व नहीं भुला देते। वे पहले अपने कर्त्तव्य को देखते हैं और बाद में अपने प्रेममय जीवन को अधिकतर ऐसे प्राणी विवाहित जीवन से दूर ही देखे गये हैं। [ चित्र नं० १८।३ ]

अनेक प्राणियों के हाथ में समानान्तर रूप से चलती हुई दो

मस्तक रेखाएं भी देखी गई हैं। यदि किसी प्राणी के हाथ में इस प्रकार की दो हृदय रेखाएं हों और साथ ही मस्तकरेखा लम्बी झुकी हुई हो तो इस प्रकार की रेखाओं युक्त हाथ वाला प्राणी मानवता से अधिक उठा हुआ होता है। परोपकार और जन-सेवा करने में उसे सबसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। वे सदैव समाज, जाति, राष्ट्र के उद्धार और उन्नति में रत रहते हैं। किसी को तनिक भी दुःखी देखकर उनका हृदय सहज ही द्रवीभूत हो जाता है वे, जहां तक सम्भव होता है, परोपकार में अपना सर्वस्व तक निछावर करने को बाध्य हो जाते हैं। [चित्र नं० १८।४]

जिन प्राणियों के हाथ में हृदयरेखा गहरी और साफ हो और उसके निकलने का स्थान गुरु ग्रह का स्थान भी अधिक ऊँचा हो और साथ ही अनेकों छोटी २ रेखाएं उसमें मिल रही हों, तो ऐसी दशा में वे प्राणी प्रेम को उत्तम रीति से करने वाले होते हैं। उनका प्रेम उत्कृष्ट होता है। वे प्रेम के पीछे पागल रहते हैं और अपने प्रेममयी जीवन में इतने आतुर रहते हैं कि उनके सामने केवल प्रेम की चर्चा रहती है। इस प्रकार की रेखा आमतौर से उन लोगों के हाथ में पाई जाती है जो प्रेम में तन्मय रहते हैं। शृङ्गार रस की कविता करने वाले कवि, सङ्गीतज्ञ तथा पति-प्रेम में रत रहने वाली स्त्री के हाथ में ये रेखाएं अधिकतर देखी गई हैं। सारांश यह है कि इस प्रकार की रेखायुक्त प्राणी अधिक भावुक और कला प्रेमी होता है। [चित्र नं. १८।४]

यदि किसी के हाथ की हृदयरेखा पतली, चमकदार और साफ हो तो ऐसा प्राणी प्रेम के विषय में अधिक भावुक होता है। उसका प्रेम अधिक स्थायी और विलक्षण होता है। यह उत्तम लक्षण है।

जब किसी प्राणी के हाथ की हृदयरेखा छोटी, कम चमकदार और धुंधली हो तो इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी स्वभाव का उदासीन होता है। उसका व्यवहार रूखा होता है। उसके साथ जितने भी प्राणी सम्पर्क में आते है, वे सब यही सोचते हैं कि यह प्राणी हृदय से शुष्क है, असल में यह बात नहीं होती। वह व्यवहार से भले ही

शुष्क है मगर प्रेम की मात्रा उसमें होती है परन्तु वह उसे स्पष्ट नहीं कर पाता है।

प्राय: देखा गया है कि बहुत से प्राणियों के हाथ में हृदयरेखा स्थान-स्थान पर टूट जाती है, ऐसी दशा में उसका फल निम्न होताहै-

मध्यमा उङ्गली के नीचे टूट गई हो तो प्राणी विधाताकी गति से अपने प्रेम में असफल होता है। वह प्रेम करता है परन्तु सफलता प्राप्त नहीं होती, उसके भाग्य का दोष होता है। बिधाता की मर्जी से उसके प्रेम में नाना बाधाएं उपस्थित होती हैं। [चित्र नं० १८१४]

अनामिका उङ्गली के नीचे यदि हृदयरेखा टूट गई हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने अभिमान के द्वारा प्रेम में विफल होता है। यह व्यवहारिक नियम भी है कि प्रेम में अभिमान नहीं चलता और जो प्राणी प्रेम में अभिमान या दर्प से कार्य करता है वह कदापि सफल नहीं हो सकता है, ऐसा मत है। अत: यह सत्य है कि जिस प्राणी की हृदयरेखा अनामिका के कुछ नीचे जाकर टूट जाए तो वह प्रेम में कभी सफल नहीं हो सकता। [चित्र नं. १८१५]

चौथी उङ्गली के नीचे यदि हृदयरेखा टूट जाय तो ऐसे लक्षण वाला प्राणी स्वयम् ही अपनी मूर्खताओं के कारण अपनी प्रेम लीलाओं में बाधाएं उत्पन्न कर लेता है। उसकी मूर्खताओं के कारण ही उसका प्रेममय जीवन निराशा-जनक और अनेक बाधायुक्त हो जाता है। [चित्र नं. १८१५]

इन तमाम कारणों से यह उचित है कि हृदयरेखा को गौर से देखना चाहिये और टूटे हुए स्थान को ध्यान में रखकर उसका फल कहना चाहिए। अक्सर यह भी देखा गया है कि एक हाथ में, एक ही या एक से अधिक जगह भी हृदयरेखा टूट जाती है।

ऐसी दशामें जब हृदयरेखा एक स्थानके बजाय कई स्थानों पर टूटे तो जहां जहां वह टूट गई है, और उस का टूटना जिस ग्रह की तरफ होता है, उस ग्रह का स्वामी अवश्य ही अपना फल डालता है।

( चित्र नं० १८ )
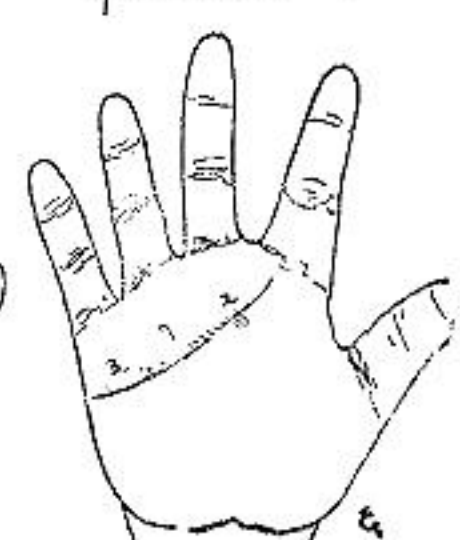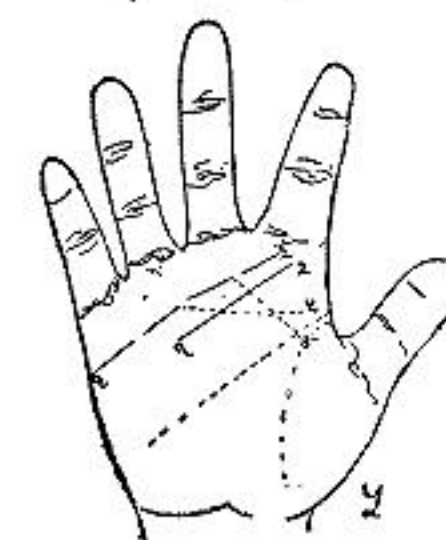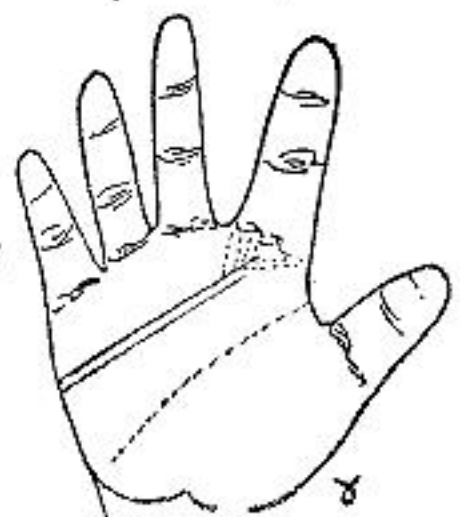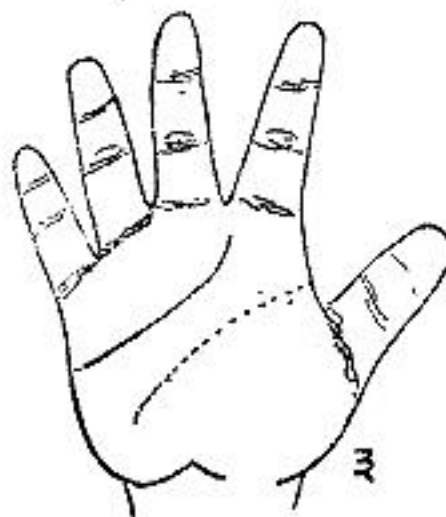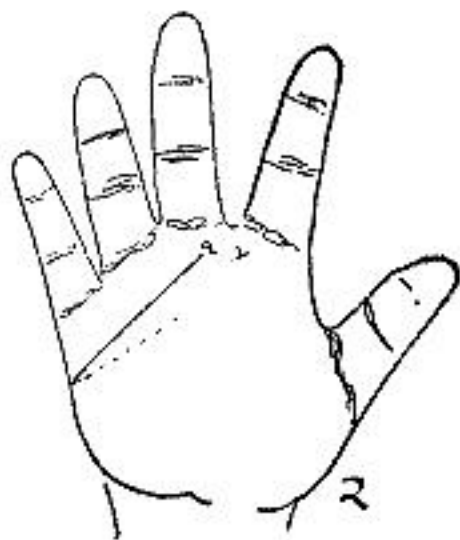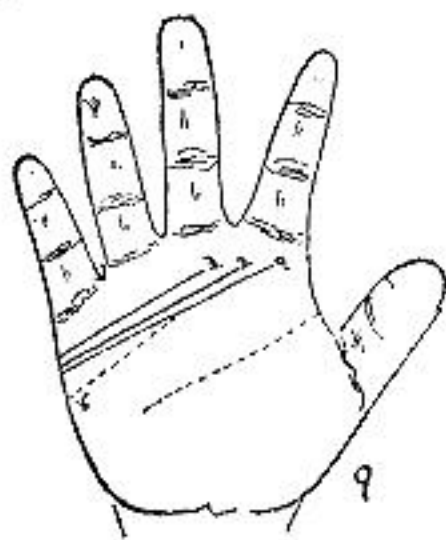
ऐसी रेखा प्राय: मस्तकरेखा की ओर झुककर शनि की उङ्गली के नीचे टूटती है और वह टूटी हुई शाखा मस्तकरेखा को पार करके जीवनरेखा की ओर बढ़ती है। उसके टूटने का दूसरा स्थान होता है, अनामिका के नीचे सूर्य के स्थान के समीप। यहाँ से टूटकर वह अँगूठे की ओर बढ़ती है। यह शाखा भी मस्तकरेखा की ओर आगे बढ़ती हुई जीवनरेखा को पार करके मङ्गलरेखा की ओर बढ़ती है।

जिन प्राणियों की हृदयरेखा ऊपर कहे हुए लक्षणों के अनुसार दो स्थानों पर टूटती है, उनके फल निम्न होते हैं—

१—जब रेखा शनि के स्थान पर टूटती है तो उसके फलस्वरूप दोनों प्राणियों में अत्यधिक प्रेम होता है और दोनों एक-दूसरे के साथ विवाह-सूत्र में बँधने के लिए अपना सर्वस्व तक न्यौछावर करने को तैयार होते हैं। मगर अनजाने ही उन लोगों से ऐसा कोई कार्य हो जाता है कि वे अलग कर दिए जाते हैं और लाख चेष्टाएँ और प्रयत्न करने पर भी वे कभी एक-दूसरे के नहीं हो सकते हैं। सौ फीसदी ऐसा देखा गया है कि वे विभिन्न स्त्री-पुरुषों के विवाह-सूत्र में बँध गए हैं। प्रेमिका को प्रेमी से या प्रेमी को प्रेमिका से विलग करने में शनि का हाथ होता है। शनि के प्रभाव के कारण ही वे एक-दूसरे के साथ विवाह-सूत्र में नहीं बँध पाते हैं। ( चित्र नं० १८।५ स्थल ४ )

२—जब हृदयरेखा दूसरे स्थान पर भी टूटती है तो उसका फल स्पष्ट होता है कि प्रेमी को प्रेमिका से सच्चा और उतना अटूट प्रेम नहीं होता जितना प्रेमिका को होता है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि संयोग ही से उसकी मुलाकात उस स्त्री से हो जाती है और यह मुलाकात आगे चलकर प्रेम का रूप धारण कर लेती है। धीरे-धीरे उसका प्रेममय सम्बन्ध गहरा होने लगता है और उन दोनों प्रेमियों का खिंचाव वासनायुक्त होता है। ऐसा देखा गया है कि इस प्रकार के लक्षण वाला प्राणी शीघ्र ही अपनी प्रेमिका के प्रेम से विरक्त हो जाता है। उसे अपने कुल और मान-मर्यादा का विचार होने लगता है और वह धीरे-

धीरे प्रेयसी की ओर से खिंचने लगता है। मान-मर्यादा का विचार करनेके बाद वह अपना झुकाव कम करने लगताहै और शीघ्रही एक समय ऐसा आता है जब वह उसे तिरस्कारपूर्वक छोड़कर अलग हो जाता है। इस मनोविकार में सूर्य का प्रबल हाथ होता है। सूर्य ग्रह यश चाहता है और इसी कारण वह प्राणी को अपयश के कार्य से दूर हटाता है।

हृदयरेखा के पास ही ऊपर की ओर जाने वाली छोटी-छोटी स्पष्ट रेखाएँ इस बात की द्योतक हैं कि इस प्रकार की रेखाओं वाला प्राणी प्रणय और प्रेम-लीलाओं में कितनी बार डूब और उबर चुका है। उन रेखाओं से, जो हृदयरेखा को काटती हैं, यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की प्रेम लीलाएँ दुःखदायी रही हैं। जो हृदयरेखा को नहीं काटती, उनसे स्पष्ट होता है कि प्राणी की प्रेम-लीलाएं सुखदायी रही हैं। कुछ लोगों की हृदयरेखा पर कुछ बिन्दु पाए जाते हैं। ये बिन्दु इस बात के प्रतीक हैं कि प्राणी का हृदय अस्थिर प्रकृति वाला होता है। इस प्रकार के बिन्दु युक्त प्राणी को कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए कि जिससे हृदय की धड़कन अर्थात् Pulpitation of Heart बढ़ जाए। दौड़ना, भागना, अधिक चिन्ता आदि करना उसे सर्वथा वर्जित है। ( चित्र नं० १८।८ में क्रमशः नं० १, २, ३, स्थलों को देखो )

देखा गया है कि कई प्राणियों के हाथ में लाल रंग के बिन्दु या समानांतर रेखा वाले (=) चिन्ह या तिल होते हैं। ये सब चिन्ह जिस प्राणी के हाथ में एक साथ यो अलग-अलग हों, तो ऐसे चिन्ह वाला प्राणी प्रेम के मार्ग में सर्वदा निराश ही रहता है।

# पाँचवाँ अध्याय

## मस्तक-रेखा

जीवनरेखा के बाद जिस रेखा का प्राणी के जीवन में सबसे अधिक महत्व होता है, वह मस्तकरेखा है। यह रेखा मनुष्य की बुद्धि और मनुष्य की ज्ञान सम्बन्धी बातों की परिचारिका होती है। इस रेखा के द्वारा प्राणी की मानसिक-शक्ति, उसका ज्ञान, बुद्धि-विकास आदि समस्त बातों का पता लगाया जा सकता है। "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ आत्मा निवास करती है।" यह एक कठोर सत्य है। उसी प्रकार यह भी कठोर सत्य है कि स्वस्थ मस्तिष्क में स्वस्थ विचार पनपते हैं। स्वस्थ विचार और मानसिक शक्ति को सन्तुलित रखने वाला ही प्राणी संसार के विभिन्न क्षेत्रों में अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकता है। ज्ञानवान प्राणी ही संसार में श्रेय के अधिकारी होते हैं। इन्हीं तमाम कारणों से इस रेखा के महत्व को सही रीति से समझना अति आवश्यक है और यही उचित है कि उसके समस्त फलादेशों का पूर्ण रूपेण विचार किया जाए।

मस्तकरेखा की स्थिति की अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। यह रेखा विभिन्न स्थानों से प्रारम्भ होती है और अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचती है।

अँगूठे की जड़ में जीवनरेखा के नीचे जहाँ मङ्गल का स्थान होता है वह उसी स्थान से प्रारम्भ होकर जीवनरेखा को काटती हुई हथेली की दूसरी ओर जाती है। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी स्वभाव का चिड़चिड़ा और तनिक देर में क्रोधित हो जाने वाला होता है। उस प्राणी को अपना आगा-पीछा कुछ नहीं दिखाई देता और वह

तनिकसी बात पर क्रुद्ध होकर अपने आवेशमें चाहे कुछ कर सकताहै। वह अपनी इस आवेशयुक्त आदत के कारण ही झगड़ालू प्रकृति होता है। बिना आगा-पीछा देखे लड़ बैठता है और अक्सर अपने मित्रों को
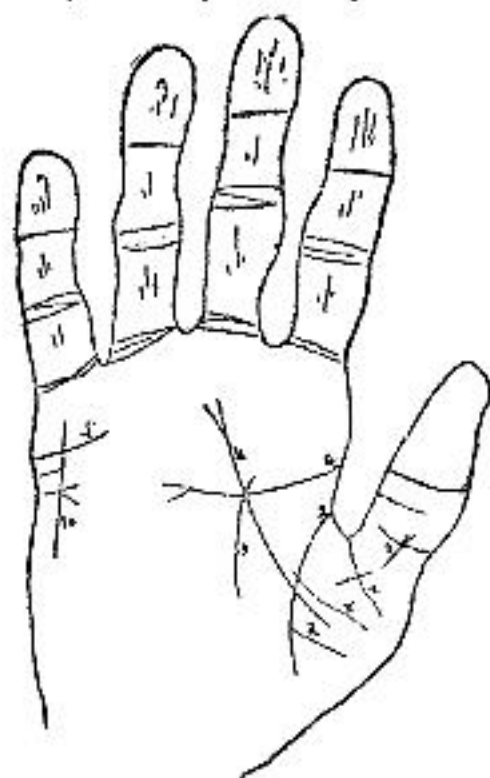
चित्र नं० १६

भी शत्रु बना लेता है। अपनी इस आदत के कारण ही वह लोकप्रिय नहीं हो सकता और अच्छा व्यवहारी कभी नहीं माना जाता। (चित्र नं० २०।१ में, नंबर १ के नीचे वाली रेखा का निकलना देखो)

इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी कभी किसी का प्रिय नहीं होता और उग्र स्वभाव होने के कारण जीवनमें अनेकों शत्रु उत्पन्न कर लेता है। उसका कोई मित्र नहीं होता और जो इने-गिने मित्र होते भी हैं सो उसके स्वभाव के कारण उसके शत्रु बन जाते हैं। संक्षेप में इतना ही पर्याप्त है कि इस प्रकार की रेखा अशुभ होती है।

अक्सर मस्तकरेखा जीवनरेखा के निकलने के स्थान से ही
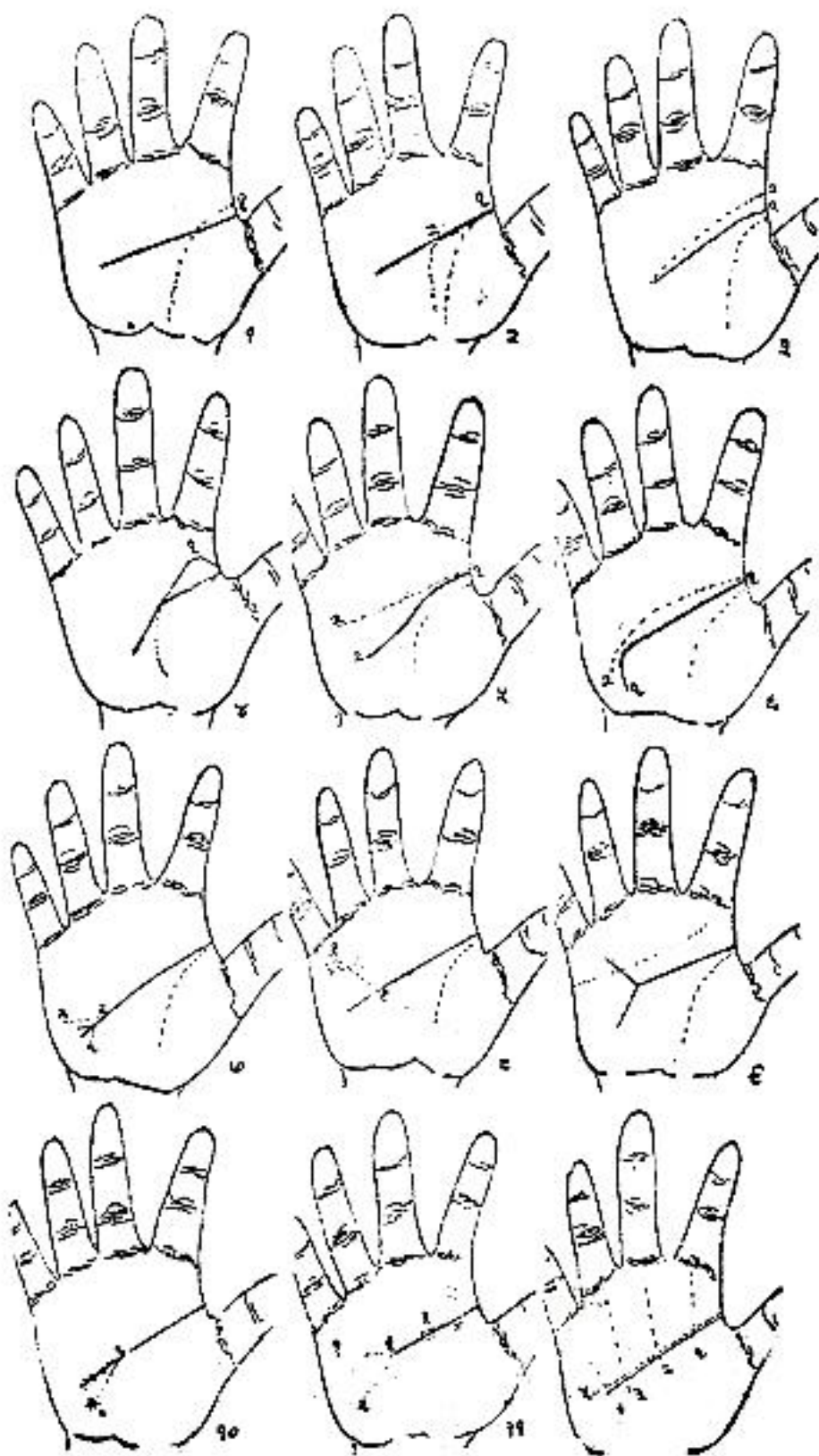
प्रारम्भ होती है और जीवनरेखा को स्पर्श करती हुई कुछ दूर तक चलती है, आगे बढ़कर वह अपने गन्तव्य स्थान की ओर बढ़ जाती
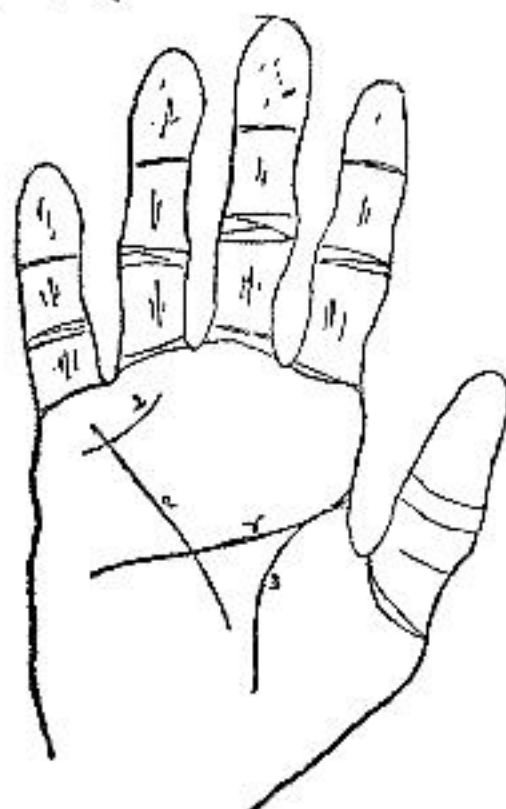
( चित्र नं० २१ )

(सम्मिलित होकर निकलने वाली जीवनरेखा और मस्तकरेखा देखो। )

है। इस प्रकार की रेखा, जो जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई साथ-साथ चले और आगे जाकर विलग हो जाए, शुभ, फल देने वाली होती है। इस प्रकार के लक्षण वाली मस्तकरेखा जितनी साफ, स्पष्ट और गहरी होगी, वह उतना ही अच्छा फल देगी। ऐसा ज्योतिष-शास्त्रियों का मत है। [ चित्र नं० २०।२ स्थल नं० १ ]

इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी सदैव अपने हित के विषय में सजग और सतर्क रहते हैं। जहां उनके लाभ का प्रश्न होता है, वे ऐसे स्थान पर सतर्कता से काम लेते हैं और अवसर को हाथ से नहीं जाने

देते। अपनी स्मरण-शक्ति और सतर्कता के कारण वे नुकसानमें कभी नहीं रहते और लाभ के अवसर को कभी हाथ से नहीं जाने देते।

जिन प्राणियों के हाथ में इस प्रकार की रेखाएँ पाई जाती हैं, उनमें लज्जा का भाव अधिक पाया जाता है। ऐसी रेखाओं वाले युवक अथवा युवतियां लज्जाशील होती हैं। उन्हें खुलकर बोलना नहीं आता और वे अपने व्यवहारों में भी विशेष रूप से सतर्क रहते हैं, कि उनके बर्ताविसे उनके बड़े लोगों को उनके प्रति कोई शिकायत न रहे। संकोच उनके जीवन के हर कार्य-क्षेत्र पर इतना छा जाता है कि वे कोई भी कार्य दिल खोल कर न तो कर पाते हैं और न कह पाते हैं। सम्पर्क में आ जाने के बाद भी वे अपना संकोच नहीं छोड़ पाते और उनके व्यवहार को देखकर बुद्धिमान आदमी सहज ही कह सकता है कि निःसकोच व्यवहार दिखाने के बाद भी उनके हृदय से लज्जा और संकोच का भाव क्षीण नहीं हुआ है।

पाश्चात्य मत के अनुसार इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी सदा Inferiority complex महसूस करते हैं। यद्यपि वे सजग होने के कारण अपने हानि-लाभ को सोच सकते हैं, मगर दूसरों के सन्मुख अपने को उनसे हीन समझने के कारण वे संकोच के मारे कुछ कह-सुन ही नहीं पाते। उनकी लज्जा उनके मुख पर ऐसा ताला लगा देती है कि वे लाख चाहने पर भी अपने भाव व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी हर बात को शीघ्र ही समझ लेते हैं। उनकी मानसिक चेतना और शक्ति इतनी विलक्षण होती है कि वे जिस कार्य को भी देखते हैं उसे तत्क्षण समझ लेने की क्षमता रखते हैं। मगर इसके साथ ही उनका हृदय इतना दुर्बल होता है कि सब-कुछ समझ लेने के बाद भी उन्हे अपनी शक्ति पर तनिक भी विश्वास नहीं होता। जो अज्ञानीहै और अपनी अज्ञानताके कारण कुछ भी नहीं जान सकता है, वह क्षम्य है। मगर जो शीघ्रग्राही है और अपनी तीक्ष्णबुद्धि द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी जो अपनी शक्ति

पर विश्वास नहीं कर पाता उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। स्थिर बुद्धि के अभाव के कारण वह आगे नहीं बढ़ पाते। पाश्चात्य मतानुसार ऐसे प्राणियोंको Lack of Confidence वाली श्रेणी में रखा जाता है।

अक्सर देखा गया है कि बहुत से लोगों के हाथ में जीवन और मस्तक रेखाएं एक दूसरे को स्पर्श करतीं हुई हथेली के मध्य भाग तक पहुँचती हैं। इस प्रकार स्पर्श का फल होता है कि वह प्राणी भटक कर रह जाता है। बुद्धि का तीक्ष्ण होते हुए भी वह सहज ही अपना कार्य स्थिर नहीं कर पाता। फलस्वरूप वह अपने ही विचारों में भटकता रहता है। कभी वह कुछ करना चाहता है, मगर सहज ही अन्य बात पर दृष्टि पड़ते ही, वह उसे करने की कामना करने लगता है। शीघ्र-ग्राही होने के कारण वह हर बात को सहज ही समझ लेता है। इसी दुविधा में पड़ा रहता है और अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाता उसका चित्त कभी स्थिर नहीं हो पाता। अँग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक ने कहा भी है—"It is always dangerous to be wise enou-gh" ( चित्र नं० २०१२ में नं० २ का स्थल देखो )

प्रायः यह भी देखा गया है कि कुछ लोगों के हाथ में मस्तक-रेखा के निकलने का स्थान जीवनरेखा से अलग होता है। वह अपने निकलने के स्थान से निकल कर ऊपर बृहस्पति के स्थान की ओर अग्र-सर होती है। इस प्रकार की रेखा अपना विशेष महत्व रखती है। मगर इसके गुणों का वर्णन करने से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातों को जान लेना आवश्यक है। कई प्रकार से मस्तकरेखा जीवनरेखा से होकर बृहस्पति के स्थान की ओर जा सकती है। (चित्र नं० २०।२ में नं० १ वाली रेखा )

यदि मस्तकरेखा जीवनरेखा से बिलकुल ही अलग हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी लापरवाह होता है। ऐसे प्राणी को महत्वपूर्ण से भी महत्वपूर्ण काम की चिन्ता नहीं होती। उसका जीवन लापरवाही से बीतता है। वह किसी भी कार्य की चिंता नहीं करता, चाहे वह उसके

लिये कितने ही महत्व का क्यों न हो। इस प्रकार की लापरवाही उसके जीवन में एक प्रकार की शिथिलता ला देतीहै। उससे उस प्राणी को सबसे अधिक हानि होती है। (चित्र नं० २०१३ में नं.२ वाली रेखा)

यदि मस्तकरेखा स्पष्ट स्वच्छ और गहरी हो और उसके साथही मङ्गल ग्रह का स्थान भी हथेली में अन्य ग्रहों के स्थानों की अपेक्षा उभरा हुआ हो, तो ऐसी दशा में प्राणी में असीम उत्साह होता है। उसको हर कार्य करने के लिए उत्साह होता है। मगर इसके साथ ही उसमें एक दुर्गुण हो जाता है कि वह अपनी उत्साहवर्धक आदत के कारण अर्थात् उत्साह के आवेश में इतना डूब जाता है कि उसे यह नहीं ध्यान रहता कि अमुक कार्य के करने से उसे हानि होगी अथवा लाभ? अक्सर देखा गया है कि इस प्रकार की रेखा वाले उत्साही प्राणी अपनी शक्ति से भी कठिन कार्य में हाथ डाल देते हैं। और उसके परिणाम को बिना सोचे ही उसे प्रारम्भ कर देते हैं। कार्य का फल लाभदायक कम होता है और हानिकारक अधिक। क्योंकि यह तो एक साधारण सी बात है कि जो भी कार्य शक्ति के परे होता है उसमें लाभ को कम और हानि की अधिक सम्भावनाएँ होती हैं।

इसके विपरीत यदि मस्तकरेखा, जीवनरेखा से अलग हो और वह कम गहरी, धुंधली और स्वच्छ हो, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी लापरवाह होता है, साथ ही उसके स्वभाव में क्रोध और ईर्ष्या का भी समावेश रहता है। चालाकी उसके स्वभाव का अङ्ग बन जाती है, इसी कारण ऐसी रेखा वाले प्राणी अक्सर इरादों के कच्चे, क्रोधी, ईर्ष्या द्वेषयुक्त होते हैं। उनके स्वभाव में जल्दबाजी आ जाती है और अपने इन दुर्गुणों के कारण वह किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। वे अपना काम अपने क्रोध और जल्दबाजी से बिगाड़ लेते हैं।

अक्सर यह भी देखा गया है कि मस्तकरेखा और जीवनरेखा का अन्तर बहुत से हाथों में अधिक हो जाता है। यह अन्तर जितना कम होता है, उतने ही कम दुर्गुण मनुष्यके जीवन पर असर डालपाते

हैं। मगर जैसे २ यह अंतर बढ़ता जाता है, उतने ही अधिक यह दुर्गुण मनुष्य के जीवन पर असर डालने लगते हैं। जब यह अन्तर अधिक होता है तो प्राणी के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। किसी बात को बिना सोचे-विचारे करने में उसे दुःख होता है, साथही जब लापरवाही, जल्दबाजी, चिड़चिड़ापन भी प्राणी के स्वभाव में आ जाए तो वह अपने किसी कार्य में भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता और उसमें हानि उठाने के कारण मूर्ख और कहलाता है। जब इस प्रकार की रेखा स्त्रियों के हाथ में पाई जाएँ तो अक्सर देखा जाता है कि इस प्रकारकी रेखा वाली स्त्री बिना सोचे-विचारे हर कामको करने के लिए तैयार हो जाती है और इस कारण अन्त में नुकसान उठाती है। जितना २ यह अन्तर बढ़ता जाताहै प्राणी उतना ही अधिक कच्चे विचारों वाला और लापरवाह होता जाता है। वह बिना सोचे-समझे, अपने उग्र स्वभाव में आकर अपने कार्य को कर डालता है और उसे हानि-लाभ की तनिक भी परवाह नहीं रहती। जल्दी में किए हुए काम का परिणाम सदा ही हानिकारक होता है।

पाश्चात्यमत वाले ऐसे प्राणी को Headless creature कहते हैं। उनके यहाँ यह भी प्रसिद्धहै—"One who plunges withunt caring to know the depth always sinks अर्थात जो बिना थाह की परवाह किए डुबकी लगाता है, वह सदा डूब जाता है। यह कहावत अक्षरशः सत्य भी है।

इसके विपरीत यदि मस्तकरेखा जीवनरेखा से दूर निकल कर बृहस्पति ग्रह के स्थान की ओर झुकाव लिए होती है, और साथ ही वह जीवनरेखा को भी स्पर्श कर लेती है, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी समझदार होता है। वह किसी भी कार्य को हाथ में लेने से पहले उसको अच्छी तरह सोच लेता है और फिर परिमाण को विचार कर कार्य करता है। वह कार्य में पूरी दिलचस्पी लेता है और चिन्ता के साथ उसमें जुट जाता है। उसमें जितनी भी बुद्धि होती है, वह उसमें लगा देता है और कार्य को पूर्ण करने की चेष्टा करता है। इस प्रकार के

लक्षण वाले प्राणी कार्य-कुशल और अपने कार्य में बहुत दक्ष देखे गए हैं। उनमें शासन करने की योग्यता होती है और वह एक सफल अधिकारी भी होते हैं। उनकी विशेषता यह है कि वे अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करते। उनकी कभी इच्छा नहीं होती कि उनके कृत्यों से कभी किसी को दुःख पहुँचे और वे अपने अधिकारों के आधार पर किसी को कष्ट दें।

पाश्चात्य मतानुसार ऐसे प्राणियों को "Born Rulers in true sense" कहा जाता है। इसका अभिप्राय है कि वे जन्मजात से शासक पैदा होते हैं। शासक भी वे, न्यायप्रियता को अधिक महत्व देते हैं। इस प्रकार के प्राणी अपने गुणों के कारण सर्वप्रिय और अपने क्षेत्र में विशेष मान तथा श्रद्धा के पात्र होते हैं। (चित्र नं० २०१४ का स्थल नं० १)

यदि मस्तकरेखा प्रारम्भ से ही जीवनरेखा से विलग होने के साथ अन्त तक कुछ गोलाई जीवनरेखा के ऊपर की ओर लिए हुए हो, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी ललित कलाओं का प्रेमी होता है। इस प्रकार की झुकावदार रेखा सङ्गीतज्ञ, साहित्य-सेवियों, कवियों, लेखकों चित्रकारों, शिल्पियों आदि कलाकारों के हाथ में पाई जाती हैं। यह ध्यान रखने योग्य है कि इस रेखा का झुकाव नहीं होता। केवल वह चन्द्राकार-सी प्रतीत होती है। (चित्र नं. २०१५ में नं: १-२ वाली रेखा)

बहुत से प्राणियों की मस्तक रेखाएँ जीवनरेखा से अलग होती हैं। वह स्पर्श भी नहीं करती। उसका फासला भी कम होता है। वह प्रारम्भ होती है और जहाँ जाकर समाप्त होती है, सब जगह एक-सी ही होती है। वह गोलाकार नहीं होती, वरन् प्रारम्भ से अंत तक सीधी होती है। ऐसी रेखा वाला प्राणी अत्यधिक प्रकृति प्रेमी होता है। उसे शांत वातावरण प्रिय होता है। कोलाहल उसे नहीं भाता, वह हमेशा एकाग्रचित्त होकर कोलाहल से दूर प्राकृतिक सौंदर्य को देखने में दत्तचित्त रहता है। परिणाम यह होता है कि वह अपना

समय उपवनों, नदी किनारे, सागर के किनारे, पर्वतों आदि स्थलों पर बिताना अच्छा समझता है। (चित्र नं० २०१५ में १-२ वाली रेखा)

यदि मस्तकरेखा अन्त में जाकर नीचे की ओर झुक जाती है तो प्राणी के जीवन पर इसका दूसरा ही प्रभाव होता है। अन्त में झुकी हुई रेखा वाला प्राणी विचारशील होता है। वह दूरदर्शी होता है। मनन करना उसका स्वभाव हो जाता है। तनिक २ सी बातों पर वह सोच-विचार में लग जाता है और वह उनके फल और परिणामों पर पूर्ण विचार करके ही काम में लगता है। (चित्र नं० २०१६ में १-१ वाली रेखा)

पाश्चात्य ज्योतिषी इस प्रकार के प्राणियों को Deep thinkers कहकर पुकारते हैं। उनका मत है कि इस प्रकार की रेखाएं दार्शनिकों और राजनीतिज्ञों के हाथों में पायी जाती हैं। यहाँ कहावत भी है—"One who thinks deep, always meditiates for the good of others" अर्थात् 'जो अधिक गहराई में बैठकर सोचता है,वह प्राय: दूसरों की भलाई के लिए ही मनन करता है।' यह सत्य भी है, क्योंकि मानव-जाति के प्रयोगों का नाम ही ज्ञान है और सोचने का सार भी ज्ञान होता है। अत्यधिक मनन करने से जो सार निकलता है, वह ज्ञान की वृद्धि करता है।

प्राय: जीवनरेखा से अलग स्थान से निकलने वाली मस्तकरेखा बिना जीवनरेखा का स्पर्श किए चन्द्र ग्रह के स्थान तक गोलाकार होती हुई चली जाती है। ऐसी रेखा वाला प्राणी मन्सूबों का कच्चा होता है। वह केवल कल्पना करता है, हवाई किले बनाना उसकी आदत होती है। अपने मन्सूबों को पूरा करने की क्षमता उसमें नहीं होती। वह कल्पनाओं का महल बनाता है और उनमें खोया रहता है। उसकी कल्पना-शक्ति निश्चय ही बढ़ जाती है, मगर संसार में ऐसे प्राणी को सफल उस समय तक नहीं कहा जा सकता, जब तक उसके मन्सूबे कार्य रूप में परिणत नहीं होते। असल में जहाँ तक

इस बात की खोज की गई है, वहाँ तक यही देखा गया है कि ऐसी रेखा वाले प्राणी में अपने मन्सूबों को कार्य रूप में परिणित करने की क्षमता ही नहीं होती है। (चित्र नं० २०६ में १-१ वाली रेखा)

पाश्चात्य मतानुसार ऐसे प्राणी को "An Idle dreamer" कहा गया है। जिसका आशय है कि 'थोथे मन्सूबे बांधने वाला प्राणी जो केवल कल्पनाओं के सहारे जीता है, मगर कर कुछ नहीं पाता। सच तो यह है कि अगर वह अपने मन्सूबों को कार्य रूप में परिणित करने की यदि चेष्टा भी करे तो उसे सफलता प्राप्त नहीं होती।

इसका एक कारण यह भी है कि हर प्राणी के शरीर के अंदर शक्ति की एक निश्चित मात्रा होती है। जो प्राणी अपने शरीर की
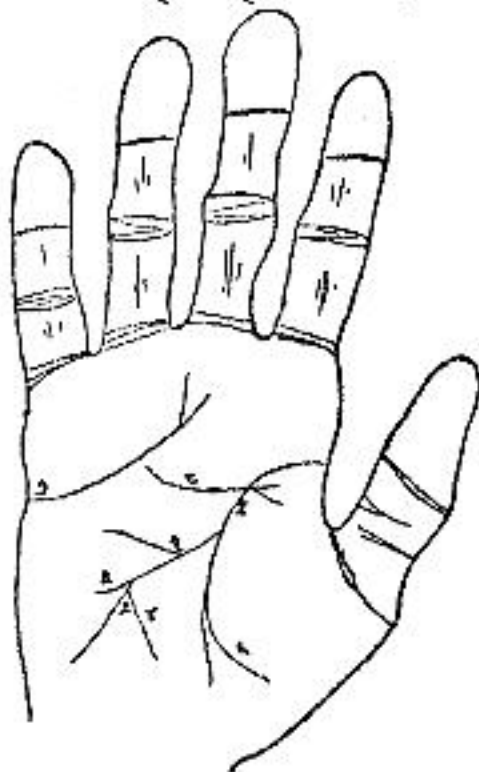
( चित्र नं० २२ )

जीवनरेखा और मस्तक रेखाओं से मिलने वाली रेखाओं को देखो।

निश्चित मात्रा का अधिकांश भाग कल्पनाएँ करने में गँवा देता है, तो उसके पास कार्य को पूरा करने की शक्ति ही कहाँ बचती है। इसी कारण वह कार्य को पूरा नहीं कर पाता है। शक्ति की भी सीमा है और जीवन के हर क्षेत्र में शक्ति की आवश्यकता होती है। निश्चित शक्ति को प्राणी जहाँ चाहे लगा सकता है, चाहे वह कल्पना करने में शक्ति को समाप्त कर डाले या चाहे तो उसको कार्य रूप में परिणित करके उसका सदुपयोग करे।

पहले ही बताया जा चुका है कि हाथ छ: प्रकार के होते हैं। उनमें से हर प्रकार के हाथ पर रेखा की इस आकृति का भिन्न २ प्रभाव पड़ता है। सूक्ष्म में यह हैं कि—

१—दार्शनिक हाथ में यदि यह रेखा पाई जाती है तो इसका परिणाम यह होता है कि प्राणी कल्पना करते-करते एक ऐसी कल्पना पर पहुँचता है, जिसकी कल्पना स्वयं ही एक पहेली होती है। फिर जब वह उस कल्पना को पूर्ण करने के लिए चेष्टा करता है, तो वह उसको पूरा नहीं कर पाता। परेशान हो जाता है और अन्त में इतना निराश हो जाता है कि अपने जीवन तक का मोह त्याग देता है। निराशा के दु:ख से कातर होकर वह आत्म-हत्या करके प्राण तक गँवाने की सोचता है।

२—सूच्याकार श्रेणी के हाथ की मस्तकरेखा यदि झुक कर चन्द्र-स्थान की ओर जाने का प्रयास कर रही हो,तो वह कोरा काल्पनिक ही होता है। वह वैसे तो बहुत ऊंची उड़ानें भरता है, मगर उसके किए-धरे होता कुछ नहीं। वह अधिक विचार करता है, मगर उन्हें पूर्ण न तो कर ही पाता है और न उन्हें पूरा करने की सोच ही सकता है। वह अपनी समस्त शक्ति सोच-विचार में गँवा देता है। यदि ऐसे प्राणी की मस्तकरेखा झुकती हुई मणिबन्धरेखा तक पहुँच जाती है, तो वह पागल हो जाता है। उसका दिमाग उसकी कल्पना-शक्ति और अत्यधिक सोचने के कारण अपरिपक्व हो जाता है। वह जीवन से दु:खी होकर आत्महत्या कर लेता है।

३—विषम श्रेणी के हाथ में यदि मस्तकरेखा इसी आकृति की हो तो उस प्राणी की दशा भी उपर्युक्त हो जाती है। वह सोचा-विचारी में अपना बहुत-सा समय काटता है और एक दिन ऐसा आता है कि निराशा उसके जीवन का मुख्य अङ्ग बनकर रह जाती है। वह निराशा से दुःखी होकर जीवन त्याग देता है।

४—जिस प्राणी का हाथ अनुपयोगी श्रेणी का होता है उसका जीवन नैराश्यपूर्ण रहता है। निराशा उसकी सहचरी हो जाती है और नैराश्य के कारण जीवन की सर्वश्रेष्ठ-निधि चातुर्य्य और स्फूर्ति उसके जीवन से सदा के लिए विदा हो जाती है। नैराश्य से आलस्य का जन्म होता है और आलस्य की देन है उदासीनता। जीवन निःसार है; जीवन में धरा ही क्या है? आदि उसकी गम्भीर समस्याएँ हो जाती हैं।

५—यदि निकृष्ट प्रकार के हाथ में यह रेखा पाई जाए तो उसका स्पष्ट तात्पर्य है कि ऐसे प्राणी की मृत्यु अवश्यम्भावी है। वह अपनी मृत्यु से नहीं वरन् आत्महत्या, पागलपन, मृगी आदि द्वारा अकाल मृत्यु को अवश्य प्राप्त होगा।

६—यदि समकोण श्रेणी के हाथ में इस प्रकार की रेखा हो तो वह इतनी कष्टदायक नहीं होती, जितना अन्य हाथों में। इसका साधारण-सा उत्तर है। समकोण-हस्त प्रकृति वाला प्राणी गम्भीर, शांत और बुद्धिमान होता है। वह अपने विचारों पर सन्तुलन रखता है और अपनी बुद्धि के सहारे अपनी विचार शक्ति को काबू में रख सकता है। इसी कारण वह मस्तकरेखा के इन अवगुणों से बचा रहता है। मस्तकरेखा की इस आकृति का समकोण-हस्त वाले प्राणी पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता।

विद्वान् ज्योतिषी हमेशा इस बात पर जोर देते हैं कि इस प्रकार की बनावट वाली मस्तकरेखा का फल कहने से पहले हाथ की बनावट

को अच्छी तरह देख लेना चाहिये और पूर्ण रूप से हाथ की श्रेणी का निश्चय हो जाने पर ही फलादेश कहना चाहिए।

पाश्चात्य मत वाले इस विचार से सहमत नहीं होते। उनका कथन है कि रेखा जिसका फल बुरा है और वह चाहे कैसे ही हाथ में क्यों न हो उसका फल एक-सा ही होता है। मानव-जीवन पर उसका समान असर होता है। अधिक या कम, यह बात ज्योतिषी के निर्णय करने की नहीं है। जो प्राणी हिम्मत वाले होते हैं और मिजाज पर काबू रखते हैं, उन पर असर कम होता है और जो हिम्मत के कमजोर होते हैं और उनका काबू उनके दिल और दिमाग पर नहीं होता, उनके लिए उसका असर कुछ मतलब रखता है–"Those, who have greater sense for their each thought, care much and there are others, who take things lightly, saves them selves from mental perturbation for this count" अर्थात् जो हर बात पर गम्भीरता से विचार करते हैं, उनके जीवन पर इसका गहरा असर होता है, मगर जो अधिक ध्यान नहीं देते वे इस प्रकार की व्याख्या सुनकर भी अधिक दुःखी नहीं होते।'

यदि किसी प्राणी की मस्तकरेखा, नियत स्थान से प्रारम्भ होकर जीवनरेखा को स्पर्श करती हुई, चन्द्र स्थान की ओर सीधी जाए और अन्त में जाकर चन्द्र स्थान के समीप वह सर्प जिह्वाकार हो जाए तो ऐसी रेखा प्राणी के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। ऐसे आदमी की विचारशक्ति संतुलित होगी और वह जो बात सोचेगा उसको पूर्ण करने के साधनों को भी सोचकर शीघ्र पूर्ण करने की चेष्टा करेगा। यदि ऐसे प्राणी की इस रेखा पर अगर भाग्यसे कोई दाग या तिल होगा तो वह प्रखर बुद्धिमान और विचारशील होगा।(चित्र नं. २३ में नं. १ स्थल)

ऐसा देखा गया है कि चन्द्रग्रह के स्थान से अनेकों छोटी-छोटी

रेखाएं निकल कर मस्तकरेखा को छूती हैं। यदि ये छोटी २ रेखाए स्पष्ट हैं और वे मस्तकरेखा को पूर्ण स्पर्श कर रही हैं, तो। ऐसे गुणों वाला प्राणी सफल कवि, चित्रकार, लेखक, साहित्यकार, विचारक, धर्माचार्य व्याख्यानदाता आदि होता है। प्रकृति के प्रति ऐसे प्राणी का विशेष अनुराग होता है और वह अपने शांत स्वभाव के सहारे रूप, सुन्दरता, मोहकता, प्रकृति-माधुर्य आदि का विशेष प्रेमी होता है।

( चित्र नं. २३ में २-२ वाली रेखा )

पाश्चात्य विद्वानों का इसके विषय में कहना है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी जन्म-जात ही से कलाकार होता है। सङ्गीत उसकी वाणी और सौंदर्य उसकी आराधना होती है "Music is his voice, beauty remains his the me of life" मगर ऐसे भाग्यशाली विरले ही होते हैं, जो इस प्रकार की रेखाएँ लेकर संसार में जन्म लेते हों ? जितने भी जन्म-जात कवि, सङ्गीतज्ञ, चित्रकार, कलाकार प्रेमी पैदा हुए हैं, उनके हाथ में ऐसा योग पाया गया है।

एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लिखा है—"There are a few who are born as poets, prophets and masters, yet There are many who died as poets, regarded ane kings. Whatever, they thought proper they achieved after their birth, therefor, there can be no hard and fast rule, to determine the factor or the line of fate, by seeing their past or present.'

अर्थात्, 'संसार में बहुत कम प्राणी ऐसे हैं जो कवि, अवतार या राजा पैदा हुए हैं, मगर ऐसे बहुत से हैं जो कवि, अवतार और राजा होकर मरे हैं। जो कुछ भी उन्होंने ठीक समझा अपने जीवन ही में चुना, इसलिए ऐसा कोई भी नियम या रेखा उपलब्ध नहीं जो पक्की तौर से उनके भूत अर्थात् वर्तमान को बिना देखे उनके जीवन के सार को प्रगट कर सके।' इस विद्वान के मत के अनुसार यह कहना

पड़ेगा कि प्राणी प्रवृत्ति के साथ ही इस प्रकार की रेखा का निर्माण होता है। कुछ यूनानी ज्योतिषियों का कथन है कि सुकरात Socrates के हाथ में जन्मजात से ही यह रेखा थी और प्लेटो Plato के हाथ में यह रेखा उसकी युवावस्था के बाद पड़ी। मगर इसका कोई यथार्थ प्रमाण प्राप्त नहीं।

सर्प-जिह्वाकार मस्तकरेखा शुभ होती है। मगर अब उन स्थितियों को भी जान लेना आवश्यक है, जिनमें वह अशुभ हो जाती है।

१–जब मस्तकरेखा दो शाखाओं में विभक्त हो जाए और उसकी एक शाखा बुध गृह के स्थान की ओर अग्रसर हो और बुध के स्थान से निकलने वाली अन्य छोटी-छोटी रेखाएँ उसे काट रही हों। जो रेखाएँ बुध से निकलकर मस्तकरेखा को काटती हैं, वे अपना हानिकारक प्रभाव अवश्य डालती हैं। इस प्रकार का प्राणी नीयत का साफ नहीं रह पाता। वह भ्रष्ट होता है। पराए धन पर उसकी हमेशा नीयत लगी रहती है और बेईमानी करने में वह नहीं चूकता। चालाकी उसके जीवन में मुख्य अङ्ग बन जाती है। धोखा, विश्वासघात, बेईमानी आदि की प्रवृति उसमें पाई जाती है। ( चित्र नं. २३ में १-१ वाली रेखा )

२—यदि किसी प्राणी की मस्तकरेखा की सर्प-जिह्वाकार शाखाओं में से एक शाखा नीचे चन्द्रग्रह की ओर और दूसरी ऊपर बुध ग्रह की ओर चली गई हो, तो ऐसा प्राणी विचारक होता है। उसकी विचार-शक्ति प्रबल होती है। प्रखर-प्रतिभा और उन्नत-विचार शक्ति होने के कारण जो भी वह सोचता है, वह साधारण मनुष्य की कल्पना से भी परे की बात होती है। उसके विचारों की उड़ान अपना एक पृथक स्थान रखती हैं। राजनीतिक नेता, सफल व्यवसाई, कलाकार और चतुर कारीगर की यह परिचायक होती हैं। (चित्र नं-२३)

मगर इस भाग्यशाली रेखा का सारा प्रभुत्व उस समय समाप्त हो जाता है, जब दुर्भाग्य से मस्तकरेखा के साथ कहीं हृदयरेखा का

किसी स्थान पर मिलाप हो जाए। हृदयरेखा द्वारा कटते ही इस रेखा के समस्त गुण समाप्त हो जाते हैं और इसका प्रभाव यह होता है कि प्राणी विश्वासघाती और अभिमानी हो जाता है। लोक व्यवहार में यह आवश्यकता से अधिक चतुराई करने लगता है। उसके साथी उसे अच्छी तरह समझ लेते हैं और उस पर विश्वास करना छोड़ देते हैं।
( चित्र नं २३ )

प्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिषी का मत है—"........................ such a man having such line develops himself to a mean, cruel and unreliable creature." अर्थात् 'इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी, कमीना, क्रूर और अविश्वासी हो जाता है।' इस रेखा का इतना भयङ्कर प्रभाव प्राणी पर पड़ता है।

चित्र नं २३

(इन तीनों रेखाओं का अपना असर तो कुछ और है परन्तु उनके मिलने से एक और विषम अवस्था उत्पन्न हो जाता है, उसको जानने के लिए इस चित्र को ध्यान से देखो।)

३—अधिक झुकने पर, यदि मस्तकरेखा चन्द्र स्थान पर पहुँच कर अन्य रेखाओं के साथ मिलकर यदि लहरदार स्थिति में बदल गई हो तो उसका प्रभाव मस्तिष्क पर गहरा पड़ता है। जंजीरदार मस्तक रेखा वाले प्राणी अक्सर पागल, सनकी और मृगी रोग के शिकार होते हैं। मस्तिष्क की अवस्था विकृत हो जाने के कारण उनके शरीर पर पक्षपात भी देखा गया है। पक्षपात का प्रभाव यह होता है कि प्राणी के शरीर का कोई अङ्ग बेकार हो जाता है। शरीर का नियंत्रण जाता रहता है। यह वैसे तो एक तरह की बीमारी होती है, जो शरीर में वायु के विकारों के कारण उत्पन्न हो जाती है। अंग्रेजी में इस घातक रोग को Paralysis और हिन्दी में पक्षपात कहते हैं। (चित्र नं. २०।१० में रेखा का अन्तिम भाग )

४—सर्प-जिह्वाकार रेखा यदि झुककर चन्द्र स्थान के आसपास वाली रेखाओं के साथ मिलकर गुणक अथवा नक्षत्र का चिन्ह अङ्कित करे तो ऐसे लक्षण वाला प्राणी अधिक चिन्ता करने वाला होता है। वह चिन्ताओं से इतना परेशान हो जाता है कि अन्त में पागल हो जाता है। (चित्र नं. २०।१० में १-१ स्थल )

ऊपर कहे हुए इन फल, गुणों आदि को कहने में अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपको चाहिए कि हाथ की पूर्ण परीक्षा करलें, गुण, अवगुणों का पूर्ण निर्णय करलें। रेखाओं की स्थिति को अच्छी तरह समझ लें और तब खूब सोच कर ही लाभ-हानि, फल का वर्णन करें। तनिक-सी भूल प्राण तक ले सकती है।

यदि किसी प्राणी के हाथ की मस्तकरेखा का झुकाव नीचे की तरफ न होकर ऊपर की तरफ हो तो उसका प्रभाव अलग होता है। मगर दोनों ओर अधिक झुकाव हमेशा दुखदाई होता है। वैसे भी मस्तक रेखा का अधिक झुकाव अच्छा नहीं ( चित्र नं. २०।११ रेखा १-१ तथा -१२ )

जिस प्राणी की मस्तक रेखा ऊपर की ओर उठकर कनिष्ठा

उङ्गली के नीचे वाले ग्रह बुध के स्थान पर जाती है, तो ऐसा प्राणी स्वभाव का तेज होता है। उसकी मनोदशा पर जिद्दीपन की छाप होती है। पैसा खर्च नहीं कर पाता और हमेशा धन का संचय करता रहता है। वह जिधर भी अपनी मनोभावनाओं को पलटता है उधर के ही अवगुणों को अपनाता है। गुण ग्राहकता मानो उसमें होती ही नहीं ( चित्र २०।११ रेखा १-१ )

यदि इस प्रकार की मस्तक रेखा पर किसी स्थान पर द्वीप अङ्कित हो जाए तो वह और भी अधिक हानिकारक होता है। ऐसे प्राणी की स्मरण-शक्ति का नाश हो जाता है, वह किसी बात को याद नहीं रख सकता और हमेशा सिर दर्द का शिकार रहता है। सिर दर्द मस्तिष्क के लिए बहुत हानिकारक होता है। (चित्र २०।११ स्थल ३)

पाश्चात्य विद्वानों ने शरीर वैज्ञानिकों का समर्थन करते हुए लिखा है—"Headache is the meanest disease for a humanbeing, because it not only ruin the physical strength of man, but also produce certain obstacles in making his future career."

अर्थात् 'सिर दर्द मानव के लिए केवल एक भयानक रोग ही नहीं, जो शरीर की शक्ति का ह्रास करता हो, वरन् यह एक ऐसा रोड़ा है जो उसके उज्जवल भविष्य का मार्ग भी रोक लेता है।'

यदि किसी प्राणी की मस्तकरेखा कनिष्ठा उङ्गली की ओर झुकी हो और बृहस्पति के क्षेत्र से निकल कर अन्य छोटी २ रेखाएँ शाखाओं के रूप में मस्तकरेखा का स्पर्श कर रही हों, तो ऐसी दशा में वह प्राणी भाग्यशाली होता है। वह भोग-विलास, आनन्द तथा हर्ष से परिपूर्ण जीवन की कामना करता है और उनकी प्राप्ति करने के बाद जीवन को चैन से यापन करता है (चित्र नं. २०।११ रेखा १-१ तथा स्थल ४)

प्रसिद्ध पाश्चात्य ज्योतिषी ने लिखा है—"Jupitor is the best plannet so for the good effects of life

are concerned and as it touches through its off-shoot, this particular line, the effect is always the best. Such type of persons always enjoy the best of their life and they get all whatever they aspire. It is a clear indication of healthy and prosperous life."

अर्थात् 'जहाँ तक जीवन पर प्रभाव का प्रश्न है, गुरु समस्त नक्षत्रों में श्रेष्ठ है और यदि इसके क्षेत्र से निकलने वाली छोटी २ रेखाएँ मस्तक रेखा को छूती हैं, तो इसका प्रभाव सदा अति उत्तम होता है। इस प्रकार के प्राणी हमेशा अपने जीवन में सर्वोत्तम आनंदों का उपभोग करते हैं और अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर सकने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार की रेखा स्वस्थ और वैभव-पूर्ण जीवन का प्रतीक होती है।'

इसके साथ यह भी याद रखना चाहिए कि रेखा स्पष्ट, स्वच्छ और गहरी हो। जिन प्राणियों की मस्तकरेखा स्थान २ पर कटी हुई होती है, उनके विचारों की श्रृङ्खला कायम नहीं रहती। वे अपने निश्चय पर अटल नहीं रह पाते हैं। वे दूसरे लोगों के बहकावों में आकर कोई न कोई ऐसा काम कर बैठते हैं जिनके कारण उन्हें सदा कष्ट उठाने पड़ते हैं।

कुछ प्राणी ऐसे भी देखे गए हैं जिनके हाथ की मस्तक रेखा कई स्थान पर कटी होती है। उनके विषय में फल कहते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वह रेखा किस २ नक्षत्र के क्षेत्र में कटी है। क्योंकि जिस ग्रह के क्षेत्र में रेखा कटती है वह उस रेखा पर अपना असर डालता है।

यदि रेखा शनि के क्षेत्र में कटती है और रेखा का झुकाव भी कटने से पहले शनि ग्रह की ओर हो तो ऐसी रेखा वाला प्राणी धन प्राप्त करता है। उसे अनायास ही कहीं से धन प्राप्त हो जाता है।

चाहे उसका निकट सम्बन्धी उसे धन दे दे, उसे दान में धन प्राप्त हो जाए। गरज है कि चाहे किसी भी अवस्था में उसे धन अवश्य ही प्राप्त होता है। ( चित्र २०।१२ स्थल २ )

जिस प्राणी की मस्तक रेखा बुध के क्षेत्र की ओर झुकी हो और तब टूटती हो तो उसका फल होता है कि ऐसा प्राणी कुशल व्यवसाई होगा। उसका मस्तिष्क व्यापारिक कार्यों में पूर्ण कार्य करेगा उसका दृष्टिकोण इस क्षेत्रमें वृहद, विस्तृत होगा। प्राणी अपने व्यापार में दिनों-दिन उन्नति करेगा। (चित्र २०।१२ स्थल ४ )

जो प्राणी कलाकार होता है और उसकी आजीविका ही केवल कलाकौशल के द्वारा चलती है, उसके हाथ की मस्तक रेखा सूर्य के ग्रह की ओर झुकी होती है। सूर्य उन्नति चाहता है और कलाकार उन्नति के क्षेत्र का सफल नायक होता है। ऐसे प्राणी विशेषत: शिल्पी, चित्रकार, चतुर कारीगर आदि देखे गए हैं। (चित्र २०।१२ स्थल ३ )

इन तमाम विवरणों को जान कर हमें पाश्चात्य ज्योतिषी के कथन की पुष्टि करनी ही पड़ती है। वह लिखता है—

"A healthy soul remains in a healthy body. Health is wealth, therefore, where is health a sound mind must remain in that body. When a sound mind and healthy constitution are put to-geather to work, wealth must rain in cats and dogs and also the man possessing immence wealth must enjoy higher status in the society where he lives."

अर्थात्—स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है। स्वास्थ्य ही धन है। अत: जहाँ स्वास्थ्य है, वहाँ स्वस्थ मस्तिष्क भी अवश्य रहता है। जब स्वस्थ मस्तिष्क और सुगठित शरीर का साथ हो जाए और वह दोनों उन्नति के पथ की ओर कदम बढ़ाएं तो

लक्ष्मी उन के चरण चूमती है। लक्ष्मीवान् मनुष्य संसार में तथा उस समाज में जहां वह रहता है विशेष सम्मान पाता है।"

अक्सर दो मस्तक रेखाएं एक ही हाथ में बहुत कम देखी गई हैं। मगर दो मस्तक रेखाओं का होना लाभदायक होता है। जिस प्राणी के हाथ में दो मस्तकरेखा होती हैं वह विलक्षण शक्ति वाला होता है। वह अपने मस्तिष्क से उत्तम खोज करेगा और जब भी उन योजनाओं को कार्यान्वित करेगा तो उसका ढङ्ग बहुत विकसित और सन्तुलित होगा। सफलता उसको अवश्य प्राप्त होगी, मगर ये रेखाएँ इस रूप में बहुत कम देखी गई हैं। (चित्र नं० २०।१२)

मस्तकरेखा का लाभ और दोष कहते समय यह बहुत आवश्यक है कि उसके प्रत्येक कार्य पर पूर्ण दृष्टि रखी जाए और सूक्ष्म से-सूक्ष्म उलट-पलट को भी ध्यान में रखा जाए।

# छटा अध्याय

## भाग्य-रेखा

भाग्यरेखा हाथ की महत्वपूर्ण रेखा है। इसके द्वारा हम अपने जीवन की महत्वपूर्ण स्थिति को समझ सकते हैं। हर प्राणी अपने भाग्य की बातों को जानने के लिये उत्सुक होता है।
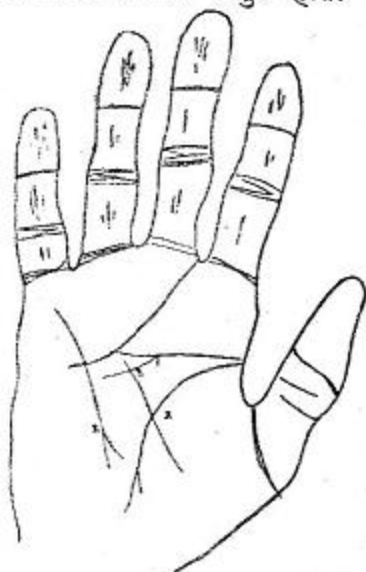
चित्र नं० २४

भाग्यरेखा किस स्थान से निकलती है और कहाँ समाप्त होती है ? अन्य रेखाओं के मिश्रण का क्या फल होता है जानने के लिए इस चित्र को गौर से देखना बहुत ही जरूरी है।

जानता है, वर्तमान् उसके सन्मुख होता है अतः वह भविष्य जानने की कामना करता है। भाग्यरेखा प्राणी के प्रारब्ध अर्थात् भविष्यकी बातें बताने की पूर्ण क्षमता रखती है। वैसे भी हर प्राणी को पहली जिज्ञासा जीवन की अर्थात् यह बात जाननेकी कि आयु कितनी है? और दूसरी जिज्ञासा होती है सुखमय और शान्तिमय तथा वैभव-पूर्ण जीवन की। अतः दूसरी जिज्ञासा इसी रेखा को देख कर शांत की जा सकती है।

भाग्यरेखा को विविध नामों से पुकारा जाता है। धनरेखा, प्रारब्ध रेखा, शनि रेखा, उर्ध्व रेखा, आदि। इस रेखा के द्वारा भविष्य वर्तमान तमाम उथल-पुथल, उन्नति-पतन, बाधाएं-सुविधाएँ, हानि-, आदि की सूचना मिलती हैं, जो प्राणी के जीवन में उपस्थित होकर उसे उन्नति अथवा अवनति के मार्ग पर ले जाती है।

यह देखा गया है कि भाग्यरेखा सदा अपनी एक-सी दशा में नहीं रहती। वह भविष्य की ओर संकेत करती रहती है और जैसे २ प्राणी जीवन पर अग्रसर होता है, उसके हाथ की भाग्यरेखा उसी प्रकार घटती, बढ़ती रहती है। वैसे तो प्राणी का कर्तव्य है कि वह भाग्यरेखा पर निगाह रखे, जैसा संकेत हो वैसा ही आचरण करे। अर्थात् जब भाग्यरेखा सुख और समृद्धि की दशा की ओर संकेत करती हो, तो प्राणी को उचित है कि वह उत्साहित होकर पुरुषार्थ करता रहे और जब इस रेखा का संकेत अवनति की ओर हो तो प्राणी को उचित है कि वह सजग रहे और अपने हर कार्य में पूर्ण दिलचस्पी ले ताकि उससे कोई भी कार्य ऐसा न हो जाए जो उसकी अवनति का कारण बने।

ज्योतिष-शास्त्रियों के दूसरे दल का कहना है कि यह रेखा मनुष्य के कर्म से बनती है। जो प्राणी अपने उत्थान के लिए पुरुषार्थ करता है, उसकी भाग्यरेखा प्रखर होती जाती है, जो प्राणी अवनति की ओर गिरने लगता है उसकी भाग्यरेखा मन्द होने लगती है और उसमें अनेकों दोष होने लगते हैं।

तर्क के हिसाब से दूसरा मत उत्तम समझ में आता है। क्योंकि

यह तो हर प्राणी जानता है कि मनुष्य के कर्म ही उसके जीवन की सफलता और अवनति को बताते हैं। मगर पहला मत उन लोगों के हिसाब से अधिक प्रभावशालीहै जो प्रारब्ध को दैवी शक्ति अर्थात् भगवान की महिमा समझते हैं। भारत में दैव को हर कार्य में सम्मिलित करने की पुरानी प्रथा है। अतः सनातनी दैवगति के विचारों के मानने वाले मत से अधिक प्रभावित होते हैं।

हमारे हिसाब में कोई फर्क नहीं पड़ता। प्राणी चाहे जिस मत को अपनाये। ज्योतिष, रेखाओं की भाषा को पढ़कर प्राणी के जीवन के सत्य तत्व को प्रगट करती है। ज्योतिषी का कार्य यह जाननेका नहीं कि रेखाएं प्राणी के हाथ में कैसे बनी और बनती हैं। जो कुछ रेखा हाथ देखते समय स्पष्ट करे, उसी के अनुसार फल बताना चाहिए यही ज्योतिषी का कर्त्तव्य है। क्योंकि यदि प्राणी को यह ज्ञात हो जाए कि उसके ऊपर आपदाएं आने वाली हैं, तो वह सजग हो जाता है और अपनी समस्त शक्ति लगाकर अपनी अवनति को रोक सकता है। किसी भी आपदा का मुकाबला करने के लिए यह आवश्यक होता है कि प्राणी की इच्छा-शक्ति प्रबल हो और वह अपनी पूरी शक्ति से आपदा को रोकने की क्षमता रखता हो।

मुझे एक व्यापारी का हाल ज्ञात है, सन् १९४२ में लड़ाई के दिनों ही में उन्हें चांदी के सट्टे खेलने का शौक हो गया।उन्होंने मुझसे अपनी व्यापार-स्थिति स्पष्ट करते हुए इस विषय में मेरी राय जाननी चाही। उस समय उनकी भाग्यरेखा प्रखर थी, अतः मैंने उन्हें केवल इतना ही कहा कि आपके दिन इस समय तो ऐसे चल रहे है कि आप जिस कार्य में भी हाथ डालेंगे वहां सफलता प्राप्त होगी।' निदान वे सट्टा खेलने लगे।थोड़े ही दिनोंमें उन्होंने चार-पांच लाख रुपया पैदा कर लिया। इस बीच एक दिन मेरा और उनका फिर साक्षात्कार हो गया तो मैंने देखा कि उनकी भाग्यरेखा मन्द पड़ गई है और उसमें विभिन्न प्रकार के दोष आ गएहैं।उनकी भाग्यरेखा लुप्त-सी होने लगी थी। अतः मैंने उनसे कहा—"आपको हानि होने की संभावना है अतः

अब तो यही उचित है कि आप जो कार्य भी करें बहुत सावधानी के साथ ही करें।" मगर उन्होंने शायद मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया और शायद ध्यान भी दिया हो तो वह परिस्थितियों के कारण कुछ कर न सके। लगभग छः महीनों में ही मैंने देखा कि वह देवालिया हो चुके थे। दैव की दशा से दुखी होकर एक दिन वह फिर मेरे पास आए तो उनके हाथ को देखने पर ज्ञात हुआ कि भाग्यरेखा उनके हाथ से बिल्कुल ही लुप्त हो चुकी थी। कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि वह नशा करने लगे, स्त्री को जब भोजन-वस्त्र न मिल सका तो वह दुःखी होकर मायके चली गई। सारा व्यापार नष्ट हो गया। भोजन की जब कोई समस्या नहीं हल हो सकी तो वह अपने द्वारा ही बनवाए हुए मन्दिर में जा पड़े और देव-पूजा में आया हुआ भोग-प्रसाद और चन्द पैसों पर जीवनयापन करने लगे।

भाग्यरेखा के फल को स्पष्ट रूप से कहना और उसकी सही व्याख्या करना जरा टेढ़ी खीर है। क्योंकि संसार के जितने भी प्राणी हैं उनके मस्तिष्क में एक विभिन्न प्रकार की सनक अवश्य रहती है। कहने का तात्पर्य है कि कुछ विचारशील मर्म की बात को सुनकर उस पर सोचा-विचारी करते हैं, कुछ हर बात में यह कह देते हैं कि "जो कुछ भाग्य में है, वह अवश्य होगा। उसे विधाता भी नहीं रोक सकता और इस विचार के आधार पर वह प्राणी चेष्टाओं को सुधारने के बदले अवनति की ओर अग्रसर होने लगते हैं। कुछ प्राणी ऐसे होते हैं जो जरा भी आपत्ति को देखकर घबरा जाते हैं, यदि उन्हें ज्ञात हो जाए कि उनकी अवनति निकट है तो वह जीवन से उकता जाते हैं और अपने हृदय की शक्ति को गँवा देते हैं। वे आत्म-हत्या तक के लिए तयार हो जाते हैं।

अतः ज्योतिषी को यह आवश्यक है कि प्राणी की मनोदशा को अच्छी तरह समझकर ही फल कहे। ताकि प्राणी उससे लाभ उठा सके हर प्राणी को यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिए कि मनुष्य के कर्म और पुरुषार्थ उसके भाग्य को बदल सकते हैं। गीता में

स्वयम् भगवान् ने भी कहा है—

"कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा ॥"

इसके अर्थ पर विद्वानों का मतभेद हो सकता है। मगर मानव-जाति का इतिहास यह पूर्णरूपेण स्पष्ट करता है कि मनुष्य का पुरुषार्थ चलती हुई हवा के रुख को भी बदलने में सफल सिद्ध हो चुका है। जो पुरुष समय की चिंता करता है, वह अपने भाग्य को उन्नत करता है। जो दुराग्रह करके समय की चिन्ता नहीं करता और उचित कर्मों की उपेक्षा करता है, वह कष्ट भोगता है।

१—मनुष्य के हाथ में भाग्यरेखा कई स्थानों से प्रारम्भ होती है इसका ध्यान अवश्य रखना चाहिए। कुछ प्राणी हाथों द्वारा कठिन मेहनत करते हैं, उनके हाथ का चमड़ा काम करने के कारण काला और भद्दा तथा कटा-फटा हो जाता है, अतः उनकी भाग्यरेखा स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती। ऐसी अवस्था में उनकी आर्थिक दशा का ध्यान रखना चाहिए। यदि वह धनी है तो उसके हाथ में भाग्यरेखा है, जानकर पता लगाना चाहिए। यदि वह गरीब है तो उसके हाथ में भाग्य-रेखा का अभाव हो सकता है। ऐसी दशा में भाग्यरेखा को ज्ञात करने का एक ही साधन है कि ऐसे प्राणियों का बांया हाथ देखकर भाग्य-रेखा के विषय में निश्चय किया जाए। उसके बांए हाथ की भाग्यरेखा को देखकर फल को कहने की सम्मति ज्योतिषशास्त्र देता है।

२—प्रायः भाग्यरेखा प्राणी की मणिबन्धरेखा के मध्य भाग से प्रारंभ होती है और आगे बढ़कर शनि के पर्वत तक अर्थात् मध्यमा अङ्गुली के मूल तक जाती है। जिस प्राणी की भाग्यरेखा मणिबंधरेखा या उसके समीप से प्रारम्भ होकर स्वच्छ और गहरी स्थिति में पूर्ण स्पष्टता के साथ शनि ग्रह के क्षेत्र की ओर अग्रसर होती है, तो वह प्राणी भाग्यशाली होता है। वैसे तो हर प्राणी के जीवन में उथल-पुथल आती है मगर ऐसी रेखायुक्त प्राणी उन तमाम मार्ग में आने वाली बाधाओं का विनाश करता हुआ अपने जीवन की सफलता तक

१
२
३
४
५
६
७
८
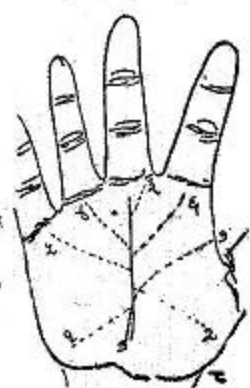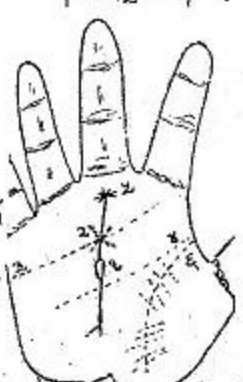
अवश्य पहुँचता है। स्वच्छ और स्पष्ट रेखा मान, प्रतिष्ठा और सौभाग्य को बढ़ाने वाली होती है। ऐसे प्राणी यशस्वी, विद्वान, धनाढ्य, धार्मिक, वीर, कर्मठ आदि देखे गए हैं। (चित्र नं०२५।१ में रेखा नं०१)

भाग्यरेखा अधिक लम्बी नहीं होनी चाहिए। जब-तक वह केवल शनि ग्रह के क्षेत्र को ही स्पर्श करती है तबतक ही वह भाग्यवान होती है और अच्छा फल देने वाली समझी जाती है। मगर जब वह अधिक लम्बी होकर उङ्गली को स्पर्श करने लगे तो अशुभ हो जाती है।

सर्प जिह्वाकार भाग्यरेखा भी अशुभ मानी जाती है। शनि का प्रभाव है कि जो भी उसके नियंत्रण को मानता है, वह उसे उत्तम फल देता है। जहाँ उसके नियन्त्रण से किसी ने आगे बढ़ने की चेष्टा की तो वह उसको विनाश की ओर ले जाता है। अतः लम्बी भाग्यरेखा अच्छी नहीं होती।

जिस प्राणी की हृदयरेखा मध्यमा उङ्गली के पास हो और साथ ही शुक्र ग्रह का स्थान अधिक ऊँचा हो, ऐसी दशा में भाग्यरेखा भी बढ़ती हुई मध्यमा के मूल से भी आगे बढ़ने की चेष्टा करे, तो ऐसा प्राणी अवश्य जेल जाता है। वह व्यभिचारी होगा और व्यभिचार के अभियोग में उसे जेल जाना पड़ेगा। उसके कर्मों की अन्य व्याख्या मस्तकरेखा, हृदयरेखा. और भाग्यरेखा के गुणों और अवगुणों को देखकर करनी चाहिए। ( चित्र नं० २५।२ स्थल ३ )

इसी प्रकार यदि भाग्यरेखा नीचे की ओर अधिक लम्बी होकर मणिबंधरेखा को काटकर आगे बढ़ती है तो वह भी अशुभ होती है। जिस प्रकार गहरी, स्वच्छ और स्पष्ट दिखाई देने वाली भाग्यरेखा अच्छे भाग्य का प्रतीक होती है उसी प्रकार अस्वच्छ, मलिन और अस्पष्ट भाग्यरेखा वाला प्राणी बल, वीर्य, शक्ति से हीन होता है। कठिनता से उसका जीवनयापन होता है। चित्र नं० २५।२ स्थल २ )

यदि भाग्यरेखा, मणिबंधरेखा के पास वाले भाग से प्रारंभ हो और वह जीवनरेखा को स्पर्श करती हुई सीधी, गहरी और स्पष्ट दशा

में आगे की ओर बढ़ती है तो ऐसा प्राणी अपने परिश्रम और अपनी बुद्धि के समावेश से अपने भाग्य की उन्नति करता है। उसके जीवन और भाग्य का समावेश होता है। उसकी सफल चेष्टाएँ उसकी उन्नति करती हैं। वैसे हर प्राणी के जीवन में कुछ-न-कुछ आपदाएँ आती हैं मगर इस रेखा वाला प्राणी अपनी इस रेखा के बल पर उन समस्त आपदाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। उसकी निरन्तर उन्नति होती है। ( चित्र नं० २५।३ )

यदि भाग्यरेखा प्रारम्भ से अन्त तक कटी हुई न हो और अन्य कोई चुटपुट रेखा उनको न काटती हो तो ऐसी रेखा वाले प्राणी का उन्नति-मार्ग निष्कण्टक रहता है। वह निर्विरोध उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता चला जाता है।

अक्सर भाग्यरेखा मणिबन्धरेखा या उसके पास वाले स्थान से प्रारम्भ होकर आगे चलती है और थोड़ी ही दूर चलकर जीवनरेखा में विलीन हो जाती है। ऐसी रेखायुक्त प्राणी के विषय में यह निश्चय रूप से कहा जा सकता है कि उसके जीवन का आरंभ ही गृह-सम्बन्धी उलझनों से हुआ और वह बन्धु-बांधवों द्वारा प्रस्तुत किए उपद्रवों में ऐसा फंस गया कि अपनी उन्नति करने का अवसर ही प्राप्त नहीं कर सका। उसकी उन्नति रुक जाती है। ( चित्र नं० २५।३ स्थल ३ )

साथ ही यदि उसकी भाग्यरेखा पुनः जीवनरेखा से विलग होकर यदि शनि ग्रह के क्षेत्र की ओर अग्रसर होने लगी हो तो यह निश्चय है कि वह निकट भविष्य में अपने ही पुरुषार्थ द्वारा अपने जीवन को उन्नति के पथ पर ले जाने में सफलता प्राप्त कर सकता है। सफलता के विषय में शनि के गुणों को भी ध्यान में रख लेना आवश्यक है।

जब भाग्यरेखा, हथेली के मध्य भाग से, जो मङ्गल ग्रह का क्षेत्र माना जाता है, प्रारम्भ होकर आगे बढ़ती है तो उससे स्पष्ट होता

है कि प्राणी का पिछला जीवन आपत्तियों से पूर्ण रहा है। उस प्राणी ने कभी अपनी उन्नति की चिन्ता नहीं की और अगर की भी है तो भी कर नहीं सका है। यदि रेखा आगे बढ़ती हुई स्पष्ट और स्वच्छ दशा में शनि के क्षेत्र की ओर जाती है तो प्राणी को समझना चाहिए कि उसके जीवन के उत्तरार्द्ध-काल में उसका भाग्य अवश्य चमकेगा। वह अपने जीवन के मध्य भाग में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा। ( चित्र नं० २५।४ में रेखा नं० १-१ )

यदि भाग्यरेखा उक्त दशा अर्थात् स्वच्छ, गहरी और स्पष्ट दशा में चन्द्र स्थान से प्रारम्भ होकर शनि के स्थान की ओर बढ़ती है तो ऐसे प्राणी उन्नति की ओर बढ़ने का प्रयास तो करते हैं मगर उनके विचारों में स्थिरता नहीं। जिस प्रकार चन्द्रमा की कलाएँ घटती-रहती हैं, उसी प्रकार ऐसे प्राणियों की मनोदशा भी घटती-बढ़ती रहती है। वह कभी चञ्चल हो जाते हैं और कभी स्थायित्व धारण करने की चेष्टा करते हैं, मगर कुछ भी हो उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। इसका एकमात्र कारण है उनकी चञ्चल प्रकृति।

( चित्र नं० २५।४ रेखा १-३ )

उनके जीवन पर स्त्रियों का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है। वह कामुक होते हैं और स्त्रियों के ऊपर मर-मिटने वाले होते हैं। इसी कारण उनकी उन्नति और अवनति में स्त्रियों के सहयोग का निर्देश पाया जाता है। यदि वह रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर जाकर समाप्त होती है तो उसका अभिप्राय है कि प्राणी का विवाहित जीवन सुखद होता है। उसे स्त्री से प्रेरणा मिलती है और विवाहिता स्त्री के सहयोग से वह उन्नति कर पाता है।

अक्सर देखा गया है कि अन्य रेखा ऐसी रेखा से चन्द्र स्थान पर आकर मिल जाती है। ऐसी सम्मिलित रेखा का प्रभाव यह होता है कि उस प्राणी के जीवन में यदि इसी प्रकार की रेखा वाले प्राणी का समागम हो जाए तो उसके जीनन में एक तरह की उथल-पुथल

मच जाती है। जब दो चन्द्र प्रकृति वाले जीव एक ही स्थान पर मिल जाएँ तो उनकी चञ्चल प्रकृति जो असर दिखा सकती है, उसे हर प्राणी समझ सकता है।

इस प्रकार की भाग्यरेखा जो चन्द्र के पर्वत से निकलती हैं पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में विशेषतया पाई जाती हैं।

भाग्यरेखा के विभिन्न रूप ऊपर बताए जा चुके हैं। अब हम उनके विषय में पूर्ण जानकारी देंगे कि उनका विभिन्न रेखाओं से मिल कर क्या असर होता है। पहले ही कहा जा चुका है कि हाथ की हर रेखा अपना असर डाले बिना नहीं रहती। इसलिए रेखा के निकलने के साथ ही यह भी जान लेना आवश्यक है कि रेखा पर अन्य रेखाओं के संसर्ग से क्या असर पड़ता है। यह पहले ही बताया जा चुका है कि एक रेखा का दूसरी रेखा पर कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है।

भाग्यरेखा का प्रभाव प्राणी के सामाजिक, व्यवहारिक और धनोपार्जन की दिशाओं पर अवश्य पड़ता है। यह रेखा, मणिबन्ध-रेखा, जीवनरेखा के निकट, मङ्गल क्षेत्र तथा चन्द्र क्षेत्र, हथेली के मध्य से प्रारम्भ होकर मध्यमा उङ्गली के नीचे स्थित, शनि ग्रह के क्षेत्र तक जाती है। भाग्यरेखा का सीधा,स्वच्छ और गहरा होना सौभाग्य-सूचक है। फीकी अस्पष्ट और कांतिहीन भाग्यरेखा दुखमय जीवन की द्योतक है। कुछ पूर्वी ज्योतिष शास्त्रियों का मत है कि भाग्यरेखा पर द्वीप अथवा क्रूस अर्थात् नक्षत्र का चिह्न होना अच्छा नहीं। परन्तु कुछ का कहना है, यह दोनों चिह्न उतने अशुभ नहीं होते जितना कि रेखा का टूट जाना अशुभ होता है। हम इस बात से तो अवश्य सह-मत हैं कि यह दोनों चिन्ह मनुष्य की उन्नति में बाधक होते हैं, मगर उतने घातक नहीं होते जितना कि रेखा टूट जाना होता है।

जिस प्राणी की भाग्यरेखा टूट जाती है उसकी उन्नति में संदेह होता है। क्योंकि उन्नति एकदम तो होती नहीं। वह निम्नस्तर से ही प्रारम्भ होती है और जब उन्नति का समय आता है तो उसमें विराम

हो जाता है ऐसी दशा में उन्नति जहाँ की तहाँ रह जाती है। इस कारण भाग्यरेखा का टूटना अच्छा नहीं होता। (चित्र नं० २५।४ में रेखा २—१ पर बीच वाला १)

यदि किसी प्राणी की भाग्यरेखा पर द्वीप का चिन्ह है और हृदय रेखा मस्तकरेखा से अधिक बलवान् है, तो ऐसा प्राणी प्रेम में इस तरह बंध जाता है कि उसको अपने इस प्रेम के कारण कलङ्कित होना पड़ता है। अपमान सहना पड़ता है, और हो सकता है कि इस प्रेम बन्धन के कारण उसे दुःखी होकर आत्महत्या का प्रयत्न भी करना पड़े। [ चित्र नं० २५।५ स्थल १ ]

यदि द्वीप का चिन्ह, भाग्यरेखा पर पड़ता है जो उपयोगी श्रेणी का है, तो ऐसी दशा में इस द्वीप का महत्व बिलकुल बेकार हो जाता है। उपयोगी हाथ ही स्वयं इतना उच्च-लक्षणयुक्त माना जाता है कि भाग्यरेखा पर स्थित द्वीप का अवगुण ऐसे हाथ में बिलकुल बेकार समझा जाता है। उपयोगी हाथ वाले प्राणी सिद्धांत के प्राणी होते हैं। उनके निश्चय दृढ़ होते हैं और उनकी रुचियाँ सदैव उत्कृष्ट होती हैं। ऐसे प्राणी जो अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते हैं, उनकी भाग्य-रेखा पर द्वीप का चिन्ह या तो मिलता ही नहीं या अगर पाया भी जाता है तो उसका महत्व नष्ट हो जाता है।

जिन विवाहित प्राणियों के हाथ में द्वीप का चिन्ह उनके विवाह सम्बन्ध हो जाने के बाद पड़ता है वह इस बात को स्पष्ट करता है कि उस प्राणी का प्रेम स्थायी होगा। यदि ऐसे प्राणी की हृदयरेखा अधिक स्वच्छ और स्पष्ट है तो निश्चय कर लेना चाहिए कि उस प्राणी का दम्पत्ति-प्रेम उत्कृष्ट है। मगर यदि कहीं दुर्भाग्य से नक्षत्र या गुणक का निशान हाथ में आ गया हो तो उसे नेष्ट फल देने वाला समझना चाहिए। [ चित्र नं० २५।५ स्थल नं० २ और स्थल नं० ५ ]

यह भी देखा गया है कि अनेकों प्राणियों के हाथ में भाग्यरेखा निकलने के स्थान पर सर्प-जिह्वाकार हो जाती है। ऐसी दशा में यह

रेखा हानि पहुँचाने वाली होती है। इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी का मन अस्थिर रहता है। उसके चित्त को शांति नहीं होती और वह अपने माता, पिता, बन्धु, बान्धव आदि प्रियजनों को सदैव धन की हानि पहुँचाता रहता है। [ चित्र नं० २५।५ ]

यदि इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की जीवनरेखा भी त्रुटि-पूर्ण अर्थात् लहरदार या कटी-फंसी, अस्पष्ट हो तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि ऐसा प्राणी अल्पआयु, दुर्बल, रोगी और छोटी-छोटी बात पर नाराज होने वाला होता है। इस प्रकार के निश्चय पर पहुँचने से पहले, यह आवश्यक है कि जीवनरेखा पर अधिक ध्यान दिया जाए।

यदि मस्तक रेखा के आ जाने के कारण भाग्यरेखा मार्ग ही में रुक गई हो और आगे उसका कोई निशान न हो तो इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी उन्नति तो करते हैं मगर उनकी उन्नति पूर्ण विकसित नहीं रहती। उनका मस्तिष्क उनकी उन्नति-पथ पर कांटा बन जाता है। उनके पागलपन, मूर्खता, क्रोध, विचारों की अनिश्चतत, काल्प-निकता आदि मस्तिष्क सम्बन्धी दोष उनकी प्रगति के मार्ग में आकर बाधक हो जाते हैं। [ चित्र नं० २५।७ में स्थल १ ]

अक्सर चन्द्रमा के स्थान पर आकर कुछ चुटपुट रेखाएं भाग्य रेखा से मिलती हैं, अथवा उसे काटती हैं। उन रेखाओं का प्रभाव होता है कि प्राणी के जीवन पर अन्य प्राणियों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। इस प्रकार की चुटपुट रेखाओं के काटने से अक्सर देखा गया है कि यदि भाग्य रेखा स्वच्छ, सीधी और गहरी होती है तो उन्नति को आगे को बढ़ाने में कुछ लोगों का हाथ अवश्य होता है। यदि रेखा झीनी और अस्वच्छ होती है तो अवनति के मार्ग पर ले जाने में कुछ लोगों का हाथ होगा।

[ चित्र नं० २५।७ में स्थल २ ]

पाश्चात्य ज्योतिषियों का मत है—"Various offshoots

which meet the line of Fate some where near the middle of palm denote that the destiny of the being lie under the effect of others. It must also be borne in mind that the fate line should be clear & distinct. If the line is faint and indistict the effect will be adverse."

अर्थात्—'यदि भाग्यरेखा को चुटपुट रेखाएँ हथेली के मध्य या उसके आस पास स्पर्श करें और भाग्यरेखा स्वच्छ तथा स्पष्ट हो तो ऐसे प्राणी की उन्नति में अन्य प्राणियों का भी हाथ रहेगा। मगर यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि भाग्यरेखा अस्वच्छ और अस्पष्ट है तो उसका उल्टा ही होगा।'

यदि किसी प्राणी की भाग्य रेखा में से ही शाखाएँ उत्पन्न होकर इधर-उधर जाने लगें तो उनका प्रभाव उस ग्रह के अनुसार होता है जिधर जाकर वह शाखाएँ बिलीन हो जाती हैं। यदि भाग्य रेखा से निकलने वाली शाखा चन्द्र स्थान में जाकर बिलीन हो जाती हैं तो उसका मतलब होता है कि ऐसा प्राणी जुए, सट्टे आदि में उन्नति करेगा, मगर उन्नति अस्थायी रहेगी।

[ चित्र नं० २५।८ में शाखा १ ]

यदि वह शाखा शुक्र के स्थान की ओर जाकर समाप्त होती है तो उसका फल होगा कि ऐसा प्राणी देशाटन के द्वारा उन्नति कर सकेगा। घूम फिर कर वह अपने ज्ञान के भण्डार को बढ़ाने में सफल होगा और इसी प्रकार वह लाभ भी उठा सकेगा। ऐसा प्राणी व्यापार में दक्ष होगा, मगर उसकी उन्नति भी अधिक दिन तक स्थायी न रह सकेगी। शुक्र का प्रभाव है कि वह पहले तो उन्नति करता है, मगर फिर उसका हृदय चंचल हो जाता है। उन्नति अवनति में परिणित हो जाती है। [ चित्र नं० २५।८ में शाखा २ ]

यदि इस प्रकार की शाखा भाग्यरेखा से निकल कर शनि के

क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती हैं तो उसका तात्पर्य है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी सकल सिद्धियाँ प्राप्त करेगा। उसके मार्ग की तमाम बाधाओं का नाश हो जायगा और उसकी उन्नति होगी। सफलता उसके चरणों की दासी होगी। इसके साथ ही यदि भाग्यरेखा स्वयं भी शनि के क्षेत्र के पास आकर अधिक स्पष्ट हो गई हो तो ऐसा प्राणी अपनी मनोकामना को पूर्ण करने की क्षमता रखने वाला होता है। ऐसे प्राणी के हाथ में चाहे जितने अशुभ चिह्न क्यों न हों, मगर सफलता उसे अवश्य मिलती है। यह शनि का प्रभाव है। (चित्र नं० २५।८ में शाखा ३)

यदि भाग्यरेखा से निकलने वाली शाखा सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन हो गई है, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी यश और कीर्ति पाता है। उसका नाम अमर रहता है। वह सूर्य के समान तेजस्वी होता है और उसकी ख्याति उसके सार्वजनिक कार्यों के कारण दिन दूना, रात चौगुनी बढ़ती है। वह कविता, साहित्य व चित्रकला का प्रेमी होता है। सफल कलाकार, कवि, नेता, या अभिनेता बनकर चमकता है। (चित्र नं० २५।८ में शाखा ४)

जिस प्राणी की भाग्यरेखा से निकली हुई शाखा बुध नक्षत्र के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है। उसकी विद्वता और बुद्धिमता की सराहना होती है। ऐसे प्राणी वैज्ञानिक, कलाकार, चित्रकार, सङ्गीत-कार, गणितज्ञ, ज्योतिषी और व्यापारी आदि होते हैं। इनकी मान-सिक शक्ति प्रखर होती है, और वे अपनी निजी योग्यता से यश पाते हैं। वे जीवन भर उन्नति करते रहते हैं। (चित्र नं. २५।८ में बिन्दु-दार रेखा ५)

४—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा हृदयरेखा से प्रारम्भ होती है। ऐसे प्राणी का हृदय निष्कपट होता है। वह धोखाधड़ी, जालसाजी और विश्वासघात नहीं कर सकता। ऐसे प्राणी प्राय: हृदय के स्वच्छ होते हैं, जो कुछ उनके मन में होता है, वही वे अपने

शब्दों से स्पष्ट कर देते हैं। मगर ऐसे प्राणियों का बचपन चाहे कैसा ही बीते मगर उनके जीवन के अन्तिम दिन शान्ति पूर्वक एवं बाधा रहित रहते हैं। उन्हें अपनी वृद्धावस्था में कोई चिन्ता नहीं होती। वे शान्तिमय ढङ्ग से ही अपना जीवन-यापन कर लेते हैं।(चित्र नं० २५।८ में बिन्दुदार रेखा ४)

५—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा प्राणी की हथेली के मध्य भाग अर्थात् मङ्गल ग्रह के स्थान से प्रारम्भ होकर आगे बढ़ती है। इस रेखा के ऊपर ग्रहदेवता अर्थात् मङ्गल का प्रभाव पड़ता है। मङ्गल देवताओं का सेनापति है, इस कारण हथेली के समस्त ग्रहदेव उसकी प्रभुता से दबते हैं। इसी कारण जिस प्राणी के हाथ में सूर्य-रेखा मङ्गल ग्रह के स्थान से निकलती है वह अपने उन्नति-पथ पर आगे बढ़ने में सफल हो जाता है। उसके मार्ग में चाहे कितनी भी व्याधाएँ क्यों न हों, मगर वह उन सब को विजय करता जाता है। (सूर्यरेखा चित्र नं० २५।८ में बिन्दुदार रेखा ५)

वह कुछ काल तक रुकने के बाद उन्नति-पथ पर अग्रसर होक अपने लक्ष्य तक पहुँच सकेगा। मगर साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक है, यदि रेखा टूटते समय अस्पष्ट हो गई है और पुनः प्रारंभ होते समय भी वह अस्पष्ट और फीकी है, तो यह लाभदायक नहीं। उसकी उन्नति में बाधाएं होंगी और वह उन बाधाओं को पार करके भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकेगा। ( चित्र नं० २५।७ )

जिस प्राणी की भाग्यरेखा हथेली के मध्य भाग से प्रारम्भ होती है, उसका जीवन बड़े परिश्रम से व्यतीत होता है। यदि उसकी भाग्यरेखा आगे जाकर शनि के क्षेत्र तक पहुँच जाती है, तो वह प्राणी उन्नति को अपने परिश्रम से प्राप्त कर लेता है। अन्त में वृद्धावस्था को सुख से काट सकता है। यदि वह रेखा शनि के क्षेत्र तक नहीं पहुंच पाती, तो वह लाख प्रयत्न करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

यदि हथेली के मध्य में आकर भाग्यरेखा पर द्वीप का चिह्न आ गया है, तो ऐसा प्राणी अपने जीवन के मध्य में विपत्तियों का सामना करने को बाध्य हो जायगा और अगर वह चिह्न हट गया तो उसका बाधाओं से छुटकारा भी हो जायगा। जिस समय तक वह चिह्न रहेगा तब तक उसकी उन्नति के मार्ग में बाधाएँ आती रहेंगी।
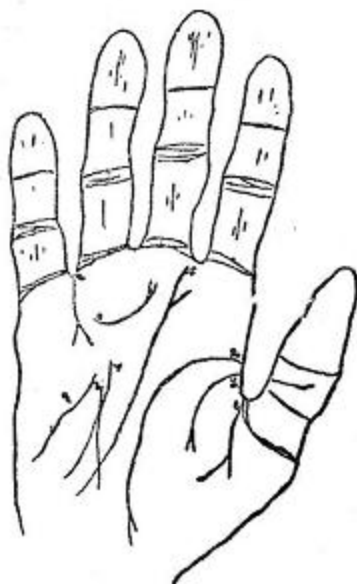
चित्र नं० २६

रेखाओं की विभिन्न स्थिति जो बहुत कम हाथों में देखा जाती है, उसका अध्ययन करो।

यह सब होते हुए भी हर प्राणी को उचित है कि इस रेखा के ज्ञान को प्राप्त करके अपने भविष्य को जान ले और अपने मन में दृढ़ निश्चय करके अपनी उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाए। अगर प्राणी जीवन में समस्त बाधाओं की विजय करना चाहता है, तो उसका एक मूलमन्त्र है—पुरुषार्थ !

पुरुषार्थ में ऐसी शक्ति और क्षमता है कि वह रेखाओं के विकारों का नाश कर देगी और जीवन में प्राणी को उन्नति के शिखर पर ले जाकर बिठाने का प्रयास करेगी।

कर्म करना प्राणी के हाथ में है और फल भगवान देता है। इस बात पर पूर्वी और पश्चिमी ज्योतिषशास्त्री एकमत हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने पूर्वी विद्वानों की राय से सहमत होकर कहा–"Action thy duty, reward is not thy concern."

अर्थात्—'कर्म करना तेरा कर्त्तव्य है, फल देना प्रभु के आधीन है।'

कर्म करने से भाग्य बनता है।

---

# सातवाँ अध्याय

## सूर्यरेखा

भाग्यरेखा को तेजोमय बनाने का सौभाग्य सूर्यरेखा को प्राप्त है। सूर्यरेखा का प्रभाव यह है कि वह भाग्यरेखा के गुणों को चमका देती है। जिस प्राणी के हाथ में भाग्यरेखा के साथ ही उत्तम सूर्यरेखा पड़ी हो, तो उसका भाग्य खूब चमकता है। सूर्य उसके यश और कीर्ति में चार चाँद लगा देता है। बलवान भाग्यरेखा के साथ बलवान सूर्य रेखा बहुत कम प्राणियों के हाथ में देखी जाती है। जिस प्राणी के हाथ में होती है वह दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति करता है। राजा, महाराजा, बड़े व्यापारियों, नेताओं आदि के हाथ में ये दोनों रेखाएं प्रखर रूप से दिखाई देती हैं।

यह आवश्यक नहीं कि सूर्यरेखा हर प्राणी के हाथ में अवश्य हो। ऐसे भी बहुत से हाथ देखे गए हैं जिनमें सूर्यरेखा के उद्गम अर्थात् निकलने के कई स्थान होते हैं जिनका विवरण निम्न है।

१—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा जीवनरेखा से प्रारम्भ होती है। ऐसी रेखा भविष्य में प्राणी को उन्नति पथ पर ले जाती है और उसकी कीर्ति को बढ़ाती है। ऐसे प्राणी कला के पुजारी होते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य में उनकी विशेष रुचि होती है। वे अपने ही परिश्रम और साधना से सफल कलाकार होते हैं। किसी भी बात को केवल इशारे मात्र से ही समझ लेने का गुण उनमें विद्यमान होता है। ( चित्र नं० २७१ में बिन्दुदार रेखा नं० १)

२—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा, भाग्यरेखा से प्रारम्भ होती है। ऐसे प्राणी अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं। इसका
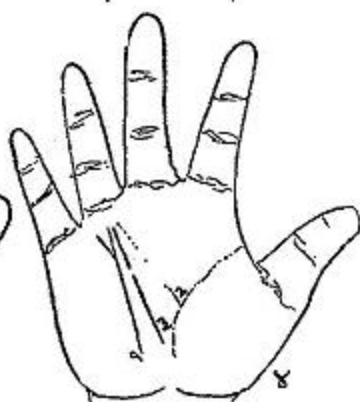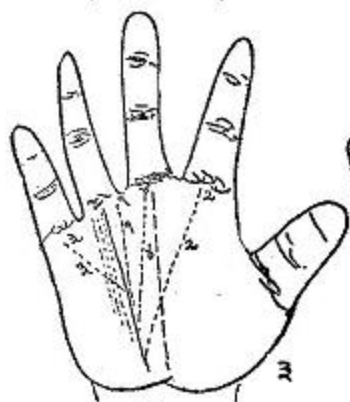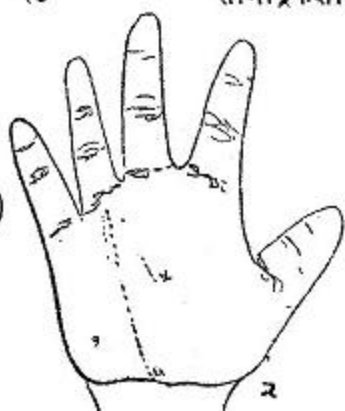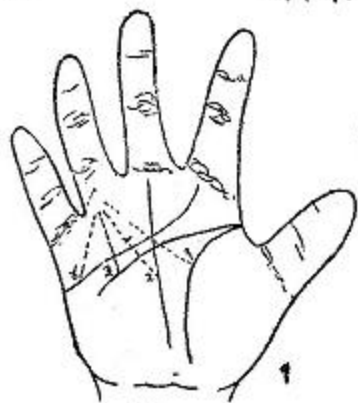
प्रमुख कारण है कि भाग्यरेखा में ही सूर्य रेखा का जन्म होने से सर्य रेखा, भाग्यरेखा के अवगुणों को दबा देती है और उसके गुणों को प्रकाश में लाकर प्राणियों को उन्नति पथ पर चलने की शक्ति प्रदान करती है। भाग्यरेखा के साथ यदि सूर्यरेखा के गुण भी मिल जाते हैं, तो सोने में सुहागे का काम होता है। स्वच्छ, स्पष्ट और गहरी सूर्य रेखा अमरकीर्ति का फल देने वाली होती है। ( चित्र नं० २७१ में बिन्दुदार रेखा २ )

३—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा, मस्तकरेखा से प्रारम्भ होती है। इसका फल होता है प्राणी की मस्तिष्कशक्ति प्रखर होती है। वह अपनी दिमागी शक्ति से ऐसे कार्य करता है, जो बड़े-बड़े बुद्धिमान पुरुष सोच भी नहीं पाते। अक्सर ऐसे भी लोग देखे गए हैं, जो शिक्षा के नाम पर एक अक्षर भी नहीं जानते, मगर वे बहुत ही कुशल इञ्जीनियर, व्यापार आदि क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान पाते हैं। वे अपने विचारों को अपने सहयोगियों के सम्मुख प्रकट करने की क्षमता रखते हैं। वे प्रतिभाशाली व्याख्यान दाता होते हैं और उनको यश प्राप्त होता है [ चित्र नं० २७१:में शाखा ३ ]

यदि प्राणी की भाग्यरेखा से निकली हुई शाखा बृहस्पति अर्थात् गुरू क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है तो ऐसा प्राणी नौकरी में उन्नति करता है। वह अच्छी पदवी पाता है। उसके अधिकारी उसके कार्य से प्रसन्न रहते हैं। और उसके कथन को मान लेते हैं। उसमें शासन की योग्यता होती है, उसकी सलाह लाभकारी होती है और इन्हीं कारणों से वह दिनों-दिन उन्नति करता चला जाता है। वह कुशल व्यापारी, सम्पादक या लेखक होकर सफलता को प्राप्त करता है। [भाग्यरेखा चित्र नं० २७२ में शाखा ६]

यदि भाग्यरेखा जीवन रेखा के आस-पास से ही प्रारम्भ हो और आगे चलकर जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई आगे बढ़े,तो यह निश्चय है कि ऐसे प्राणी के जीवन में किसी स्त्री का साथ रहेगा। वह प्राणी

यदि पुरुष है तो स्त्री की सलाहों पर चलने वाला होगा। यदि अविवाहित है तो उन्नति के मार्ग में उसकी प्रेमिका रोड़ा होगी। वह प्रेमिका के प्रेम में इतना डूब जायगा कि काम-आसक्त होकर वह अपनी उन्नति को स्वयम् ही रोक देगा। उसके जीवन का अधिक प्रभाव उसकी उन्नति पर पड़ेगा। [ भाग्यरेखा चित्र नं० २७२ में स्थल ८]

वैसे भाग्यरेखा का टूटा होना अशुभ है मगर टूटते समय यदि भाग्यरेखा गहरी है और जब वह पुन: प्रारम्भ हो तब भी गहरी और स्पष्ट हो तो, वह स्पष्ट करती है कि प्राणी के उन्नति मार्ग पर यकायक कोई बाधा उत्पन्न हो जायगी।

६—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्यरेखा मणिबन्ध रेखा या उनके पास से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर चलती है। ऐसी दशा में यह जानना आवश्यक है कि सूर्यरेखा भाग्यरेखा के समीप ही समानान्तर दशा में अग्रसर हो रही है। यदि सूर्यरेखा, भाग्यरेखा के समीप ही है और समान्तर दिशा में अग्रसर हो रही हैं, तो वह बहुत सुन्दर लक्षण है। ऐसी रेखा वाला प्राणी जिस कार्य में भी हाथ डालता है वह उसमें ही सफलता पाता है। उसके सहयोगी उससे प्रेम करते हैं, अधिकारी उसकी प्रशंसा करते हैं,समाज में उसका मान होता है। [चित्रनं० २७१ में बिन्दुदार रेखा ६ ]

७—कुछ प्राणियों के हाथ में सूर्य रेखा चन्द्र ग्रह के स्थान से प्रारम्भ होती है और अनामिका की ओर अग्रसर होती है। सूर्य और चन्द्र में पुराना बैर है। चन्द्र की प्रकृति सदा ही चंचल है, इस कारण इस प्रकार की रेखा वाले प्राणी की उन्नति में संदेह होता है। ऐसे प्राणी यद्यपि उन्नति करके नाम और धन कमाना चाहते हैं, मगर वे अपने विचारों की चंचलता के कारण स्थिर नहीं रह पाते। वे प्रयत्न भी करते हैं, मगर क्योंकि उनके सकल्प कमजोर होते हैं, उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। (चित्र नं: २७२ में बिन्दुदार रेखा ७ )

पाश्चात्य विद्वान का मत है:—

"Success line, which is often called the line of Apollo or Sun line, has no fixed starting point nor it is to be found on all hands; whenever, it exists, it will run to-wards the mount of Apollo. It may rise from various points of the hand and may terminate at the bottom of the third finger or may not even reach the same. Yet its presence on the hand is bound to influence the success of the man. Its qualifications are to indicate capability, accomplishment of birtuous status in life and society etc, Without this line, the prospects of rising to fame however clever & talented are more of less remote."

अर्थात् 'उन्नत रेखा जिसे अक्सर अपोलो रेखा या सूर्य रेखा भी कहते हैं, हाथ के किसी एक निश्चित स्थान से प्रारम्भ नहीं होती है और न यह प्रत्येक हाथ में ही पाई जाती है। मगर जब भी वह हाथ में मौजूद होती है यह सदैव अनामिका उङ्गली के नीचे स्थिर होकर सूर्य ग्रह के स्थान की ओर अग्रसर होती है। यह हाथ के विभिन्न स्थानों से प्रारम्भ होती है, और तीसरी उङ्गली के नीचे पहुँचने के पहले ही समाप्त हो जाती है। तो भी उसका हाथ पर प्रगट रहना जीवन पर प्रभाव अवश्य डालता है। आदमी की कीर्ति को बढ़ाता है। इसके गुण हैं—कर्मशीलता, गुणों का प्रगट होना और जीवन तथा समाज में मान पाना। इस रेखा के बिना प्राणी चाहे कितना भी चतुर, कारीगर या बुद्धिमान क्यों न हो, कीर्ति कदापि प्राप्त नहीं कर सकता।'

सीधी, सुन्दर, स्पष्ट, गहरी और स्वच्छ सूर्यरेखा यदि भाग्य-रेखा के समानान्तर ही मणिबन्ध रेखा से प्रारम्भ हो तो वह सर्वोत्तम होती है। जिस प्राणी के हाथ में यह रेखा पाई जाती है उसे सकल

सिद्धियां प्राप्त होती हैं। उसे यश प्राप्त होता है। इसके विपरीत,हल्की, अस्पष्ट, अस्वच्छ सूर्यरेखा कीर्ति के स्थान पर अपकीर्ति तो नहीं लाती परन्तु प्राणी की उन्नति में बाधक अवश्य होती है। (चित्र नं० २७।२)

अक्सर देखा गया है कि सूर्य रेखा के साथ ही अन्य चुट-पुट रेखाएं उनके साथ-साथ जाकर अन्त में विलीन हो जाती हैं। ऐसी रेखाओं का सूर्य रेखा पर प्रभाव पड़ता है। जिस ग्रह के क्षेत्र से वे रेखाएं प्रारम्भ होती हैं, वही प्रभाव वे सूर्य रेखा पर डालती हैं और वह ग्रह उसकी उन्नति में सहायक होता है। यदि उनमें से कुछ रेखाएँ सूर्यरेखा को स्थान २ पर काटने लगें तो प्राणी की उन्नति उन रेखाओं के प्रारम्भ होने वाले ग्रहों के प्रभाव से रुक जाती है। उन्नति में विभिन्न बाधाएँ उत्पन्न होने लगती हैं। ऐसी अवस्था में ऐसी रेखा वाले प्राणी को उचित है कि वह अपना संयम् स्थिर रक्खे और सच्ची लगन के साथ अपने कार्य में रत हो। सफलता उसके चरणों में होगी। ( चित्र नं० २७।३ )

यह भी देखा गया है कि सूर्य रेखा समाप्ति के स्थान पर जाकर सर्प जिह्वाकार हो जाती है। ऐसी रेखा का फल यह होता है कि प्राणी का हृदय चञ्चल हो जाता है । वह अपने प्रयासों को सफलतापूर्वक संचालित नहीं कर पाता। उसके सामने लोभ-प्रलोभन आ जाते हैं और उसकी एकाग्र साधना कई भागों में विभाजित हो जाती है। लगन के विभाजन होने के कारण वह अपने उन्नति-पथ पर पूर्ण निश्चय के साथ अग्रसर नहीं हो पाता परिणाम-स्वरूप यदि अपकीर्ति नहीं तो कीर्ति भी नहीं पाता। [चित्र नं० २७।४ में रेखा १ ]

जब सूर्यरेखा जीवनरेखा से प्रारम्भ होती है तो उसका अभिप्राय है कि प्राणी के जीवन से ही सम्बन्धित किसी आधार को पाकर प्राणी उन्नति कर सकता है। ऐसी दशा में सम्भव है कि किसी निर्धन का धनवान से विवाह हो जाए । उसका कोई धनवान सम्बन्ध मरते समय उसे धन दे जाए, आदि। इस प्रकार धन प्राप्त कर लेने के

बाद ही वह उन्नति के पथ पर चल सकता है। यही इस रेखा का गुण है। चित्र नं० २७।४ में बिन्दुदार रेखा २)

जब सूर्य रेखा में से विभिन्न शाखाएँ निकलती हों और वे अन्य ग्रहों के क्षेत्र में जाकर विलीन होती हैं, तो ऐसा प्राणी यश और कीर्ति पाता है। वह राजनैतिक नेता, धर्मोपदेशक, व्याख्यानदाता आदि होकर सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेने वाला होता है। सार्वजनिक जीवन में उसे सफलता प्राप्त होती है। चित्र नं. २७।३ में स्थल १)

जब सूर्य रेखा से निकलने वाली शाखा गुरु के क्षेत्र में जाकर विलीन होती है, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी शासक वर्ग में स्थान पाता है। वह अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करके अपने शासित जनों का कृपापात्र और प्रेमपात्र बनकर सम्मान और यश को पाता है। उसकी प्रजा उसे प्रेम करती है और वह शासन के कार्यों में उच्च अधिकार पाकर उन्नति करता है। (चित्र नं. ३ में स्थल २)

जब सूर्य रेखा से प्रारम्भ होने वाली शाखा बुध देव के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है, तो ऐसे प्राणी की उन्नति कलात्मक कार्यों में होती है। वह अच्छा कलाकार, चित्रकार, लेखक, सङ्गीतज्ञ, नाट्यकार, अभिनेता आदि होकर अपने कार्य में दक्षता प्राप्त करता है। लोग उसकी कला से प्रभावित होते हैं और वह अपनी कला के कारण यश और कीर्ति पाता है। (चित्र नं० २७।३)

जब सूर्य रेखा से प्रारम्भ होने वाली शाखा शनि के क्षेत्र में जाकर विलीन होती है, तब भाग्य उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। मगर शर्त यह है कि ऐसी रेखा के साथ ही प्राणी के हाथ में उच्च भाग्यरेखा भी पड़ी हो। शनि, सूर्य का पुत्र है, अत: पिता और पुत्र दोनों सहयोग देकर प्राणी को सुखी, और समृद्धिशाली बनाने में पूर्ण सहायता देते हैं तथा उसकी कीर्तों और यश को फैलाते हैं। (चित्र नं० २७ ३ में स्थल ४)

यदि इस रेखा के साथ अन्य बहुत-सी चुटपुट रेखाएँ हथेली के

मध्य भाग से प्रारम्भ होकर सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती हैं, तो उनका प्रभाव भी अच्छा होता है। यह तमाम सूर्य रेखा की सहायता करती हैं। प्राणी की उन्नति तथा कीर्ति में सहायक होती हैं। इन सब को सूर्यरेखा का सहायक माना जाता है।

यदि सूर्य रेखा किसी स्थान पर टूट जाती है, तो वह स्थान प्राणी के अपयश और अपकीर्ति का द्योतक होता है। सूर्य रेखा का टूटी होना श्रेयकर नहीं होता। इसके टूटने से उन्नति रुक जाती है, बदनामी होती है और प्राणी की उन्नति की दिशा बदल जाती है। वह अवनति के पथ पर चलने लगता है। इन तमाम कारणों से सूर्य रेखा का टूट जाना अच्छा लक्षण नहीं समझा जाता है। (चित्र नं. २७४ में रेखा २)

यदि किसी प्राणी के हाथ में सय के ऊपर ही द्वीप का चिन्ह पड़ा है, तो उसका फल विशेष नहीं समझा जाता। द्वीप का होना वैसे तो बुरा लक्षण है, मगर उसका असर सूर्यरेखा पर विशेष नहीं पड़ता। जो भी असर सूर्यरेखा पर पड़ता है वह न के बराबर होता है। द्वीप-युक्त रेखा की तुलना में टूटी हुई सूर्यरेखा अधिक बुरी होती है। (चित्र नं. २७५ में रेखा नं. १)

जब किसी प्राणी के हाथ में सूर्यरेखा मङ्गल के स्थान से प्रारंभ होकर ऊपर की ओर बढ़ते समय धुंधली हो जाए और सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन होने के पहले ही गायब हो जाए, तो ऐसी दशा में विविध प्रकार की बाधाएँ, आपत्तियां, निराशाएँ, आदि आ जाती हैं। उन्नति का भविष्य अन्धकारमय होता है। [चित्र नं० ५ रेखा नं० २]

यदि सूर्य रेखा के ऊपर वर्ग का चिन्ह पाया जाय तो वह बहुत शुभ माना जाता है। वर्ग का चिन्ह सूर्यरेखा के तमाम अशुभ लक्षणों के प्रभाव को समाप्त कर देता है। वह अपने लक्षणों के प्रभाव से प्राणी के जीवन में नवीन शक्ति, उत्साह और कर्मण्यता को जन्म देकर उन्नति के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। उसके यश, कीर्ति

को बढ़ाने में सहायक होता है। [चित्र नं. २७५ में रेखा नं. ३]

यदि दस्तकार के हाथ में सूर्य रेखा हो तो उसका प्रभाव होता कि उसकी कीर्ति उसके जीवनकाल में नहीं फैलेगी। उसकी कीर्ति उसकी मृत्यु के बाद फैलती है। वैसे दस्तकार और व्यापारी के हाथ में सूर्यरेखा पाई ही नहीं जाती। इसी कारण इन लोगों को जीवन-यापन के लिए कठिन परिश्रम और निरन्तर साधना करनी पड़ती है।कभीर उच्चकोटि के दस्तकार को भी अपने जीवन निर्वाहके लिए धन जुटाने में अथक् परिश्रम करना पड़ता है। मगर सूर्यरेखा वाले प्राणी प्रतिष्ठा और गौरव अवश्य प्राप्त करते हैं और वह उनको जीवन के अन्तिम दिनों में या मरने के पश्चात् प्राप्त होता है।

यदि सूर्यरेखा स्वच्छ, स्पष्ट और गहरी है और उसके साथ ही चन्द्र नक्षत्र का क्षेत्र तथा शुक्र नक्षत्र का क्षेत्र उभरा हुआ है तो ऐसा प्राणी साहित्य में विशेष रुचि रखता है और साहित्यक क्षेत्र में अपनी कीर्ति को बढ़ाता है। उसकी गिनती साहित्यकारों तथा आलोचकों में की जाती है।

वैसे तो नक्षत्र अर्थात् तारा अन्य दशाओं में अच्छा लक्षण नहीं माना जाता परन्तु सूर्यरेखा पर यदि नक्षत्र का चिन्ह पड़ा हो तो वह सौभाग्य में वृद्धि करके यश और कीर्ति को बढ़ाने वाला होता है। इसका सूर्यरेखा पर अशुभ लक्षण माना जाता है। (चित्र नं० २७५ में रेखा नं ३ पर स्थित तारा )

हृदयरेखा से प्रारम्भ होने वाली सूर्यरेखा यह प्रमाणित करती है कि ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने स्वच्छ और सरल हृदयता के कारण अपने साथियों और सहयोगियों की श्रद्धा और आदर का पात्र होता है। वह प्रकृति ही से सरल हृदय, उदार, कर्मठ, निष्कपट, प्रिय होता है। उसके साथी उसका सम्मान करते हैं और उसको प्रेम करते हैं। उसकी उन्नति उसके उपर्युक्त गुणों के कारण होती है।

पाश्चात्य विद्वानों का कहना है—"The length of this

line determines the extent and duration of its influence. The longer the line, the more effect it will have; while shorter, less will be its importance. This line while starting from the wrist, running through the hand and reaching the mount will indicate the possesion of great talent and fame. If the line starts low in the hand, and runs only for short distance, the creature having it are found possessing talents but they will not be productive or of great results."

अर्थात्—'सूर्यरेखा की लम्बाई से प्राणी की उन्नति और कीर्ति के प्रभाव की अवधि ज्ञात होती है। यदि रेखा लम्बी है तो वह प्राणी के जीवन पर अधिक समय तक उन्नत प्रभाव डालेगी और यदि यह रेखा छोटी है तो इसका प्रभाव थोड़ी देर तक रहेगा। मणिबन्ध रेखा के समीप से आरम्भ होने वाली, मध्य से गुजरती हुई सूर्य के क्षेत्र में जाकर विलीन होने वाली सूर्यरेखा का प्रभाव अति शुभ होता है। यदि रेखा आगे से निकलती है और छोटी होती है तो वह प्राणी की उन्नति पर कम प्रभाव डालती है।

[चित्र नं० २७६ ]

"If the line rises higher in the hand and covers the space between Head and Heart lines, thus forming a Quadrangle, the special talents of the subject will operate during the period; it remains a part of the set. If the line runs on to the mount, he will be well endowed with Apollonian character and in which-ever work he is brilliant will acquire reputation."

"यदि यह रेखा हाथ के उच्च स्थान में होकर हृदयरेखा, मस्तकरेखा से मिलकर त्रिभुज बनाती है, तो ऐसी रेखा वाला प्राणी अपने गुणों का सदुपयोग अपनी उन्नति के कार्यों में करके यश और कीर्ति को पाता है। उसकी उन्नति का समय लगभग वही होता है, जब कि सूर्यरेखा, हृदय और मस्तकरेखा के साथ सहयोग करती हुई देखी जाती है। यदि रेखा उच्च होकर ग्रह क्षेत्र तक पहुँचती है तो ऐसी रेखा वाला प्राणी सूर्य के सर्वगुणों से आच्छादित होकर संसार में महान् उन्नति करके यश और कीर्ति को पाता है। (चित्र नं. २७।१ पर त्रिभुज ]

सूर्य रेखा उन्नति की दशा में चलने की प्रेरणा देने वाली और कीर्ति देने वाली होती है।

---

# आठवाँ अध्याय

## विवाह-रेखा

संसार में हर प्राणी का जोड़ा होता है। प्रकृति ने नियंत्रण रखा है कि प्रत्येक नर के साथ एक मादा हो, ताकि संसार में उत्पत्ति हो सके और प्राणी अपने जीवन-यापन में संलग्न हो सके। इसी कारण हर प्राणी अपनी युवा अवस्था पर पहुँच कर सहयोग की कामना करता है। विवाहरेखा प्राणी को यह बताती है कि उसका सहयोगी कैसा होगा ? अर्थात उसके जीवन में आने पर, उसके अपने जीव पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

वैसे तो विवाहरेखा की गणना छोटी रेखाओं में की जाती है; मगर उसका महत्व कम होता है। क्योंकि प्राणी कामदेव के वशीभूत होता है, और उसके काम की शान्ति देने वाला उसका सहयोगी प्राणी उसके जीवन पर कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य डालता है। इसी कारण इस रेखा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

विवाहरेखा सबसे कम लम्बी होती है। यह हथेली की दूसरी ओर से बुध की उङ्गली के नीचे और हृदयरेखा से ऊपर आती हुई गुरु के क्षेत्र में समाप्त हो जाती है। हाथ में कई विवाह-रेखाएं इसी स्थान पर थोड़े-थोड़े अन्तर से भी हो सकती हैं। [ चित्र नं० २८ में हृदयरेखा के ऊपर वाली छोटी-छोटी रेखाएँ ]

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि–"These lines of marriage may be called the lines of affection, because it has been noticed in many a hands that a beautiful line occurs in hand and yet the being dies unmarried. The effect of line is not unproductive yet, though

१
२
३
४
५
६
७
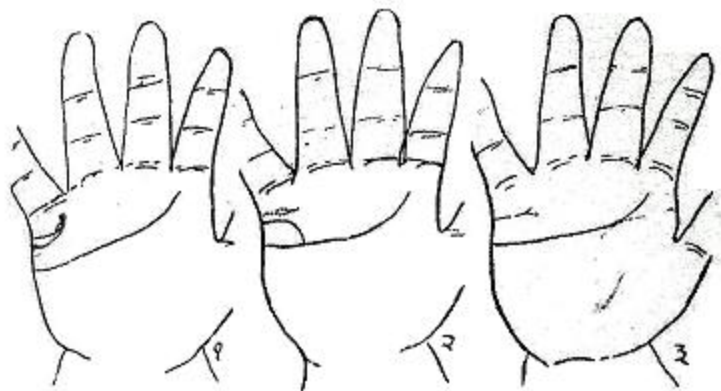
the creature remains unmarried in his life; but he must have fallen in love and had been affectionate to his lover till last. Therefore, it is not necessary that the mere possession of a good line means suitable marriage, it also means affection & love."

अर्थात् 'विवाहरेखा को प्रेमरेखा भी कहा जाता है, क्योंकि बहुत से हाथों में यह देखा गया है कि हाथ में सुन्दर विवाहरेखा के होते हुए भी प्राणी अविवाहित ही मर जाता है। यद्यपि इस रेखा के होते हुए भी प्राणी का विवाह नहीं हुआ, मगर उस पर प्रभाव कम नहीं होता। ऐसा प्राणी अविवाहित चाहे रहा हो, मगर वह किसी से जीवन भर प्रेम करता रहा होगा और उसने वह प्रेम मृत्यु पर्यन्त तक निभाया होगा। इस कारण यह आवश्यक नहीं कि अच्छी विवाहरेखा, विवाह की ओर ही इङ्गित करती है, वरन् प्राणी के प्रेम को भी स्पष्ट करती है।'

वैसे भी समाज का स्तर बदल चुका है। विवाह का अर्थ आर्यों द्वारा लगाये गए अर्थ से आगे बढ़ गया है। दो प्राणियों के प्रणयसूत्र को ही विवाह नहीं कहा जाता। दो मुहब्बत भरे दिलों के मिलन और उनकी प्रेमलीला को भी विवाह से कम महत्त्व नहीं दिया जाता। गृहस्थ-धर्म के पालन हेतु विवाह नहीं होते, वरन् आजकल के विवाह प्रेम को कायम रखने, वासनापूर्ति, धन पाने, उच्च नौकरी, आदि के लिए होते हैं। विभिन्न मनोवृत्तियों के कारण ही विवाहरेखा प्रत्येक हाथ में मनोवृत्ति के अनुसार ही पाई जाती है।

विवाहरेखा अपने उदगम् स्थान से निकल कर कनिष्ठा उङ्गली के नीचे बुध के ग्रह में जाकर विलीन हो जाती है। यदि यह रेखा स्वच्छ स्पष्ट और गहरी है तो प्राणी का विवाहित जीवन सुख, शांति से पूर्ण होता है। दम्पत्ति का आपस में प्रेम होता है, और वे कोई ऐसा कार्य

नहीं करते जिसके लिए उन्हें दुःख हो या उसके प्रेमी अर्थात् सहधर्मी को दुःख पहुँचे। (चित्र नं.२८।१ में सबसे ऊपर वाली गहरी विवाह-रेखा को देखो )

यदि विवाह रेखा विलीन होने के स्थान पर पहुँचते समय ऊपर की ओर चलने लगे तो उसका फल होता है कि प्राणी अपने प्रेम में अकेला ही रह जाता है। उसका विवाह नहीं होता। सारी आयु उसे अविवाहित ही रहना पड़ता है। विवाह की योजनाएँ होती हैं, रिश्ते आते हैं, मगर उनमें बाधाएँ आ जाती हैं और प्राणी आजन्म कुवांरा ही रहता है।

यदि विवाहरेखा विलीन होने के स्थान पर पहुँचने के पहले गोलाकार होकर नीचे की ओर मुड़ जाए और हृदयरेखा को आकर स्पर्श करके उसमें विलीन हो जाए, तो दम्पत्ति में से एक की मृत्यु हो जाती है। उनका दाम्पत्य सुख अधिक दिनों तक नहीं चल पाता। वैसे तो संसार की मर्यादा के अनुसार हर प्राणी की मृत्यु होती है, मगर इस रेखा के प्रभाव से जीवन का अपूर्ण सुख उठाकर ही प्राणी काल-कलवित हो जाता है। यदि किसी प्राणी के हाथ की विवाहरेखा पर द्वीप हो तो उसका प्रभाव भी उसके जीवन पर उपर्युक्त ही होता है। [ चित्र नं० २८।२ ]

जब विवाहरेखा सर्प जिह्वाकार होती है तो उसका अर्थ दम्पत्ति के विवाहित जीवन में कटुताओं का प्रारम्भ होता है। वे एक दूसरे से इतने खिन्न हो जाते हैं कि अलग रहना पसन्द करते हैं। वे अपने सम्बन्ध विच्छेद कर लेते हैं। उनमें से एक विवाहित जीवन से ऊबकर आत्म-हत्या तक कर सकता है, नदी में डूब सकता है, आग लगा कर प्राण गँवा सकता है, विष-वमन कर सकता है, मगर यह सब वह तब ही करता है जब उस प्राणी की हृदयरेखा और मस्तकरेखा एक दूसरे को छू रही हों और विवाहरेखा की सर्प-जिह्वाकार शाखा का झुकाव [ हृदयरेखा की ओर हो। चित्र नं० २८।३ ]

यदि किसी प्राणी के हाथ की विवाहरेखा सर्प-जिह्वाकार है और एक चुट-पुट रेखा मस्तकरेखा को काटती हुई विवाहरेखा को स्पर्श करती है, तो ऐसी रेखा वाले प्राणी का जीवन अशान्ति में बीतता है। दम्पत्ति में नित्य नए झगड़े होंगे और गृहस्थी नर्क की तरह यातनापूर्ण प्रतीत होगी। इस प्रकार की रेखा वाले दम्पति की आपस में कभी नहीं बन सकती। जीवन कलहपूर्ण बीतता है। ( चित्र नं० ४ )

यदि सर्प-जिह्वाकार विवाहरेखा नीचे की ओर जाकर या उसके स्पर्श में आने वाली कोई चुट-पुट रेखा ग्रह के क्षेत्र में जाकर विलीन हो जाती है, तो ऐसी रेखा वाले प्राणी का अनेकों जगह विवाह संबन्ध उठता है, पर उसका विवाह कभी नहीं हो पाता। यदि किसी तरह से विवाह सम्बन्ध हो भी जाए तो वह विच्छेद हो जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों का मत है—"A break in the line of affection indicates the sudden death of the partner. When the line of affection after going straight and with out breaking, takes a turn and thus touches the heart line, clearly indicates a miserable life of the couple and ends into widowhood. Widowhood is evident when the line of Affection terminates in a star on the Mount of Mercury".

अर्थात् 'विवाहरेखा यदि किसी स्थान पर टूट जाए तो दम्पत्ति में से एक की मृत्यु हो जाती है। जब विवाह रेखा सीधी और बिना टूटे हुए मुड़ कर हृदयरेखा को स्पर्श करे तो यह प्रत्यक्ष है कि दम्पत्ति का जीवन क्लेश पूर्ण बीतेगा और उसका अन्त वैधव्य में होगा। वैधव्य अनिवार्य अर्थात् प्रत्यक्ष होता है जब विवाहरेखा बुध के क्षेत्र में जाकर नक्षत्र अर्थात् तारा पर जाकर समाप्त होती है। ( चित्र नं० २८।५ )

विवाहरेखा में निकलकर यदि कोई अन्य रेखा, सूर्यरेखा से

जाकर मिले और वह सुन्दर तथा स्पष्ट हो तो ऐसी दशा में विवाह सम्बन्ध भाग्य को बढ़ाने वाला होता है। इस प्रकार की रेखा वाला प्राणी विवाह में धन, सम्मान, जायदाद और यश भी पाता है। ( चित्र नं० २८।६ )

मगर, जब विवाहरेखा स्वयं सूर्यरेखा को काटकर आगे बढ़ जाए तो ऐसी दशा में प्राणी विवाह के पश्चात् अपने धन, सम्मान, परिवार, यश, और कीर्ति का मान देखता है। अक्सर यह कहते सुना होगा कि ऐसी लक्ष्मी आई जो घर को चमका दिया और इसके विपरीत यह भी सुना जाता है कि ऐसी चाण्डालिनी आई कि घर का विध्वंस ही कर डाला। धन गया तो गया मगर आदमी भी गए। चित्र नं० २८।६ )

इस विषय में पाश्चात्य विद्वानों का कहना है—

"Line of Affection, which get forked at the end, if turns into an island, in that case the matrimony becomes a cause of defamation, illreputation and thus ends into divorce or seperation. If the forked line of Affection ends into × just above the line of Fate, then it clearly indicates a ill-fated life which ends in gallows."

अर्थात् 'यदि विवाह रेखा सर्प-जिह्वाकार होते हुए द्वीप बनाती है तो ऐसी दशा में विवाह सम्बन्ध अपमान, अपयश का कारण होता है और उसका अन्त तलाक अथवा विच्छेद में होता है। यदि सर्प-जिह्वाकार विवाहरेखा गुणक का चिह्न बनाती हुई भाग्यरेखा पर मिलती है तो यह निश्चय समझना चाहिए कि यह चिह्न बदकिस्मत विवाह-सम्बन्ध का है और इसका अन्त फांसी होता है। ( चित्र नं० २८।७ )

विवाहरेखा के बारे में निश्चयपूर्वक कुछ भी लाभ और हानि बताने से पहले उत्तम यही है कि हाथ की अच्छी तरह बनावट तथा उसमें पड़ने वाली अन्य रेखाओं के गुणों और अवगुणों को देखा जाए। विवाहरेखा का प्रभाव अपना तो कुछ नहीं मगर इसके साथ अन्य रेखाओं के मिल जाने के कारण यह भयानक फल देने वाली हो जाती है। ऐसी दशा में हाथ की समस्त रेखाओं को अवश्य ध्यान से देखना चाहिए।

चित्र नं० २९

[हृदयरेखा और विवाहरेखा से मिलने वाले प्रभाव को देखो]

लोगों को 'विवाह किस अवस्था में होगा' जानने की हमेशा उत्कंठा होती है। इसका मूल कारण यह है कि विवाह-योग्य प्राणियों की अवस्था युवा होती है, और युवावस्था में इस तरह के भाव मन में आ जाना साधारण सी बात है। वैसे तो कई ज्योतिषी गणना करके

विवाह की आयु बताते हैं, मगर गणना सदैव ही सत्य हो, ऐसा नहीं सोचा जा सकता। इस प्रश्न का सही उत्तर देने का कोई प्रकाट्य प्रमाण तो नहीं दिया जा सकता वरन् इतना-सा इसारा ही बताए देते हैं, कि विवाहरेखा हृदयरेखा के जितनी पास होगी उतनी जल्दी विवाह होगा।

हाथ देखते-देखते ज्योतिषियों को इतना मुहावरा हो जाता है कि वे इस दूरी से अवस्था का अनुमान लगा लेते हैं और उनका अनुमान साधारणतया सत्य बैठता है। वैसे तो 'सप्त वर्षीय' नियम भी

चित्र नं० २०

( विवाह-रेखाओं की स्थिति तथा उनके सम्पर्क में आने वाली रेखाओं के कारण पैदा होने वाली स्थितियों के कारण जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। उनके जानने को ऊपर वाले चित्र का पूर्ण ज्ञान बहुत ही जरूरी है।

आयु की गणना करने में काम आता है, मगर इतना समय लगाना और गणना करना सहज नहीं। इसलिए दूरी का अनुमान करके ही विवाह की आयु बताई जाती है।

पाश्चात्य मत वाले विद्वानों का कथन है कि—

There are no hard and fast rules to calculate the marriagable age. As a rule one must judge it through the distance between the line of Affection and Heart line. The only way to acquire correct judgement is one's own power of judgement."

अर्थात् 'विवाह किस अवस्था में होगा ? यह बताने के लिए कोई निश्चित् नियम नहीं है। वैसे नियम के तौर पर विवाहरेखा और हृदय-रेखा के अन्तर द्वारा विवाह-आयु निश्चित् करनी चाहिए। इस प्रकार निश्चय तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को अपने अनुभव की शक्ति का ही सहारा लेना पड़ता है।'

———

# नवाँ अध्याय

## सन्तान रेखाएँ

सन्तानरेखा का महत्व बहुत कम है, मगर प्राणी जीवन की समस्त समस्याओं के विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। इस कारण वह संतान के विषय में भी जानने की उत्कण्ठा रखता है। इन रेखाओं की अजीब दशा है। आमतौर से यह रेखाएं पुरुषों के हाथ में नहीं पाई जातीं, वरन् इनको स्त्रियों के हाथों में देखा जाता है। मगर यह बात नियम के तौर पर नहीं कही जा सकती कि पुरुषों के सन्तान रेखाएँ होती ही नहीं।

संतान रेखाऐं, वह छोटी-छोटी रेखाएं होती हैं जो या तो विवाहरेखा से प्रारम्भ होकर ऊपर की ओर कनिष्ठा उङ्गली के मूल की तरफ जाती हैं या ये रेखाएं मनुष्य की हृदयरेखा पर से निकल कर ऊपर की ओर जाती हैं। ( चित्र नं० ३१।१ देखें )

सुन्दर, स्वच्छ और सीधी रेखाएं चाहे वह विवाहरेखा पर हों या हृदयरेखा पर, पुत्र होने की सूचक होती हैं। कुछ कम गहरी, मुड़ी हुई, रेखाएं कन्याओं की संख्यासूचक होती हैं। जैसे किसी प्राणी के हाथ में विवाहरेखा या हृदयरेखा पर कुल मिलाकर सात रेखाएं हैं। उनमें से चार तो सीधी, सुन्दर और गहरी हैं, वे सिद्ध करती हैं कि प्राणी को चार पुत्रों का योग है। तीन रेखाएं उथली, झुकी हुई हैं, वे यह सूचना देती हैं कि प्राणी के तीन कन्याएं जन्म लेंगी।

( चित्र नं० ३१।२ )

साधारणतया देखा गया है कि यह रेखाएं समान लम्बी नहीं होतीं वरन् छोटी-बड़ी होती हैं। लम्बी और साफ रेखाएं व्यक्त करती हैं कि संतान माता-पिता को सुख देने वाली होगी। जो रेखाएं छोटी

और दोषयुक्त होती हैं, वे सिद्ध करती हैं कि संतान माता-पिता को कम सुख देगी वरन् दुःखी करती रहेगी।
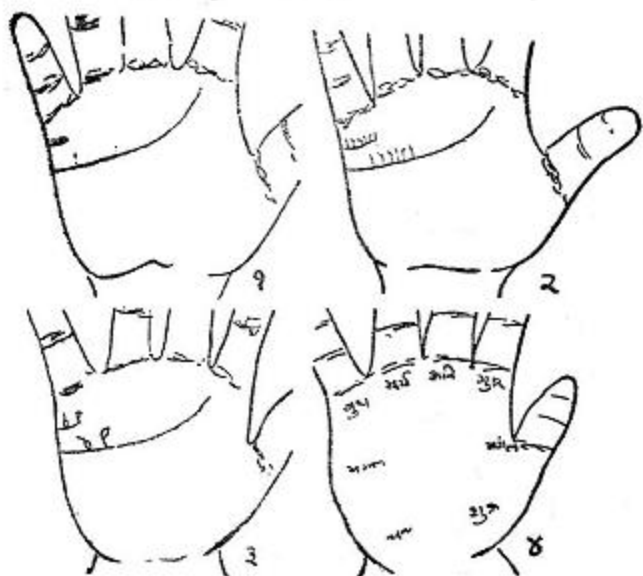
चित्र नं० ३१

प्रायः बहुत से हाथों में देखा गया है कि हृदयरेखा से उठने वाली सन्तान रेखाएँ, विवाहरेखा को जाकर छूती हैं। ऐसी दशा में रेखा वाले प्राणियों के हृदय में संतान के प्रति विशेष प्रेम पाया जाता है।

ये संतान रेखाएँ बुध नक्षत्र के ग्रह पर साफ दिखाई दें तो प्राणी के शीघ्र ही संतान होती है। और यदि वे अंदर की ओर दिखाई दें तो जीवन के मध्यकाल, अर्थात् ३० वर्ष आयु के उपरान्त होगी।

यदि ये रेखाएँ स्वच्छ, सुन्दर, गहरी और स्पष्ट होती हैं तो संतान निरोग और सुख देने वाली होती है। ऐसी सन्तानें माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों का आदर करेंगी और घर में सुख-चैन की वर्षा

करेंगी। यदि ये रेखाएँ टेढ़ी या लहरदार, अस्वच्छ और अस्पष्ट हों, तो वे रोगी होंगी और माता-पिता तथा अन्य सगे-सम्बन्धियों के साथ बुरा वर्ताव करेंगी।

यदि किसी सन्तानरेखा के प्रारम्भ में द्वीप पड़ा है, मगर वह आगे जाकर समाप्त हो गई तथा रेखा अपनी पूर्व स्थिति में आकर पुनः स्वच्छ होकर आगे जाती है, तो उसका अर्थ है कि सन्तान पहले रोगी हो सकती है मगर आगे जाकर वह निरोगी और माता-पिता को सुख देने वाली होगी। चित्र नं० ३१।३।

यदि किसी संतानरेखा के अन्त में द्वीप का चिह्न पड़ा है। तो उसका अर्थ है कि ऐसी सन्तान माता-पिता को रोगावस्था में दुःखी करेगी और अन्त में मर जायेगी। संतान की आयु का भी दुःख माता-पिता को सहन करना होगा। चित्र नं० ३१।३

सन्तान-रेखाओं के विषय में कोई भी बात निश्चयपूर्व नहीं कही जा सकती। इसका उत्तर देते खूब सोच-विचार कर, और रेखाओं आदि के दोष, गुणों को ध्यान में रखने के बाद तथा अपने अनुभव को भी काम में लाते हुए देना चाहिये।

पाश्चात्य विद्वानों का मत है—

"It is very difficult to judge the number of children through the language of lines only. The lines indicating children are so insignificant and tidtous that it takes lot of labour and use af one's common sense to arrive at certain result. Generally, it has been noticed that those lines very seldom appear in masculine hands. Females potsessthese

lines and they also eaqerly wish to know about them."

अर्थात् "केवल रेखाओं के द्वारा ही यह बताना कठिन है कि प्राणी के कितनी सन्तानें होंगी। यह रेखाएं इतनी जटिल और सूक्ष्म होती हैं कि इनको देखना, पढ़ना तथा अपनी योग्यता से किसी विशेष परिणाम तक पहुंचना आसान नहीं होता। आमतौर से ये रेखाएं पुरुषों के हाथ में कम पाई जाती हैं। ये रेखाएं स्त्रियों के हाथ में होती हैं, और वह इनके विषय में जानने की उत्कण्ठा रखती हैं।"

सन्तान रेखाओं के विषय में अपनी ही बुद्धि काम में लेनी चाहिए।

# दसवाँ अध्याय

## मणिबन्ध रेखाएँ

प्राय: पुरुषों के हाथ में तीन और स्त्रियों के हाथ में दो रेखाएँ होती हैं, जो हथेली के नीचे कलाई को घेरती हैं। उन्हें मणिबन्ध रेखाएँ कहते हैं। पुरुषों के हाथ की तीन रेखाओं को धनरेखा, व्यापार रेखा और धर्मरेखा कहते हैं। स्त्रियों की सौभाग्यरेखा और सन्तान-सुख रेखा कहलाती हैं।

जिस पुरुष के हाथ में तीन रेखाएं होती हैं वह उत्तम है। यदि दो रेखा हैं तो मध्यम है, और यदि एक ही रेखा है तो निकृष्ट है। यदि स्त्री के हाथ में दो रेखाएं हैं तो पूर्ण सौभाग्य भोगती है और सन्तान का सुख प्राप्त करती है। जिसके हाथ में केवल एक ही रेखा होती है वह सौभाग्य सुख को प्राप्त करती है परन्तु सन्तान-सुख उसके प्रारब्ध में नहीं होता है। ( चित्र नं० ३२।१ )

जिस प्राणी की मणिबन्ध रेखाएं मजबूत, चिकनी, और स्पष्ट होती हैं, वे शुभ फल देने वाली होती हैं। जिनकी मणिबन्ध रेखाएं अस्पष्ट हों और स्थान २ पर कटी हुई हों वे दरिद्रता की सूचक होती हैं। ( चित्र नं० ३२।२ )

स्वच्छ और पूर्ण रेखाएं तन्दुरुस्त, शांत और भाग्यवान् होने पर सूचक होती हैं।

जंजीरदार मणिबन्ध, गरीबी और लड़खड़ाता हुआ जीवन व्यतीत करने की सूचक हैं। ( चित्र नं० ३२।२ रेखा नं० ३ )

मणिबन्ध के ऊपर त्रिकोण हो या कोण हो तो वृद्धावस्था में सम्मान के साथ धन प्राप्त होता है। ( चित्र नं० ३२।३ में रेखा नं० २)

यदि तारा का चिह्न है तो अजनबी मनुष्य से धन प्राप्त की सूचना होती है। ( चित्र नं० ३२।३ में रेखा पर तारा।

यदि एक रेखा यहीं से निकलकर गुरु स्थान तक जाए तो विशेष उम्र वाले के साथ विवाह होने की सूचक है। यदि सूर्य स्थान को जाए तो किसी धनी पुरुष की विशेष कृपा होने का लक्षण है। यदि एक रेखा बुध के स्थान को जाए तो एकाएक धन प्राप्त करने की सूचना है।
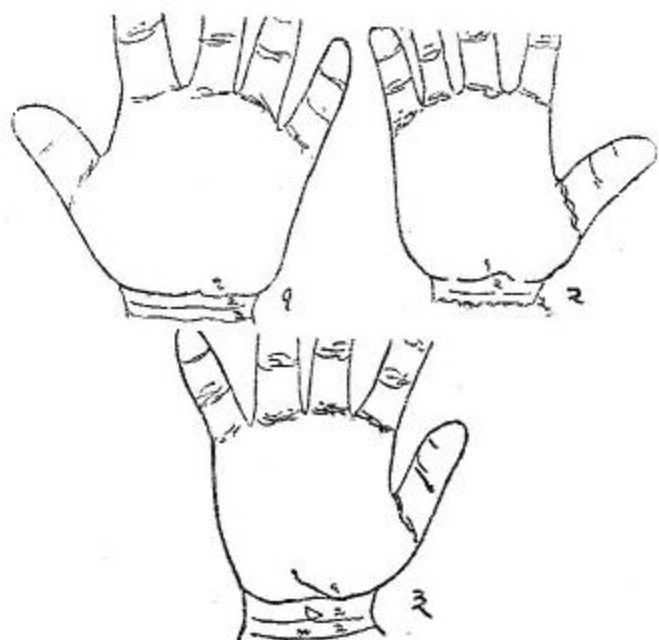
चित्र नं० ३२

मणिबन्ध से आयु का भी ज्ञान होता है। हर रेखा ३० वर्ष की आयु की सूचना है। यदि तीनों रेखा पूर्ण रूप से स्वच्छ हों तो ६० वर्ष के लगभग आयु होने का लक्षण है। यदि चार मणिबन्ध रेखा हों

तो २० वर्ष की आयु होती है। मध्य में कोई खण्डित हो तो आधी या चौथाई आदि हो तो अनुमान से अवस्था जानी जाती है। जैसे आधी से १५, डेढ़ से ४५ वर्ष इत्यादि।

मणिबन्ध रेखा से यदि रेखायें निकलकर चंद्र स्थान को जाएं तो समुद्र यात्रा होने की सूचना है। यदि वे रेखाएं जीवनरेखा में समाप्त हों तो यात्रा में मौत होती है।

चित्र नं० ३३

मणिबन्ध रेखाओं से निकलने वाली सर्प जिह्वाकार रेखाओं को देखो।

यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा ऊपर को उठकर वृत्ताकार हो तो आन्तरिक कमजोरी का लक्षण है। स्त्री के हाथ में हो तो गर्भाधान में बाधा और समय से पहले गर्भ-खण्डन बताती है। तीन से अधिक

रेखाएँ हों और शनि के पर्व के ठीक नीचे टूटी हुई हों तो शेखी और झुठाई उत्पन्न करती है।

यदि मणिबन्ध के ऊपर गुणा का चिह्न हो, तो मुसीबतों का सामना होता है। परन्तु जीवन आराम और शांति से समाप्त होता है।

पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि—

"The Rascettes of Bracellets are the lines which cross the wrist below the palm. In many hands, They are three in number, but in others there may be only two or even one. The first Rascettete, if deep and clear will indicate possession of strong body constitution. If the Rascette is poorly marked, broad, and shallow or chained, the constitution will be weak."

अर्थात् "मणिबन्ध या दस्तबन्द रेखाएँ हथेली से नीचे कलाई पर होती हैं। प्रायः यह तीन होती हैं, कुछ में केवल दो होती हैं और एक भी होती है। पहली मणिबन्ध रेखा यदि गहरी, स्पष्ट होती है तो वह स्वस्थ गठे हुए शरीर की सूचक है। यदि मणिबन्ध अस्पष्ट, चौड़ी, उथली या लहरदार होती है तो शरीर कमजोर गठन वाला होता है।"

"A straight line from the Rascette, rising high to the Mount of mercury indicates a sudden and unexpected increase in the finances; a simliar line rising to the mount of Saturn will indicate return of a dear-one atter a long interval."

अर्थात् "मणिबन्ध से जब कोई एक रेखा उठकर मंगल के स्थान को जाती है तो अनायास धन प्राप्ति का योग होता है। इसी प्रकार यदि शनि के क्षेत्र को छूती है तो उसका अर्थ होता है कि दीर्घकाल का बिछुड़ा हुआ प्रेमी पुनः आकर मिलेगा।" (चित्र ३२।३ रेखा—१-१)

———

# ग्यारहवाँ परिच्छेद

## फुटकर रेखायें

शुक्र मुद्रिकाएं—यह रेखाएं तर्जनी और मध्यमा उङ्गली के मध्य से प्रारम्भ होकर कनिष्ठा और अनामिका उङ्गली के मध्य वाले भाग में जाकर समाप्त हो जाती हैं।

इस रेखा का प्राणी की काम-शक्ति पर गहरा असर पड़ता है। इस रेखा वाला प्राणी अधिक कामी होता है। उसके प्रभाव के कारण मनुष्य चाहे जितना क्यों न बचे मगर अपनी रुचि काम-क्रीड़ा से नहीं हटा पाता है। उसके विचार चंचल हो जाते हैं। काम शक्ति के कारण वह स्त्रियों अथवा पुरुषों की ओर अधिक ध्यान देता है।

अन्य रेखाओं के योग द्वारा उसमें जो भी शक्ति, उल्लास या ओज आता है उसका नाश हो जाता है। यह तो हम सब ही जानते हैं कि अत्यधिक काम-शक्ति प्राणी की विचार-श्रृङ्खला को तोड़ देती है काम पिपासा के लिए प्राणी कुछ भी करने में नहीं चूकता है।

यदि कहीं दुर्भाग्य से विवाहरेखा शुक्र रेखा को छू लेती है त विवाहित जीवन नरक बन जाता है। दम्पतिमें काम-शक्ति पर विवाद होता है और नित्य प्रति की खटपट जीवन में एक प्रकार का विष घोल लेती है जिसके कारण प्राणी दुखों से कातर हो उठता है। दिमाग. कमजोरी के कारण प्रायः प्राणी मृगी रोग, हिस्टीरिया आदि का शिकार हो जाता है।

यदि शुक्र मुद्रिका का रङ्ग फीका होता है तो ऐसा प्राणी व्यभिचारी होता है और व्यभिचार द्वारा ही अपनी जीविका प्राप्त करता है। जैसे वैश्या आदि।

चाहे किसी भी दशा में शुक्र मुद्रिका क्यों न हो उसका फल हमेशा बुरा ही होता है।

## शनि मुद्रिका

मध्यमा उङ्गली के नीचे शनि के क्षेत्र को गोलाकार में घेरती हुई रेखा को शनि मुद्रिका कहते हैं।

क्योंकि यह रेखा शनि ग्रह को काटती है इसके कारण इसका फल नेष्ट है। ऐसी रेखा वाला प्राणी दुर्भाग्यपूर्ण होता है। जीवन में कहीं भी वह सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। इसका मूल कारण यह होता है कि अनेकों व्याधायें उसको घेरे रहती हैं, जिसके कारण उसका मन हमेशा चन्चल बना रहता है और वह किसी भी कार्य को एकाग्रचित्त होकर नहीं कर पाता है।

जब कार्य एकाग्रचित्त होकर नहीं किया जाता है तो उसमें सफलता का प्रश्न हीं नहीं उठता है। जीवन उसे असफलताओं ही में बिताना पड़ता है।

## बृहस्पति मुद्रिका

शनि मुद्रिका की भाँति ही तर्जनी के निचले भाग में गुरू ग्रह के क्षेत्र को अर्ध चन्द्रकार अवस्था में यह रेखा घेरती है।

यह रेखा बहुत कम पाई जाती है। यह रेखा प्राणी को मोक्ष की ओर ध्यान दिलाती है। ऐसी रेखा वाले प्राणी जीवन के बाद लोक परलोक की सोचते हैं। वह धर्म चिन्तन में समय देते हैं, तप, यज्ञ आदि में अपना ध्यान लगाते है और हर प्रकार से मोक्ष की चेष्टा करते हैं।

अक्सर यह भी देखा गया है ऐसी रेखा वाले प्राणी गुप्त विद्याओं, भूत विद्या, प्रेत विद्या, मैस्मैरेजिम, जादूगरी आदि विद्याओं में अधिक दिलचस्पी रखते हैं और उनको सीखते हैं तथा सिद्ध हस्तता प्राप्त करते हैं।

## निकृष्ट रेखा

यह रेखा चन्द्र के स्थान से प्रारम्भ होकर शुक्र के स्थान की ओर जाती है। यह नीचे की ओर धनुषाकार होती है। और जीवन-रेखा आदि रेखाओं को काटती है।

जिस प्रकार के इसके गुण होते हैं वह तो इसके नाम से ही प्रकट होते हैं। ऐसी रेखा वाला प्राणी नशेबाज होता है। नशे के पीछे पागल रहने वाला आदमी काम पिपासा शान्त करने के लिए बड़े से बड़ा दुराचार करता है। नशे के लिए धन की आवश्यकता होती है तो वह चोरी करता है, बेईमानी करता है और जब नशे में मदहोश हो जाता है तो मारपीट, फौजदारी करता है।

इन तमाम कामों का अन्त होता है। मानसिक क्लेश, समाज में मान हानि, और अदालत में जेल।

# बारहवाँ अध्याय

## रेखाओं का महत्व

अनुभवों द्वारा देखा गया है कि विभिन्न रेखा वाले प्राणी अपने एक विशेष व्यवसाय में सफल होते हैं। उनको सफलता किस रेखा के लक्षण से मिली है, उसका सारांश हम नीचे दे रहे हैं।

### १. चिकित्सक

जिसके हाथ में बुध का पर्वत उठा हो, उङ्गली लम्बी हों और सूर्य की रेखा साफ हो तो सफल चिकित्सक होता है।

छोटी-छोटी तीन खड़ी रेखाएँ हों, उङ्गलियाँ लम्बी हों और प्रथम गांठें पुष्ट हों, शुक्र-पर्वत उत्तम हो तो वैद्य-हकीम, डाक्टर होगा।

### २. जानवरों का वैद्य

हथेली कड़ी, उंगलियों के सिरे मोटे हों, पर्वत अच्छे, सुन्दर हों।

### ३. धाय

हाथ मजबूत पतला या चपटा, बुध पर रेखाएँ हों, शुक्र, चन्द्र के पर्वत उठे हुए हों,

### ४. रसायन-वेत्ता अर्थात् कीमियागार

दो या तीन छोटी खड़ी रेखा बुध पर्वत पर हों।

### ५. मन्त्रज्ञ

यदि एक सीधी रेखा कनिष्ठा के तमाम पोरों पर दौड़ी हो, त्रिकोण या सफेद दाग़, मस्तकरेखा पर बध के पर्वत के नीचे हो।

## ६. रङ्ग करने वाला

शुक्र और बुध का पर्वत उठा हो।

## ७. नाटक में दुःखांत पार्ट लेने वाला

यदि मस्तकरेखा की शाखाएँ बुध पर्वत की ओर गई हों।

यदि भाग्यरेखा के आखीर में दो विभाग हों, शनि की उङ्गली प्रधान हो और शनि पर्वत सूर्य की तरफ भुका हो।

## ८. नाटक में दुःखांत पार्ट लेने वाला

मस्तकरेखा बुध की तरफ खड़ी हो। और मस्तकरेखा जीवनरेखा से जुड़ी हो, बुध का पर्वत ऊँचा हो और बुध की उङ्गली का नख छोटा हो।

## ९. सूत्रधार

सुन्दर, गोल, पतली, चपटी, सूर्य की उङ्गली हो और उङ्गलियाँ करीब-करीब एक-सी हों तथा अलग-अलग हों, अँगूठा बाहर को निकला हो।

## १०. जुआरी

अनामिका, मध्यमा के बराबर हो और सूर्यरेखा साफ हो, या मस्तकरेखा नीचे को मुड़ी हो।

## ११. व्यवहारी

एक शाखा मस्तकरेखा से बुध के पर्वत पर गई हो।

एक रेखा भाग्यरेखा से बुध के पर्वत पर गई हो।

एक रेखा सूर्य पर्वत पर जीवनरेखा से गई हो।

## १२. दलाल या ठेकेदार

जब एक शाखा जीवनरेखा से सूर्य के पर्वत पर जाए।

## १३. व्यापारी जूट लकड़ो और खान के पदार्थ

जीवनरेखा से एक शाखा उठकर शनि पर्वत पर जाए।

## १४. धर्माचार्य

गुरु का पर्वत उठा हो और एक खड़ी रेखा गुरु, शनि के बीच में होकर लम्बी हृदयरेखा तक गई हो।

## १५. ब्रह्मज्ञानी, वेदान्ती

गुरु की उङ्गली प्रधान हो, चन्द्र का पर्वत पुष्ट हो, बुध की उङ्गली नुकीली हो, मस्तकरेखा लम्बी और ढलवाँ हो।

## १६. गन्धी

बुध और शुक्र का पर्वत उठा हो।

## १७. दर्जी

लम्बी उङ्गलियाँ और सूर्य की उङ्गली का पहला पोर नुकीला हो

## १८. शराब बेचने वाला

बुध और शुक्र पर्वत उठे हों।

## १९. ज्योतिषी (हस्त-रेखा)

स्वच्छ सोलोमनरिंग हो।
बुध, शुक्र, शनि के पर्वत उठे हों।

## २०. ज्योतिषी (रमल)

जिसके हाथ की उङ्गलियाँ चौकोर, पोर लम्बी हों। बुध, शनि, के स्थान ऊँचे और चन्द्र, रवि के स्थान दोष रहित, युग्म, मातृ और ऊर्ध्व रेखा सबल हों तथा त्रिकोण इत्यादि शुभ रेखाओं से युक्त हो।

## २१. अन्तर्ज्ञानी व दिव्यदृष्टि वाला

उङ्गलियाँ अलग-अलग हों।
बुध का पर्वत उठा हो, उङ्गली नुकीली हों।
आन्तरिक बुद्धि की रेखा स्पष्ट हो।

## २२. सेवक

उङ्गली छोटी हों।
भाग्यरेखा गायब हो।
हथेली, उङ्गलियों से लम्बी हों।

## २३. राजा

सूर्य की उङ्गली लम्बी, सीधी तथा प्रथम पोर लम्बा हो।
मस्तकरेखा, सीधी और शनि की उङ्गली लम्बी हो।
शुक्र की उङ्गली नुकीली हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा गुरु का पर्वत उठा हो तो राजा होता है।

## २४. राजदूत

गुरु का पर्वत ऊँचा और मस्तकरेखा द्विशाखी हो।
बुध की उङ्गली लम्बी, नुकीली हो और नख चमकते हों।

## २५. सेनापति

मङ्गल, शनि का पर्वत उठा हो, उङ्गली कोमल हों तो सेनापति होता है।

## २६. कारीगर

मङ्गल का पर्वत उठा हो, बुध की उङ्गली छोटी हों, तो सैनिक होता है।

गुरु का पर्वत ऊँचा हो, सूर्य की उङ्गली सीधी, लम्बी और उर्ध्व पर्वत ऊँचा हो, सूर्यरेखा उत्तम हो, चन्द्र पर्वत उठा हो, गुरु व शुक्र की उङ्गलियों में कुछ फर्क हो।

## २७. गवैया

सूर्यरेखा और सूर्य की उङ्गली नुकीली हों और शुक्र पर्वत पुष्ट हो।

## २८. गाने-बजाने वाला

स्वच्छ सूर्यरेखा हो और शुक्र के गुण हों, शुक्र पर्वत ऊँचा हो,

उङ्गलियाँ कोमल हों, बड़े हाथ वाला छोटे बाजे का और छोटे हाथ वाला बड़े बाजे का शौक करता है।

## २९. अभिनेता

उङ्गली और अँगूठे का अग्रभाग नुकीला हो और शुक्र पर्वत उठा हो तो अभिनेता होता है।

## ३०. हुण्डी वाला

शनि व सूर्य की उङ्गली करीब-करीब बराबर हों, हाथ गोल, पतला, चपटा हो और मस्तकरेखा सीधी हो।

## ३१. खेती करने वाला

लम्बी, मोटी, उङ्गली। सूर्य, शुक्र और चन्द्र पर्वत उठे हों, हथेली चौड़ी हो शनि की उङ्गली लम्बी और दूसरा पोर लम्बा हो।

## ३२. जादूगर

चन्द्र पर्वत के ऊपर त्रिभुज हो या शनि का पर्वत उठा हो और उस पर भी त्रिभुज हो।

## ३३. गणितज्ञ

उङ्गलियाँ चौड़ी, लम्बी, दोहरी गाँठें और पहला दूसरा पोर पुष्ट हो, हथेली पतली हो और मस्तकरेखा सीधी, लम्बी, शनि की उङ्गली भारी हो और दूसरा पोर ज्यादा लम्बा हो या शुक्र के पर्वत पर त्रिभुज हो।

## ३४. तत्वज्ञानी

बुध की उङ्गली इतनी लम्बी हो कि अनामिका उङ्गली के तक हो।

## ३५. साहित्यक

अच्छी, मजबूत बुध की उङ्गली हो और प्रथम पोर लायक मस्तकरेखा हो स्पष्ट हो, उङ्गलियाँ चौकोर और सिरे मुलायम।

साहित्य-समालोचक का नख छोटा, गुरु की उङ्गली प्रधान और चन्द्र पर्वत बहुत कम पुष्ट हो।

### ३६. उपदेशक

गुरु की उङ्गली प्रधान हो और अँगूठा लम्बा तथा उत्तम हो।

### ३७. हुनरमन्द

सूर्य की उङ्गली नुकीली हो, सूर्य के पर्वत पर नक्षत्र हो।

### ३८. चित्रकार

चन्द्र, मङ्गल मणिबन्धरेखा को दबा रहा हो, मस्तकरेखा लम्बी हो, सूर्य की उङ्गली मोटी हो, तो चित्रकार होता है।

### ३९. वकील

मस्तकरेखा लम्बी, शाखा-युक्त सिरे पर हो, मस्तकरेखा, जीवन रेखा अलहदा हों, बुध का पर्वत उत्तम हो, उङ्गली अँगूठा लम्बा हो।

### ४०. मुखतार

शनि की उङ्गली लम्बी हो और गुरु की उङ्गली सीधी हो तो मुखतार होता है।

### ४१. अधिकारी

तर्जनी और कनिष्ठा उङ्गली अति उत्तम हों और मंगल का मैदान ज्यादा ऊँचा न हो।

### ४२. बाबू

सूर्य का पर्वत अधिक उठा हो और अनामिका उङ्गली से नीचे को हटा हुआ हो।

### ४३. लेखक

सुन्दर मस्तकरेखा हो या शुक्र के कोण हों, सूर्यरेखा दोनों हाथों में उत्तम हो, पर्वत भी ऊँचा हो और मस्तकरेखा, शाखादार चन्द्र पर्वत पर झुकी हो।

## ४४. शिक्षक

गुरु, सूर्य, बुध, शनि के पर्वत उठे हों, तो शिक्षक होता है। उँगलियाँ लम्बी हों और आगे का हिस्सा मोटा हो, मध्यमा का दूसरा पर्वत लम्बा हो और सूर्य की रेखा अच्छी हो।

यदि शुक्र का पर्वत उठा हो तो गाना-बजाना, रंगसाजी, माली घड़ीसाजी, जौहरी, बाजों को बनाने इत्यादि का कार्य करेगा।

जैसे लड़कों के हाथ देखकर पता चलता है वैसे ही लड़कियों का भी हाथ देखकर निश्चय किया जा सकता है, और फल कहने में सफलता प्राप्त होती है।

## ४५. ऐडीटर

नाखून लम्बे और चौड़े कम होते हैं।

ऐडीटर के हाथ में शुक्र के कण होते है।

## ४६. व्याख्यानदाता

लम्बी मस्तकरेखा।

बुध के पर्वत पर त्रिभुज।

बुध की उँगली लम्बी होती है और अनामिका उँगली के नाखून तक पहुँचती है।

## ४७. जज, न्यायाधीश

हथेली बड़ी, उँगलियों की गाँठें लम्बी, गुरु की उँगली सीधी और बुध का पहला पोर लम्बा होता है।

## ४८. मजिस्ट्रेट

लम्बी गाँठदार उँगलियाँ, बुध का पहला पोर लम्बा और मंगल का पर्वत उत्तम होता है।

## ४९. वैरिस्टर

मस्तकरेखा लम्बी, शाखायुक्त हो अथवा मस्तकरेखा जीवन-रेखा से जुदा हो, सूर्यरेखा लम्बी हो।

## ५०. मल्लाह

चन्द्र पर्वत ऊँचा हो, पहला पोर अँगूठे का उत्तम हो, हथेली चौड़ी हो।

## ५१. सैनिक

मंगल का पर्वत बुध के पर्वत के नीचे अधिक उठा हो और यहीं पर त्रिभुज हो।

उँगलियाँ अक्सर छोटी, गोल, पतली, चपटी व चौरस हों। गुरु की उँगली लम्बी व प्रधान हो, अँगूठा भारी हो, बुध का पर्वत पुष्ट हो।

फौजी सिपाही के हृदय की रेखा छोटी होती है और शनि का पर्वत प्रधान होता है।

## ५२. इञ्जीनियर

स्वच्छ मस्तकरेखा हो और मंगल, सूर्य व बुध के पर्वत उठे हों।

## ५३. शस्त्र-क्रिया वाला

सुन्दर सूर्यरेखा का होना।

कुछ लम्बी, खड़ी रेखा का बुध पर्वत पर होना। मंगल पर्वत पर बुध के पर्वत के त्रिभुज हों।

मंगल और बुध का पर्वत जोरदार हो या उठा हो, उँगलियाँ लम्बी, पतली और चपटी और उनकी दूसरी गाँठें मजबूत हों।

## ५४. वैद्य

उत्तम मस्तकरेखा और सुन्दर सूर्यरेखा हो, कुछ रेखाएं बुध के तीसरे पर्व से दूसरे पर हों, बुध का पर्वत अच्छा हो और उस पर छोटी-छोटी रेखाएं हों।

# तेरहवाँ अध्याय

# अन्य रेखाएँ और उनके फल

### १. अनायास धन पाना

चन्द्र स्थान से जब कोई टेढ़ी रेखा लाल रंग की बुध स्थान को जाए तो गढ़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

जब कोई रेखा मस्तकरेखा से निकलकर सूर्य के पर्वत पर आए तो अकस्मात् धन मिलता है।

### २. शराबी

चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्यसेवी होता है।

जीवनरेखा में से जब कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाए तो मनुष्य नशे में ऊँचे स्थान से गिरता है।

### ३, सांसारिक वासनाओं से मुक्ति

शुक्र पर्वत पर कोई चिह्न न हो तो मनुष्य वासना-विहीन होता है।

### ४. नीतिवान्

मस्तकरेखा सीधी और स्पष्ट हो, और साथ ही अँगूठा सीधा और उठा हुआ हो, तो मनुष्य न्याय-प्रिय होता है।

### ५. बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु

भाग्यरेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो, तो माता या पिता में से किसी की मृत्यु होती है।

### ६. अनुचित प्रेम

दोनों हाथों में हृदयरेखा पर द्वीप का चिह्न हो, तो नाजायज प्रेम का चिह्न है। यह प्रायः कष्टदायक होता है।

## ७. रिश्तेदार, निकट-सम्बन्धी से प्यार

हृदयरेखा पर बुध पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह हो तो किसी सम्बन्धी से प्रेम होता है।

## ८. मुकदमेबाजी में जायदाद बर्बाद होना

दोनों हाथों में मंगल पर्वत पर काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकदमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

## ९. अकस्मात् धन की हानि

बुध पर्वत पर काला दाग ( तिल ) हो तो यकायक धन की हानि होती है।

## १०. विवाह में धन प्राप्त

गुरु के पर्वत पर गुणक या तारा का चिन्ह हो तो ब्याह में धन मिलता है, और ब्याह सुखमय होता है।

## ११. प्रेम में सुख

गुरु के पर्वत पर गुणक या तारे का चिन्ह हो और स्त्री के हाथ में मंगलरेखा हो तो प्रेम में सुख होता है।

## १२. दीर्घायु

जीवनरेखा गहरी, लम्बी, स्वच्छ, गुलाबी रंग की हो और तीनों मणिबन्ध रेखाएँ, अच्छी तरह विकसित हों तो मनुष्य दीर्घायु होता है।

## १३, शान्तजीवन

सुन्दर भाग्यरेखा, गुरु और शनि पर्वत के बीच में पूर्ण रूप से हो, तो जीवन शान्तप्रिय होता है।

## १४. रोजगार में लाभ और यश

यदि अनामिका उँगली से कनिष्ठा उँगली में ज़्यादा ऊर्ध्व रेखा हो तो रोजगार से लाभ तथा यश प्राप्त होता है।

### १५. जेल

यदि शुक्र और मंगल के पर्वत पर चतुष्कोण हो या शनि के स्थान में जंजीर हो या उँगली में चौथा पर्व हो तो जेल होती है।

### १६. प्रेम हो पर विवाह न हो

प्रभाविक रेखा, चन्द्र पर्वत पर हो और भाग्यरेखा में मिले तो प्रेम होता है, परन्तु विवाह नहीं होता है।

### १७. धन-नाश

मंगल का मैदान खोखला, सूर्यरेखा आड़ी रेखा से कटी हो, या कई जगह टूटी हो या द्वीप सूर्यरेखा पर हो। स्वास्थ्यरेखा पर द्वीप हो या जीवनरेखा तथा अन्य रेखाएँ नीचे की ओर गई हों, तो धन नाश होता है।

### १८. प्रेम में जीवन बर्बाद होने का लक्षण

भाग्यरेखा टूटी या नक्षत्र वाली, हृदयरेखा से शनि के पर्वत के नीचे मिले। लहरदार मस्तकरेखा, हृदयरेखा से अन्त में मिले, दुर्बल । नक्षत्रयुक्त भाग्यरेखा या सूर्यरेखा हो या दो हृदयरेखा हों।

### १९. अन्य स्त्रियों से प्रेम

अंगूठे की जड़ और पितृ रेखा के भीतर जितनी आड़ी रेखाएँ हों, उतनी स्त्रियों से नाजायज प्रेम होगा।

### २०. खूनी के लक्षण

मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तकरेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

### २१. शस्त्र से मृत्यु

मध्यमा उँगली के तीसरे पोर पर नक्षत्र हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

## २२ मृत्यु की सजा

तर्जनी उङ्गली से रेखा निकलकर यदि अँगुष्ठ से प्रथम सन्धि के साथ जाकर मिले तो मृत्यु की सजा होती है।

## २३ धर्म-रुचि

गुरु की उङ्गली सीधी नुकीली हो और बुध की उङ्गली का प्रथम पोर लम्बा हो, तो धर्म की ओर मनुष्य की प्रवृत्ति होती है। वह धार्मिक होता है।

## २४. चोर या चोरी की प्रवृत्ति

कनिष्ठा उङ्गली गठीली हो और उस पर गोलाकार चिन्ह हो तथा उङ्गलियों के सिरे चपटे हों तो चोरी करने की प्रवृत्ति होती है।

## २५. झूँठ बोलने वाले के लक्षण

चौथी उङ्गली टेढ़ी, बुध की ओर उठे चन्द्र पर्वत या रेखाओं से युक्त बुध के पर्वत पर गुरु का चिह्न, या गुरु के पर्वत का प्रभाव मस्तक-रेखा झुकी हो और चौड़ी फाँक हो तो प्राणी झूँठा होता है।

जिसका हाथ बहुत छोटा हो या मांसयुक्त हो या कनिष्ठा उङ्गली के तीसरे पर्वत पर टेढ़ी रेखा होकर क्रॉस का चिन्ह हो या बुध का पर्वत ऊँचा उठा हो, कनिष्ठा उङ्गली की नोंक मोटी हो या मस्तक रेखा टेढ़ी होकर लाल रङ्ग की हो या बुध पर्वत पर तारे का चिन्ह हो या कनिष्ठा के जोड़ मोटे हों तो प्राणी चोर होता है। जितने लक्षण अधिक मिलें उतने ही प्रमाण से वह चोर होता है।

## २६. प्रेम में प्रलोभन

शुक्र और शनि पर्वत के बीच में एक द्वीप हो तो प्रेमी लोभी होता है।

## २७. धन का कष्ट

भाग्यरेखा शृङ्खलाबद्ध हो, जीवनरेखा से छोटी-छोटी नीचे आने वाले रेखाएँ निकली हो तो अधिक कठिनाई होती है।

## २८. आत्म-विश्वासी

जीवनरेखा और मस्तकरेखा के निकलने के स्थान पर ज्यादा फर्क हो तो आत्म-विश्वासी होता है।

## २९. मानसिक-शक्ति

बुध की उङ्गली बड़ी हो, अंगूठे का पहला पोर बड़ा हो और मस्तकरेखा अच्छी हो तो मानसिक शक्ति प्रबल होती है।

## ३०. पृथ्वी की यात्रा

जीवनरेखा में से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर शुक्र पर्वत की ओर जाएँ तो पृथ्वी पर सफर करने वाला होता है।

## ३१ जेल यात्रा

मणिबन्धरेखा से एक रेखा शुक्र पर्वत की ओर निकलकर चन्द्र पर्वत की ओर जाए तो जेलयात्रा होती है।

## ३२. भलाई के लिए परिवर्तन

भाग्यरेखा टूटी और दूसरी स्वच्छ भाग्यरेखा उसके टूटने से पहले शुरू हो, तो भाग्य में उन्नति होती है।

## ३३. स्त्री की शुद्ध चरित्रता

स्त्री के हाथ में मङ्गलरेखा हो तो शुद्ध चरित्र वाली होती है। अनामिका के पहले पोर में क्रास हो, गुरु का पर्वत ऊंचा हो तो पतिव्रता होती है।

## ३४. विदेश में मृत्यु

जीवनरेखा अन्त में दो हिस्सों में बंटी हो और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

## ३५. अकाल मृत्यु

जीवनरेखा दोनों हाथ में छोटी हो या टूटी हो या मस्तकरेखा तथा हृदयरेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हों तो अकाल मृत्यु होती है।

## ३६. व्यभिचार का आरोप

दोनों हाथों में भाग्यरेखा पर द्वीप हो तो व्यभिचारी होने का लक्षण है तथा अन्य व्यक्ति से लुभाए जाने का चिन्ह है।

## ३७ अविवाहित जीवन

विवाहरेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठा उङ्गली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

## ३८. दीर्घायु

जिनकी उङ्गली में भिन्न स्थान पर पर्व हो और लाल रङ्ग की उङ्गलियां हों, वह मनुष्य दीर्घजीवी होता है।

हस्त परीक्षा द्वारा रोगों का पता चलता है, इससे गुप्त भेद जाहिर हो जाते हैं। जैसे हाथ में बहुत रेखा हों, चन्द्र का पर्वत बहुत नीचा हो, उङ्गली टेढ़ी हों तो रोगी बहमी होगा और कष्ट कम भी हो तो उसको अधिक बतलायेगा। अंगूठा छोटा हो, बुध का पर्वत न हो बुध की उङ्गली कमजोर हो या छोटी हो,तो फिर तन्दुरुस्ती का लौटना कठिन होगा। ऐसे रोगी को कितना ही उत्साहित करो कि अच्छे हो जाओगे, परन्तु वह निरुत्साही वाक्य कहेगा कि 'मैं अच्छा हो नहीं सकता,। यदि बुध का पर्वत उत्तम हो तो शीघ्र अच्छा होगा क्योंकि आशा और प्रसन्नता उसमें रहती है। यह एक साधारण बात है कि जो लोग प्रसन्नचित्त रहते हैं, वे तन्दुरुस्त रहते हैं। इसलिये सदा प्रसन्न रहने के साथ यह विश्वास करो कि अच्छा हो जाऊँगा। ऐसी ही सलाह हमेशा देनी भी चाहिये।

जिस पुरुष के मङ्गल का पर्वत उत्तम होता है और अंगूठा मजबूत होता है, उसमें साहस अधिक होता है और हर तरह के कष्ट बर्दाश्त करता है।

इसके द्वारा वंश-परम्परा की बीमारी का भी पता लग जाता है, जिस रोग का डाक्टर पता नहीं लगा सकते, इस विद्या द्वारा वैद्यों को

रोगों के पता लगाने में सहायता मिल सकती है। इसके द्वारा यह भी मालूम होगा कि बीमार विषयी है अथवा बद-परहेज है।

एक हाथ पर रोग का चिन्ह और दूसरे पर न हो तो उसका नतीजा सदेहात्मक समझना चाहिए। जैसे किसी मनुष्य के हाथ में रेखाओं से अल्प-मृत्यु से मरने का योग है लेकिन दूसरे हाथ पर न हो तो उसको अनिष्ठ समझना चाहिए, परन्तु मृत्यु न होगी।

किसी मनुष्य की रेखा पर काला बिन्दु हो तो उसकी मृत्यु जहर देने से होगी, लेकिन यदि यह चिह्न दूसरे हाथ में न हो तो जहर चढ़ जाएगा मृत्यु न होगी। जब दोनों हाथों में ऐसा चिह्न हो तभी मरेगा।

## १. आंख का रोग

मस्तकरेखा या हृदयरेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप का या काला दाग या बिन्दु हो तो आंखों में रोग होता है।

## २. गले का रोग

गुरु पर्वत के नीचे मस्तकरेखा पर द्वीप हो तो गले में कष्ट होता है।

## ३. हिस्टीरिया

हथेली नरम हो, जञ्जीर के समान सूचक रेखाएँ हों, हाथ का बाहरी भाग सिकुड़ा हो।

## ४. बदहजमी

नखों पर धब्बे हों और चन्द्र पर्वत बहुत उठा हो।

## ५. बुखार

हाथ का मध्यभाग गर्म या शुष्क हो या अनामिका उङ्गली के पिछले भाग के किसी पोर पर काला निशान हो।

## ६. जलन्धर

चन्द्र पर्वत पर नक्षत्र चिह्न हो।

चन्द्र पर्वत के नीचे का हिस्सा उठा हो, कई रेखाओं से कटता हो उसी जगह एक नक्षत्र हो, तो जालन्धर रोग होगा।

### ७. फोड़ा-फुन्सी

स्वास्थ्यरेखा पर द्वीप हो और मस्तकरेखा चक्करदार हो।

### ८. पसली, छाती में शूल

आयुरेखा पर टापू हो और उसमें से शाखा निकलकर गुरु पर्वत पर जाए, तो पेट या पसली में दर्द हो।

### ९. रीढ़ का दर्द

आयु की रेखा पर शनि के नीचे टापू हो।

### १०. पागलपन

चन्द्र पर्वत पर क्रास हो या मस्तकरेखा लम्बी, ढालू हो, शनि का पर्वत न हो या शनि की उङ्गली टेढ़ी हो।

### ११. मृगी रोग

उङ्गली टेढ़ी नुकीली हो और नीचे के पर्वत हों।

### १२. खून की खराबी

लाल नख हों या छोटे अर्धचन्द्र हों।

### १३. वंश परम्परागत रोग

आयुरेखा पर यव हो।

### १४. आंत का रोग

मुलायम हाथ हों, धब्बेदार नाखून हों या स्वास्थ्यरेखा टूटी

### १५. हृदय रोग

हृदयरेखा पर काले दाग हों या बड़ा द्वीप हो या हृदयरेखा पीली और दागदार हो।

### १६. दांत में कष्ट

शनि का पर्वत अधिक उठा हो या इस पर्वत पर अधिक रेखाएं

हों। भाग्यरेखा या स्वास्थ्यरेखा लम्बी लहरदार हो और दूसरे पोर सब उङ्गलियों में लम्बे हों, तो दांत में कष्ट होता है।

### १७. टांग

शनि पर्वत अधिक उठा हो या रेखाएं अधिक हों, मस्तकरेखा शनि पर्वत के नीचे टूटी हो।

### १८. कमल

बुध का पर्वत अधिक उठा हो या अधिक रेखाएँ हों। एक दाग़ या नक्षत्र चन्द्र पर्वत पर हो आरोग्यरेखा पर तारा या टापू हो और काला दाग़ हो।

### १९. आत्महत्या करने वाला

जिस व्यक्ति के चन्द्र पर्वत पर क्रास हो और रेखा के अन्त में भी क्रास हो, तो वह आत्महत्या करता है।

मस्तकरेखा और आरोग्यरेखा मिली हों और जीवनरेखा दूसरी रेखाओं से कटी हो और शनि का पर्वत ऊँचा हो तो प्राणी आत्महत्या करता है।

बीच की उँगली का पहला पर्व लम्बा होकर चौकोर हो और बुध या मंगल के पर्व पर क्रास हो, तो प्राणी आत्महत्या करेगा।

उपरोक्त लक्षणों में से कोई भी लक्षण दिखाई पड़े तो समझ जाना चाहिये कि यह व्यक्ति आत्महत्या करेगा या अपने दोष से किसी के द्वारा शस्त्र से मारा जायगा।

### २०. फिज़ूल खर्च वाला

अँगूठे का पहला पोर पीछे मुड़ा हुआ हो, उँगलियां लचीली हों। जीवन और मस्तकरेखाएँ ज्यादा चौड़ी हों और मस्तकरेखा झुकी हो। सूर्यरेखा और भाग्यरेखा अच्छी न हों और रेखा के पर्वत साफ न हों, तो ऐसे चिह्न वाला फ़िज़ूलखर्ची होता है।

## २१. नाम और कामयाबी

यदि गुरु पर्वत पर नक्षत्र हो और दूसरे नक्षत्र पर अच्छी सूर्यरेखा के अन्त में स्वच्छ भाग्यरेखा मणिबन्ध से शनि के पर्वत तक या गुरु के पर्वत तक या सूर्य के पर्वत पर जाकर समाप्त हो। छोटी भगिनी रेखा सूर्य के पर्वत पर हो, मस्तक और हृदयरेखा साफ और लम्बी हो, सिवाय शनि और चन्द्र के अन्य पर्वत उठे हों तो नाम और कामयाबी होती है।

## २२. स्त्री-जन्य दुःख

मङ्गल का क्षेत्र चन्द्र की तरह नीचा हो, चन्द्र पर्वत के नीचे का हिस्सा उठा हो या ज्यादा रेखाएँ हों या एक गुणा का चिह्न इसी पर्वत पर हो या जीवनरेखा, चन्द्र पर्वत के नीचे तक गई हो तो उसको स्त्री जन्यदुःख होता है।

जीवनरेखा पर नीचे दाग हो या हृदयरेखा बहुत तङ्ग हो या टूटी हुई हो। मस्तकरेखा पर काले दाग हों या हृदयरेखा पर काले या नीले दाग हों तो ऐसा व्यक्ति बुखार से ग्रसित होता है।

मणिबन्ध की पहली रेखा पर नक्षत्र हो या त्रिभुज या कोण के भीतर गुणा का चिन्ह हो तथा एक लम्बी दूसरी रेखा मस्तकरेखा की समान्तर हो तो ऐसे व्यक्ति को धन किसी बसीयत से मिलता है।

यदि पहली उङ्गली अधिक लम्बी हो, लम्बे सख्त नाखून अंगूठे का पहला पोर उभरा हो, गुरु का पर्वत अधिक उठा हुआ हो, गहरी सीधी मस्तकरेखा हाथ के इस पोर तक या हृदयरेखा गायब हो। इनमें से कोई लक्षण हो तो वह व्यक्ति निर्दयी स्वभाव वाला होता है।

यदि किसी के छोटे पीले नाखून, हृदयरेखा गायब हो या उङ्ग-लियाँ टेढ़ी, खासकर चौथी उङ्गली हो तो वह व्यक्ति दगाबाज होता है।

यदि हथेली पतली, मुलायम हो। लम्बी, गठीली, उङ्गली भीतर

झुकी हुई हो, मंगल, बुध, गुरु के पर्वत नीचे हों।

भाग्यरेखा, उर्ध्व रेखा हाथ के मध्य भाग में होकर शनि के स्थान को स्पर्श करती है। इससे भाग्य का ज्ञान होता है।

सूर्यरेखा, विद्यारेखा के नीचे से चलकर अनामिका उङ्गली की ओर जाती है। इससे प्रसिद्धि और विद्या होती है।

## शरीर में तिल होने के शुभ-अशुभ फल

यदि स्त्री की दाँए तरफ तिल हो तो उसका पति उससे खुश रहेगा।

माथे पर बाँई ओर हो बाँए पेट या बाहु पर भी तिल होगा। परन्तु फल इसका स्त्री-पुरुष दोनों को अशुभ है। बाँई भौं पर हो तो बाँई छाती पर भी तिल होगा और दोनों को यात्रा करनी होगी।

दोनों भौंहों के बीच में होतो पर तिल होगा, इससे प्रेम होगा और विवाह अच्छी जगह होगा।

यदि नाक पर हो तो नाभि पर तिल होगा, इससे प्रेम होगा और विवाह अच्छी जगह होगा।

कनपटी पर तिल हो तो कुच पर भी होगा, दाहिनी ओर हो तो पुरुष प्रसन्न रहे। स्त्री के तो रांड होती है। बाँई ओर हो तो रोगी होता है।

कान के पास हो तो पेट पर भी तिल होगा। यह तिल स्त्री-पुरुष दोनों को कष्ट दायक है।

नाक की नोंक पर तिल हो तो गुदा पर भी होगा। पुरुष अल्पायु होगा और स्त्री खुदकशी करती है।

गाल पर हो तो कूल्हे पर होगा, यह तिल दाहिने तरफ हो तो शुभ और बाँई तरफ हो तो अशुभ होगा।

होठ पर हो तो गुदा पर तिल होगा। लोभी होगा, फल अशुभ है।

नीचे के होठ पर हो तो घुटने पर तिल होगा, विवाह दूर देश में होगा।

ठुड्डी पर हो तो पुट्ठे पर तिल होगा या पाँव पर होगा, दाँए पर अशुभ है।

तर्जनी उङ्गली पर हों तो शत्रु नाशक, धनी और द्वेष करने वाला होता है।

मध्यमा में तिल होता है तो धन देता है और शान्त-सुखी करता है।

अनामिका में हो तो यशी, पराक्रमी, सुखी और लक्ष्मी-युक्त, विद्या-युक्त होता है।

कनिष्ठा उङ्गली पर हो तो धन, पुत्र से युक्त, अस्थिर-चित्त तथा पर-धन से धनी होगा।

अँगुष्ठ पर हो तो निपुण और अधिक चलने वाला होता है।

तिल बांई भौं पर हो तो किसी स्त्री द्वारा कष्ट हो और दाहिनी आंख के भीतर हो तो अति तीव्र बुद्धि वाला हो और यदि स्त्री के दाहिनी आँख के कोने में हो तो धनी हो, चढ़ती जवानी में बहुत कष्ट हों, बाँए कोर के ऊपर हो तो डूबने का, ऊँचे से गिरने का भय होता है, और चाल-चलन पर धब्बा लगेगा।

गर्दन में दाहिनी तरफ हो तो भक्त और बुद्धिमान हो और यदि बाँई ओर हो तो पानी में डूबे या ऊँचे गिरे। ठुड्डी पर तिल हो तो हिजड़ापन बतलाता है।

दाहिने पाँव पर तिल हो तो अच्छा ज्ञानी, स्त्री-सुखी, बाँए पर अशुभ फल होता है।

जिस स्त्री की नाक के आगे वाले हिस्से में लाल मस्सा हो तो रानी होती है। काला हो तो व्यभिचारिणी और विधवा होती है।

कान, कपोल और कण्ठ के बाँई तरफ तिल हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है। पुरुष के दाहिनी तरफ हो तो पुत्र होता है। अगर बाँई तरफ हो तो कन्या हो और कई होती हैं।

जिस स्त्री के बाँए गाल पर लाल तिल हो वह सौभाग्यवती,

माथे पर तिल हो तो परिश्रम के काम में आरोग्य होगा और मालिक का रुख देखेगा।

नेत्र में तिल हो तो परिश्रम करने वाला होगा। कान में तिल हो तो सब सिद्धि प्राप्त होवें, नाक में तिल हो तो दुष्ट होवे।

गाल पर तिल हो तो शोभा से युक्त हो होंठ पर हो तो लोभी, हृदय के ऊपर तिल हो तो सौभाग्य, बाहु में तिल हो तो धनी, लिङ्ग पर तिल हो तो स्त्री में आसक्त हो।

जङ्घा में तिल हो तो रसिक हो, पैर में हो तो राजा की सवारी प्राप्त हो, हथेली के बीच में हो तो धन बराबर मिले। पीठ, कमर, गुप्त इंद्रियों में तिल हो तो बेकार होता है, कोई फल नहीं होता।

जिन हाथ की रेखाओं पर लाल या काले तिल हों तो उनके फल को और भी बढ़ाते हैं और दुष्ट रेखाओं का फल नहीं होने पाता है।

माथे पर हो तो धनवान् हो। माथे के दाहिनी तरफ हो तो प्रतिष्ठा बढ़ती है, माथे के बाँई तरफ हो तो परेशानी में उम्र बीते। ठुड्डी में हो तो स्त्री से मेल न रहे, दोनों भौंहों पर—यात्रा होती रहे, दाहिनी आँख पर हो तो स्त्री से प्रेम रहे। बाँई आँख पर परेशानी बनी रहे। दाहिने गाल पर धनवान् हो। बाँए गाल पर--गरीबी बनी रहे। होठों के ऊपर—ऐय्याश हो। पीठ के नीचे—गरीबी बनी रहे। कान पर अल्पायु हो। गर्दन पर--आराम मिले। दाहिनी भुजा पर--इज्जत मिले। बाँए बाजू पर--झगड़ालू हो। नाक पर--यात्रा होती रहे। दाहिनी छाती पर--स्त्री से प्रेम रहे। बांई छाती पर--स्त्री से झगड़ा रहे। कमर पर—परेशानी में उम्र बीते। बगल में—दूसरों को हानि पहुँचाए। दाहिनी छाती पर--परेशानी रहे। बाँई छाती पर--कामी पुरुष हो। छातियों के बीच—जीवन आराम से बसर हो। दिल पर--बुद्धिमान हो। पसली पर--डरपोक रहे। पेट पर--उत्तम भोजन का इच्छुक। पेट के बीच में—

डरपोक हो। पीठ पर—सफर में रहे। दाहिनी हथेली पर--धनवान्। दाहिने हाथ पर—खजाची हो। बांई हथेली 'पर—फिजूल खर्च। दाहिने हाथ की पीठ पर—कम खर्च करे। बाँए हाथ की पीठ पर—बुद्धिमान् हो। दांई हथेली पर—सफर में रहे। दाहिने पैर में—बड़ा बुद्धिमान् हो। बाँए पैर में—खर्चा ज्यादा करे।

## हाथ की शक्ल उतारने की तरकीब

प्रथम एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रंदा करके साफ बनवाओ, जो बीच में कुछ ऊँचा उठा हुआ हो। जिसे हाथ पर रखने से अँगूठा उङ्गलियाँ तथा हाथ की रेखाएं साफ-साफ आसानी से आ सकें। उस लकड़ी के टुकड़े पर कपड़ा ढक कर और उस पर नरम कागज रखकर एक छोटा रौलर सरेस या जिलेटाइन का बनवालो। अब उस रौलर से एक छोटे चोरस मोटे कांच,लोहा, रबड़,लकड़ी या पत्थर के टुकड़े पर छापने की स्याही थोड़ी-सी डालकर खूब घोटना। जब रौलर से घोटते-घोटते स्याही चड़-चड़ बोलने का शब्द करे तब उस रौलर लगाई स्याही को हाथ पर इस तरह लगाना कि उस पर की सब रेखा,उंगली,अँगूठा, मणिबन्ध आदि समूचे हाथ की छाप पूरी आ सके, उसके बाद उपरोक्त लकड़ी के टुकड़े पर हाथ को धीरे से रखकर दबाना कि किसी अवयव की रेखा बाकी न रहे। और पेंसिल से हाथ के चारों तरफ की आकृति या निशान बनालो और हाथ को धीरे से उठा लो।

## कपूर के धूएँ से छाप लेने की तरकीब

पहले एक कागज पतला जैसा टाइप-राइटिंग में स्तेमाल होता है, ले लो। एक टुकड़ा कपूर का एक तसवीर में रखो। कपूर को जलादो और उस पर कागज को जल्दी-जल्दी घुमाओ,जब तक कि कागज खूब काला न हो जावे। ध्यान रखो कि कागज जले नहीं न उस पर पीले धब्बे ज्यादा देर रखने से पड़ें। एक छोटी गद्दी जो कि लचीली हो और बहुत मुलायम न हो या एक लकड़ी का मोटा टुकड़ा रंदा करके ऐसा बनाओ

जो बीच में उठा हुआ हो या एक छोटी गद्दी जो अण्डे की शक्ल की हो, कागज की बनी हो। उसके ऊपर रखो, इससे हथेली की खाली जगह भर जाएगी।

उस कागज को रखो जो कपूर से तैयार किया है और देखो कि गद्दी कहाँ है तब इसके ऊपर हाथ को रखो, उङ्गलियाँ फैली हों, मुलामियत से लेकिन मजबूती से दबाओ।

हाथ उठाने के पहिले एक नुकीली पेंसिल से हाथ के चारों तरफ निशान लगा दो।

हाथ जल्दी से उठालो ताकि धब्बे कागज पर न पड़ें। 'ब्लो' पाइप या 'वेपोरीजर' से तेल दूर से छिड़को ताकि छाप जो ली है, पक्की हो जाय।

दोनों हाथों की छाप लो और जब तक छाप साफ न उतरे इसको पुनः दुहराओ।

# तीसरा भाग

# शारीरिक लक्षण

## पैर की रेखाएँ

# पहला अध्याय

## शारीरिक लक्षण

### भुजाएँ

जिस पुरुष के बाहु घुटने के नीचे तक लम्बे हों, वह अजानु-बाहु होता है। इसके फलस्वरूप वह महापुरुष होगा। जिसके बाहु कमर तक हों, वह क्षुद्र और नीच प्रकृति होगा, जिसके बाहु कटि के नीचे और जाँघों के बीच तक हों वह कार्यशील, व्यवसायी और सिद्धहस्त होगा। जिसके बाहु घुटनों से कुछ ही ऊपर रहें,वह समृद्धिशाली होगा, परन्तु लोभी तथा बेईमान होगा। कभी-कभी वह पुरुष हिंसक भी हो सकता है। जिसके बाहु कमर से नीचे और जाँघ के मध्य से ऊपर तक हों, वह दीन होता है।

जिसके बाहु की कुहनी के नीचे का भाग ऊपर के भाग से बड़ा हो, यह कार्यशील, आस्तिक और भक्त होता है। जिसका ऊपर का भाग बड़ा हो वह शूद्र और दस्यु प्रकृति होता है। यह मनुष्य अत्यन्त विषयी और विलासी होता है। जिसके दोनों भाग बराबर हों ( यह अपनी ही उङ्गलियों से नापे जाते है। बाहु का आदि भाग आंख के ऊपर से और अन्तिम भाग पहुँचे तक होता है।) वह व्यवसायी एवं परिश्रमी होता है। उसे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती। अपने बल से ही धनोपार्जन करेगा।

जिसका हाथ लम्बा और भद्दा होता है, वह दरिद्री होता है। जिसका हाथ लम्बा परन्तु देखने में सुडौज और गठीला होता है। वह आलसी होता है। वह धनी नहीं होता। जिसका हाथ लम्बा,

गठीला और सुन्दर होता है, वह मनुष्य भाग्यशाली होता है। पान के आकार वाला हाथ, समृद्धिशाली और कीर्तिवान होता है भद्दी यानी बुरी आकृति वाला हाथ नीच का होता है। चौकोर हाथ दस्यु का होता है और गोल हाथ व्यवसायी का। बन्दर की आकृति वाला हाथ यानी जिसकी हथेली,कलाई की त्वचा के समानान्तर हों वह मनुष्य क्षुद्रबुद्धि और कुविचारी, विषयी तथा मूर्ख होता है, परन्तु आस्तिक होता है।

गहरी हथेली वाले को सदैव धन-लालसा रहती है। जिसका उङ्गलियां लम्बी व हथेली लम्बी व छोटी हो वह मनुष्य मूर्ख होता है। जिसकी बड़ी हों वह मनुष्य चतुर और भाग्यवान् होता है। जिसके दोनों भाग बराबर हों वह व्यवसायी और धनी होता है।

जिसकी उङ्गलियां मोटी, लम्बी और गठीली हों वह परिश्रम करने से सुखी रहेगा, वह भाग्यशाली होगा। जिसकी उङ्गलियों के पोरों की कुल रेखाएँ मिलाकर १५ हों वह नीच, दस्यु और विश्वासघात होता है। ऐसे मनुष्यों को मित्र न बनावें। १६ रेखा वाला मध्यम, पिता के समान। अठारह रेखा वाला सुपुत्र और १९ वाला पिता तथा स्वकुल की कीर्ति को बढ़ाता है और धनवान् होता है। २० रेखा वाला धनी परन्तु क्रूर होता है। इक्कीस-बाईस वाला उद्यमी एवं विचारवान् होता है तथा प्रतिभाशाली भी होता है। इससे अधिक वाला दरिद्री तथा मूर्ख होता है। अँगूठे के पोर की रेखाएं नहीं गिनी जातीं।

जिनके नखों की बनावट बिल्कुल गोल हो और नख छोटे हों वह व्यवसायी होता है। जिनके नख गोल और अर्द्धचन्द्रकार कटे हों वह राज प्रतिनिधि, वैद्य अथवा आकाशवृत्ति को प्राप्त करने वाला होता है।

जिसके नख लम्बे, गोल और कटे हों वह आदमी दीन होता है। जिसके लम्बे परन्तु अर्द्ध चन्द्रकार कटे हों वह उद्यमी और विद्वान् तथा विश्वासनीय होता है।

जिसकी उङ्गलियां टेढ़ी और मिलाने पर झिर्झरी हों, वह

अच्छा नहीं होता। जिसकी उङ्गली हाथ के विचार से गढ़ी हुई सुदृढ़ एवं सुन्दर हों, वह अच्छा होता है। जिसका अँगूठा लम्बा और बीच की गाँठ की चौड़ाई के आगे की तरफ पतला और गोल हो वह मनुष्य भक्त और शान्त चित्त होता है। जिसका अँगूठा गाँठ के समान चौड़ा और छोटा तथा अर्द्ध चन्द्रकार हो वह मनुष्य मध्यम रहता है। जिसका अँगूठा पीछे की ओर झुका हुआ हो वह अच्छा होता है।

## छाती और पेट

जिसके उरस्थल पर रोम अर्थात् बाल नहीं होते, वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु कलुषित-हृदय होता है। वह मनुष्य कार्यशील तथा विश्वास-घाती होता है। साथ ही यह मनुष्य कार्यशीय तथा अध्यवसायी होता है। जिसके उस उरस्थल से नाभी तक बालों की सुन्दर लकीर सी बनी हो और वह प्रत्यक्ष हो, तो वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु रसीला होता है। दो व्यक्तियों को लड़ाकर उसका आनन्द अनुभव करता है। कम बालों वाला सामान्य होता है। अधिक बालों वाला विषयी होता है। सुनहरे बालों वाला भाग्यवान परन्तु व्यसनी होता है। लम्बे पेट वाला आहारी, क्रोधी परन्तु सच्चरित्र व भाग्यवान होता है। छोटे व मोटे पेट वाला दरिद्री होता है। मोटी कटि वाला आदमी अधिक विलासी तथा पतली कटि वाला आदमी साहसी तथा वीर होता है। पतली कटि की स्त्री प्राय: सच्चरित्र एवं सुन्दर होती है।

भाल में दो कटी-फटी रेखाओं वाला अकर्मण्य होता है। जिसके भाल में एक ही रेखा हो और वह भी कटी-फटी हो तो वह कुविचारी होता है। जिसके भाल में इन तीनो रेखाओं के समान अन्य अनेक रेखाएँ हों वह त्यागी होता है।

## ग्रीवा

जिसके गले में तीन रेखाएँ (क्रमानुसार समानान्तर बड़ी रेखाएँ तीन) हों, वह राजा होता है। रेखाएँ छिन्न-भिन्न होनी चाहिए।

दो रेखाओं वाला भाग्यवान्,किन्तु आलसी होता है। बिना रेखा वाला भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ होता है।

जिसकी गर्दन में खड़ी रेखाएँ हों वह धनी और प्रतिभा संपन्न होता है। कटी-फटी रेखाओं वाला सदैव विपत्ति के चक्कर में रहता है।

## उदर

जिसके उदर में तीन रेखाएँ समान्तर पड़ी हों, वह विलासी एवं भाग्यवान होता है। जिसके दो हों, वह परिश्रमी और सिद्ध-हस्त होता है। एक वाला दरिद्री होता है। चार वाला लोलुप और अधिक वाला अभागा होता है। जिसके उदर में खड़ी रेखाएँ हों,वह चक्रवर्ती होता है।

# दूसरा अध्याय

## दाहिना पैर

पुस्तक में दाहिने पैर के चित्र और बाँए पैर के चित्र क्रमश: दिए गए हैं। चित्र में रेखाओं पर उनका क्रम नम्बर दिया हुआ है। नीचे उसी क्रम से चित्रों की रेखाओं का वर्णन किया जाता है। पाठकों को चाहिए कि रेखाओं का वर्णन पढ़ते समय चित्रों पर भी ध्यान रखें ताकि सब बातें उनकी समझ में आसानी से आ सकें।

१. यह रेखा सामान्य होती है। प्राय: सभी पैरों में होती है। यदि इसके साथ पैर पप और कोई बड़ी प्रत्यक्ष रेखाएं न हों तो मनुष्य अपनी उन्नति पर निर्भर रहेगा। मनुष्य आस्तिक कार्यशील तथा दीन-बन्धु होगा। यह रेखा हल्की होती है, उससे मनुष्य तीर्थातन अथवा सुन्दर नगर व देशों में भ्रमण करता है।

लम्बे और मोटे तथा देखने में सुडौल पांव वाला मनुष्य कार्यशील होता है। पतले और लम्बे भद्दे पैर वाला दरिद्री होता है। चौकोर और छोटे पैर वाला भाग्यवान होता है। ऐसा मनुष्य चालाक और गम्भीर भी होता है। छोटे और पतले पैर वाला आदमी या स्त्री अच्छी नहीं होती है।

## भाल रेखा

जिसके पैर में तीन भाल रेखाएं समानान्तर रूप से एक-सी, बिना टूटी-फूटी हुई चली गई हों, वह आदमी महात्मा अथवा भाग्यशाली होगा। जिसके ऊपर की रेखा कटी-फटी हो और नीचे की रेखाएं ठीक हों, वह आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता। वह धनवान होगा जिस की बीच की रेखा कटी-फटी हो, परन्तु वह अपनी स्त्री का सुख

नहीं भोग सकेगा। वह कुविचारी व विलासी होगा। जिसकी नीचे की रेखा कटी हो हो वह अत्यन्त दीन होगा।

जिसके एक ही रेखा हो वह दरिद्री होगा। विपत्ति बहुत उठावेगा। दो रेखाओं वाला सीधा और परिश्रमी होगा तथा भाग्यशाली होगा। जिसके अर्द्ध चन्द्राकार रेखाएँ हों वह महात्मा होता है।

२. इस प्रकार का चिन्ह हो तो प्राय: भाग्यशाली होता है। इस चिह्न वाली स्त्री प्राय: विधवा होती है अथवा जीवन में विपत्तियां उठाती है। इस चिह्न वाला मनुष्य सिद्धहस्त होता है, यदि इस चिह्न की केवल एक ही रेखा दाहिनी तरफ हो तो उसकी स्त्री पतिव्रता होगी। यदि यह बाँई तरफ हो तो उसकी स्त्री कर्कशा होगी।

जिसके दो समानान्तर रेखाएँ हों तो वह आदमी अध्यवसायी, परिश्रमी तथा अपनी धुन का पक्का होता है। यदि रेखा दाहिनी ओर हो तो वह सरल और विश्वासी व चतुर होता है। जिसके बाँई तरफ हो वह आदमी झूँठा और क्रूर होता है। जिसके अन्त से उठकर ऊपर की ओर रेखाएँ हों वह आदमी बुद्धिमान होता।

३. यह रेखा दोहरी होती है। वह पुत्रवान होता है।

४. यह भी दोहरी होती है, वह आदमी विचारवान व सफल यात्री होता है।

५. यह आदमी दरिद्री होता है।

६. यह आदमी अखण्ड विद्वान्, प्रतिभाशाली तथा धनवान होता है और केवल अपने ही बल और बुद्धि से उन्नति करता है।

७. यह गज रेखा होती है इस रेखा वाला पुरुष धनी, भाग्यशाली, प्रसन्नचित्त और आस्तिक होता है, परन्तु चित्त का दृढ़ नहीं होता। क्षण-क्षण में विचार बदलेगा।

८. यह रेखा दीन पुरुष के होती है।

९. यह गदा रेखा यदि सीधी हो तो आदमी शूरवीर होगा।

(चित्र नं० ३४)
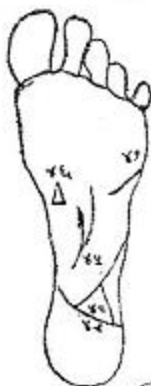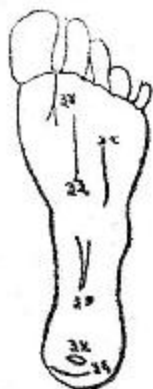
यदि इसी प्रकार अर्थात उल्टी होगी तो रणमें शत्रुके सामने से भागेगा और हार कर प्राण देगा।

१०. ध्वजा रेखा को धारण करने वाला पुरुष चक्रवर्ती राजा होता है।

११. त्रिशूल धारण करने वाला प्रधान और राज्य में मान प्राप्त करता है।

१२. यह धारण करने वाला संसार में पुरुषोत्तम होगा। यह आदमी रोग ग्रसित होकर नहीं मरेगा वह सिर के फटने अथवा सिर पर आघात होने से मरेगा।

१३. यह रेखा विद्वान के होती है।

१४. यह धनी होता है।

१५. इस रेखा वाला पुरुष पुत्रवान होता है।

१६. यह दरिद्री होगा यदि सब रेखा भी इसके साथ हों तो तह अत्यन्त दरिद्री होगा।

१७. यह रेखा वाला अनन्य भक्त होगा।

१८. यह शोक रेखा धारण करने वाला योगीश्वर होगा।

१९. यह रेखा वाला स्वभाग्योदय में प्रसन्न होगा यदि यह पहली रेखा से प्रथक् और अधिक गहरी होगी।

२०. मच्छ रेखा को धारण करने वाला महाप्रतिभाशाली और मनोनीत फल प्राप्त करने वाला होगा।

२१. यह आड़ी रेखा यदि बीच तलवे तक जाती है तो यह पुरुष परम विद्वान् होगा।

२२. यह स्वाभाविक रेखा धारण करने वाला बाहरी शत्रुओं को रण में परास्त करेगा। परन्तु पांच भूतों के वश में होगा। साथ-ही-साथ संसार का महापुरुष भी होगा।

२३. यह रेखा दरिद्र के होती है।

२४. इस रेखा वाला पुरुष दूसरे का धन हरण करेगा।

( चित्र नं० ३५ )
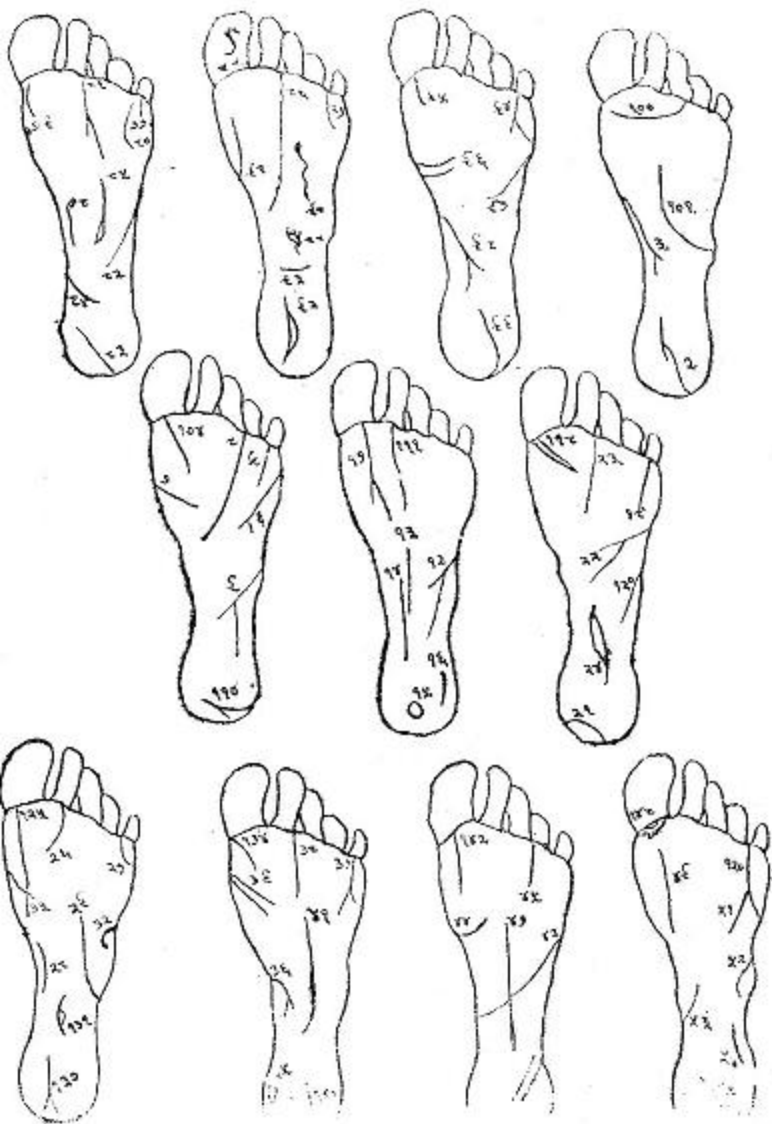
२५. इस रेखा वाला दूसरे की एकत्रित सम्पत्ति प्राप्त करेगा'

२६. यह रेखा वाला शीलवान् होता है और शीघ्र ही दरिद्र हो जाता है।

२७. यह रेखा वाला विदेश में मरता है।

२८. यह रेखा वाला कूटनीतिज्ञ होता है।

२९. ये रेखाएँ दो प्रकार की होती हैं। एक रेखा टूट कर कनिष्ठका की ओर जाती है, यह पुरुष पैतृक सम्पत्ति कुछ न पावेगा और दरिद्र से धनवान, यशवान और कीर्तवान होगा तथा शुद्ध और शान्त चित्त होगा, परन्तु भोगी व विलासी अधिक होगा। दूसरी भाँति वह जिससे एक रेखा निकलकर अंगूठे की ओर जाएगी, वह पुरुष अत्यन्त सुयोग्य प्रतिष्ठित वंश का और कीर्तिवान व धनवान् होगा। लोभी अवश्य होगा।

३०. यह आदमी धनी होगा। अचानक माया-मोह छोड़कर बैरागी होगा और सिद्ध पुरुष होगा

३१. यह आदमी पर-स्त्री गामी और सदैव विषयतृष्णा से प्रेम करेगा।

३२. यह अल्पायु होगा, अखण्ड यशवान होगा तथा अपने समय का महापुरुष होगा।

३३, यह आदमी झूँठा और पाखण्डी होगा।

३४. यह मनुष्य आत्महत्या करेगा।

३५. यह मनुष्य पूर्ण योगी होगा अथवा राजा होगा।

३६. यह रेखा अपने ऊपर की रेखाओं से सबसे नीचे होगी। इस रेखा वाला अपने वंश में एकमात्र पुरुष होगा।

३७. यह आदमी सज्जन और उदार होगा।

३८. यह आदमी सत्यप्रिय होगा।

३९. यह कूटनीति विशारद होगा।

४०. यह झूँठा और विश्वासहन्ता होगा।

४१. यह आदमी धनी और उदार होगा।

४२. यह आदमी ज्योतिषी या वैद्य होगा, ऐसी स्त्री वेश्या या कुटनी होगी।

४३. यह आदमी अल्पायु परन्तु सच्चरित्र होगा।

४४. यह माया से सम्पन्न होगा।

४५. यह आदमी चञ्चल होगा।

४६. त्रिकोण वाले आदमी पेट के लिए परदेश घूमेंगे।

४७. यह आदमी तार्किक होगा और नास्तिक अथवा वेदान्ती होगा।

४८. यह रेखा जो कोण बनावे तो वह आदमी अत्यन्त चतुर होता है, गणित में दक्ष होता है।

४९. यदि यह रेखा उक्त कोण को काट कर त्रिभुज बनावे तो वह आदमी निश्चय कारावास में जावेगा।

५०. यह चतुर्भुज यदि किसी के पैर में इसी प्रकार हो तो वह मठाधीश होगा, यदि केवल चतुर्भुज मात्र हो तो वह आदमी किसी का राज्य, धनादि सम्पत्ति पावेगा।

५१. यह रेखा इसी प्रकार टेढ़ी हो तो वह राजसी सुख भोगे और अचानक पददलित किया जावे।

५२. यह आदमी आडम्बरी और पाखण्डी होता है।

५३. यह रेखा वाला चतुर और छोटे से बड़ा होता है। अपनी समझ में वह अपने को सर्वश्रेष्ठ समझेगा।

५४. यह रेखा वाला भाग्यशाली होगा।

५५. यह आदमी दरिद्री होगा।

५६. इस प्रकार की टेढ़ी रेखा वाला मीमांसा करने या आयुर्वेद का ज्ञाता होगा।

५७. यह विदेशीयता भक्त होगा।

५८, यह अत्यन्त ही उदार और राजसी प्रवृत्ति का होगा।

५९. यह आदमी सदैव भक्त होगा और देव दर्शन प्राप्त करेगा।

६०. यह रेखा वाला पाखण्डी और क्रूर तथा ईर्ष्यालु होगा।

६१. यह आड़ी रेखा दोहरी होती है। यह बड़ी सम्पत्ति का अधिकारी होगा।

६२. यह रेखा दोहरी होने से विदेश में मौत होगी।

६३. यदि यह दोहरी रेखा कोण बनावें तो वह निर्वासित किया जायगा यदि यह रेखा ६२ वीं रेखा से मिले तो वह लौटकर कभी न आए।

६४. यह रेखा वाला यशस्वी होता है। यदि यह इकहरी रेखा हो तो वह बड़ा कीर्तिवान होगा। इसे सुअवसर कार्य करने को बहुत मिलेंगे। वह कामी अधिक होगा।

६५. यह तुला रेखा है। व्यवसाय में अधिक लाभ उठाएगा।

६६. यह चार के अंक के सदृश्य होती है, यह आदमी वेदाध्यायी और पारङ्गत होगा।

६७. चतुर्कोण यदि बीच में कटा हो तो वह अपनी सम्पत्ति को खो बैठेगा।

६८. यदि रेखा अँगूठे की ओर से चलकर एड़ी की ओर जाकर पैर को दो भागों में बाँटे तो वह आदमी गिरकर मरेगा।

६९. वह पुरुष वैरागी होगा।

७०. नेत्र रेखा यह आदमी दूसरे के नेत्रों से देखेगा।

७१. यह आदमी आलसी होगा और अपने पूर्वजों के मान को मेटेगा।

७२. इसके उदय होने पर आदमी बीमार होगा। यदि चार मास में न मर गया तो बाद में अच्छा होकर यह अधिक कीर्ति प्राप्त करेगा। परन्तु आगे चलकर मार-काट से मृत्यु होती है।

७३. यह अर्द्ध चन्द्राकर रेखा उदय होने पर परदेश ले जाती है और धनवान करती है। यह जन्म से हो तो वह अत्यन्त भाग्यशाली होगा।

७४. यह आदमी धर्म-विवेकी होकर सदैव भ्रम में रहेगा और उसकी सन्दिग्ध बुद्धि होगी।

७५. यह जिसके होगी अत्यन्त धन-उपार्जन करेगा परन्तु यह व्यसनी भी होगा।

७६. यह दोहरी रेखा धर्म रक्षक के होती है।

७७. यह रेखा वाला पुरुष कुटिल होता है।

७८. रेखा उदय होने पर कीर्ति व यश बढ़ाती है।

७९. यह रेखा पद तथा मान बढ़ाती है यदि जन्म से हो तो वंश की वृद्धि और कीर्ति की दाता होती है।

८०. यह पुरुष कुचक्री होता ह।

८१. यह रेखा अखण्ड विद्वान के होती है।

८२. यह आधुनिक सुधारकों के होती है।

८३. इसके उदय होने पर आदमी को हानि होगी और रोगी होगा।

८४. यह उदय होने पर रोगी आदमी को स्वस्थ भी रखती है और साधारणतया पुत्र उत्पन्न कराती है। जन्म से होने पर भाग्यशाली होता है।

८५. यह रेखा धर्म सुधारकों के होती है। ये लोग सनातन प्रथाओं को मेटते हैं।

८६. यह रेखा पतली लम्बी तथा सीधी होती है यह आदमी सरल चित्त तथा दूसरों के कानों से सुनने वाला होता है।

८७. यह आदमी पाखण्डी और बात का रोगी होता है।

८८. वृश्चिक रेखा युक्त आदमी जल में डूब कर मरेगा और अधिक धनी होगा।

८९. सर्प बैठा हुआ। यह आदमी विश्वासहन्ता और कुटिल होता है।

९०. सर्प खड़ा हुआ। यह आदमी प्राय: भेदिया होता है।

९१. यह आदमी सरल चित्त अत: अस्थिर और स्त्री जाति से घृणा करेगा।

९२. यह रेखा उदय होने पर माता-पिता आदि वंश में सबसे बड़े को घातक सिद्ध होती है। यदि जन्म से हो तो वह व्यक्ति उत्तम पद पावेगा।

९३. यह आदमी साधु होगा।

९४. यह कुकर्मी होगा।

९५. यह सज्जन परन्तु विलासी होगा।

९६. यह दोहरी रेखा वाला व्यक्ति नेता होगा।

९७. यह रेखा उदय होने पर विपत्ति लाती है।

९८. यह आदमी वैरागी होगा। साथ ही माया को छोड़कर पुन: माया में पड़ेगा।

९९. यह पुरुष सत्य की खोज जन्म भर करता रहेगा।

१००. यह पुरुष नया धर्म चलाएगा।

१०१. यह प्रत्येक वस्तु को सुधार और शङ्का की दृष्टि से देखेगा।

१०२. यह पुरुष निपुण होगा।

१०३. यह पुरुष जीर्णकाय और रोगी होगा। परन्तु धनी होगा।

१०४. यह आदमी सद्भावी और प्रभु का भक्त होगा।

१०५. यह आदमी मूर्ख और नीच होगा।

१०६. यह आदमी सदा कर्कश रहेगा।

१०७. यह आदमी दयालु और आस्तिक होगा।

१०८. यह सभी कामों को सूक्ष्म रूप में चाहेगा और कुछ न कर सकेगा। अधोगति को प्राप्त होगा।

१०९. यह आदमी अत्यन्त विलासी होगा और अनाचार करेगा।

११०. यह अत्यन्त सुशील और वर्णोचित धर्म अनुयायी तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होगा।

१११. यह आदमी निहित प्रेमी तथा अन्वेषक होगा।

११२. यदि यही एकमात्र देखा हो ( १०, ११ ) आदि न हों तो आदमी अत्यन्त दरिद्री होगा।

११३. व ११४. बारह के साथ होने से इन रेखाओं वाला आदमी शान्तिप्रिय होगा।

११५. इसके भी होने से अक्षय कीर्तिवान होगा।

११६. यह रेखा वाला बड़ा प्रतिष्ठित होगा और उसके सब यहाँ सम्पतियाँ रहेंगी और वह सदैव प्रतिष्ठित रहेगा।

११७. यह आदमी साधारण पुरुष होगा।

११८. यह आदमी तर्कशास्त्र का ज्ञाता होगा।

११९. यह आदमी अभागा होगा।

१२०. यह आदमी छली और आक्रमणकारी होगा।

१२१. यह सर्वप्रिय होगा।

१२२. यह विवादी अर्थात् झगड़ालू होगा।

१२३. यह आदमी रसवादी अर्थात् दो आदमियों को लड़ाकर स्वयं मजा देखेगा।

१२४. यह धनाढ्य होगा।

१२५. यह आदमी अत्यन्त दीन स्वभाव, मृदुभाषी और आस्तिक होगा।

१२६. यह आदमी अत्यन्त उदार होगा।

१२७. यह पाखण्डी होगा।

१२८. यह आदमी विवेकी होगा।

१२९. यह आदमी या तो सेनापति होगा अथवा प्रसिद्ध दस्यु होगा।

नोट—१२५ से १२९ तक की यदि सभी रेखाएं हों तो ऐसा आदमी अत्यन्त धनी और असाधारण होगा, सैकड़ों आदमी उसके पीछे चलेंगे।

१३०. यह आदमी बड़ा विचारवान और सात्विकी होगा।

१३१. इस तरह के आदमी प्रायः नहीं होते। यदि कोई हो तो वह महापुरुष होगा।

१३२. यह आदमी अत्यन्त चतुर और कूटनीतिज्ञ होते हैं।

१३३. यह आदमी सुहृदय होते हैं।

१३४. यह सरल और उदार होता है।

१३५. यह जिज्ञासु और मुमुक्षु होता है।

१३६. इस आदमी की सभी सद् इच्छाएँ पूर्ण होती रहेंगी।

१३७. यह आदमी देखने में भोले परन्तु बड़े कुविचारी, विलासी और रक्षक बनकर भक्षक होते हैं।

१३८. यह अत्यन्त उदार और संयमी होते हैं।

१३९. यह आदमी अत्यन्त धनवान और स्त्री-हीन परन्तु विद्वान् होगा।

१४०. यह रेखाएं यदि दो हों तो धनी, तीन हों तो कुविचारी, चार हों तो चोर और यदि एक हो तो योगी, पाँच हों तो राजा और छः हों तो सिद्ध होता है।

१४१. यह आदमी चतुर और प्रखर बुद्धि का होता है।

१४२. यह रेखाएं यदि दो हों तो दानी लोभी, तीन हों तो विलासी और चार हों तो धनी होता है।

१४३. यह रेखा वाला दीर्घजीवी तथा विचारवान होता है। वह आदमी विरक्त होना चाहेगा, परन्तु न हो सकेगा।

१४४. यह रेखाएं यदि तीन हों तो यह अत्यन्त भाग्यशाली, एक हो तो साधारण और यदि दो हों तो दूरदर्शी होगा।

१४५. यह आदमी तीन रेखा वाला उदार, दो वाला कुटिल और एक वाला कामी होगा।

१४६. इस तरह की तीन रेखा वाला, क्रोधी, दो वाला धनी, एक वाला व्यवसायी व सिद्धहस्त होगा।

१४७. यह आदमी अत्यन्त प्रतिभाशाली होता है।

१४८. उङ्गली व पैर के जोड़ पर एक रेखा होना अच्छा है, यवाकार है तो अति उत्तम और यदि जंजीरदार हो तो दरिद्रता का चिन्ह है।

१४९. यह आदमी बड़ा विद्वान् होगा।

१५०. यह आदमी कामातुर होकर सभी कुछ कर सकता है।

१५१. यह आदमी अत्यन्त आस्तिक परन्तु प्रायः कामी होता है।

१५२. यह आदमी सदैव व्यर्थ की उधेड़बुन में पड़कर जीवन नष्ट करते हैं।

१५३. यह आदमी घर या बाहर सुखी रहेगा।

१५४. यह आदमी दरिद्री होगा।

१५५. यह आदमी जिसकी यह रेखा गज रेखा से जाकर मिले और वहाँ समाप्त हो जाय तो उसका भाग्योदय उसकी स्त्री के भाग्य पर निर्भर है। उसका विवाह प्रायः भाग्यवान स्त्री से होता है।

१५६. जिसकी यह रेखा ऊँची उठकर गज रेखा से मिल जाये और समाप्त हो जाए तो वह आदमी धनी, गुणग्राही और सौहार्द्र होगा।

---

# तीसरा अध्याय

## बांया पैर

१५७ व १५९ रेखाएँ यदि दोनों हों तो अच्छा है। इसी तरह १५८ व १६० रेखाएँ अच्छी होती हैं।

बाँए पैर के चित्र में रेखाओं का क्रम १६ नम्बर १ से आरम्भ किया गया है। नम्बर १ से लेकर १५ तक की रेखाओं का वर्णन अलग से किया है, इनका चित्र से सम्बन्ध नहीं है।

१. यदि बाँए पैर और दाहिने पैर में एक-सी रेखाएँ हों तो वह आदमी साधारण रहेगा।

२. दाहिने पैर की अपेक्षा बाँए पैर में अधिक रेखाएँ हों तो वह प्राणी श्रेष्ठ होगा तथा अपनी स्त्री अथवा अन्य स्त्री के कारण यश धनादि पावेगा। यह उक्ति अपनी माता व प्रमाता के नैहर से पाई हुई सम्पत्ति पर भी लागू होगी।

३. यदि राज्य चिन्ह जैसे शंख, चक्र, गदा, पद्म, पताका आदि बाँए पैर में हो तो वह ठीक नहीं। वह प्राणी पददलित किया जावेगा।

४. यदि पाम बाद यव त्रिकोण हो तो वह भाग्यशाली होता है।

५. बाँए पैर में यदि चतुष्कोण हो तो अभागा होता है। अपनी पैतृक सम्पत्ति बेचकर परदेश निकल जावेगा।

६. बाँए पैर में यदि गज रेखा हो तो उसे गृहस्थी शान्ति नहीं मिलती, जीवन कलहपूर्ण रहता है।

७. बाँए पैर में यदि उल्टी गदा रेखा हो तो वह दुश्मन से कभी न दबे और बड़ा बीर हो, परन्तु धोखे से मारा जाएगा।

८. बाँए पैर में यदि मच्छ रेखा हो तो उसकी मनोकामनाएँ बहुत बड़ी हों और वे कभी पूर्ण न हों।

९. इस बाँए पैर में यदि वृश्चिक रेखा हो तो उसकी स्त्री अपने मामा अथवा पितृ-भगिनी के हाथों द्वारा पली-पोसी गई होगी और वहाँ से धन पावेगी।

१०. यदि सर्परेखा हो तो वह आदमी अत्यन्त उदार, क्रोधी भी अधिक हो। वह प्राणी सर्प द्वारा काटा जावे अथवा स्त्री के षड्यन्त्रों द्वारा मारा जावेगा।

११. जिनके बाँए पैर की उंगली टेढ़ी हो वह प्राणी अपनी स्त्री से कभी सुख न पावेगा।

१२. जो प्राणी अपने बाँए पैर को लथेड़ कर चले वह प्राणी धनवान होगा।

१३. जिसके पैर में नेत्ररेखा हो वह प्राणी परस्त्री गामी होगा।

१४. जिसके पैर में गोल शून्य हो वह आदमी अत्यन्त धनीमानी हो परन्तु अन्त समय में सब कुछ खो बैठेगा।

१५. बाँए पैर में यदि मीनरेखा उल्टी हो और उसका मुख ऐड़ी की तरफ हो तो वह प्राणी अत्यन्त विलासी और सदैव कामना में रत रहेगा।

१६. रेखा वाला प्राणी अत्यन्त निर्धन होगा।

१७. यह प्राणी धर्म कार्यों से चित्त शान्त करेगा।

१८. यह प्राणी सदैव दुष्टता करेगा।

१९. यह प्राणी हिंसक होगा।

२०. यह प्राणी अत्यन्त सीधा और कोमल तथा मृदुभाषी होगा।

२१ से २५ तक की रेखाएँ यदि सब हों तो वह अत्यन्त धनी और प्रतिष्ठित हो। यदि तीन हों तो पुत्रहीन हो, एकाध हो तो अभागा होगा।

२६ से ३० तक की सभी रेखाएँ हों तो वह भाग्यवान् हो, जो भी कार्य करना चाहे, वही कार्य पूर्ण हो। इसके साथ-ही-साथ वह बड़ा कूटनीतिज्ञ होगा।

( चित्र नं० २६ )

३१. इस रेखा वाला मनुष्य अत्यन्त नास्तिक होता है।
३२. यह घोर कुकर्मी होगा।
३३. कुमार्ग गामी के यह रेखा होती है।
३४. यह पहले नास्तिक रहेगा बाद में स्वधर्म-पालक बनेगा।

३५. यह दोहरी रेखा वाला आदमी सदैव कपोल कल्पनाएँ किया करेगा। व्यर्थ के तर्क और बात-बात पर शंका करेगा, सदैव नई चालें सोचा करेगा।

३६. यह आदमी अत्यन्त श्रेष्ठ होगा।

३७. यह आदमी ऋण लेने में सिद्धहस्त होगा तथा दूसरे की चीजों की ताक में रहेगा।

३८. यह आदमी सदैव सतकर्मों का पालन करेगा लेकिन ईर्ष्यालु, होगा।

३९. यह आदमी उदार, पुत्रवान् और कीर्तिवान होगा।
४०. यह आदमी अत्यन्त ही कामी परन्तु दीनबन्धु होता है।

४१. यह आदमी स्त्रियों के पास बैठने योग्य नहीं है। यदि यह अवकाश पावेगा तो पूज्य स्त्रियों से भी बिहार करेगा, यदि यह रेखा स्त्री के दाहिने पैर में हो तो वह भी कुलटा होगी।

४२. यह आदमी आस्तिक होता है लेकिन मन चाहने पर प्रभुसेवा करता है, आलसी बहुत होता है।

४३. यह आदमी समय का मूल्य जानने वाला होता है।

४४. यह आदमी सदैव दूसरों को कुमार्ग में ढकेलने वाला होता है।

४५. यह आदमी दूसरों के वैभव को न देख सकेगा, उसे हड़पने की ताक में रहेगा।

४६. यह आदमी सदैव मनमोदक खाएगा और सफलीभूत किसी कार्य में न होगा सदैव आलस में रत रहेगा, विलासी अधिक होगा।

४७. यह तीर्थाटन करेगा।

( चित्र नं० ३७ )
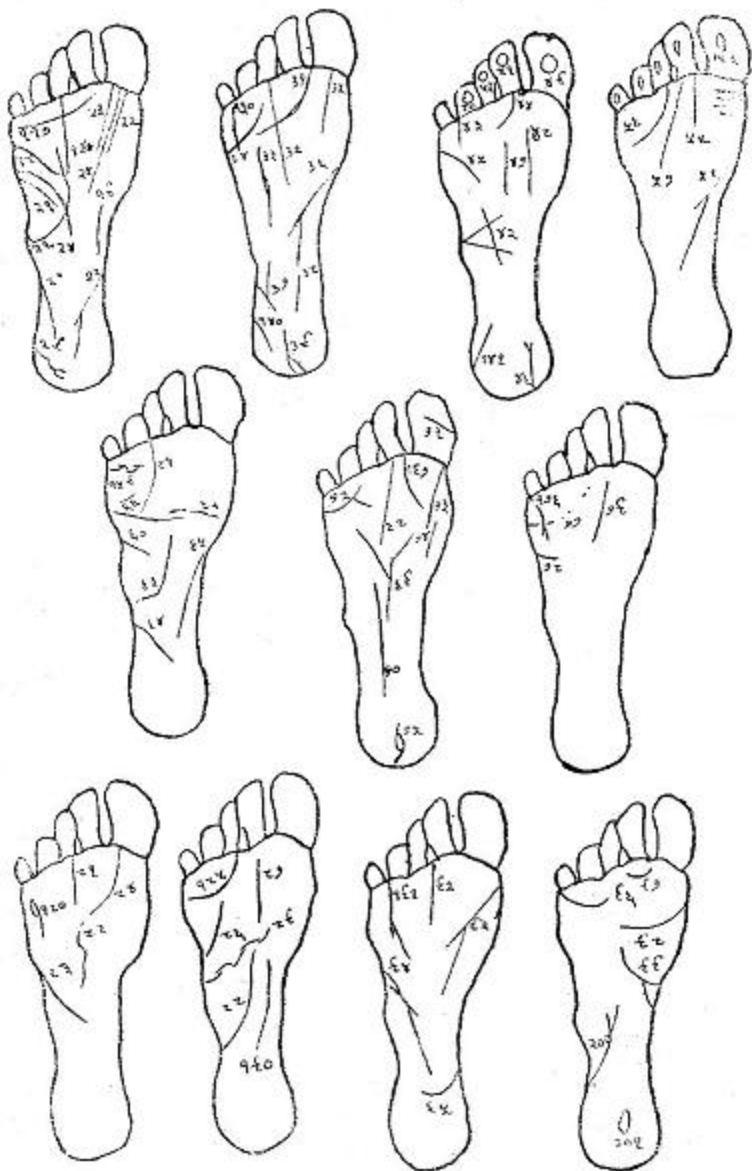
४८. यह दो नगर देखेगा।

४९. यह स्थिरचित्त न होगा, कार्य आरम्भ करके छोड़ देगा।

५०. इसकी रेखाएं यदि ४९ वीं रेखा को काटकर चतुष्कोण बनावे तो यह मनुष्य अत्यन्त भाग्यवान और कुलदीपक होगा।

५१. यह आदमी तर्कशास्त्र का ज्ञाता होगा और सुन्दर स्त्री पावेगा।

५२. यह श्रेष्ठ कुल की स्त्री पावे तथा साथ-साथ सम्पत्ति भी पावे।

५३. यह आदमी सदैव दूसरे की आँखों से देखेगा और दूसरों के कानों से सुनेगा।

५४. यह आदमी सदैव क्रूर चालें सोचेगा और अपने समीप-वर्तियों को उनमें फँसावेगा।

५५. यह दूसरों के कहने में आकर अपना सर्वस्व स्वाहा करेगा।

५६. इस रेखा वाला गम्भीर, दूरदर्शी, समय को न छोड़ने वाला और चालाक होता है।

५७. यह आदमी लड़ाका होगा।

५८. यह आदमी छलिया होगा।

५९. यह मनुष्य घर से बाहर ही अधिक सुख पावेगा।

६०. यह मनुष्य सुन्दर स्त्री पावेगा।

६१. यह सुन्दर पुत्रवान होगा।

६२. इसका पुत्र कुकर्मी होगा।

६३. यह ऊँचा पद पावेगा।

६४. ये मनुष्य प्रायः सौदागर होते हैं, ऊँचा व्यापार करते और बड़े-बड़े उच्चपदाधिकारियों के कृपापात्र होते हैं।

६५. यह आदमी प्रायः रोगिणी स्त्री पाता है।

६६. यह मनुष्य संक्रामक रोगों से ग्रसित रहता तथा निम्नश्रेणी

की स्त्रियों से प्रेम करता है।

६७. यह आदमी प्राय: स्त्रियों का क्रय-विक्रय करके धनोपार्जन करता है।

६८. ये मनुष्य बड़े उदार और भगवत भक्त होते हैं।

६९. यह आदमी सदैव पराया अन्न खाता है।

७०. ये दूसरों की कमाई खाते हैं और आलसी होते हैं।

७१. यह झूँठा, लबार होता है।

७२. यह दूसरों की स्त्रियों को बुरी दृष्टि से सदैव देखेगा।

७३. यह कुलटा स्त्रियों के कुचक्रों में पड़कर अपना सर्वनाश कर लेता है।

७४. यदि यह आदमी ब्राह्मण हो तो वंश का कलंक होगा यदि अन्य वर्ण हो तो अच्छा होता है।

७५. यह आदमी प्राय: कामी होते हैं।

७६. यह आदमी सदैव पराई सम्पदा को ताकते हैं और अभागे होते हैं।

७७. यह मनुष्य पुत्रहीन होगा।

७८. यह मनुष्य अनेकों विद्याओं का जानकार होता है।

७९. यह मनुष्य सदैव दूसरों के बल पर गरजता है, बुरे धन ग्रहण करने में आगा-पीछा कुछ न सोचेगा।

८०. ये मनुष्य प्राय: योगी होते हैं।

८१. यह मनुष्य इस रेखा के उदय होने पर ऊँचा पद पावेगा।

८२. इसके उदय होने पर कहीं से गिरेगा व पदच्युत होगा।

८३. इसके उदय होने पर गड़ा हुआ धन मिलेगा।

८४ इसके उदय होने पर पुरुष अपने मित्र की स्त्री से और यदि स्त्री हो तो पति से मिलेगी।

८५. यदि यह यवाकार पाँचों उङ्गलियों में हो तो वह आदमी राजसी सुख भोगेगा।

८६. यह आदमी शारीरिक परिश्रम करके धन पैदा करेगा।

८७. यह कवि होगा।

८८. यह विद्वान् होगा।

८९. यह विचारवान होते हुए भी स्त्रैण अधिक होगा।

९०. यह सौन्दर्य का उपासक, कवि या चित्रकार होगा।

९१. वह जिस कार्य को करेगा पूर्ण ही करके छोड़ेगा।

९२. यह मनुष्य न्यायाधीश होगा।

९३. यह आदमी परम भगवत भक्त होगा।

९४. यह तान्त्रिक होगा।

९५. यह आदमी प्रेतों का भक्त होगा।

९६. यह उच्च पद पावेगा।

९७. यह दीर्घजीवी होगा।

९८. यह स्त्री के कारण प्राण देगा। इसे जल से बचना चाहिये।

९९. यह बड़ा भाग्यशाली होगा।

१००. यह बड़ा धनवान होगा परन्तु कुपुत्रवान भी होगा।

१०१. इस रेखा वाला अपने भाइयों को नेष्ट है।

१०२. यह आदमी बड़ा ही कीर्तिवान परन्तु ईर्ष्यालु होगा।

१०३. इसके कन्यायें अधिक होंगी।

१०४. इसके पुत्र व कन्यायें बराबर होंगी।

१०५. यह आदमी दूसरे की स्त्रियों को वीर्यदान देकर दूसरों के पुत्रोत्पत्ति करेगा तथा स्वयं निपुत्र रहेगा।

१०६. यह आदमी विकारी दूसरे वंश के वीर्य से उत्पन्न हुआ होगा।

१०७. यह आदमी श्रद्धालु, धनी, भगवत् भक्त परन्तु कामी होगा।

१०८. यह आदमी तुरन्त दण्ड देने वाला, कठोर हृदय होगा। इसके मित्र कम होंगे।

१०९. यह बड़े-बड़े उच्च पदाधिकारियों का कृपापात्र तथा समाज में प्रतिभाशाली व्यक्ति होगा।

११०. इसके दुश्मन बहुत होंगे परन्तु शीघ्र ही नष्ट होते जाएंगे।

१११. यह आदमी भिखारी होगा।

११२. यह दुर्व्यसनी होगा।

११३. यह कुल-कलंकी होगा। यह आदमी चतुर और गुण-ग्राहक होगा।

११४. यह चतुर परन्तु ईर्षालु होगा।

११५. यह उपकार के बदले तिरस्कार और बदी करेगा।

११६. यह कंगाल से धनी, नम्र होगा।

११७. यह बड़ा ही घमण्डी होगा तथा हानि उठाएगा।

११८. यदि श्वेत वस्तु का व्यापार करे तो लाभ उठाएगा।

११९. यह आदमी सरल चित्त तथा योगी होगा।

१२०. यह सदैव प्रपंचों से निकलने की कोशिश करेगा परन्तु और फंसता जाएगा।

१२१. यह आदमी बात-बात पर विचार करेगा और सदैव युद्ध के हेतु तत्पर रहेगा।

१२२. यह स्वतन्त्र विचार होता है, दूसरे की प्रभुता स्वीकार नहीं करता।

१२३. यह आदमी सदैव दूसरे के कहने में चलकर अपना सर्व-नाश कर बैठते हैं यद्यपि यह स्वयं उन्नतिशील होते हैं, तो भी इनके मित्र व उपदेष्टा कुकर्मी होते हैं।

१२४. ये आदमी विद्वान् और गान-विद्या के प्रेमी होते हैं।

१२५. ये निशाचर प्रकृति के होते हैं।

१२६. यह आदमी दूसरे और नीच वंशीय वीर्य से उत्पन्न होगा।

१२७. यह उद्यमी होगा।

१२८. यह सदैव दूसरे की बुराई करने में रत रहेगा।

१२९. यह पहले वैरागी रहेगी, परन्तु फिर गृहस्थी बन जावेगा।

१३०. यह कृपालु होगा।

१३१. यह सदैव रोगी रहेगा।

१३२. यह स्वगृहणी को छोड़ पराई स्त्री से प्रेम करेगा।

१३३. यह बहुत ही विद्वान् होगा।

१३४. यह आदमी बड़ा परिश्रमी और चतुर होगा।

१३५. यह सदैव परमुखापेक्षी रहेगी।

१३६. यह सरल चित्त तथा उदार रहेगा।

१३७. यह संयमी परन्तु नास्तिक रहता है।

१३८. यह संयमी और निरन्तर प्रभु सेवक रहता है।

१३९. तीन दोहरी आड़ी रेखाओं से मिलने पर यदि त्रिकोण बने तो तीन सुयोग्य बेटे हों। तीनों सिद्धहस्त होंगे। मध्य का कुछ लबार होगा।

१४०. यह ईर्षालु होता है।

१४१. यह विद्वानों को देखकर प्रसन्न होने वाला तथा चार बेटों वाला होता है।

१४२. यह स्त्रैण और अधिक कन्याओं वाला होता है।

१४३. यह धनी-मानी और उच्च अभिलाषाओं वाला होता है।

१४४. यह अपने कुटुम्बियों को आपस में लड़ाकर उनका नाश करता है। देखने में गंभीर परन्तु बड़ा कुचक्री होता है,और बड़ा धनी भी होता है।

१४५. यह मृदु स्वभाव वाला एवं धनी होता है। यदि अकेला हो तो धन संचय न कर पावेगा।

१४६. केवल यही चक्र हो तो बड़ा मितव्ययी होगा।

१४७. केवल यही चक्र होगा तो अपव्यय करेगा।

१४८. केवल यही चक्र हो तो दूसरों से शत्रुता कराये और विजय प्राप्त करेगा।

१४९. केवल यही चक्र हो तो दूसरे को आश्रित बना देगा।

१५०. यदि अंगूठा व पहली उंगली में दो चक्र हों तो धनी होगा। यदि अंगूठे व दूसरी उंगली में दो चक्र हों तो धनी। यदि अंगूठे व तीसरी उंगली में दो चक्र हों तो सुन्दर स्त्री मिले। यदि अंगूठे व चौथी उङ्गली में दो चक्र हों तो हठी हो। यदि पहली उङ्गली व दूसरी में दो चक्र हों तो सुन्दर स्त्री वाला व पुत्रों के लिए नेष्ट है। यदि पहली व तीसरी उङ्गली में चक्र हों तो हठी और मदान्ध रहेगा। यदि पहली उङ्गली व चौथी में चक्र हों तो कीर्तिवान तथा यदि केवल यदि पहली में ही चक्र हो तो सुन्दर योग है। यदि दूसरी उङ्गली ही में चक्र हो तो ठीक नहीं। यदि तीसरी में भी हो तो वह सुपुत्र-वान होगा। यदि तीसरी में ही चक्र हो तो धनी और यदि चौथी के साथ है तो राज कर्मचारी होगा। यदि केवल चौथी में ही हो तो विलासी होगा।

१५१. यदि पाँचों शङ्ख हों तो मनुष्य साधु प्रकृति का होता है। चार होने से दुःखी, तीन से सुखी, दो से पुत्रहीन और यदि एक हो तो धनी परन्तु पुत्रहीन होता है।

१५२. यदि इसमें तीन रेखाएँ हों तो धनी, एक या चार (तीन से अधिक) ठीक नहीं होतीं।

१५३. इस रेखा वाला आदमी हमेशा अपने जीवन को दूसरों की भलाई में व्यतीत करेगा।

१५४. यह आदमी कभी दूसरों के धन की आशा न करेगा व व्यापार में सन्तुष्ट रहेगा।

१५५. यह आदमी कभी अपनी स्त्री से सुखी न रहेगा।

१५६. यह आदमी अत्यन्त विषयी परन्तु अविवाहित रहेगा।

१५७. यह शिल्पजीवी होगा।

१५८. यह बड़ा ही कौतुकी, हंसमुख तथा विदूषक होगा।

१५९. इसे बन्दीगृह में जाना होगा।

१६०. इसके उदय होने पर शारीरिक कष्ट हो, अच्छा होने पर पुत्र उत्पन्न कराती है। यदि जन्म से ही है तो पुत्रवान् जानो।

१६१. इससे पुत्र-शोक मिलता है।

१६२. इसमें स्वसुर से सम्पत्ति मिलती है।

१६३. इससे बन्दीगृह में जाना पड़ता है।

१६४. इसके विवाह बहुत हों पर स्त्रियाँ मर जांय।

१६५. इसे समय-समय पर दैवी मदद मिलती रहेगी।

१६६. यह स्वतन्त्र धर्म और नीति का मानने वाला होता है।

१६७. ये दो प्रकार की होती हैं। एक की शाखा फूटकर अँगूठे की ओर जाती है और एक की कनिष्ठका की ओर, पहली कटी हुई वाला धन तो खूब अर्जन करे परन्तु सञ्चय न कर सकेगा। दूसरा आदमी सुन्दर परन्तु कर्कशा स्त्री वाला होगा।

१६८. यह रेखा यदि उदय हो तो दो मास तक कठिन आपत्ति अथवा रोग रहे। जन्म से होने पर रेखा इधर-उधर भटकाती है। पहली दशा में बीमारी के बाद शान्ति देती है।

१६९. यह तीन मास तक रुग्ण रखकर मौत करे, यदि कोई अच्छे ग्रह हों तो भले ही बच्चे जन्म से होने पर कर्कशा स्त्री मिले व पुत्र शोकादि पड़े।

१७०. यह आदमी तत्त्वज्ञानी और विरक्त होता है।

१७१. यह आदमी इसके उदय होते ही विरक्त हो जाता है।

१७२. यह आदमी मोक्ष चाहने वालों में परम पद को प्राप्त होता है।

१७३. यह आदमी अत्यन्त लम्पट होगा। इसके उदय होने पर अन्न का दुःख पड़े।

१७४. यह आदमी कर्कश होगा, स्वयं दूसरों को लड़ाएगा तथा सदैव लड़ने व लड़ाने की युक्तियाँ सोचेगा।

१७५. यह आदमी अधिक दयार्द्र होता है, इसके उदय होने पर

इसके पुत्री उत्पन्न होगी।

१७६. यह मनुष्य दीन, प्रेमी परन्तु विलासी अधिक होगा। उदय होने पर पुत्र व धन देगी, अन्त होने पर शारीरिक पीड़ा देगी।

१७७. यह अत्यन्त ही विलासी तथा शृंगार रस का प्रेमी व गान-विद्या का विशारद होगा।

१७८. यह कोमल व मृदु स्वभाव का अति धनी होगी, इसके उदय होने पर बड़ा भारी वज्रपात सम दुख पड़े।

१७९. यह अत्यन्त कृपण होगा व इसके पुत्र जीवित न रहेंगे।

१८० यह प्रेत भक्त और हिंसक होगा।

१८१. यह अत्यन्त सुशील होगा। उदय होने पर स्त्री की मौत होगी।

१८२. यह अत्यन्त ही निष्ठुर होगा। इसकी चोरी व अन्त होने पर इसकी मौत होगी।

१८३. यह उदय होने पर मनुष्य को बड़े कष्ट देगी। यह मनुष्य अल्पायु और अभागा होगा, यह रेखा स्त्री को अटल सौभाग्यदायनी है।

१८४. यह मनुष्य पीले जंग की चीज से व्यापारमें लाभ उठाएगा।

१८५. यह कुचक्री, कुचाली होगा। उदय होने पर अपने कुचक्र से धन पावेगा, अस्त होने पर सर्वनाश होगा।

१८६. यह अत्यन्त चतुर व उन्नतशील होगा, परन्तु झूँठ अपराध से जेल जायगा।

१८७. यह व्यापार में हानि उठायेगा। इसके उदय होने पर हानि ही हानि होगी। स्त्री के नाम से व्यापार करे तो लाभ होगा।

१८८. यह स्वाभिमानी व कानूनी होगा, विश्वासघाती व अस्थिर बुद्धि का होगा।

१८९. यह कुकर्मी होगा।

१९०. यह अत्यन्त गुणवान और सभा-चतुर राजकर्मचारी होगा, उदय होने पर उच्च-पदस्थ राजकर्मचारी हो। पहले तो यह अस्त ही नहीं

होती यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

१९१. यह मनुष्य धनवान होगा। यह अपने कर्म के फलस्वरूप किसी से सम्पत्ति पावे, परन्तु मिलने के समय कोई उसमें से आधा भाग बटवाले, अतः उसे आधा भाग मिले।

१९२. यह अत्यन्त ही चतुर और व्यवसाय में उन्नतिशील होगा, इसके उदय होने पर कोई अच्छा रोजगार हाथ लगे। यह अस्त नहीं होती, यदि हो तो अनिष्ट नहीं करती।

१९३. यह सरल चित्त और अधिक कन्याओं वाला होता है। इसके उदय होने पर पुत्र की मौत होती है।

१९४. यह आदमी सुन्दर-सुन्दर स्त्रियों से रमण करे, धनी-मानी हो तथा राजचिह्नधारी हो।

१९५. यह सरल विश्वासी होगा। यदि यह दोनों पैर में हो तो निश्चय देव-दर्शन प्राप्त करे।

१९६. यह आदमी सङ्गीत व धनुर्विद्या का ज्ञाता होगा, इसके उदय होने पर उसे कोई कोष प्राप्त हो।

१९७. यह आदमी कठोर प्रकृति का होता है तथा सन्दिग्धचित्त होता है।

१९८. सरल विश्वासी और अनेकों जन्म से भक्त होता है। इस जन्म में भी भक्त ही रहे। देव-दर्शन की आशा ही नहीं, आगे हर इच्छा।

१९९. यह भक्त और देव-दर्शन का लालची रहे, सत्कर्म करे। इस रेखा के उदय होने पर कहीं से इसे धन मिले।

२००. यह आदमी दुर्व्यसनी और वेश्या-प्रेमी रहे।

२०१. यह सुन्दर स्त्री वाला और सुन्दर विचारों वाला होता है, इसके उदय होने पर इसे कुछ दैवी अनुभव प्राप्त हो।

( चित्र नं ३८ )
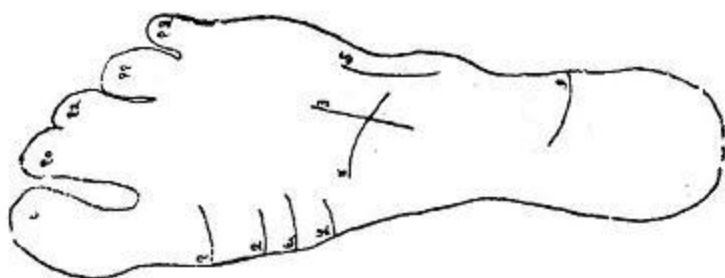
[ पैर की रेखाओं की स्थिति का पूर्ण आशय समझने के के लिये उपर्युक्त दिये हुए चित्र की रेखाओं पर विचार करें। ]

( चित्र नं० ३९ )
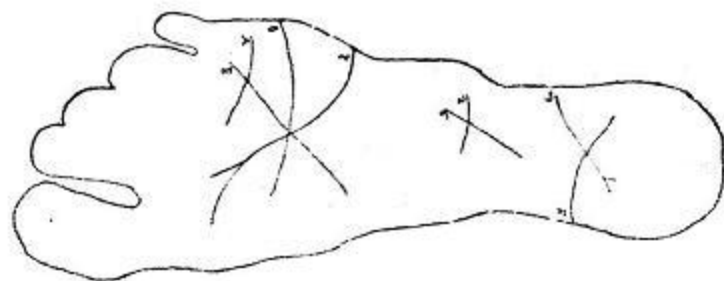
[ जिस प्रकार हाथ की रेखाएँ एक-दूसरे से काटे जाने से कार्य में बाधा डाल देती हैं उसी प्रकार पैर की रेखाओं का फल होता है। इसलिए उनकी स्थितियों का पूर्ण ज्ञान करने की अधिक आवश्यकता होती है। ]

( चित्र नं० ४० )
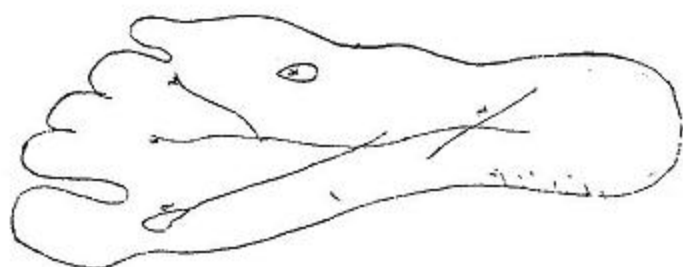
[ ऊपर दिए हुए पैर में रेखाओं ने अपनी स्थिति बदल दी है। अत: इसके बारे में इस चित्र के द्वारा जानकारी प्राप्त करें। ]

( चित्र नं ४१ )
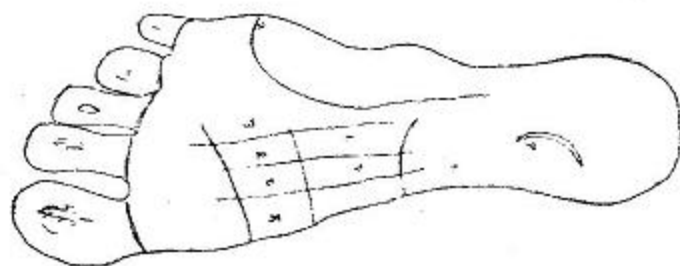
[ यह चित्र बाएं पैर से समानता रखने वाली रेखाओं के क्रम को लेकर बनाया गया है, इसकी रेखाओं की क्या स्थिति होती है ? यह हाल जानने के लिए चित्र को देखें। ]

( चित्र नं० ४२ )
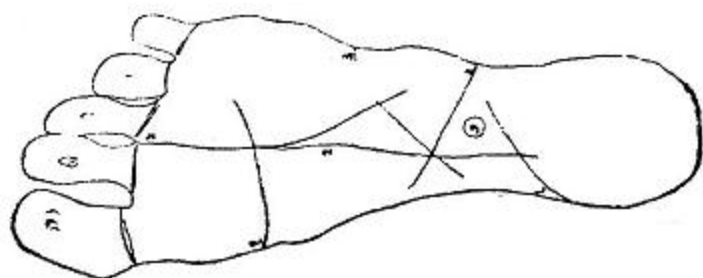
[ पैर में वृत की स्थिति कहां होती है, वह इस चित्रके द्वारा जानने की चेष्टा करिये ।]

( चित्र नं ४३ )
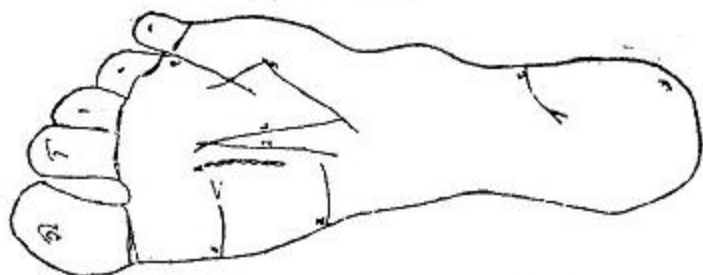
[ रेखा जाल अर्थात् जंजीर पैर में अवश्य होती है, उसकी स्थिति का ज्ञान इस चित्र से प्राप्त करे । ]

( चित्र नं० ४४ )
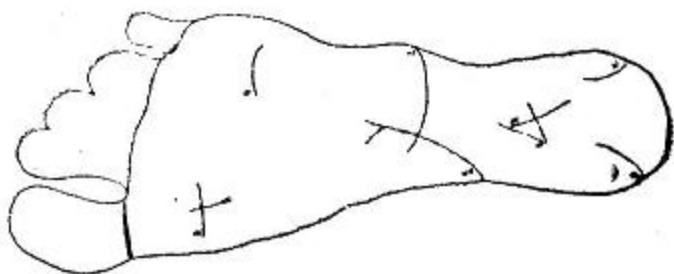
विषम रेखाएं किस तरह अपनी स्थिति प्रगट करती हैं, इस [चित्र से जानने की चेष्टा करें। ]

( चित्र नं० ४५ )
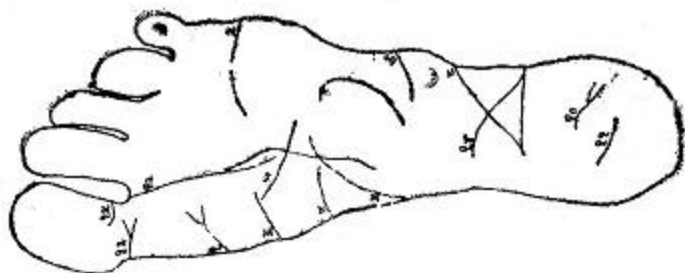
[ पैर में पद्म की स्थिति वास्तव में किस स्थान पर होनी चाहिए, जानने के लिये इस चित्र का स्थल नं १ देखें ]

( चित्र नं० ४६ )
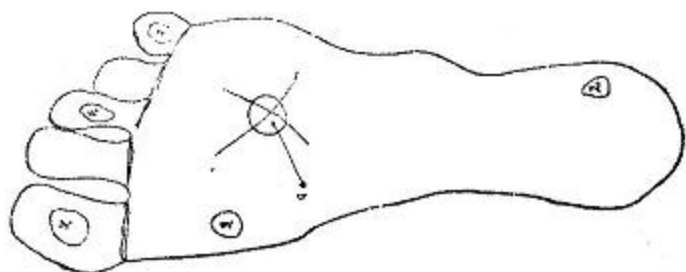
[वृत में यदि दो रेखाएं मिलकर एक दूसरे को काटें तो उनकी जो स्थिति होती है वही इस चित्र में दिखाई गई है ।]

---

# चौथा अध्याय

## भिन्न-भिन्न ग्रहों के गुण वाले व्यक्ति

### गुरु के गुण वाले

सामान्य कद, मजबूत बनावट, रङ्ग साफ, मांस से भरा हुआ, आंखें बड़ी, चेहरे पर मुस्कराहट, पुतली बड़ी-गोल और साफ पलकें, मोटी बरौनी, लम्बे बाल, लम्बे-मोटे और मुड़े हुए होंठ, भौंह कमानी-दार, नाक-मुँह बड़ा और मोटा, गाल माँस से भरे हुए, ठुड्डी लम्बी, शरीर में बाल अधिक और हाथ में पसीना अधिक आता है। वे खामोशी से शान के साथ चलते हैं, उङ्गली समकोण होती हैं। वाणी भी साफ और मधुर होती है।

स्वास्थ्य-पित्त प्रकृति रङ्गीन मिजाज, गठिया अक्सर होती है। खूब खाने-पीने वाले और इन्द्रियों के वशीभूत, बुरी वासना नहीं होती। गुरु का शासन सिर, फेफड़ा, व गले पर है। इससे बहुधा फेफड़े व गले में शिकायत होती है।

मानसिक-शक्ति—जन-साधारण का कार्य करने वाले, ऊँचे पद पर पहुँचने वाले और विशेष आत्माभिमानी, अतिथि सत्कारी, अच्छे भोजन के खाने व खिलाने के शौकीन, नेक स्वभाव, उदारचित्त, धन खूब खर्चने वाले और प्रत्येक नीच तथा कंजूस के कार्य से घृणा करने वाले होते हैं। धार्मिक और शान्त होने के साथ, बाहरी सजधज से रीति-रसम को करने वाले, राजसी ठाठ और पुरानी रिवाज को मानने वाले, कानून और हुक्म की पाबन्दी करने वाले, शान्ति चाहने वाले, परन्तु धोखे और दङ्गों से घृणा करने वाले और जो उनके प्रियतम को

तङ्ग करें उनसे लड़ने वाले होते हैं। वे सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं और मित्रता निभाते हैं।

यदि अशुभ चिन्ह वाले हों तो घमण्डी, किफायतशार, स्वार्थी व शेखीबाज होते हैं तथा उनकी ६० वर्ष की आयु होती है।

## शनि के गुण वाले

लम्बे,पतले व पीले बाल, चेहरा लम्बा,गालों में गड्ढे, हड्डियाँ मोटी, भौंहें काली जुड़ी हुई, आँखें छोटी, धंसी काली और रञ्जीदा होती हैं। आँखों की सफेदी कुछ पीली, कान बड़े, नाक पतली और नुकीली व नथने कुछ खुले हुए होते हैं, मुँह बड़ा, ओठ पतले, दाँत सुन्दर जो जल्दी खराब होते हैं। दाढ़ी काली, ठुड्डी लम्बी, और कष्टदायक होती है और गर्दन लम्बी होती है। उङ्गलियाँ लम्बी गठीली और अँगूठे का पतला पोर ज्यादा बड़ा और चपटा होता है। वाणी भद्दी, धीमी होती है। शनि के खराब किस्म के लोगों के बाल थोड़े और ज्यादा पतले किस्म के होते हैं। अपनी शक्ल के लापरवाह होते हैं।

स्वास्थ्य—उनके टाँग और पैरों में चोट लगती है, शनि वाले बहुत.से लफंगे होते हैं। ज्यादातर मेलनकोलिया से, जो दीवानगी की तरह होती है, ग्रसित होते हैं। वे पानी से घृणा करते हैं और गन्दे रहते हैं। शनि का अधिकार कान, दाँत व पिंडली पर है। इसलिए पित्त, बात, व्याधि व रोगी होता है। दांत कष्ट देने के बाद जल्द गिरते हैं, गिरने से आत्मघात से दबने की घटना होती है।

मानसिक शक्ति वाले, गमगीन, गम्भीर, धर्म में दृढ़ किन्तु कट्टर, सङ्गीत व गणित के प्रेमी तथा बुद्धिमान होते हैं। वे अपने तरीके से खुश होते और समयानुसार धार्मिक विषय पर बहस करते हैं। गुप्त विद्याओं के प्रेमी होते हैं। आज्ञाकारी नहीं होते और दूसरों को भी भड़काते हैं। काले रङ्ग की वस्तु पसन्द होती है और जीवन के प्रतिदिन आनन्द के सहायक नहीं होते, और दूसरों की संगत पसन्द नहीं होती है। कड़े मिजाज के होते हैं। वे कम खर्च और कन्जूस होते हैं। सुस्त

एकान्त प्रिय और अक्सर मनुष्यों से घृणा करते हैं, सख्त दिल व लड़के बच्चों को सताने वाले होते हैं। जेल में ज्यादातर ऐसे ही मनुष्य जाते हैं। शनि के पर्वत का प्रभाव हो या शनि की उङ्गली कमजोर हो तो वह आदमी स्वार्थी, चिड़चिड़ा, ईर्षालू वादविवाद या झगड़े करने वाला भयानक, दुश्मन और धूर्त होता है। ७० वर्ष की आयु होती है।

## सूर्य के गुण वाले

सूर्य के प्रभाव वाले भड़कीले स्वभाव वाले, कारीगर, सुन्दरता के प्रेमी, होशियार और समझदार होते हैं।

मामूली कद के, कुछ ऊँचे सुन्दर सुरुचि रङ्ग अच्छी चमक वाले ज्यादातर, माथा ऊँचा परन्तु चौड़ा, आँखें बड़ी बादाम की शक्ल की चमकती हुई, बोली साफ और मीठी, पुतली भूरे रङ्ग की और बौरानी लम्बी होती है। गाल गोल और मजबूत, नाक सीधी और भौंहें सुन्दरता से मुड़ी हुई होती है। मुँह बड़ा नहीं होता, आवाज भारी, लेकिन मधुर और ठुड्डी गोल उभरी हुई नहीं होती, गर्दन लम्बी. मान से युक्त और सुन्दर मुड़ी हुई और शरीर में बाल नहीं होते हैं। उसके शरीर में चर्बी ज्यादा नहीं होनी, उङ्गली चिकनी और समकोण वाली, अँगूठा औसत और दूसरा पोर कुछ बड़ा होता है। हथेली और उङ्गलियाँ करीब-करीब बराबर और अनामिका गठीली होती है।

स्वास्थ्य स्थान अच्छा होता है। आशावादी होता है। आग से भय वाला, बुद्धिमान और किसी किस्म की बुराई की तरफ नहीं जाता।

सूर्य की प्रधानता वाले को नेत्र विकार, जोड़ों व रीढ़ की हड्डी तथा हृदय में पीड़ा होना सम्भव है। सूर्य का प्रभाव नेत्र, रीढ़ और हृदय पर होता है।

अशुभ हाथ वाले अन्धे हो जाते हैं और अपनी जन्मभूमि से दूर जाकर मरते हैं। दिल की धड़कन बुखार का आना, लू लगने से भय होता है।

मानसिक शक्ति—आन्तरिक ज्ञान और कम मेहनत से दूर बात

सीखते हैं। वे नई ईजाद बड़ी होशियारी और चतुरता से करते हैं। प्रकृति और हुनर के प्रेमी होते हैं। और सुन्दर वस्तु और सम्मान की इच्छा रखते हैं। वे शीघ्र ही लोगों को आकर्षित करते हैं और मित्रता तथा शत्रुता पैदा कर लेते हैं, वे बहुत से मामलों को चाहे जिस किस्म के हों आसानी से समझते हैं। और अक्सर ऊँची जगह पर धन पैदा करते हैं। इनकी कमजोरी यह है कि वे अपने मन की बात को जल्दी और साफ-साफ कह देते हैं। धर्म में वह जिद्दी नहीं होते, आसानी से विश्वास कर लेते हैं। और कुछ शक नहीं रह जाता। आन्तरिक शक्ति से वह गुप्त विद्याएँ सीख लेते हैं, और उनकी दिमागी शक्ति कठिन समस्याओं को हल करने में अधिक रहती है। उनका स्वभाव खुश-मिजाज, दयावान और सुन्दरता को ही चाहता है।

सूर्य वर्ग वाला चित्रकारी से घिरा रहना पसन्द करता है। धार्मिक कार्यों में धूमधाम व संगीत पसन्द करता है, और पीला रंग पसंद करता है।

स्त्रियाँ उनके सीधे स्वभाव को ताना देती हैं और वह अक्लमंद खाविन्द नहीं होता है। वह नाराज होता और तुरन्त ही शांत हो जाता है। यह कभी ईर्ष्या नहीं रखता और खराब दुश्मन को मित्र बनाता है। लेकिन उसकी तेजी इस कदर डाह पैदा करती है कि उसके मित्र कम होते हैं। वह स्वच्छ वायु और व्यायाम पसन्द करता है। वह भारी सफर करने वाला होता है। उसमें घमण्ड नहीं होता और न अभिलाषा ही होती है। उत्तम प्रकार की इच्छा होती है।

## बुध के गुण वाले

बुध की प्रधानता वाले की व्यवसाय कार्य की योग्यता, प्रत्येक विषय में प्रवेश करने की शक्ति होती है।

ये कद के छोटे गठीले प्रसन्न-मुख, कुछ लम्बा चेहरा और काठी के अच्छे होते हैं। रंग हलका काला, बाल अखरोट के रंग के समान आखिर में घूमे हुए, चमड़ा मुलायम और चेहरे का रंग जल्द बदलने

वाला और माथा उठा हुआ होता है। ठोडी छोटी, बाल ज्यादा काले, भौंह पतली, मुड़ी हुई जुड़ी हुई होती हैं। आँखें गहराई में बैठी हुई तेज चुभती हुई और कभी-कभी चञ्चल, पीली, सफेद और पलकें पतली होती हैं।

नाक लम्बी सीधी, गोल सिर, होंट पतले, ऊपर का भाग भरा हुआ, मुँह आमतौर से आधा खुला हुआ, दाँत छोटे और हड्डी लम्बी और नुकीली, कभी-कभी मुड़ी हुई होती है।

गर्दन व कन्धा मजबूत, सीना चौड़ा, पट्ठे, बाजू गठीले। हड्डियाँ छोटी और आवाज कमजोर होती है।

हाथ बड़े और हथेली लचीली, उङ्गलियाँ मिले जुले किस्म की सिर्फ बुध का पहला पोर गठीला, अँगूठा लम्बा और खासकर दूसरा पोर लम्बा होता है।

अशुभ दाँतों में काले रङ्ग का चिन्ह, धंसी हुई आंखें, बाल सुन्दर नहीं होते। हाथ अति ढीला, उङ्गलियाँ लम्बी और पीछे मुड़ी होती हैं।

स्वास्थ्य—घबड़ाहट वाला स्वभाव, जिगर और हाज्मा कमजोर, हाथ और बाजू में चोट कष्ट और अकसर टाँगों में भी कष्ट होता है।

बुद्धि, मस्तक, कलेजा, गुरदा पर बुद्धि का शासन है। इससे मनुष्य को उन्माद, वाणी रुकने व कलेजा तथा गुरदे सम्बन्धी रोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—कार्य से और ख्यालात में जल्दबाजी, खेलकूद में होशियार और व्याख्यान देने में चतुर, इन्सान की पहिचान और अच्छे इन्तजाम करने वाले होते हैं। नए-नए मनसूबों के संचालक और अपने साथियों पर प्रभाव वाले होते हैं। जीवन के चरित्र को भली प्रकार जानने वाले, गणितज्ञ, वैद्यक और गुप्त विद्या के ज्ञाता, हुनर और साहित्य में आनन्द लेने वाले और व्यापार में धन उपार्जन की सोचने वाले होते हैं। ऐसे पुरुष डाक्टर, लेखक, हिसाबी, व्यौपारी और वकील होते हैं। उनकी बहस वकालत के साथ तर्कयुक्त होती है। यह रोबदार और नकल करने की शक्ति, प्रेमी, प्रसन्नचित्त, हँसने वाला, यात्रा का

अभिलाषी और प्राकृतिक सुन्दरता का उपासक होता है। परिश्रमी, बातूनी, चंचल, समझदार आशावान होते हैं। वे सदा चौकन्ने और अन्तर्ज्ञान की शक्ति रखते हैं। ८० वर्ष की आयु होती है।

सब अशुभ हाथ हो तो धोखेबाज, अविवेकी, चालाक, द्रोही, झूँठा, दगाबाज और हर बात का जानकार बनता है और लोगों को धोखा देने के लिए मूर्खता युक्त होता है। कभी-कभी अपने मनसूबों पर इतना विश्वास करता है कि खुद धोखे में पड़कर मुसीबत उठाता है। चोरी की तथा अपने लाभ की फिक्र ज्यादा रहती है।

## मङ्गल के गुण वाले

मङ्गल के वर्ग वाला रीति रस्म नहीं मानता, साहसी व उद्योगी होता है।

खुरदरा [ लाल ] चमड़े वाला, चौरस कन्धा, पहिला पोर अँगूठा गोल चपटा और उँगली के तीसरे पोर भीतर उठे हुए होते हैं। कुछ ऊँचा मजबूत छोटा, मोटा सिर, खुले भौंह, गोल चेहरा, काली छोटी बड़ी चमकीली आँखें, भूरे रङ्ग के ओठ और लाल छींटों से युक्त, मुँह बड़ा पतला, होठ नीचे का मोटा, दाँत छोटे, भौंह सीधी मोटी होती हैं। नाक लम्बी नोंक वाली चोंच की तरह ठुड्डी ऊपर उठी, दाढ़ी सख्त, कान छोटे पर सिर से दूर, गाल मोटे, ठुड्डी उठी, गर्दन छोटी, मजबूत सीना, उठा हुआ कंधा, चौड़ी जाँघ छोटी टाँग, सुन्दर चाल, शान के साथ तेज रफ्तार, आवाज कठोर या भारी होती है। हाथ सख्त मोटा, उंगली छोटी अंगूठे का पहिला पोर दूसरे से बड़ा होता है। हर काम में उतावले होते हैं।

अशुभ हाथ वाले का छोटा कद, फूला मुँह, बड़ी डरावनी शक्ल, भौंह चढ़ी हुई, आवाज घुरघुराहटदार, कान लम्बे, हाथ छोटे-मोटे होते हैं।

स्वास्थ्य—संजीदा मिजाज, खून की खराबी, और चर्मरोग अन्दरूनी विकारों की सूचना देते है। लड़ाई-झगड़े में चोट खाता है

क्योंकि यह लड़ाका स्वभाव का होता है। स्वयम् ही अपनी लड़ाई लड़ा करता है और अशुभ हाथ वाला विषयी, क्रोधी, शराबी; बेचैनी हो तो भयंकर वार करने वाला जिससे जेल या फाँसी की सजा पाता है। बहुधा नीची संगत में जाता है और रुचि भी हुआ करती है।

मङ्गल के स्वभाव वाले पुरुषों को तीव्र ज्वर तथा अन्य भीतरी अङ्गों के रोग और अग्नि सम्बन्धी घटनाएँ होती हैं।

मानसिक शक्ति—यह उदार हृदय का, गर्व करने वाला, दाता, और सच्चा मित्र होता है। धन अपने व पराये के लिए बरबाद करता है और निडर होता है, अतिशय शक्ति वाला सत्र वाला, और हद दर्जे के थकान या खतरे में डाल देने वाला, कामयाब हर मामले में होता है। यह प्रेम के मामले में जुर्रत का कार्य करने वाला और किसी की दलील को न सुनने वाला और खाने-पीने में शौकीन होता है। सरकस, मेढ़ों की लड़ाई, भयानक खेल पसन्द करने वाला होता है। घमण्ड वाला, शानशौकत वाला और हमेशा आगे-आगे चलने वाला, शान्त चित्त से कार्य करने वालों को घृणा से देखने वाला; और यदि चित्रकार हो तो लड़ाइयों व जङ्गलों के शिकारी का चित्र बनाने वाला; और यदि गवैया हो तो फौजी गान, नाच इत्यादि; यदि साहित्य-प्रेमी हो तो युद्ध के किस्से कहने वाला होवे। यह सरदार होता है और भीड़ में प्रशंसा का पात्र बनता है। यात्रा करना या घर के बाहर रहना पसन्द करता है। चमकीला, लाल या नीला रङ्ग पसन्द करता है। अशुभ हाथ वाला कातिल, डाकू, भारी बदमाश होता है।

आयु ७० वर्ष की होती है। ऐसे की मृत्यु अकसर शस्त्र या अग्नि से होती है। चन्द्र की प्रधानता वाले कल्पना, एकांतवास, उदासीनता, कविता, गुप्त रहना, भविष्य सम्बन्धी स्वप्न देखते हैं।

## चन्द्र के गुण वाले

लम्बा कद, गोल चौड़ा सिर, कनपटी के ऊपर भौंहें थोड़ी होती हैं। सफेद रंग, मुलायम मांस, बड़े पुट्ठे और पतले दुबले शरीर पर बाल

नहीं होते। नाक छोटी और सिरे पर गोल होती है। मुँह छोटा, ओंठ मोटा, दांत बड़े पीले रङ्ग के, बेतरतीब और जल्दी खराब हो जाते हैं मसूड़े अक्सर पीले रङ्ग के होते हैं।

आंखें गोल, बड़ी और उठी हुई, पुतली चमकती भूरे रङ्ग की होती हैं। पलकें बड़ी और मोटी, ठुड्डी बड़ी और चर्बीदार और कान सिर के पास चपटे होते हैं, गर्दन लम्बी मांस युक्त और कई झुर्रियाँ होती हैं। सीना मांस से भरा, ढीला बदनुमा होता है। पेट निकला हुआ, टाँगें भारी, टखने के पास पैर बड़ा होता है। अँगुलियाँ छोटी चिकनी होती हैं। अँगूठे का पहला पोर औसत दर्जे से कम होता है। बोली धीमी बेजान होती है।

अशुभ हाथों में बदबूदार पसीना, चर्म पर सफेद दाग भी होते हैं, पाखण्डी धोखेबाज, ईर्ष्यालु अयोग्य असंतुष्ट अन्धविश्वासी होते हैं। स्वास्थ्य—खून की कमी लगातार काम करने की शक्ति नहीं होती। हमेशा बड़े सोच-विचार में रहता है और स्वास्थ्य की चिन्ता हमेशा लगी रहती है। लकवा, मिर्गी, मूर्छा का भय रहता है। डूबने का भय, किडनी, ब्लैडर, जननेन्द्रिय, गठिया और आँतड़ियों की बीमारी रहती है। चन्द्र प्रधानता वाले को जलोधर, यक्ष्मा, उन्मादादि तथा जल सम्बन्धी घटना होती है।

मानसिक शक्ति—चञ्चल, अविश्वासी, विचारों में तन्मय होजाने वाले, खुदगरज और घूमने के सहायक होते हैं। शक्की ज्यादातर और भावुक, कविता साहित्य और गाना पसन्द करते हैं। चन्द्र गुण वाले आदमी शक्ल में और स्वाद में कम सखुन होते हैं। स्त्रियाँ नेकचलन, कामुक और प्रेमी की भक्त होती हैं। एक कार्य में कम लगने वाले और वायदा करके पूर्ण नहीं करते, वेदाँत में सुखी होते हैं लेकिन कार्य में नहीं लगते। खूब खाते हैं, पानी कम पीते हैं। गहरा नशा पसन्द करते हैं, उनको सफेद और जर्द रङ्ग पसन्द होता है। अक्सर व्यापार नापसन्द करते हैं। चित्रकारी के प्रेमी होते हैं। रङ्ग गहरा सफेद,

पीला पसन्द होता है। वायु से बजने बाजे वाले जैसे अलगोजा, बाँसरी पसन्द करते हैं।

अशुभ हाथ वाले बेपरवाह, मूर्खता युक्त, बातूनी, चुगलखोर अक्सर नटखट और वास्तविक, कामी नहीं होते, सिर्फ नई खलबली पैदा करने वाले होते हैं। बेशरम खुदगरज गुस्ताख होते हैं।

## शुक्र के गुण वाले

स्वरूपवान, इन्द्रियों के सभी सुखों को पसन्द करने वाले, प्यार करने वाले तथा आकर्षण रखने वाले होते हैं। रूप सुन्दर, सफेद गुलाबी लिए हुए मुलायम और नाजुक औसत दर्जे से ऊँचा गोरा चिकने, भौंहें सुन्दर झुकी हुई और तंग होती हैं। बाल काले लम्बे और और बहुतायत से होते हैं मुलायम तथा लहरदार हों, भूरे हो या काले बाल हों, आयु के साथ नहीं बदलने वाले होते हैं। नाक सुडौल, लम्बी, नोक छड़ पर चौड़ी लेकिन सुन्दर और सिर पर गोल होती है।

आँखें बड़ी, स्वच्छ और सुन्दर, मीठी चितवन कुछ उठी हुई और भूरे रंग की होती हैं। पुतली चौड़ी, पलकें रेशम की तरह उम्दा और नीली नसें दिखाई पड़ती हैं।

मुँह छोटा, सुडौल ओठ, लाल कुछ ही मोटा, खासकर नीचे का ओठ और दाँत चिकने बने सुन्दरता से सजे हुए। ठुड्डी लम्बी गोल, कान छोटे नाजुक शक्ल के, गर्दन साफ शानदार तास से युक्त, कन्धे रंग और सुन्दरता के साथ उतार चढ़ावदार सीना जो चौड़ा नहीं होता परन्तु स्वस्थ और भरा हुआ होता है। कमर पतली होती है। हाथ मुलायम छोटी चिकनी उंगलियां तुल्य; पोर मोटा और अँगूठा छोटा होता है।

वाणी मधुर आकर्षण करने वाली होती है।

हाथ अस्वस्थ सफेद रंग का, गढ़ी आँखें, गाल लालई लिए भारी टी नाक ओठ बहुत मोटे खासकर नीचे वाला बड़ा तथा बड़ा पेट

चलने में मुश्किल, आवाज भारी, हाथ ढीला, भद्दा और बदशक्ल अँगुली मोटी, चिकनी और छोटी होती हैं।

स्वास्थ्य—मजबूत, प्रसन्नचित्त, प्रेम से उत्पन्न होने वाली बीमारी के शिकार और गुप्त इन्द्रियों में कष्ट होता है। प्रमेह, आतशक की बीमारी होती है। शुक्र का अधिकार जननेन्द्रिय पर हो इससे हिस्टीरिया व स्त्रियों के अन्य रोग होते हैं।

मानसिक शक्ति—प्रसन्नचित्त, सोहबतदार, दूसरों को प्रसन्न करने इच्छुक और सबका प्रिय, हाजमा उत्तम लेकिन बहुत खाने-पीने ला नहीं हो, सुगन्ध, गाना बजाना, प्रकृति की सुन्दरता पसन्द और मी होता है और कामिनी उसके जीवन में विशेष असर डालती है सच्चाई पसन्द, अक्सर धोखा खाता है। जल्द क्षमा कर देता है। य लड़ाई-दङ्गा नापसन्द करता है और प्रेमी के लिए सब कुछ करने कं तैयार होता है और अगर लेखक या चित्रकार हो तो लोगों के दिल कं खींच लेता है। यात्रा प्रिय, जवाहिरात रेशमी वस्त्रादि संग्रह करने क प्रेमी और सुगन्धि व पुष्पों में आनन्द आता है। गुलाबी व नील पीला रङ्ग पसंद करता है, बाजों में यही सारङ्गी पसंद करता है अशुभ हाथ में शक्की, व्यभिचारी, फिजूलखर्च, पागल, गन्दे, अश्लील विचार और परिणाम में जेल होती है।

---